काकोरी काण्ड के विशेष सन्दर्भ में अशफाक उल्ला खाँ का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व-एक ऐतिहासिक अध्ययन (1900 -1927)

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. (इतिहास)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

निर्देशक

प्रो. अनिल कुमार मिश्र
मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

अनुसंधाती

मनीषा तिवारी

मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

2007-08



शहीदे आज़म अशफाक उल्ला खाँ

प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि अनुसंधात्री मनीषा तिवारी ने डॉ0 ऑफ फिलासफी की उपाधि हेतु मेरे निर्देशन में शोध प्रबन्ध **''काकोरी काण्ड के विशेष सन्दर्भ में अशफाक उल्ला खाँ का व्यक्तित्व एवं कृतित्व-एक ऐतिहासिक अध्ययन (1900-1927)''** नामक शीर्षक पर प्रस्तुत किया है। यह शोधार्थिनी का स्वतन्त्र एवं मौलिक प्रयास है। मैं मनीषा तिवारी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

दिनांक .... निर्देशक

प्रो0 अनिल कुमार मिश्र
मध्यकालीन एवं आधुनिक
भारतीय इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

आभार

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध श्रद्धेय प्रो० अनिल कुमार मिश्र, मध्य कालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के विशिष्ट कुशल निर्देशन में फलीभूत हुआ है। उन्होने शोध-प्रबन्ध के निर्देशन के महत्त्वपूर्ण दायित्व को स्वीकार कर न केवल मुझे उपकृत्य किया अपितु शोध-प्रबन्ध में उचित संशोधन, परिवर्धन हेतु समय-समय पर मूल्यवान दिशा-निर्देशन भी प्रदान किया। इस शोध-प्रबन्ध को प्रस्तुत करती हुई मैं उन्हे श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर आभार व्यक्त करती हूँ।

विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो० वी०डी० पाण्डेय जी की मैं हृदयशः आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी रुचि के अनुसार विषय चयन करने का सुअवसर तथा समय-समय पर अपने अमूल्य सुझावों द्वारा मेरा मार्गदर्शन किया।

मैं अपने माता-पिता तथा सभी स्वजनों की विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से यह शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत स्वरूप ग्रहण कर सका।

मैं उन लेखकों एवं विद्वानों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिनके ग्रन्थों एवं पुस्तकों की सहायता से मैंने इस शोध-प्रबन्ध को पूर्ण किया। उ०प्र० राजकीय अभिलेखागार लखनऊ से प्राप्त हुए विशेष सहयोग एवं विषय-सामग्री के प्रति भी मैं अजीवन उऋण नहीं हो सकती।

शोध-प्रबन्ध के यथासमय टंकण हेतु मैं साक्षी बिजनेस प्वाइंट के प्रो० श्री संजीव कुमार श्रीवास्तव के प्रति भी कृतज्ञ हूँ। मुझे अनेक मित्रों एवं स्वजनों का भी सहयोग एवं सुझाव प्राप्त होता रहा। मैं इन सभी के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

अनुसंधात्री

मनीषा तिवारी

अनुक्रमणिका

अध्याय-दस

अध्याय-दस

उपसंहार

अशफाक उल्ला खाँ का जीवन साम्प्रदायिक एकता और देश को स्वतंत्र करने की मानसिकता में बीता। यही कारण था कि वे एक आदर्श युवा की भाँति युवाओं में प्रेरणा के स्तम्भ बने रहे। अशफाक के बलिदान के बाद तमाम प्रतिक्रियाएं हुई और अशफाक की भरपूर सूचना ली गयी। वे मिसाल बन गये। यह बात और है कि अशफाक की फाँसी से युवा वर्ग निराश जरूर हुआ लेकिन वहीं वह ऊर्जा को भरकर नये भारत की कल्पना में आ गया।

क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा से निराशा व क्षोभ तो हुआ और इसे बनारस से प्रकाशित होने वाले दैनिक समाचार पत्र ने जनता की इस असहाय स्थिति पर खेद भी प्रकट किया। इलाहाबाद से प्रकाशित पत्रिका **'चाँद'** (नवम्बर 1928) अंक फाँसी विशेषांक के रूप में निकला।[1]

अखिल भारतीय कांग्रेस ने अपने अधिवेशन में सरकार की तीव्र आलोचना की कि उसने जनता की भावनाओं की उपेक्षा करके क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा दी। क्रांतिकारियों के परिवार के प्रति कांग्रेस ने अपनी सहानुभूति प्रदान की।[2]

अशफाक उल्ला खाँ अपने खानदान पर लगे दाग धो देना चाहते थे और उन्होंने अपने कृतित्व से यह दाग धो भी डाला। अशफाक का प्रारम्भिक जीवन सिर्फ खेलकूद में ही नहीं वरन् देश की चिन्ता और आम लोगों को शोषण से निजात दिलाने के वैचारिक मंथन में बीता। वे हमेशा धीर-गम्भीर बने रहते और कभी अपनी सुन्दरता और देह बल का अभिमान न करते।

1.स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान-डॉ०एन.सी.मेहरोत्रा पृष्ठ144
2.दि हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल कॉंग्रेस, भाग-एक-पृष्ठ 540,पट्टाभि सीतारमैया

हाँ इतना अवश्य था कि उन्हें अपने बल पर विश्वास था। खुद के विचारों में स्वस्थ्य मानसिकता बना लेना अशफाक की खूबी थी। देश के सशस्त्र क्रांति के प्रयास में अपने जीवन की आहुति देने वाले अशफाक उल्ला खाँ ने जब क्रांतिकारी आन्दोलन में प्रवेश किया तो वे छात्र ही थे। फाँसी के समय उनकी उम्र मात्र 27 वर्ष की थी। अशफाक का क्रांतिकारी जीवन लगभग सात वर्ष का रहा और इतने ही अल्पकाल में वे देश की राजनीति और समाज की धड़कन से परिचित हो गये थे। अशफाक उल्ला खाँ सिर्फ एक सिपाही ही नहीं थे कि लड़े और मृत्यु को प्राप्त हो गये। वे हमारे समय के क्रांतिकारियों में प्रखर चिन्तक के रूप में भी हमारे बीच उपस्थित होते हैं। उनकी कविताएँ एवं उनके वैचारिक लेख और राष्ट्र के नाम संदेश तथा उनके द्वारा लिखे गये पत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि वे किस हद तक वैचारिक धरातल पर दृढ़ थे। यह स्पष्ट है कि क्रांतिकारी गतिविधियों, फरारी जीवन, जेल की जिन्दगी में से ऐसा समय ही नहीं मिला कि वे बाकायदा अपने विचार लिपिबद्ध कर पाते।

इन्ही में से समय निकाल कर जो उन्होंने लिखा है वह बहुत थोड़ा है, जिसे पढ़कर लगता है कि वे चाहते हुए भी अपने सोचे हुए को कागज पर उतार नही सके। वे बहुत कुछ लिखना चाहते थे, वे बच्चों के लिए पुस्तकों की रचना करना चाहते थे, उन्हें भावी पीढ़ी की बहुत चिन्ता थी, लेकिन उनकी इच्छा अधूरी रह गयी। उनके लिखे पत्रों, कविताओं और डायरी में लिखे अंशों से हमें उनके जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं।

देश की स्वतंत्रता और हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए शहीद होने वाले अशफाक ने फाँसी से पहले अपनी डायरी में हिन्दुस्तान का नक्शा भी बनाया था और देखने से लगता है कि वे खूब रोये थे। सुनने-देखने में यह भी आता है कि आँसुओं के निशान अभी तक ज्यों के त्यों हैं।

आज भी देश के नाम उनका संदेश प्रासंगिक है। उनकी कविताएं हमें एक सूत्र में बाँधती हैं।

न कोई इंगलिश, न कोई जर्मन,
न कोई रशियन, न कोई तुर्की।
मिटाने वाले है अपने हिंदी,
जो आज हमको मिटा रहे हैं।

यह कहना सर्वथा गलत है कि क्रांतिकारियों के पास कोई विचार नहीं था। अपने संदेश में अशफाक ने स्पष्ट कहा है कि वे किस तरह की आज़ादी चाहते हैं। अशफाक की कल्पना समाजवादी थी, जहाँ कोई ऊंच है न नीच। अशफाक ने किसान, मजदूरों की तरक्की की बात भी कही। वे कारखानों और गांवों में लोगों के बीच जमकर काम करने में विश्वास रखते थे। अशफाक शोषण के कारणों की बात करते है और उसके खिलाफ जंग लड़ने की बात करते हैं।

देश वासियों के नाम भेजा गया संदेश

''बिरादराने वतन की खिदमत में उनके उस भाई का सलाम पहुँचे जो उनकी इज्जत व नामू से वतन की खातिर फैजाबाद जेल में कुर्बान हो गया। आज जबकि मैं यह पैगाम बिरादराने वतन को भेज रहा हूँ, इसके बाद मुझको तीन दिन और चार रातें और गुजारनी हैं और फिर मैं हूँगा और आगोशे मादी वतन होगा। हम लोगों पर जो जुर्म लगाये गये थे वह इस सूरत में पब्लिक में लाए गये कि हमको बहुत से लोग गेरेतालीमयाफ्ता या हुकूमत के दस्तरख्वान की पसेखुर्दा हड्डियाँ चचोड़ने वाले थे, डाकू, खूनी, कातिल के लकब से पुकारा किए। मैं आज इस फाँसी की कोठरी में बैठा हुआ भी खुश हूँ और अपने उन भाइयों का शुक्रिया अदा करता हूँ। और कहूँगा -

मर मिटा आप पै कौन! आपने यह भी सुना,
आपकी जान से दूर! आप से शिकवा है मुझे।

खैर यह तुम्हारा फैल है कि हमारी कुर्बानियों को कबूल न करो और यह हमारा फर्ज है कि बार-बार ठुकराओ मगर हम तुम्हारा ही दम भरे जायेंगे। बिरादराने वतन, मैं उसी पाक व मुकद्दस वतन ही की कसम खाकर कहूँगा कि हम नंगे नामूसे वतन पर कुर्बान हो गए। क्या यह शर्म की बात नहीं कि हम अपनी आँखों से देखते कि नित नए मुज़ालिम हो रहे है और गरीब हिन्दुस्तानी हर हिस्साये मुल्क और खित्तयेदुनिया में जलील और रुसवा हो रहे हैं और कहीं न ठिकाना है न सहारा। किस्सा मुख्तसर ये कि हमारा वतन भी हमारा नहीं। हम पर टैक्स की भरमार, हमारी माली हालत का रोज बरोज गिरते जाना, 33 करोड़ बहादुर हिन्दुस्तानी हिन्दू और मुसलमान भेड़-बकरियों की मानिंद बनाए गए। हमारे गोरे आका हमें ठोकरे मार दें तो बाज-पुर्स न हो। जनरल डायर जलियावाला बाग को नमूनये हशर बना दे। हमारी माताओं की बेइज्जती करें। हमारे बूढ़ों और बच्चों पर बम के गोले, गन-मशीनों की गोलियाँ बरसाएं और हर नया दिन हमारे लिए नई मुसीबते लेकर आए। फिर भी हम बादये गफलत रहें और ऐशो-इशरत में अय्यायें- जवानी गुजार देते। यह खयाल करके -

जनूने हुब्बे वतन का मजा/शबाब में हैं,
लहू में फिर यह रवानी रहे/रहे न रहे।

जो भी किया, भला किया, आज हम नाकाम रहे, डाकू हैं। कामायाब होते मुहिब्बते वतन के पाक लकब से पुकारे जाते। और जो भी आज हम पर झूठी गवाहियाँ दे गए, हमारे नाम के जयकारे लगाते -

बहे बहरे फना में जल्द/यारब लाश बिस्मिल की,

कि भूखी मछलियाँ हैं/जौहरे शमशीरे कातिल की।

आह! क्या ऐसे दौर की जिन्दगी प्यारी ख्याल की जा सकती है। जबकि हमारे ही गिरोह-सियासी में खलफिशार मचा है। कोई तबलीग का दिलददा है, जो कोई शुद्धि पर मर मिटने को बाइसेनिजात समझ रहा है। मुझे तो रह-रहकर इन दिमागों और अक्लों पर तरस आ रहा है जो कि बेहतरीन दिमाग हैं और माहरीने सियासत हैं। काश कि वह अज़ादिए मिस्र की जद्दोजहद एहरारान मिस्र के कारनामें और बर्तानवी सियासी चाले स्टडी कर लें और हमारे हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत से मुकाबिला व मवाज़ना करें, क्या ठीक वही हाल इस वक्त नहीं है। गवर्नमेंट के खुफिया एजेन्ट प्रोपेगेंडा मजहवी बुनियाद पर फैला रहे हैं। इन लोगों का मकसद मजहब की हिफाजत या तरक्की नहीं है बल्कि चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना है। मेरे पास वक्त नहीं है न मौका है कि सब कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देता जो मुझे अय्यामे फरारी में और उसके बाद मालूम हुआ है। यहाँ तक मुझे मालूम है कि मौलवी नियामतुल्ला कादियानी कौन था कि काबुल में संगसार किया था। वह ब्रिटिश एजेन्ट था। जिसके पास हमारे करमफरमा खान बहादुर, तसद्दुम हुसैन साहब डिप्टी सुपरिटेंडेन्ट सी0आई0डी0 गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया पैगाम लेकर गए थे मगर बेदारमगज हुकूमत काबुल ने इलाज जल्द कर दिया और मर्ज को फैलने न दिया। मैं अपने हिन्दुओं और मुसलमान भाइयों को बता देना चाहता हूँ कि सब ढ़ोंग हैं, जो सी0आई0डी0 के खुफिया खजाने के रूपये से रचा गया है। मैं मर रहा हूँ और वतन पर मर रहा हूँ। मेरा फर्ज है कि हर नेको बद बात भाइयों तक पहुंचा दूँ। मानना न मानना उनका काम है। मुल्क के बड़े-बड़े लोग इससे बचे हुए नहीं हैं। बस आवाम को आँखे खोलकर इत्तबा करना चाहिए।

भाइयों! तुम्हारी खानाजंगी तुम्हारी आपस में फूट, तुम दोनों में से किसी के भी सूदमंद साबित न होगी। यह गैर मुमकिन है कि 7 करोड़ मुसलमान शुद्ध हो जाएँ और वैसे ही यह भी महमल-सी बात है कि 22 करोड़ हिन्दू मुसलमान बना लिए जाएं। मगर हाँ यह आसान है और बिल्कुल आसान है कि यह सब मिलकर गुलामी का तौक गले में डाल लें। ऐ वह कौम जिसका कोई कौमी झंडा नहीं-ऐ वह कि तेरा वतन मेरा वतन नहीं-ऐ कि दूसरों की तरफ हाथ फैलाए हुए रहम की दरख्वास्त पर नजर रखनेवाली बेकस कौम तेरी अपनी गलतियों का यही नतीजा है कि आज तू गुलाम है और फिर वही गलतियाँ कर रही है कि आने वाली नस्लों के लिए धब्बा गुलामी का छोड़ जाएगी कि जो भी सर जमीने हिन्द पर कदम रखेगा, गुलामी में रखेगा और गुलाम बनाएगा। ऐ खुदावंदे कुद्दूस क्या कोई ऐसा सबेरा नहीं आयेगा कि जिस सुबह को तेरा आफताब आजाद हिन्दुस्तान पर चमके और फिजाए हिन्द आजादी के नारों से गूँज उठे। कांग्रेस वाले हों कि सौराजिस्ट तलबीगवाले हो कि शुद्धिवाले, कम्युनिस्ट हो कि रिवोल्यूशनरी, अकाली हो कि बंगाली, मेरा पयाम हर फरजंदेवतन को पहुँचे। मैं हर शख्स को उसकी इज्जत व मज़हब का वास्ता देता हूँ। अगर वह मजहब का कायल नहीं तो उसके जमीर को और जिसको भी वह मानता हो, अपील करता हूँ कि हर काकोरी केस के मर जाने वाले नौजवानों पर तरस खाओ। और फिर हिन्दुस्तान को सन् 20 व 21 वाला हिन्दुस्तान बना दो। फिर अहमदाबाद कांग्रेस जैसा इत्तिहाद इत्तिफाक का नजारा सामने हो। बल्कि उससे बढ़कर हो और मुकम्मल आजादी का जल्द-से-जल्द ऐलान करके इन गोरे आकाओं को हटा दो कि ये अब केंचुली उतार चुके हैं और अब वह किसी मंत्र से बस में न होंगे-तबलीग व शुद्धी वालो खुदारा-आखें खोलो, कहाँ थे और कहाँ पहुँच गये, अपनी-अपनी शान खत्म करो, सोचो तो मजहब में जबरदस्ती इखतिलाफे राय पर जंग, एक काम नामुकम्मल छोड़कर दूसरी तरफ रूजू हो गये।

आज कौन ऐसा हिन्दू या मुसलमान है जो मजहबी आजादी इतनी रखता है कि जितना उसका हक है? क्या गुलाम कौम का कोई मजहब नहीं होता? तुम अपने मजहब का सुधार क्या कर सकते हो? तुम खुदा की इबादत पुरसुकून तरीके पर करो। तुम ईश्वर का ध्यान खामोशी से करो और दोनों मिलकर इस सफेद भूत को मंत्र से जंत्र से उतार भगाओ। इसी की यह सारी कार्यवाही है। जब यह भूत उतर जाएगा, हमारी आँखें खुल जायेंगी। आओ हमारी भी सुनो, पहले हिन्दुस्तान को आजाद करो, फिर कुछ और सोचना, खुदा ने जिसके लिए जो रास्ता मुंतखिब कर दिया है, वह उसी पर रहेगा। तुम किसी को भी नही हटा सकते। आपस में मिल-जुलकर रहो और मुत्तहिन्द हो जाओ नहीं तो सारे हिन्दुस्तान की बद बख्ती का वार तुम्हारी गर्दन पर है और गुलामी का बाइस तुम हो।

कम्युनिस्ट ग्रुप के अशफाक की गुजारिश है कि तुम इस गैरमुल्की की तसव्वुर करते हो, देसी चीजों से नफरत, विदेशी पोशाक और तर्जेमआशरत के दिलदादा हो, इससे काम नहीं चलेगा। अपने असली रंग में आ जाओ। देश के लिए जिओ, देश के लिए मरो। मैं तुमसे काफी तौर पर मुत्तफिक हूँ और कहूँगा कि मेरा दिल गरीब किसानों के लिए और दुखिया मजदूरों के लिए हमेशा दुखी रहा है। मैं अपने अय्यामे फरारी में भी अक्सर इनकी हालत देखकर रोया किया हूँ क्योंकि मुझे इनके साथ दिन गुजारने का मौका मिला है। मुझसे पूछो तो मैं कहूँगा कि मेरा बस हो तो मैं दुनिया की हर मुमकिन चीज इनके लिए वक्फ कर दूँ। हमारे शहरों की रौनक इनके दम से है। हमारे कारखाने उनकी वजह से आवाद और काम कर रहे हैं। हमारे पंपों से इनके हाथ का पानी निकालते हैं, गर्ज कि दुनिया का हर एक काम इनकी वजह से हुआ करता है। गरीब किसान बरसात के मूसलाधार पानी और जेठ-बैसाख की तपती दोपहर में भी खेतों पर जमा होते हैं और जंगल में मँडलाते हुए हमारी खुराक का सामान पैदा करते हैं।

यह बिल्कुल सच है कि वह जो पैदा करते है जो वह बनाते हैं उनमें उनका हिस्सा नहीं होता, हमेशा दुखी और मफलूकुल हाल रहते हैं। मैं इत्तिफाक करता हूँ कि इन तमाम बातों के जिम्मेदार हमारे गोरे आका और उनके एजेन्ट हैं। मगर इनका इलाज क्या है कि उनको उस हालत पर ले आएँ कि वह महसूस करने लगें कि वह क्या हैं। इसका वाहिद जरिया यह है कि तुम उन जैसी वज़ा किरा इख्तियार करो और जेंटिलमैनी छोड़कर देहात का चक्कर लगाओ। कारखानों में डेरे डालो और उसकी हालत स्टडी करो और उनमें एहसास पैदा करो। तुम कैथरीन ग्रांड मदर ऑफ रशिया की सवानेह उम्री पढ़ो और वहां के नौजवानों की कुरबानियाँ देखो। तुम कालर टाई और उम्दा सूट पहनकर लीडर जरूर बन सकते हो, मगर किसानों और मजदूरों के लिए फाइदेमन्द साबित नही हो सकते। दीगर पॉलिटिकल जमाअतों से मुत्तहिद होकर काम करो और अपनी माद्दापरस्ती से किनारा करो कि यह फिजूल है जो तुम्हे दूसरी जमाअतों से अलग किये हुए हैं।

मेरे दिल में तुम्हारी इज्जत है और मैं मरते हुए भी तुम्हारे सयासी मकसद से बिल्कुल मुत्तफिक हूँ। मैं हिन्दुस्तान की ऐसी आजादी का ख्वाहिशमंद था जिसमें गरीब खुश और आराम से रहते। खुदा मेरे बाद वह दिन जल्द आए जबकि छत्तरमंजिल लखनऊ में अब्दुल्ला मिस्त्री लोको वर्कशाप और धनिया चमार, किसान भी मिस्टर खलीकउज्जमा और जगत नारायण मुल्ला व राजा साहब महमूदाबाद के सामने कुर्सी पर बैठे हुए नजर पड़े। मेरे कामरेडो मेरे रिवोल्यूशनरी भाइयों -तुमसे मैं क्या कहूँ और तुमको क्या लिखूँ, बस अब तुम्हारे लिए क्या कुछ कम मुसर्रत की बात होगी, जब सुनोगे कि तुम्हारा एक भाई हँसता हुआ फाँसी पर चला गया और मरते-मरते खुश था। मैं खूब जानता हूँ कि जो स्प्रिट तुम्हारा तबका रखता है - चूँकि मुझको भी फख्र है और अब बहुत ज्यादा फख्र है कि एक सच्चा रिवोल्यूशनरी होकर मर रहा हूँ।

मेरा पयाम तुमको पहुँचाना फर्ज था, मैं खुश हूँ-मसरूर हूँ, मैं उस सिपाही की तरह हूँ जो फायरिंग लाइन पर हंसता चला जा रहा हो और खंदको में बैठा हुआ गा रहा हो। तुम्हें दो शेर हसर मोहानी साहब का लिख रहा हूँ -

जान को महवे गम बना दिल को वफा निहाद कर,
बंद ये इश्क है तो यू कता रहे मुराद की।
ऐ कि निजाते हिन्द की दिल से है तुझको आरजू,
हिम्मते सर बुलन्द से यास का इंसदाद कर।

हजार दुख क्यों न आएँ-बहरे जरख्वार दरमियान में मौंजे मारें-आतिशी पहाड़ क्यों न हायल हो जाएँ मगर ये आजादी के शेरों अपने-अपने गरम खून को मातृभूमि पर छिड़कते हुए और जानों को मातृवेदी पर कुर्बान करते हुए आगे बढ़े चले जाओ। क्या तुम खुश न होगे जब तुमको मालूम होगा कि हम हँसते हुए मर गए। मेरा वजन जरूर कम हो गया है और वह मेरे कम खाने की वजह से हो गया है। किसी डर या दहशत की वजह से नहीं हुआ है-और मैं कन्हाई लाल दत्त की तरह वजन न बढ़ा सका मगर खुश हूँ और बहुत खुश हूँ। क्या मेरे लिए इससे बढ़कर कोई इज्जत हो सकती है कि सबसे पहला और अब्बल मुसलमान हूँ जो आजादिए वतन की खातिर फाँसी पा रहा हूँ - मेरे भाइयो! मेरा सलाम लो और इस नामुकम्मल काम को, जो हम से रह गया है तुम पूरा करना। तुम्हारे लिए यू0पी0 में मैदाने-अमल तैयार कर दिया है, तुम्हारा काम जाने। इससे ज्यादा उम्दा मौका तुम्हारे हजार प्रोपेगंडे से न होता। स्कूल और कालेजों के तुलवा हमारी तरफ दौड़ रहे हैं, अब बहुत अर्से तक दिक्कत न होगी -

उठो-उठो सो रहे हो नाहक/पयामे बाँगे जरस तो सुन लो,

बढ़ो कि कोई बुला रहा है, निशाने मंजिल दिखा-दिखाकर।

ज्यादा क्या लिखूँ, सलाम लो-और कमर हिम्मत बाँध लो और मैदाने-सियासी लीडरों मेरा सलाम कबूल करो और तुम हम लोगों को उस नजर से न देखना जिस नजर से दुश्मनाने वतन और खाइनीने कौम देखते थे। न हम डाकू थे न कातिल -

कहाँ गया कोहेनूर हीरा/किधर गई हाय मेरी दौलत,

वह सबका सब लूटकर कि उलटा/हमीं को डाकू बता रहे हैं।

हमीं को दिन-दहाड़े लूटा, फिर हमीं डाकू हैं। हमारे भाइयों और बहनों और बच्चों को जलियानवाला बाग में भून डाला और अब हमीं को कालस बलूट फैसले में लिखा जाता है। अगर हम ऐसे हैं तो वह कैसे हैं और किस खिताब से पुकारे जाने के काबिल हैं, उन्होंने हिन्दुस्तान का सुहाग लूट लिया, जिन्होंने लाखों बहादुरों को अपनी गरज के लिए मेसोपोटामिया और रूस के मैदान में सुलवा दिया, खूँख्वार जानवर, जालिम दरिंदे वह हैं कि हम? हम बेवश थे, कमजोर थे, सब कुछ सुन लिया और ऐ वतनी भाइयों यह सब तुमने सुनवाया। आओ फिर मुत्तहिद हो जाओ, फिर मैदाने अमल में कूद पड़ो और मुकम्मल आजादी का ऐलान कर दो। अच्छा अब मैं रुखसत होता हूँ और हमेशा के लिए खैरबाद कहता हूँ। खुदा तुम्हारे साथ हो और फिजाये हिंद पर आजादी का झंडा जल्द लहराए। मेरे पास न वह ताकत है कि हिमालय की चोटी पर पहुँचकर एक ऐसी आवाज निकालूँ जो हर शख्स को बेदार कर दे और न वह असबाव है कि जिससे फिर तुम्हारे दिल मुश्ताइल कर दूँ कि तुम उसी जोश से आगे बढ़कर खड़े हो जाओ जैसे सन् 20 या 21 में थे। मैं चंद सुतूर के बाद रुख़सत होता हूँ : -

To every man upon this earth,
Death cometh soon or late,
But (then) how can a man die better,
Than facing fearful odds,
For the ashes of his fathers and,
Temples of his God.

बाद को मैं इन भाइयों से रुखसत शुक्रिए के साथ होता हूँ जिन्होंने हमारी मद्‌द जाहिर तौर पर की या पोशीदा और यकीन दिलाऊँगा कि अशफाक आखिरी दम तक सच्चा रहा और खुशी-खुशी मर गया और ख्यानते-वतनी का उस पर कोई नहीं लगाया जा सकता। वतनी भाइयों से गुजारिश है कि मेरे बाद मेरे भाइयों को वक्त जरूरत न भूलें और उनकी मदद करें और उनका खयाल करें।

वतन पर मर मिटने वाला
अशफाक वारसी **'हसरत'**
अज, फैजाबाद जेल

मेरी तहरीर मेरे वतनी भाइयों तक पहुँच जाए। ख्वाह विद्यार्थी जी अखबार के जरिए से या अग्रेंजी, हिन्दी, उर्दू में छापकर कांग्रेस के अय्याम में तकसीम करा दें, मशकूर हूँगा। मेरा सलाम कबूल करें और मेरे भाइयों को न वह कभी भूलें और न मेरे वतनी भाई फरामोश करें। अलविदा !

अशफाक उल्ला वारसी **'हसरत'**
फैजाबाद
जेल
19 दिसम्बर
1927[1]

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ 148-156

अशफाक चले गये और अलविदा से पहले देश के नाम अपना संदेश छोड़ गये। संदेश के माध्यम से हम उनके वैचारिक धरातल को ठीक से समझ सकते हैं, उनके कृतित्व व्यक्तित्व के विषय में तमाम सच्चाइयों का पता भी चलता है।

फाँसी पर जाने के पूर्व अशफाक ने कहा भी था - ''भारत माता के रंगमंच पर अपना पार्ट अब हम अदा कर चुके। हमने गलत-सही जो कुछ किया वह स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना से किया। हमारे इस काम की कोई प्रशंसा करेगा तो कोई निंदा। किन्तु हमारे साहस और वीरता की प्रशंसा हमारे दुश्मनों तक को करनी पड़ी है। क्रांतिकारी बड़े वीर योद्धा और बड़े अच्छे वेदान्ती होते है। वे सदैव अपने देश की भलाई सोचा करते हैं। वे कहते है कि हम देश को भयग्रस्त करते हैं, किन्तु बात ऐसी नही हैं। इतनी लम्बी मियाद तक हमारा मुकदमा चला, मगर हमने किसी एक गवाह तक को भयग्रस्त करने की चेष्टा नहीं की, न किसी मुखबिर को गोली मारी। हम चाहते तो किसी गवाह, किसी खुफिया पुलिस के अधिकारी या किसी अन्य ऐसे आदमी को मार सकते थे, किन्तु यह हमारा उद्देश्य नही था। हम तो कन्हाईलाल दत्त, खुदी राम बोस, गोपी मोहन साहा आदि की स्मृति में फाँसी पर चढ़ जाना चाहते थे।

जजों ने हमे निर्दय, बर्बर, मानव कलंक आदि विशेषणों से याद किया है। किन्तु हम पूछते हैं कि क्या इन जजों ने जलियावाला बाग में गोली चलाते देखा या सुना, क्या उसने निरस्त्र भारतीयों-स्त्री पुरुष, बाल वृद्ध सब पर गोलियाँ नहीं चलायी थी। कितने जजों ने उसे इन विशेषणों से विभूषित किया। फिर क्या यह मजाक हमारे ही साथ उड़ाने को है। भारतीय भाइयों, आप कोई हों, चाहे जिस धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायी हों, परन्तु आप देशहित में एक जुट होकर योग दीजिए। आप लोग व्यर्थ में लड़-झगड़ रहे हैं। सब धर्म एक है, रास्ते चाहे भिन्न-भिन्न हो परन्तु लक्ष्य सबका एक ही है।

फिर यह झगड़ा बखेड़ा क्यों? हम मरने वाले काकोरी के अभियुक्तों के लिए आप लोग एक हो जाइए और सब मिलकर नौकर शाही का मुकाबला कीजिए। यह सोचकर कि 7 करोड़ मुसलमान भारतवासियों में मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ जो भारत माता की स्वतंत्रता के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ, मैं मन ही मन अभिमान का अनुभव कर रहा हूँ किन्तु मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ किं मैं हत्यारा नहीं था, जैसा कि मुझे साबित किया गया है।

अब मैं विदा होता हूँ। ईश्वर आप सबका भला करे। इस अवसर पर एनुद्दीन, मजिस्ट्रेट श्रीखैरात अली, पब्लिक प्रोसीक्यूटर, सी0आई0डी0 के अधिकारी खासकर खान बहादुर तसद्दुक हुसैन साहब तथा अन्य गवाहों को धन्यवाद देना अनुचित न होगा। क्योंकि इन्ही की कृपा से यह मान मर्यादा प्राप्त हुई। मेरे परिवार में आज तक देश सेवा के लिए कोई त्याग न हुआ था, अब यह कलंक छूट जायेगा। अन्त में अपने साथी अभियुक्तों तथा मुखबिरों और इकबाली मुलजिमों से भी वन्दे करता हूँ। सबको आखिरी सलाम। भारतवर्ष सुखी हो मेरे भाई आनंद लाभ करें।''[1]

निश्चित ही अशफाक को समझना अपने देश की संस्कृति की झलक पाना है। अशफाक उल्ला खाँ ने स्वतंत्रता को मेहनतकश जनता के जीवन की स्वतंत्रता से जोड़ा था। क्योंकि उनके लिए देश केवल धरती, जंगल पहाड़, नदी नाले से नहीं है। जनता के बिना देश या राष्ट्र का कोई मतलब नही होता। उन्हें पता था देश की बहुसंख्यक जनता गाँव में रहती है। अधिकतर लोग गरीबी की चक्की में पिस रहे हैं, कम दिहाड़ी पर कारखानों में काम कर रहे हैं, लाखों सड़क पर हैं। इसलिए देश को आजाद करना है तो इन्हें आगे लाना होगा। किसानों, मजदूरों को संगठित करना होगा।

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -156-157

अशफाक ने कहा है कि -'मेरा दिल गरीब किसानों और दुखियों मजदूरों के लिए हमेशा दुखी रहा है। मैं तो अपने अय्यामें फरारी में भी अक्सर इनकी हालत देखकर रोया किया हूँ क्योंकि मुझे इनके साथ दिन गुजारने का मौका मिला है। निश्चित ही अशफाक उल्ला खाँ उस दौर के क्रांतिकारियों में एक मजबूत चरित्र के रूप में नजर आते हैं। जहाँ एक तरफ संवेदनशील और प्रगतिशील कवि, शायर के रूप में हमे नजर आते है वही वे एक कुशल पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में दृढ़ता से खड़े दिखते हैं और अन्त तक उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया। प्रमुख क्रांतिकारी नेता अमर शहीद सरदार भगत सिंह ने लिखा है कि -''आप (अशफाक) श्री राम प्रसाद के दायें हाथ थे, मुसलमान होने के बावजूद आपको कट्टर आर्य समाजी धर्म से हर दर्जे तक का प्रेम था। दोनों प्रेमी एक बड़े काम के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर अमर हो गये।''

शहीदे आज़म अशफाक उल्ला खाँ ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। उनका यह उत्सर्ग आने वाली पीढ़ियाँ सदैव स्मरण करेंगी तथा उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से हमेशा प्रेरणा पाती रहेंगी।

अशफाक के शब्द आज भी स्मृति में है और गूँजते हैं -

''कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है,
रख दे कोई जरा - सी खाके वतन कफन में।''

---------------- ,,, ------------------

अध्याय-एक

अध्याय-एक

प्रस्तावना

मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव है कि वह दासत्व स्वीकार नही करना चाहता। इसी अस्वीकार के कारण स्वतंत्र होने हेतु अनेक आन्दोलन हुए। मनुष्य स्वतंत्र होने के लिए अनेक उपाय अपनाता है। वह संघर्ष करता है। वह लड़ता है, जीवन कुर्बान करता है लेकिन गुलामी के धागे में बँधना स्वीकार नही करता है। इतिहास गवाह है कि व्यक्ति को कभी गुलामी कबूल नही हुई और यह बंधन यदि विदेशी हो तो मुक्त होने की छटपटाहट बढ़ जाती है। भाषा, संस्कृति का मेल हो तो कुछ देर के लिए दासत्व बर्दाश्त किया जा सकता है। यही कारण था कि देशी दास भाव ने कभी बड़ा आन्दोलन खड़ा नही किया लेकिन जब वही भाव विदेशी हो गया तो बेचैनी बढ़ गयी। प्राचीन काल पर दृष्टि डालें तो गुलामी की मानसिकता और स्पष्ट हो जायेगी। मिश्र में दासों को (युद्धबंदी) मुर्दा कहते थे और मार डालते थे। ये युद्धबंदी अपने श्रम के कारण लाभकारी सिद्ध हुए, तब इन्हें मारना बन्द हो गया और 'जिन्दा मुर्दा' की संज्ञा में होते हुए दास बनाये गये। रोम में दासों को इटली भेजा जाता था। यूनान में एट्टिका के किसान कर्ज के कारण दास बने।[1]

भारत की यह विशेषता रही है कि दास प्रथा के बावजूद भारत की मानवतावादी एवं उदारवादी दृष्टि रही है। इतिहास में उत्पीड़न से मुक्ति के लिए वीरतापूर्वक संघर्षों का वर्णन मिलता है। जबकि विदेशी ताकतें भारत के उदारवादी गुणों का लाभ उठाती रही हैं। तमाम कारणों के बावजूद भारत में क्रांति का अभियान अपने सुपरिणाम तक चला। जिसका नेतृत्व महान चिन्तकों, अदम्य साहस से भरे देशभक्तों ने किया। परिणाम यह हुआ कि क्रान्ति सफल हो गयी,

---

1- प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय, प्रगति प्रकाशन, पृष्ठ-45, 143

विजयी क्रांति ने नया प्रभात देखा था और हम 1947 में स्वतंत्र राष्ट्र के इतिहास का शुभारम्भ देख सके।

भारत के इस महान आन्दोलन का शुभारम्भ स्वतंत्रता संग्राम (1857) के क्रांतिकारी पृष्ठभूमि से हुआ। इस संघर्ष का प्रारम्भ सिपाही मंगल पाण्डे के विद्रोह से हुआ जिसे कुछ इतिहासकारों ने **'सिपाही विद्रोह'** की संज्ञा दी। लेकिन अनेक ऐतिहासिक खोजों/अनुसंधानों से यह भी सिद्ध हो जाता है कि यह देश की गुलामी के विरुद्ध एक सुनियोजित जनक्रांति थी। इसे ब्रिटिश सत्ता द्वारा कुचलने का पूरा प्रयास किया गया। अंग्रेजी सत्ता ने किसी को तोप से, किसी को तलवार से और अनेक क्रांतिकारियों को फाँसी के तख्ते पर लटका कर इस इनक्लाब को दबाने की पूरी कोशिश की। फाँसी का फन्दा हो या बर्बर शासकों द्वारा कठोर कारावास का असहनीय कष्ट, राष्ट्रप्रेमी वीरों की राष्ट्र उपासना और गगनचुम्बी साहस को कोई भी सत्ता वैचारिक धरातल पर दबा न सकी थी। स्वतंत्र भारत के निर्माण में अनेक वीरों ने अपने प्राणों की आहुतियां मुस्कुराते हुए दी। यह दिगर बात है कि कुछ ऐसे भी नाम है जिनका उल्लेख इतिहास की पुस्तकों में नही हुआ।[1] लेकिन ऐसे भी महत्वपूर्ण नाम हैं जिनका उल्लेख इतिहास की पुस्तकों की गरिमा बढ़ाता है। आज की पीढ़ी उन नामों से ऊर्जा पाती है और गौरवान्वित होती है। यही कारण है कि भारतीय राष्ट्र के जीवन में समाजवाद से लड़ने वाली जुझारू शक्तियाँ आज भी हमारे पुरुषत्व, हमारे जीवन और हमारे राष्ट्र-प्रेम को रह-रह कर चुनौती दे रही हैं।

1- काकोरी स्मृतिदिवस शहीद प्रस्तावना लेखक - (हेमवतीनंदन बहुगुणा) - डा0 भगवानदास माहौर

1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक बहुत महत्वपूर्ण घटना थी और इसमें संदेह नही है कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की गिनती आधुनिक समाज के सबसे बड़े आन्दोलनों में की जाती है।[1] इस आन्दोलन को कोई भी नाम मिले लेकिन यह सत्य प्रतीत होता है कि यह एक व्यापक जन आन्दोलन था, इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा जा सकता है। क्रांति के इस संग्राम को पाकिस्तानी इतिहासकारों ने आजादी की जंग कहा है।[2] 1857 तक अंग्रेज भारत में शक्तिशाली तो हो ही चुके थे। देशी राजे और जनता दोनों ही आतंकित थे। लेकिन यह सत्य है कि शासन सदैव आंतक से नही चलाया जा सकता था। हॉ यह हो सकता है कि कोई बुद्धिमान विदेशी शासक अपनी नीति कुशलता से किसी देश में अपना शासनकाल बढ़ा सकता है लेकिन आंतक के बल पर उसे स्थायित्व प्रदान नहीं कर सकता। 1857 का विद्रोह भले सफल नहीं हुआ लेकिन उसके अनेक अनुभव प्राप्त हुए। अनुभव का धरातल चाहे अंग्रेज हो चाहे भारतीय। अंग्रेजों ने अनुभव किया कि हिंसात्मक कार्यो में वे भारतीयों से बढ़कर हैं। भारतीयों ने अनुभव किया कि उनमें आपस में फूट थी, कुछ अंग्रेजों के पक्ष में, कुछ विद्रोह में सहायता दे रहे थे। साथ ही उन्होंने यह भी अनुभव किया कि जो संगठन उन्होंने बनाया था वह देश के दूर-दूर के भागों को अपने में समेटने में समर्थ नही था।[3] तमाम आरोहों अवरोहों के बावजूद क्रान्ति जब एक बार मन में बैठ जाती है तो परिणाम तक जाये बिना थम नहीं सकती। क्रांति की यात्रा धीमी पड़ सकती है, घटनाएं थम सकती हैं लेकिन भीतर की आग सुलगती रहती है। राख के ढेर में कहीं न कहीं एक चिंगारी जीवित रह जाती है।

1- भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, विपिन चन्द्र - पृष्ठ XIII
2. द इडियन पोलिटिकल सिस्टम, नार्मन डी0 यामर, पृष्ठ-83
3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, पृष्ठ-27

विदित है कि भारतवर्ष एक दिन में अंग्रेजों के अधीन नहीं हुआ था। लगभग सौ साल का षड्यन्त्र, विश्वासघाती चाल, कूटनीति भरी दृष्टि के बाद अंग्रेजों का परचम लहराया है। 1857 के पहले भी विद्रोह हुआ था। निजाम की फौज की तृतीय घुड़सवार सेना ने 1855 के 21 सितम्बर को विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया। फौज के अध्यक्ष ब्रिगेडियर मैकेन्जी के शरीर पर दस घाव आये और वे किसी तरह जान लेकर भागे। विद्रोहियों का घर लूट लिया गया। इस विद्रोह के नेता भी मुसलमान थे।[1] स्पष्ट है कि 1857 के पूर्व कई विद्रोह हुए जो इतिहास में रेखांकित हैं। 1857 के बाद महत्वपूर्ण विद्रोहों में किसान विद्रोह का जिक्र आता है। किसान आन्दोलन की पृष्ठभूमि पहले से ही तैयार थी। हाउस ऑफ लार्ड्स की पाँचवी रिपोर्ट (1821) कहती है कि बंगाल में इस्तमरारी बन्दोबस्त की वजह से जितनी गरीबी फैली है, और भूमि अधिकारों में जितना बड़ा परिवर्तन हुआ है, उतना उसी समय में महज कानून के जोर से और किसी देश में या किसी युग में शायद नहीं हुआ होगा।[2] देश की अधिक आबादी किसानों की है सो यह आग कई रूपों में फैली। कई क्रांतियों ने अपने को पुनः टटोला। वैसे भी किसान आन्दोलन देश के कई भागों में फैला था। मसलन-संथाल विद्रोह (1855-56), नील की खेती करने वाले किसानों की हड़ताल (1860), मराठा किसान विद्रोह (1875-76) मोपला बगावत (1836-96) बंगाली किसानों की बगावत (1872) आदि ने भी क्रांतिकारी आन्दोलन की मानसिकता पर असर डाला।

---

1. भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ-3 (नोट-इस विद्रोह का विवरण श्री निवारण चक्रवर्ती के बंगला लेख से संकलित किया गया है)
2. आजादी के दस्तावेज, ख्वाजा हसन निजामी, पृष्ठ-14

क्रान्तिकारियों को जाने-अनजाने इनसे ऊर्जा मिलती रही। बीसवीं सदी तक आते-आते किसानों का प्रतिरोध साम्राज्यवाद-विरोधी प्रतिरोध में समाहित हो गया। किसान साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन में शरीक हो गये। अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में किसानों ने अहम भूमिका निभाई।[1]

गीता में कहे गये वचन कि **'अन्याय के साथ समझौता नहीं, अपितु उसका निवारण करो'** के अनुसार भारतीय जनता अपने हक हेतु संघर्ष कर निवारण करने का संकल्प ले चुकी थी। 1885 से 1905 के बीच ऐसी घटनाएँ घटीं जिससे युवाओं का अंग्रेजों की न्याय प्रियता से विश्वास उठने लगा था। 1885 में कॉंग्रेस का जन्म हुआ। उस समय हमें कोई क्रांतिकारी शक्ति देखने को नही मिलती, जो कांग्रेस के पीछे रही हो या साथ निभाती रही हो। क्रांतिकारी विचार का कोई व्यक्ति कांग्रेस में नही था। मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है कि 'कांग्रेस का जनता से उस समय कोई सम्बन्ध नही था, इसलिए उसकी कोई पूछ भी नही थी। कांग्रेस के आरम्भ के बीस वर्ष तक उस पर उदारवाद का प्रभाव रहा।[2] कांग्रेस समय-समय पर इग्लैंड में अपने शिष्ट मंडल भेजती रही। जिसका फल यह हुआ कि ब्रिटेन में भारतीय मांगों के प्रति सहानुभूति रखने वाला एक वर्ग बन गया। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के अनुसार 'अंग्रेजों की न्याय, दया तथा बुद्धि की भावना में हमारा दृढ़ विश्वास है। संसार की महानतम प्रतिनिधि सभा, संसदों की जननी, ब्रिटिश कॉमन्श सभा के प्रति हमारे हृदय में श्रद्धा है। अंग्रेजों ने सर्वत्र प्रतिनिध्यात्मक आदर्श पर ही शासन की रचना की है।' कांग्रेस के बारहवें अधिवेशन में रहीमतुल्ला सयानी ने कहा-'अंग्रेजो से बढ़कर सच्चरित्र तथा सच्ची जाति इस सूर्य के प्रकाश के नीचे नहीं बसती।'[3]

---

1. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, विपिन चन्द्र, पृष्ठ-28
2. भारत में राष्ट्रीयता का विकास, डॉ0 एस0एल0 नागोरी, पृष्ठ-85
3. एनीबेसेन्ट : हाउ इण्डिया रॉट फोर फ्रीडम, पृष्ठ-232 से उद्धृत

दादा भाई नौरोजी ने कहा कि - 'यद्यपि जॉन बुल तनिक बुद्धि के हैं, परन्तु यदि उसे एक बार कोई बात सुझा दी जाये कि वह अच्छी और उचित है तो आप उसे कार्यरूप में परिणित किये जाने के प्रति विश्वस्त हो सकते हैं। ''दादा भाई नौरोजी का अंग्रेजों की न्यायप्रियता में विश्वास था। वे यह भी कहते थे कि हम पुरुषों की तरह बोलें और घोषणा कर दें कि हम पूर्णतः राजभक्त हैं। अंग्रेजों की न्यायप्रियता पर किसी बड़े नेता को शायद ही संदेह हो। गोपाल कृष्ण गोखले ने कहा था - 'अंग्रेज जाति की न्यायप्रियता तथा उदारता में हमारी अबाध निष्ठा है।' चाहे फिरोजशाह मेहता हों या सर टी० माधवराव, प्रायः सभी ने अंग्रेजों की न्यायप्रियता के गुण गाये। डॉ० सीता रमैया का यह कथन उल्लेखनीय है कि - 'उदारवादी नेता इस बात पर विश्वास करते थे कि अंग्रेज स्वभाव से ही न्यायप्रिय होते हैं। अतः यदि उन्हें भारतीय दृष्टिकोण का सही ज्ञान करा दिया गया तो वे भारतीय दृष्टिकोण को स्वीकार कर लेंगे।[1] लेकिन प्रश्न था कि भारतीय मानसिकता का ठीक प्रकार से परिचय कौन देगा। खास बात यह भी थी कि क्रान्तिकारी अंग्रेजों का गुण नहीं गाते थे। चाहे न्यायप्रियता हो या शासन-सत्ता, कोई भी विषय/प्रकरण हो, अंग्रेज सुपाच्य नहीं थे। क्रांतिकारियों को दासत्व का बोध होता था।

1857 के बाद यह लगता था कि आजादी की जंग समाप्त हो गयी है लेकिन ऐसा नही था। क्रांति के बीज हृदय में अंकुरित होते रहे, फूटते रहे, बढ़ते -पकते रहे। यही कारण है कि मनुष्य की जीने की इच्छा जिजीविषा संघर्षो हेतु प्रेरित करती है और इतिहास का निर्माण करती है। महात्मा गाँधी के भारतीय राजनीति में आने के पहले स्वतंत्रता के नाम पर जो कुछ भी घटा वह क्रांतिकारियों की भूमिका ही थी।

---

1. भारत में राष्ट्रीयता का विकास, डा० एस एल नागोरी, पृष्ठ 86

तब ऐसा नहीं था कि यह हिंसा है और यह अहिंसा। विद्वानों का मानना भी है कि हिंसा-अहिंसा का प्रश्न खड़ा करके किसी देश की आजादी हेतु लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती है।

जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि अंग्रेजों की न्यायप्रियता क्रांतिकारियों को पच नही रही थी। उदारवादी नेता भी क्रांतिकारियों के लिए मानसिक रूप से सहयोग देने की कौन कहें उन्हें वे देखना तक न चाहते थे। युवा वर्ग 'राजनीतिक भिक्षावृत्ति' का विरोध करने लगा था। अपनी वस्तु लेने में भिक्षा जैसी बात युवा वर्ग की समक्ष में नही आती थी। उन्हें यह ज्ञात था कि देश हित में किसी भी परिणाम तक जाने के लिए कठिन संघर्ष आवश्यक है। जब संघर्ष होगा तो क्रांति होगी और इस हेतु हिंसा-अहिंसा का रोड़ा ठीक नही था। युवाओं की धारणा थी कि अंग्रेज स्वेच्छा से स्वशासन नहीं देंगे। स्वेच्छा के बिना किसी वस्तु को प्राप्त करने हेतु लड़ाई तो आवश्यक थी। वैसे भी क्रांतिकारी युवा हिंसात्मक साधनों में विश्वास रखते थे और उनका विश्वास अटल था। वे विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करते थे। वे आत्म निर्भर होना चाहते थे। युवाओं को स्वतंत्र कार्यों में विश्वास था। बालगंगाधर तिलक ने कहा भी है कि 'हमारा उद्देश्य आत्म निर्भरता है, भिक्षावृत्ति नहीं।'

क्रांतिकारी आन्दोलन में संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) का प्रमुख स्थान रहा है। 1857 के युद्धों में यही प्रान्त मुख्य केन्द्र था। रौलट की रिपोर्ट में लिखा है कि 'संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध और बंगाल के बीच बिहार व उड़ीसा प्रान्त है। यह प्रान्त भौगोलिक दृष्टि से भारतवर्ष का हृदय है। इस प्रान्त में बनारस और इलाहाबाद है जो हिन्दुओं की दृष्टि में पवित्र है, आगरा है जो किसी जमाने में मुगल साम्राज्य का केन्द्र था और लखनऊ है जो मुस्लिम राज्य की राजधानी थी।

1857 के युद्धों में यही प्रान्त मुख्यतः केन्द्र था।[1] उ0प्र0 में क्रांतिकारी आन्दोलन बंगाल से फैला और इस प्रान्त का क्रांतिकारी आन्दोलन तत्कालीन सत्ता से खासा प्रभावित भी रहा। इसी समय भारत में दूसरी तरफ क्रांतिकारी आन्दोलन का भी जन्म हुआ। उग्रवादी प्रतिरोध में विश्वास रखते थे। ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार आदि उनके मुख्य साधन थे, जबकि क्रांतिकारी हिंसात्मक साधनों में विश्वास रखते थे एवं बम व बन्दूक आदि उनके मुख्य साधन थे। इन दोनों विचारधाराओं के विषय में निहालसिंह ने लिखा है कि 'इन दोनों में धार्मिक भावना समायी हुई थी, किन्तु दोनों का मार्ग अलग था। उनमें आत्म बलिदान की भावना एवं स्वतंत्रता की भावना थी। प्रबल देश प्रेम था एवं विदेशी राज्य के प्रति घृणा थी।[2] क्रांतिकारियों में उत्साह भरने का काम समाचार पत्रों ने खूब किया। नवम्बर 1907 में स्वराज्य नाम से इलाहाबाद से पत्र निकला। यहीं से सर्वप्रथम इस शांतिपूर्ण प्रान्त में क्रान्तिकारी प्रचार हुआ। इस अखबार का स्वर प्रारम्भ से ही सरकार के विरुद्ध था। यही नही यह अखबार दिन प्रतिदिन गरम होता गया। इस पत्र के एक के बाद एक इसके आठ सम्पादक हुए जिसमें कई को आपत्ति जनक लेखों के कारण लम्बी सजाएं हुई। इस पत्र ने बड़े जोर-शोर से राजद्रोह फैलाया। यह पत्र क्रान्तिकारियों के लिए ऊर्जा भर रहा था। इलाहाबाद से ही 1909 में 'कर्मयोगी' निकला। स्पष्ट है कि लेखनी ने ओज भरना शुरू कर दिया था। क्रान्तिकारी गतिविधियों पर दृष्टि दें तो बनारस षणयन्त्र से क्रान्तिकारी गतिविधियाँ अपने चरम पर थीं। बड़े नेतृत्व कर्ताओं के बयान आग में घी का काम कर रहे थे।

1. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथगुप्त, पृष्ठ-84
2. भारत में राष्ट्रीयता का विकास एस0एल0 नागोरी, पृष्ठ-120

क्रान्तिकारियों को तो जोश चाहिए था, ऊर्जा चाहे जहाँ से मिले। एक-एक वाक्य असरदार साबित हो रहे थे। पूर्णरूप से युवा सहमत थे कि उन्हें किसी भी प्रकार की भिक्षा नहीं चाहिए। तिलक ने 15 जून 1897 को **'केसरी'** में लिखा कि - 'यदि हमारे घर में चोर घुस आये और हममें उनको घर से बाहर निकालने की सामर्थ्य न हो तो हमें बिना झिझक उन्हें घर के अन्दर बन्द करके जला देना चाहिए'। लाला लाजपत राय ने कहा कि - 'अंग्रेज भिखारी से सबसे अधिक घृणा करते हैं तथा मैं सोचता हूँ कि भिखारी घृणा के पात्र हैं भी। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सिद्ध कर दे कि हम भिखारी नही है।'[1]

1909 का एक्ट लागू होने के बाद अंग्रेजी शासन का विरोध करने वाली एक मात्र पार्टी क्रांतिकारी पार्टी थी। यह क्रांतिकारी पार्टी जनता में चर्चा का विषय बनी हुई थी। आम जनता क्रांतिकारियों का समाचार सुनने की हमेशा इच्छुक रहती थी। क्रांतिकारियों को दी जाने वाली सजाओं में जो कड़ी और कठोर अमानवीय हुआ करती थी, से जनता में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध रोष बढ़ जाता था। बहुत लोग बमबारी जैसी घटनाओं के होने को सही ठहराते थे। ऐसा विश्वास होने लगा था कि ऐसी ही घटनाओं से देश आजाद हो जायेगा। किसी भी अंग्रेज अफसर की हत्या से सारे देश में चर्चा होती थी और जनता में हलचल मच जाती थी। अधिकांश लोग समाचार पत्रों में डकैतियां, अफसरों पर हमले की घटनाओं का समाचार बड़े चाव से सुनते-पढ़ते थे। संयुक्त प्रान्त में 1908 में बनारस में शचीन्द्रनाथ सन्याल द्वारा एक क्लब की स्थापना से क्रान्तिकारी गतिविधियों की

---

1. भारत में राष्ट्रीयता का विकास, डॉ0 एस0एल0 नागोरी, पृष्ठ-177

शुरुआत हुई।[1] इस क्लब का नाम अनुशीलन समिति रखा गया। यह समिति 1914 तक निष्क्रिय रही। उसी वर्ष रास बिहारी बोस ने संयुक्त प्रान्त की गतिविधियों का संचालन अपने हाथ में ले लिया। इसके बाद तो संयुक्त प्रान्त का क्रांतिकारी स्वर ओज से भर गया। क्रांतिकारी स्वर के उग्र होने के कई कारण हो सकते हैं लेकिन एक महत्वपूर्ण कारण 'आर्थिक कारण' भी था। लार्ड बेकन ने कहा है कि - 'आर्थिक दरिद्रता और आर्थिक असंतोष क्रांति को जन्म देता है।'

यह निश्चित है कि असंतोष चाहे जिस प्रकार का क्यों न हो वह क्रांति को जन्म देता ही है। शाहजहाँपुर भी इससे अछूता नही रहा। रजनी राय दत्त का मत है कि 1857 के विद्रोह से यह बात साफ हो गयी कि सतह के नीचे जनता में असंतोष और बेचैनी की भयानक आग सुलग रही है। इस असंतोष की आग के कारण अंग्रेज शासकों में ऐसी घबराहट पैदा हुई जो इसके बाद की उनकी सारी कठिनाइयों में दिखायी देती है।[2] यह बेचैनी और यह सुलगती आग शाहजहाँपुर में भी थी। शाहजहाँपुर पर एक नजर दें तो अशफाक के व्यक्तित्व और उनकी क्रांतिकारी भूमिका का संस्कार स्पष्ट हो जायेगा। रामायण और महाभारत काल से होता हुआ शाहजहाँपुर वाजिद अली शाह के शासनकाल तक अपनी पहचान और महत्वपूर्ण छवि पर कायम रहा। अंग्रेज अपने स्वभाव और अपनी नीतियों के कारण अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर अपने अधिकार में कर लेने का कुचक्र रचने लगे थे। नवाब वाजिद अली शाह ने आरोपों का खण्डन किया। वे किसी भी मूल्य पर अवध को ब्रिटिश सत्ता के हाथों नही सौपना चाहते थे। नवाब ने महारानी विक्टोरिया को एक स्मृति पत्र दिया कि यदि कम्पनी के शासन के अधीन कानपुर, फर्रुखाबाद और शाहजहाँपुर के नवाब के अधीन जिलों की

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, रामगोपाल, पृष्ठ-207
2. भारत वर्तमान और भावी, रजनीपाल दत्त, पृष्ठ-119

तुलना की जाये तो स्पष्ट हो जायेगा कि नवाब के अधीन इलाके की जनता ज्यादा सरसब्ज और खुशहाल है।[1] यह तो स्पष्ट तब भी था कि अंग्रेजी शासन भारतीयों को सुखकर नही था। 1857 के प्रमाणिक लेखक सर जगन लिखते हैं कि 'शाहजहाँपुर में ब्रिटिश अधिकारियों को शहर के लोगों द्वारा विद्रोह करने का भय था।[2] सत्ता हमेशा क्रांति से भय खाती है। अंग्रेज भी विद्रोह से डरे हुए थे और यह भय वास्तविकता में तब बदल गया जब 31 मई 1857 को लगभग 20-22 विद्रोही तलवार लिए चर्च में घुस गये। इन विद्रोहियों का जवाहर राय नामक व्यक्ति नेतृत्व कर रहा था। विद्रोहियों में अन्य प्रमुख विद्रोही थे - गंगा दुबे, महादेव, राम नरायण दुबे, बिन्द्रा सिंह, रामधीन सिंह, नारायण पाण्डे, ननकू व शिव चरण। यह बात और थी कि इन विद्रोहियों को गिरफ्तार किया गया, इन पर मुकदमा चला, जेल भी गये और फिर मुक्त कर दिये गये। शाहजहाँपुर की क्रांति में गोरखपुर के मौलवी सरफराज अली का भी महत्वपूर्ण योगदान था।[3] सरफराज अली में विशेष गुण थे। उनका नेतृत्व कभी असफल नही रहता। शाहजहाँपुर अब क्रांतिकारियों का अड्डा बन गया। अब क्या था युवा का खून उमाँच बाँधने लगा और फिर क्रांति का दौर रुका नहीं। डॉ0 ए0डफ ने लिखा है - 'यदि इस विद्रोह को बहुसंख्यक जनता का समर्थन प्राप्त न होता और सहानुभूति न मिली होती और केवल सैनिकों द्वारा किया गया बलवा मात्र ही होता तो प्रथम दो चार बड़ी विजयों के उपरान्त यह बगावत शान्त हो जाती।

1.वाजिद अली शाह और अवध राज्य का पतन, परिपूर्णानंद वर्मा, पृष्ठ-35

2.हिस्ट्री ऑफ दि इण्डियन म्यूटनी खण्ड-3, सरजान विलियम्स, पृष्ठ-578

3.स्वतंत्रता आंदोलन में शाहजहाँपुर का योगदान, डॉ0 एन0सी0मेहरोत्रा, पृष्ठ-41

.....प्रतीत होता है कि यह सैनिकों का साधारण विद्रोह नहीं, यह विप्लव है, क्रांति का विस्फोट है'।[1] राष्ट्रीय चेतना जगाने का काम आर्य समाज ने भी जमकर शाहजहाँपुर की धरती से किया। स्वतंत्रता की पहली पंक्ति के शब्द स्वामी दयानंद सरस्वती के मुख से ही निकले थे। क्रांति की धधकती ज्वाला से भरपूर क्रांति का हवन कुण्ड वैचारिक समिधा से प्रज्ज्वलित हो रहा था। एक तरफ युवा वर्ग का गर्म खून और दूसरी ओर वैचारिक आक्रोश के तेजस्वी स्वर....फलस्वरूप राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला जैसे युवा इस वैचारिक भूमि से अछूते नही रहे। राम प्रसाद बिस्मिल पूर्ण रूप से आर्य समाजी हो गये और उन्हीं के मित्र अशफाक बिना किसी हिन्दू-मुस्लिम भेद के घनिष्ठ मित्र ही नहीं देश प्रेमी भी हुए, जिन्होंने राम प्रसाद की ही तरह भारत भूमि को अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। भारतीय क्रांतिकारियों के इतिहास में अशफाक की दी हुई प्राणों की आहुति सदैव रेखांकित होती रहेगी।

1916 की राजनैतिक घटनाएं महत्वपूर्ण रहीं और शाहजहाँपुर के मामलों में तो खास थीं। इसी काल में हसरत मोहाली, शौकत अली, मोहम्मद अली, शमसुद्दीन को नजरबन्द रखा गया।[2] क्रांतिकारी परमानन्द को लाहौर षड़यन्त्र केस (1916) के तहत फाँसी की सजा सुनाकर क्रांतिकारियों को विचलित कर दिया। राम प्रसाद बिस्मिल ने आर्य समाज मंदिर में स्वामी सोमदेव के समक्ष बदला लेने की प्रतिज्ञा की।[3] सन् 1916 में ही हसरत मोहानी के साथ शाहजहाँपुर में शमसुद्दीन को भी बन्दी बनाया। अशफाक को क्रांति का वातावरण मिला। वे दिन प्रतिदिन क्रांति हेतु निखरते चले गये।

---

1. दि इण्डियन रिबेलियन, डा0ए0डफ, पृष्ठ 241
2. पूर्वा-जगदीशचन्द्र दीक्षित, पृष्ठ-83
3. जांबाज पत्रिका, डा0 एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-47

राष्ट्र हेतु समर्पित होने का भाव उमॉंचें बाँधने लगा था।

अशफाक उल्ला की पारिवारिक पृष्ठिभूमि पर एक नजर दें तो स्थिति और स्पष्ट हो जायेगी। अशफाक उल्ला खाँ अंग्रेजी सरकार की गतिविधियों की बखूबी जानकारी रखते थे। 1857 से ही अशफाक उल्ला का मातृपक्ष सरकारी पदों पर कार्य करता चला आ रहा है। किसी भी व्यक्ति के लिए उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का खास महत्व होता है। अध्ययन से पता चला कि अशफाक उल्ला खाँ के पूर्वजों ने सरकार के लिए जासूसी भी की थी। अशफाक उल्ला खॉ को जब यह ज्ञात हुआ कि मातृपक्ष (ननिहाल) के लोग अंग्रेजों के प्रति भक्ति भावना रखते है तो वे स्वयं को (लज्जित) हीन समझने लगे, उन्हें अपने आप से शर्म आने लगी। लेकिन उन्हें किसी भी भाँति अपने विश्वास को बनाये रखना था। पितृपक्ष पर जब उनका ध्यान गया तो उन्होंने पाया कि पिता की ओर से स्वाधीनता के उपासक की सुगंध आ रही है। वैसे अशफाक के पिता सब इन्स्पेक्टर थे। अशफाक को युद्ध विषयक पुस्तकें पढ़ने का शौक बचपन से ही था। वे क्रांतिकारियों के विषय में अनेक बातें ध्यान से सुनते थे। अशफाक खुदीराम बोस और कन्हाई दत्त के सम्पर्क में आये। अशफाक के दिल में दबा हुआ क्रांतिकारी बीज अंकुरित होने लगा। अशफाक देश के लिए घातक संकीर्ण मनोवृत्ति का परित्याग कर बिना किसी भेद भाव के राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बचाये रखना चाहते थे, इस हेतु किसी भी प्रकार के कार्य करने से वे हिचकते नही थे। यह तो स्पष्ट ही था और सत्य भी कि क्रांतिकारी आन्दोलन राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष की एक बलवती व प्रभावोत्पादक धारा थी। शचीन्द्र नाथ सान्याल का कथन था कि **'क्रांतिकारियों ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक तथा पूरक भूमिका निभाई।'**

अशफाक उल्ला खाँ को जहाँ सबसे ज्यादा प्रेरणा मिली वह था मैनपुरी काण्ड। शाहजहाँपुर का महत्वपूर्ण योगदान था मैनपुरीकाण्ड में।

इस काण्ड के तहत लालारामाधीन, राम प्रसाद बिस्मिल, देवनारायण, गंगा सिंह चन्देल, राजाराम बाजपेयी, कालीचरन शर्मा ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। सर्वविदित है कि यही मैनपुरी काण्ड है जिससे प्रेरित होकर अशफाक उल्ला ने भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने का संकल्प लिया। इसके बाद अशफाक उल्ला पं0 राम प्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में आये, लेकिन प्रथम मिलन में अशफाक को निराशा हाथ लगी। लेकिन होना तो कुछ और ही था। तमाम आरोहों-अवरोहों के बाद कट्टर मुस्लिम परिवार के अशफाक और आर्य समाजी पं0 राम प्रसाद बिस्मिल के बीच धार्मिकता जैसी बात आड़े नही आई और वे एक दूसरे के गहरे मित्र बन गये। अब क्या था अशफाक की प्रसन्नता का पारावार न था। वे एक ऐसे क्रांतिकारी के मित्र बन गये जिनके नाम के स्मरण मात्र से ओज भर जाता था। दो देश-भक्त एक जान, एक मन, एक काम, एक विचार हो गये और यह गति अशफाक को ऊँचाई पर ले जाकर ही दम ली। भेद भाव के सारे प्रश्न समाप्त हो गये थे। राम प्रसाद बिस्मिल ने जिन युवकों को शाहजहाँपुर में क्रांतिकारी दल की ओर प्रवृत्त किया उन युवकों में अशफाक उल्ला खाँ प्रमुख थे। जांबाज अशफाक उल्ला जब क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गये तो उन्होंने इस धारणा को मिथ्या सिद्ध कर दिया कि मुसलमान भारत की स्वाधीनता के लिए बलिदान करने में पीछे रहने वाले हैं। राम प्रसाद बिस्मिल का साथ मिल जाने के कारण अशफाक का जीवन ही भिन्न हो गया। अब वे सामान्य नागरिक नहीं रह गये थे। अब वे देश के लिए जरूरी थे। वे इतिहास के लिए आवश्यक थे। वे क्रांतिकारी यात्रा में प्रमुख मार्ग थे।

देश के लिए मर मिटने वाले उन विशेष लोगों में वे थे जिनका सारा धर्म, कर्म, विश्वास, दिनचर्या, विचार सिर्फ राष्ट्र की स्वतंत्रता में लगा था।

अशफाक उल्ला खाँ भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता का सपना लेकर क्रांतिकारी बने थे। वे एक प्रगतिशील समाज की संरचना चाहते थे। यही नही वे समाजवादी विचारधारा के पोषक थे। स्वयं अशफाक ने कहा है - 'मैं हिन्दुस्तान की ऐसी आजादी का ख्वाहिशमंद हूँ जिसमें गरीब खुश और आराम से रहते और सब बराबर होते।' ऐसी विचारधारा के धनी अशफाक निश्चित ही स्तुत्य हैं। अशफाक के काल में क्रांतिकारियों का एक और प्रमुखकाम था कि वे अपने सभी मित्रों को, चाहे वे क्रांतिकारी हों या न हों, मातृभूमि के लिए आत्म बलिदान हेतु प्रेरित करते रहते थे। क्रांतिकारियों का कार्य महत्वपूर्ण तो था ही लेकिन इससे अधिक महत्व था स्वतंत्रता के संघर्ष में स्वस्थ और सार्थक वातावरण तैयार करना और वातावरण के काम में शायर दिल अशफाक उल्ला खाँ सबसे आगे थे। यह उनके पत्रों विचारों और काव्य रचनाओं से स्पष्ट हो जाता है। अशफाक बचपन में अपने मौलवी साहब की शिक्षाओं से खूब प्रभावित हुए। मौलवी साहब सच्चे उस्ताद थे जो अशफाक को तराशकर देश हित हेतु तैयार करने में खूब मददगार साबित हुए। सत्य है कि अशफाक को तराशने का यही समय था जब बाल मन के हृदय में ऐसा बीज बोया जा सके जो आगे चलकर वृक्ष बनकर पूरे समाज की अपनी छाया और अपने फल से सेवा कर सके। युवा वर्ग में उत्साह और प्रेरणा भर सके। मौलवी साहब की शिक्षाओं ने जाने-अनजाने अंग्रेजों के प्रति नफरत पैदाकर दी थी। यदि उनके बाल मन और युवा ऊर्जा की तुलना करें तो स्पष्ट हो जायेगा कि वे एक जांबाज सिपाही, एक विश्वसनीय और निष्ठावान कार्यकर्ता थे। वे मातृभूमि हेतु सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले मानव थे। उनकी बहुमुखी प्रतिभा से प्रायः सभी प्रभावित रहते थे।

आगे चलकर अशफाक उल्ला खाँ सशस्त्र क्रांति के ध्वजवाहक बने।[1] उनकी बहादुरी, निडरता और अदम्य साहस से भला कौन क्रांतिकारी अछूता था। देशभक्ति की प्रबल भावना तो थी ही, साथ ही उनमें हिन्दू-मुस्लिम को साथ-साथ लेकर चलने का अभूतपूर्व कौशल था। यही क्षमता, यही संवेदनशीलता अशफाक को समाज में लोकप्रिय बना सकी। कवि हृदय भावुक और संवेदनशील तो होता ही है। वे अपनी बात कविताओं, गज़लों एवं नज्मों में कहते थे। उनकी लिखी गयी कविताएं आज भी रेखांकित होती हैं।

अशफाक की कविताओं के बिना स्वतंत्रता संघर्ष हेतु लिखी गयी रचनाओं का अध्याय पूरा नही होता। अशफाक के पत्र और उनके वक्तव्य इतने प्रभावित करते हैं कि एक शान्त मन भी उद्वेलित हुए बिना नही रह सकता। अशफाक के बचपन का अध्ययन करने से स्पष्ट है कि पूत के पाव पालने में ही नजर आने लगे हैं। वे जब भी मेले जाते थे तो तलवार खरीदते थे। जिससे पता चलता है कि अशफाक के भीतर क्या रहा है। निश्चित ही यह गुण क्रांतिकारी होने का अंकुरण है।

मैनपुरीकाण्ड का प्रभाव तो अशफाक पर पड़ ही चुका था और वे बाकायदा राम प्रसाद बिस्मिल की सेना में शामिल भी हो गये थे। अशफाक अब क्रांतिकारी पहचान की संज्ञा से अलंकृत थे। छोटी-छोटी घटनाओं डकैतियों के बाद जब राम प्रसाद बिस्मिल की घोषणा के अनुसार वे काकोरी काण्ड में महत्वपूर्ण भागीदारी निभाने हेतु प्रथम पक्ति में खड़े हुए तो अशफाक की निष्ठा, उनका शौर्य, बल, साहस का आभास किये बिना रहा नही जा सकता है। वैसे तो अशफाक इस डकैती की योजना के पक्षधर नही थे। लेकिन स्वयं को मनाकर जब वे प्रस्तुत हुए तो उनके फौलादी तेवर और ताकतों की सभी साथियों ने सराहना की।

---

1. जांबाज (पत्रिका) सम्पादक, सुरेश चन्द्र मिश्र पृष्ठ-1

जिस तिजोरी के धन को लूटने की योजना थी, वह तिजोरी किसी अन्य साथी से नही अशफाक के हाथों से ही टूटी। अशफाक के मत को मन्मथनाथ गुप्त ने भी उचित ठहराया है। श्री गुप्त ने लिखा भी है कि - 'अशफाक उल्ला खाँ का विरोध किसी डर या भय से प्रेरित होकर न था। प्रत्युत वह बुद्धिमत्ता की आवाज थी। बाद के इतिहास ने सिद्ध कर दिया कि अशफाक सही थे और बाकी क्रांतिकारी गलती पर थे।[1] काकोरी ट्रेन डकैती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले फरार अशफाक को 8 दिसम्बर 1926 को दिल्ली में गिरफ्तार कर लिया गया। इसके पूर्व वे कई स्थानों पर घूमते रहे और फिर क्या होना था शायद अज्ञात मन को सब ज्ञात हो गया था।

काकोरी काण्ड आधुनिक इतिहास के क्रांतिकारी अध्याय में अतिमहत्वपूर्ण पृष्ठ बन गया है जिसका शीर्षक बनकर चमक रहे है अशफाक उल्ला खाँ। इस उल्लेखनीय काण्ड में पं0 राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी, मुकुन्दीलाल, मन्मथनाथ गुप्त, बनवारी लाल, शचीन्द्र नाथ वक्शी, मुरारीलाल, कुन्दन लाल के नाम महत्वपूर्ण हैं। कलम के धनी अशफाक उल्ला खाँ में भीम जैसी ताकत भी होगी, यह जानकर तो आश्चर्य ही लगता है। कहाँ कोमल कवि हृदय, कहां बज्र जैसी भुजाएं। अशफाक के विषय में अक्सर कहा जाता है कि -'अशफाक बड़े सुडौल और सुन्दर युवक थे। ऐसे सुन्दर व्यक्ति कम ही देखने को मिलते हैं। वे तैरने, घोड़े की सवारी, क्रिकेट-हाकी खेलने बंदूक चलाने का शौक रखते थे।[2] इससे यह भी स्पष्ट होता है कि वे शाहजहाँपुर के रईसों में गिने जाते थे।

---

1. जांबाज (पत्रिका) डा0 डी0एन मेहरोत्रा, पृष्ठ-48
2. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास-मन्मथनाथगुप्त, पृष्ठ-200

राम प्रसाद बिस्मिल से दोस्ती हुई और वे स्वयं को समर्पित कर बैठे। इसके बावजूद रामप्रसाद बिस्मिल से अशफाक की इच्छा व्यक्त (क्रांतिकारी कार्य) होती रही और मामला हमेशा टलता रहा।.... अन्त में जब अशफाक की इच्छा की प्रबलता देखी तो पं0 राम प्रसाद जी ने उन्हें अपने दल में सम्मिलित कर ही लिया।

ज्ञातव्य है कि अशफाक उल्ला खाँ कवि हृदय थे, उनके भीतर मनुष्यता, देश प्रेम, भाई चारा, गंगा-जमुनी संस्कृति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। वे संवेदनाओं की पराकाष्ठा से परिचित थे। संवेदित हृदय अपनी रचनाओं में अपना चित्र उकेर ही देता है। अशफाक की रचनाओं से पता चलता है कि वे काव्य तत्व के अच्छे जानकार थे। वे कविता की आत्मा को समझते थे। उन्हें पता था कि शायरी में अपनी बात कैसे कही जाती है। उन्हें यह भी पता था कि वे अपनी शायरी में किस वैचारिक भूमिपर खड़े हैं। कहना न होगा वे एक ऐसी जिन्दगी चाहते थे जहाँ आम आदमी खुली हवा में सांस ले सके। कैद मुक्त जीवन की अभिलाषा रखने वाले अशफाक ने बेहतरीन रचनाएं की हैं जो हमारे इतिहास की काव्यात्मक धरोहर हैं।

काकोरी काण्ड में गिरफ्तार अशफाक को अपने प्राणों की आहुति फाँसी के रूप में देनी पड़ी। लेकिन इसका फल यह हुआ कि क्रांतिकारियों द्वारा किया गया यह काण्ड पूरे भारत में सूचित ही नही चर्चित भी हुआ। क्रांतिकारियों द्वारा सम्पादित काण्डों में यह बड़ा काण्ड था। जिसका प्रभाव जनता पर ही नही अंग्रेजों पर भी पड़ा। अशफाक का व्यक्तित्व ही नहीं कृतित्व भी सारे भारत में फैला। यह भी कहा गया कि अशफाक उल्ला खाँ ऐसे पहले मुसलमान क्रांतिकारी थे जिन्हें षड़यंत्र के मामले में फाँसी दी गयी। उनका प्रयत्न था कि उनकी तरह अन्य मुस्लिम युवा भी क्रांतिकारी बने और मातृ भूमि की रक्षा करें। अशफाक तो हिन्दू मुस्लिम एकता के कट्टर समर्थक तो थे ही अपनी ही तरह औरों में भी यही भावना देखना चाहते थे।

अशफाक उल्ला खाँ के युग का इतिहास देखे तो काफी हद तक अनेक बातें स्पष्ट हो जायेंगी। यह भी स्पष्ट हो जायेगा कि क्रांतिकारी वातावरण तैयार करने में भले ही राम प्रसाद बिस्मिल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हो लेकिन कंधे से कंधा मिला कर चलने वाला यह मुस्लिम युवक अपने प्राणों की बलि देने पर अंशमात्र भी नही हिचका। अशफाक जब क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हुए तो वे छात्र थे। वे छात्र धर्म जानते हैं। युवा थे, युवा का अर्थ था ओजस्वी स्वर, गर्म खून, पैना विचार और कुछ विशेष करने की ललक, निष्ठा और अशफाक इन सब में खरे साबित होते हैं। यही उनके व्यक्तित्व की पहचान भी थी। युवा मन को योग्य साथ मिल गया तो निखरते देर नही लगती। अशफाक बिना समय गवायें दिन पर दिन ओजस्वी होते गये। क्रांतिकारी अशफाक काकोरी युग की बलिदानी उपज थे। जो 1927 में हिन्दू मुस्लिम एकता तथा स्वतंत्र भारत का सपना लेकर फॉसी के तख्ते पर झूल गये। आर्य समाजी विचारों के राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खॉ की मित्रता और मातृभूमि की आजादी के लिए शहीद हो जाना साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात थी जो हमारे इतिहास की बहुत बड़ी विरासत है।[1] काकोरी युग के क्रांतिकारियों में अशफाक उल्ला खॉ सबसे अधिक प्रगतिशील विचारों के थे। उनका सबसे मजबूत चरित्र था। एक तरफ वे प्रगतिशील शायर थे तो दूसरी तरफ एक कुशल पार्टी के कार्यकर्ता, जहाँ वे मजबूती और दृढ़ता के साथ खड़े दिखते हैं। काकोरी की घटना और अशफाक या अन्य क्रांतिकारियों का इतिहास में महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि वह समय 1921 के असहयोग आन्दोलन के बाद का समय था।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग-सुधीर विघाथी, पृष्ठ-10

महात्मा गांधी का प्रथम आन्दोलन लगभग समाप्त हो गया था। इस असफलता से लगभग राजनैतिक शून्यता आ गयी थी। इसी कारण इस काल में क्रांतिकारियों का संघर्ष सूचना लेने योग्य बनता है। काकोरी के क्रांतिकारियों ने अपना लक्ष्य समाजवाद को नहीं बनाया था लेकिन आगे चल कर दल के संविधान और दस्तावेजों से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने समाजवाद की ओर चलने की तैयारी कर ली थी। अशफाक ने कहा भी है कि - 'मैं हिन्दुस्तान की ऐसी आजादी का ख्वाहिशमंद हूँ जिसमें गरीब खुश और आराम से रहते और सब बराबर होते'। खुदा मेरे बाद वह दिन जल्द लाये जबकि छत्तर मंजिल लखनऊ में अब्दुल्ला मिस्त्री लोको वर्कशाप और धनिया चमार, किसान भी, मिस्टर खलील उज्जमाँ और जगत नारायण शुक्ला व राजा साहब महमूदाबाद के सामने कुर्सी पर बैठे हुए नजर पड़े।[1]

निश्चित ही समाजवाद का यह विचार अशफाक से निकला। वह भगतसिंह की भूल-भुलैया से आगे निकल कर वैज्ञानिक हो गया। प्रस्तुत शोध ग्रंथ में हम अशफाक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन काकोरी काण्ड का संदर्भ लेते हुए आगे के अध्यायों में करेंगे।

''कुछ आरज़ू नहीं है, है आरज़ू तो यह है
रख दे कोई ज़रा सी ख़ाके वतन कफ़न में।''

(अशफाक उल्ला खाँ)

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ-11

अध्याय-दो

अध्याय-दो

अशफाक उल्ला खाँ का जीवन परिचय

कोई भी राष्ट्र अपने वीर सपूतों पर गर्व करता ही है। देशभक्त सदैव पूजनीय और वंदनीय रहे हैं। किसी भी देश की संस्कृति, सभ्यता और उसकी परम्पराएँ यदि अपने सम्मानित रूप में जीवित हैं तो देश के वीर सपूतों के कारण ही। इन सब मामलों में भारत वर्ष भावनात्मक रूप से सदैव आगे रहा है। सही अर्थों में भारतीय वही हैं जो किसी जाति की तरफ आकर्षित न हो, किसी धर्म में बेवजह न बँधा हो, जो किसी पंथ का दास न हो, जो किसी प्रान्त की सीमा तक ही न सोचता हो। सच्चा भारतीय इन सब चीजों से ऊपर उठकर सिर्फ राष्ट्र देवोभव की भावना से ओतप्रोत होकर मनुष्य के लिए, मनुष्यता की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता है। भारतीय को किसी भाषा भेद या सम्प्रदाय भेद से क्या अर्थ, वह तो भारत भूमि को समर्पित है। ऐसी ही सार्थक भावनाओं संवेदनाओं से लबरेज भारतवीर अपनी भारत भूमि की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने में अंश मात्र भी संकोच नहीं करते है। यही कारण है कि ऐसे वीर सपूतों के प्रति आने वाली पीढ़ियाँ ऊर्जा और प्रेरणा पाती हैं और उन्हें देवतुल्य मानकर अभिनंदन करती रही हैं। यह सत्य है कि किसी भी देश के इतिहास की गौरवशाली सर्जना एक दिन में नहीं होती। इसके लिए एक काल खण्ड जुड़ा होता है। यह भी निश्चित ही है कि राष्ट्र हेतु किसी एक व्यक्ति द्वारा किया गया कार्य ही पर्याप्त नहीं होता लेकिन कुछ विशेष उपकरणों से निर्मित विशिष्टतम महापुरुषों का व्यक्तित्व और कृतित्व इतिहास बदल देता है। यह भी सत्य है कि किसी व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करने हेतु उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, उसका जीवन, बाल्यकाल और उसकी शिक्षाएं, उनके पूर्वजों पर एक दृष्टि तो देनी ही होगी।

अशफाक उल्ला खाँ के पाँव पालने में ही नजर आ गये थे। ठीक ही कहा गया है 'आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति' तथा "Coming events cast their shadows before" 'होनहार बिरवान के, होत चीकने पात।' कारण क्या है? स्पष्ट है कि पूर्वजों द्वारा दिया गया वातावरण निष्ठा से भरा था। परिवार ही ऐसा था कि जो भी कार्य व्यक्ति करता था वह उसे लगन और निष्ठा, ईमानदारी के साथ करता था। अशफाक के पूर्वज पठान थे और मूलतः पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त के निवासी थे। मुगल सम्राट शाहजहॉ के शासन काल में अशफाक के पूर्वज शाहजहाँपुर में आकर बस गये। शाहजहाँपुर जो पूर्वज आये थे उनका नाम खान नजर मुहम्मद खाँ था। मुहम्मद खाँ अकेले नही आये थे, उनके साथ अनेक भाई बन्धु भी थे। उनका सम्बन्ध सीमा प्रान्त के प्रसिद्ध कबीले **'नवाह'** से था। उस समय कई पठान कबीले सीमा प्रान्त से आकर शाहजहाँपुर में बस गये थे। जिस स्थान से मुहम्मद खाँ आये थे उस स्थान का नाम **'गुलबैले'** था।[1] यह संयोग ही था कि ननिहाल पक्ष भी अशफाक के पूर्वजों के कबीलों से ही सम्बद्ध था। अर्थ यह हुआ कि मातृ पक्ष और पितृ पक्ष की परम्पराएं काफी मिलती जुलती थीं। सो अशफाक का संस्कार क्रमबद्ध तरीके से समयानुसार होता गया। संस्कारों में भेद नहीं था।

पितृ पक्ष के पूर्वज और अशफाक उल्ला खाँ-

ज्ञातव्य है कि जो पूर्वज शाहजहाँपुर में आये उनका नाम खान नजर मुहम्मद खाँ था। भरे-पूरे परिवार के मुहम्मद खाँ अपने धर्म और ईमानदारी के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। वे एक कौम परस्त इन्सान थे। बाद में चलकर अशफाक का वंश कदनखेल के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-9

कदनखेल खानदान सभ्य और सुसंस्कृत माना जाता था। यह खानदान अपनी बात का धनी था, अपनी बात पर मर मिटने को तैयार रहता था। अंग्रेज सरकार भी इस खानदान को सभ्य और सीधा समझती थी।[1] पूर्वजों का शाहजहाँपुर में बसना और फिर आस-पास के गाँवों को खरीद लेना, उनके आराम से जीवन यापन का घोतक है। बाद में चलकर पठानों का आस-पास के सभी गांवों पर अधिकार हो गया। अशफाक के पूर्वजों का मुख्य पेशा जमींदारी था। वे शिक्षा को पाप की तरह देखते थे। यही कारण था कि अशफाक के पूर्वज अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते थे। इसी वजह से अन्य क्षेत्रों में सामाजिक उन्नति में वे पीछे भी रह गये। अशफाक उल्ला खाँ इसे दुर्गुण मानते थे। वे अपना दुख इस प्रकार व्यक्त करते है - '....मगर उन्होंने तरक्की की कोशिश नहीं की और न नामों-नमूद की ख्वाहिश की। बेफिक्र आराम तलब बने रहे और गरज कि आज हाल यह है कि एक भी शख्स ग्रेजुएट पैदा न कर सके। ना तो माली अपनी हालत सुधारी और ना तरक्की हासिल की। इलम से इनको नफरत, हाथ पैर हिलाने से इनको दुश्मनी और अंग्रेजी पढ़ने को एक बड़ा कुफ्र समझा किये। खुदा-खुदा करके खानदान में चन्द अफराद पैदा हुए। खुदा उनकी रूहों को जन्नत में जगह दे। उन्होंने अपने बच्चों को स्कूल में दाखिल कराया। मगर वो जरासीम जो फिजा-ए खानदान में मौजूद थे, वह लोग जो एक अंग्रेजी तालिबइल्म को एक दिन स्कूल जाने से बाज रखने से जन्नत की कुन्जी को हासिल करने का हकदार समझते थे, उनके पीछे इस बुरी तरह से पड़े रहते थे और स्कूल जाने से बाज रखते थे'।[2] अशफाक की यह पीड़ा कोई छोटी पीड़ा नही थी। वे शिक्षा के महत्व को समझते थे।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-10
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-11

उनके कथन में व्यंग्य की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। वे सदैव दुख व्यक्त करते रहे कि पठान खानदान शिक्षा के क्षेत्र में विरक्ति का भाव क्यों बनाये रखा। शिक्षा प्राप्त करने की बात कौन कहे, वे अपने बच्चों को उत्साहित करने के बजाय हतोत्साहित किया करते थे। सारी सुविधाएं होते हुए भी शिक्षा का अभाव अशफाक को खलता रहा।

अशफाक उल्ला खाँ के पिता मुहम्मद शफीक उल्ला खाँ थे। शफीक उल्ला का मकान शाहजहॉपुर के जलाल नगर मुहल्ले में था। वे पुलिस विभाग में एक जिम्मेदार पद (सब इंस्पेक्टर) पर कार्यरत थे। यह कोई मामूली बात नहीं थी। जबकि जनता लाल पगड़ी देखकर भागती थी, उस काल में अशफाक के पिता पुलिस के अच्छे पद सब-इन्स्पेक्टर पद पर हों, परिवार का वैसे ही मान सम्मान जनता में बढ़ गया था। लेकिन अशफाक उल्ला खाँ के जन्म के पूर्व ही वे अपने पद से मुक्त हो गये थे। यही नही अभी अशफाक बचपन के प्यार से सराबोर ही थे कि शफीक उल्ला खाँ का देहावसान हो गया। एक ऐसे पिता का चला जाना जो अंग्रेजी सरकार को अपनी गहरी दृष्टि से देखे थे, एक-एक बारीकियाँ, अंग्रेजी संवेदना और व्यवहार जानते थे, अशफाक के हित में कतई अच्छा नही हुआ। बावजूद इसके अशफाक अपने बाल्यकाल में अपने पिता से पुलिस की नौकरी और अंग्रेजी हुकूमत के विषय में पूछते रहते थे, सो उन्हें खासा अनुभव प्राप्त हो गया था। अशफाक की अवधारणा अच्छी नही बन पड़ी थी। बाद में चलकर अशफाक ने इस संबंध में लिखा है - 'मेरे वालिद साहब शफीक उल्ला खाँ सब-इन्स्पेक्टर पुलिस थे, मगर खुदा के फजलोकरम से मेरे पैदा होने से पेश्तर ही वह मुस्तेदी पदमुक्त हो चुके थे और जोकि वह मेरी कम उम्र में ही दुनिया से गुजर गये। खुदा उनको जिबाहेरहमत दे और उनके कारनामों को, जो अय्यामे मुलाजमत में किये थे,

फरामोश करे। जिसकी वह हमेशा माफी माँगते रहे। वह मुझे पुलिस के कारनामे बतौर किस्सों के सुनाया करते थे, जो मुझे अभी तक याद हैं और फिर उनका सामना भी किया और वह सबब भी जो कभी थ्योरिटिकल था, अब प्रेक्टिकल सूरत में मिल गया'।[1] अशफाक उल्ला को पिता का साथ यदि और मिल गया होता तो निश्चित ही शिक्षा के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व में भी चार चाँद लग जाते। माता निर्माता होती है तो पिता मस्तिष्क, यह अशफाक उल्ला को जाने अनजाने ज्ञात था।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, (पृष्ठ - 13)

मातृपक्ष का अध्ययन

अशफाक की माता का पक्ष समृद्ध था। उनकी माँ खलील जाति की थी और उनका वंश 'हाफिज खेल' नाम से जाना जाता था। अशफाक के पूर्वजों से हाफिज खेल घराने से वैवाहिक सम्बन्ध होते थे। अशफाक का पितृ पक्ष भले ही आर्थिक स्थिति में कमजोर था लेकिन वह देश प्रेम की सुगंध में जीता था वहीं मातृपक्ष के पूर्वजों में ऐसी बात नहीं थी। हाँ उनकी माली हालत बहुत अच्छी थी। इस खानदान के लोग 1857 से ही सरकारी पदों पर कार्य करते आ रहे थे। 1857 के विद्रोह के समय अशफाक की माँ के दादा तथा उनके भाई जज और डिप्टी कलेक्टर थे।[1] यही नहीं उस समय इन लोगों ने विद्रोहियों का साथ न देकर सरकार के लिए जासूसी भी की थी। यह ज्ञात होने के बाद अशफाक के दिल-दिमाग पर गहरा असर पड़ा था। कहीं न कही यह दाग धोने की ग्रंथि भी बन रही थी। अशफाक उल्ला खाँ लिखते है '.......मुझे यह लिखते हुए शर्म नही आती, हाँ केस के कब्ल अगर मुझे जरूरत महसूस होती तो हर्गिज नही लिखता, क्योंकि जहां तक मेरा ताल्लुक है, मैं इसे वापसेसदनंग समझता हूँ कि मुल्क के लोगों को अहसासे आजादी पैदा हो और वह अपना खून मिस्ल पानी के बहाएं, अपने बच्चों की कुर्बानी कुर्बानगाहे वतन पर चढ़ाएं, अपनी दौलत, आबरन मकान, गरज कि हर शय-हँसी-खुशी के साथ आजादी और मजहब के लिए निसार दें, फिर उनके साथ फरेब करना, उनके खिलाफ साजिश करना, उनकी स्कीमों को तहस-नहस करने की कोशिश करना और वतनी दुश्मनों को इमदाद करना, अगर शर्म और हजार शर्म की बात नहीं तो क्या है? मुझे जानमाए तालिबेइल्मी अपने चन्द दोस्तों से हमेशा जिल्लत उठानी पड़ी,

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-11

जब वह कहते थे कि तुम खानयीने वतन की औलाद हो, मैं उन अहबाब का नाम नहीं लिखना चाहता हूँ। चूँकि उनको शर्म आयेगी कि वह इस वक्त अपने गले में गुलामी का पट्टा डाले हुए हैं या सरकारी कचहरियों में कुंजड़ो, कुंजड़िनों की तरह बाररूम में दुकाने लगाये हुए बैठे हैं। उस वक्त उनको फख्र था कि उनके आबाब-अजदाद उस गिरोह के एक बड़े रुक्न थे, जिसने आजादी का अलम बुलन्द किया था। खैर मैंने अपनी कुर्बानी से इस धब्बे को जो 1857 ई0 में मेरे ननिहाल के बुजुर्गों ने अस्मते वतन पर लगाये थे, अपने खून से और नौजवान मासूम खून से धो डाले, क्या इस खानदान का इसको कफ़ारा समझा जा सकता है। ख्वाह यह हो या न हो मेरी आने वाली नस्ल पर यह एतराज न होगा कि वह उस खानदान से ताल्लुक रखते हैं, जो खाएन था, बल्कि मेरी कुर्बानी से लोग रहम करेंगे और उनको अशफाक के खानदान का एक मेम्बर ख्याल करके बुजुर्गों की गलतियाँ फिर अजसरे नौ याद न करेंगे। मुझे ननिहाल के खानदान के बारे में बस इतना ही लिखना है। अब मुझको यह अन्देशा है कि यह खानदान अब तरक्की करने के काबिल न हो सके, क्योंकि अब नौजवान तरक्की करने के बजाय अपने बुजुर्गों पर ही नाज करने को अपना शआर बनाये हुए हैं।

अगर यही सिम्मेकातिल है कि बुजुर्गों की तारीफ में लगे रहें या उन पर फख्र करते रहे, इन्सान को खुद इम्ताजी हैसियत हासिल करना चाहिए। बुजुर्गों पर फख्रों मुवाहात की जरूरत नहीं। यू मैं दादा की तरह कौम परस्त और ननिहाल की तरफ से अंग्रेज परस्त पैदा हुआ था। मगर माँ का खून कमजोर था, यूँ वतनी आजादी का जज्बा ताकतवर रहा और वतन प्यारे वतन के लिए आज मौत के तख्ते पर खड़ा हूँ'।[1] अशफाक के ये शब्द उनकी मानसिकता को बखूबी दर्शाते हैं।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-12

वे लज्जा और कलंक से दबे हुए हैं और इसे धो डालना चाहते हैं लेकिन खास बात तो यह है कि उन्हें पीढ़ी की चिन्ता है यही चिन्ता देश के हर नौजवान तक जाती है। हमें सिर्फ फख्र करके नहीं जीना है अपनी गुणवत्ता साबित करना है। वास्तव में अशफाक अपने समाज के प्रति, विकास के प्रति, मानसिकता के प्रति बेहद चिंतित दिखाई देते हैं। बचपन की बेचैनी ने उनके मानसिक उपकरणों की संरचना की है, जिससे वे एक स्वस्थ क्रांतिकारी की हैसियत से इतिहास में दर्ज है।

अशफाक उल्ला खाँ की माँ मजहर उलनिसाँ बेगम मुहम्मद अब्दुल हसन खान की पुत्री थी। अब्दुल हसन खलील गरबी के निवासी थे। वे कचहरी में पुलिस सब-इन्स्पेक्टर थे। यही नहीं उनके पिता सब-जज रह चुके थे। विद्रोहियों के विरुद्ध कार्य करने के कारण विद्रोहियों के हाथों पिता-पुत्र दोनों मारे गये। अशफाक की माँ उलनिसाँ बेगम विनम्र स्वभाव की अति-दूरदर्शी और बुद्धिमान महिला थी। वैसे भी उनकी शिक्षा दीक्षा ठीक ढंग से हुई थी, इसी वजह वह एक गुणवान महिला की श्रेणी में आती हैं। अशफाक और उनके सभी भाई-बहन माँ से डरते थे और उनकी आज्ञा का पालन करते थे। निश्चित ही अशफाक की मॉ ने ऐसे संस्कार दिये होंगे। ठीक ही कहा गया है माता निर्माता भवति। माँ निर्माण करती है, मनुष्य बनाती है और अशफाक की माँ ने एक माँ का फर्ज बखूबी निभाया भी है। अशफाक की माँ एक अनुशासन प्रिय महिला थीं। परिवार में उनका इतना मान-सम्मान था कि अशफाक के पिता भी उनकी बात कभी टालते न थे। संतानों में सबसे छोटे होने के कारण अशफाक सबके प्यारे थे। खास तौर से माँ का स्नेह विशेष रहता था। उलनिसाँ बेगम को पढ़ने-लिखने में रुचि थी। अध्ययन के प्रति लगाव का आलम यह था कि उनके बिस्तर पर किताबों का ढेर लगा रहता था।

बेगम साहिबा समाचार पत्र पत्रिकाएं पढ़ने का शौक रखती थी। परम्परानुसार पान खाने का भी विशेष शौक था।[1]

अशफाक का घर आम आदमी से ऊपर एक रईस का घर माना जाता था। माता-पिता के समय में उनके घर कई नौकरानियाँ रहती थीं। घर अभाव से दूर था। पेंशन (पिता की पेंशन) और कृषि से आय खूब होती थी। घर की पूर्णतः मालकिन अशफाक की माँ ही थीं। कमी तो कोई थी नही, ऊपर से उलनिसाँ बेगम का हृदय दयालु भी था। वे साधनहीन विधवाओं की सहायता करती रहती, उन्हें भोजन कराती रहती थी। इसी कारण उनका सम्मान समाज में भी था। वह किसी को दुखी देखना नही चाहती थी। गरीब लड़कियों के विवाह में वह यथासम्भव सहायता करती रहती थी। परिवार नही समाज के लोग भी उनसे परामर्श किया करते थे। अशफाक ने उल्लेख भी किया है - 'मोहल्ले के मर्द-औरतें हर मामले में हमेशा उनकी सलाह के बगैर कोई शादी ब्याह नहीं करते थे। गरज कि उनकी सलाह के बगैर खानदान में कोई काम न होता था और सब लोग उनका बड़ा ख्याल करते थे। वह कद्दावर और भरे जिस्म की बीबी थी। वह बहुत हँसमुख थी।[2]

जन्म और अशफाक का बचपन -:

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का क्रांतिकारी पृष्ठ अशफाक उल्ला खाँ के नाम से रोशन है। ऐसे वीर सपूत अशफाक उल्ला खाँ का जन्म 22 अक्टूबर 1900 को शाहजहाँपुर के एक मध्यम श्रेणी के मुस्लिम परिवार में हुआ।[3] अशफाक अपनी माता मजहर उलनिसाँ बेगम की पाँचवी संतान थे। वे अपने भाई बहनों में सबसे छोटे थे।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ 14
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-15
3. अशफाक उल्ला खाँ, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ-8

अशफाक उल्ला खाँ का घरेलू नाम अच्छू खान था। कौन जानता था कि उनका अच्छू जो घर का सबसे दुलारा है, सबसे छोटा है, वह आगे चलकर मातृभूमि के लिए प्राणों का बलिदान करेगा और इतिहास में अमर हो जायेगा। अशफाक के बलिदानी कृतित्व से परिवार शहर और प्रदेश ही नहीं, देश का भी गौरव बढ़ा है। निश्चित ही अशफाक के बिना उ0प्र0 के क्रांतिकारी इतिहास का पृष्ठ पूरा नहीं होता।

बालक अशफाक को माँ से विशेष लगाव था। माँ उलनिसाँ भी अशफाक का खूब ख्याल करती थी। बचपन के दिनों में अशफाक अपने साथी बच्चों से झगड़ा करते या उन्हें पीट देते थे तो उलनिसाँ बेगम बच्चों को पैसे देती, दुलारती और प्रसन्न कर देती। अशफाक पर माँ का स्नेह बराबर बना रहा यहाँ तक कि क्रांतिकारी दिनों में जब अशफाक घर से कई-कई दिन गायब रहने लगे तो बड़े भाइयों को चिन्ता होने लगी थी लेकिन माँ गुस्सा हो जाती और डाँटकर कहती कि - 'अगर तुमने अशफाक के विषय में कुछ भी कहा, तो मैं यह घर छोड़ दूँगी। तुम्हें उसे नसीहत देने की आवश्यकता नहीं है'। अशफाक को इतना प्रेम परिवार से मिला कि अपने पिता के न रहने की कमी कभी न खली।

अशफाक कुल मिलाकर चार भाई और एक बहन थे। सबसे बड़े भाई का नाम मुहम्मद शफी उल्ला खाँ था जिन्हें लोग आदर और सम्मान देते थे। शफी उल्ला धार्मिक प्रवृत्ति के इन्सान थे। दूसरे भाई रियासत उल्ला खाँ ने लिखा है, 'बड़े भाई साहब अल्लाह-अल्लाह के सिवाय कोई काम नही करते थे। वही दूसरे भाई रियासत उल्ला खाँ निष्ठा के साथ घर की पैतृक भूमि की देखभाल करते थे। सारी खेती-बारी की जिम्मेदारी इन्हीं पर थी। तीसरे भाई मुहम्मद शहनशाह खाँ भूपाल रियासत में कलेक्टर आशरा के चीफ रीडर थे। निश्चित ही उन्हें रियासत और अंग्रेजों के व्यवहार का ज्ञान रहा होगा। अशफाक की एक ही बहन थी।

जिनका विवाह पढ़े लिखे खासे सम्मानित परिवार में हुआ था। बहन परवरिश बानो का विवाह सहारनपुर के प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट मुहम्मद अब्दुल कादिर के साथ हुआ था। अशफाक स्वयं को न तो परिवार में उलझाये न ही कोई पारिवारिक मोह पाला। उन्होंने मातृ भूमि की स्वाधीनता को ही सर्वोपरि दायित्वों में रखा।

<u>वातावरण का प्रारम्भिक प्रभाव एवं अशफाक की शिक्षा</u>

किसी भी व्यक्ति के लिए उसका परिवेश, उसका वातावरण और शुरुआती शिक्षा का विशेष प्रभाव पड़ता है। अशफाक तो अपने पूर्वजों की शिक्षा के प्रति उदासीनता के कारण दुखी तो थे ही लेकिन माँ से खासे प्रभावित रहे। और कोई भी कारण हो प्रभावित होने का लेकिन अध्ययन के प्रति माँ की रुचि अशफाक को माँ की मानसिकता की ओर खींचती अवश्य है। अशफाक के पिता पुलिस में रहे, सो पर्याप्त धन कमाया। दोनों बड़े पुत्रों (शफीउल्ला खाँ और मुहम्मद रिसायत उल्ला खाँ) पर उन्होंने शिक्षा हेतु खूब खर्च किया। लेकिन शिक्षा के लिए धन की उतनी आवश्यकता नहीं होती जितना मन की होती है। रियासत उल्ला खाँ किसी प्रकार उर्दू की मिडिल परीक्षा पासकर सके थे। उन्होंने कक्षा सात तक अंग्रेजी पढ़ने के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। अशफाक ने अफसोस जाहिर किया है कि वे दोनों ऐसे ही थे जैसे कदनखेल खानदान के अन्य मेम्बर।[1] पिता क्या करते, खानदान के अन्य लोग अंग्रेजी पुस्तक को हाथ लगाना भी पाप समझते थे। एक घटना ऐसी ही घट भी चुकी थी कि एक बार अशफाक के एक मित्र अपनी अंग्रेजी की पुस्तक एक बार किसी रिश्तेदार के घर भूल आये। जब उस घर के लोगों ने किताब पड़ी देखी, तो किसी को भी छूने का साहस न हुआ,

---

1. अशफाक उल्ला खॉ, भवान सिंह राणा पृष्ठ-18

अतः घर के नौकर से कहकर वह पुस्तक चिमटे से उठाकर एक ओर रखी गयी। यह घटना अंग्रेजों और अंग्रेजी संस्कृति के प्रति आक्रोश ही नही घृणा भी दर्शाती है। अशफाक को ऐसी घटनाओं से पीड़ा होती, वे एक बदली हुई मानसिकता के धनी थे। वे ऐसे संकीर्ण विचारों से ऊपर उठ चुके थे। परन्तु क्या करते किस-किस को समझाते। वे अन्त तक ऐसी भावनाओं के कारण शिक्षा से वंचित होने की पीड़ा का बखान करते रहे। यह अशफाक के स्वस्थ व्यक्तित्व और सुलझी हुई मानसिकता का घोतक है।

परम्परानुसार एक मौलवी साहब ने अशफाक और उनके भाइयों की शिक्षा का भार लिया। छोटी उम्र में ही अशफाक को उनके भाइयों के साथ पढ़ने भेज दिया गया जबकि बिस्मिलाह की रस्म के बिना अक्षर ज्ञान नहीं कराया जाता था। लेकिन यहां तो चिकने पात हैं सो रस्म होने तक अशफाक ने लिखना पढ़ना सीख लिया। मौलवी साहब ने औपचारिक रस्म पूरी की और फिर अक्षर ज्ञान कराने लगे। बहुत कम समय में ही अशफाक ने उर्दू और फारसी सीख ली। मौलवी साहब ने **'अखलाक मोहसनी'** और **'अनवार सहेली'** पढ़ा दी थी। चूँकि अशफाक के घर उर्दू की कई पुस्तकें थीं सो वे उन तमाम पुस्तकों का अध्ययन करने लगे थे। अशफाक की पसन्द शाहनामा थी तिलस्महोशरुबा भी वे चाव से पढ़ते थे।

अशफाक उल्ला खाँ को बचपन में मेले के अवसर पर तलवार खरीदने का बड़ा शौक था। बाद में यही शौक पिस्तौल में बदल गया।[1] यह शौक ऐसे ही नहीं उपजा था। अशफाक को युद्ध विषयक पुस्तकें पढ़ने में आनंद आता था। भले ही वे मौलवी साहब के पास ही क्यों न रहे हों। अवसर मिलते ही वे अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकों को पढ़ लेते थे।

---

1. जांबाज (पत्रिका) सुरेश कुमार खन्ना, पृष्ठ-1

इस हेतु वे दण्ड के भागी भी बनते थे, मौलवी साहब के देख लेने पर वे कान पकड़कर उठक-बैठक लगाया करते थे। अशफाक बचपन में शैतान बच्चों की श्रेणी में रखे जाते थे। घर पर भी उनकी शैतानियों से अन्य बच्चे परेशान रहा करते थे। शरारतों से तंग आकर घर वालों ने निर्णय लिया कि अब अशफाक को खाली रहने का अवसर ही न दिया जाय। दोपहर तक उन्हें घर में पढ़ने के काम में लगाया जाता था। इसके बाद वे मौलवी साहब के पास पढ़ने चले जाते थे।

अशफाक ने लिखा है - 'मुझे जंग के हालात पढ़ने में बहुत दिलचस्पी थी और मैं इस तरह की किताबे पढ़कर मस्त रहता था और असली बात भी पैदा करने की कोशिश करता था, जिसका नतीजा यह निकलता था कि मौलवी साहब मुझे कान पकड़कर उठाया-बैठाया करते थे। थी तो वह सजा, मगर मेरे लिए कसरत का काम करती थी। और मैं भाइयों में सबसे छोटा होने पर भी धूल चटा देता था। मुहल्ले में हमेशा जंग छिड़ी रहती थी, क्योंकि मैं एक जंगजू लड़का था। मार पीट का बाजार गर्म रहता था। उस समय यह सजा तजवीज की गयी थी कि फुरसत ही न दी जाए कि यह शरारत करें। चुनांचे मौलवी साहब के पास दोपहर को जाना और फिर शाम को मगरिब के वक्त तक पास रहना पड़ता। जब मगरिब की नमाज पढ़कर मौलवी साहब घर वापस जाएं, उस वक्त मुझे छुट्टी मिलती थी, बस वैसा ही मजा अब आ रहा है.... कि फाँसी की कोठरी है और हम हैं। बाहर कुछ भी तमाशा हो, कुछ भी हो, न बाहर निकल सकते हैं, न देख सकते हैं। यही हाल जब था कि बाहर के लड़कों के खेलने की बस आवाज सुना करते थे और दिल मसोस-मसोस कर रह जाते थे। सबक में मौलवी साहब खुश रहते थे, मगर शरारत के वक्त और ज्यादा खुश कि सैकड़ों बैठक करा लेते थे या यों इसलिए कि मौलवी साहब का तरीका-ए-तामील निराला था।' जंग की कहानी पढ़ने का शौक कोई मामूली बात नहीं थी। संघर्ष उनके स्वभाव में था, रक्त में था।

स्कूल के दिनों की एक घटना से उनकी मानसिकता स्पष्ट हो जाती है। जब अशफाक ने अचानक सुना कि दिल्ली में वायसराय पर किसी ने बम फेंक दिया और इसी सिलसिले में जब स्कूल बन्द हुआ तो अशफाक की प्रसन्नता देखते बनती थी। वे घटना की गहराई जानने का प्रयत्न करते और स्वप्न लोक में खो जाते थे।[1] यही नही अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध तलवार से लैस एक क्रांतिकारी के रूप में अपनी कल्पना करने लगते। तलवार का सपना अशफाक के लिए नया नही था। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि वे मेले में तलवार खरीदने का शौक रखते थे। ऐसी ही एक घटना पिता के साथ घटी जब उनके पिता जिन्दा थे। अशफाक ने अपने पिता से कहा -'मियाँ आप मुझे एक तलवार मोल ला दें।' पिता ने जबाब दिया - 'बेटा, तुमसे कोई छीन लेगा।' अशफाक बोले - 'आप चाँदी की तलवार न लाएँ, बल्कि लोहे की ला दें। वह कोई नही छीनेगा।'... यह सुनकर पिता हंस पड़ें।[2] शायद यही मानसिकता काफी थी कि वे आगे चलकर अंग्रेजी सत्ता को जबरदस्त चुनौती दे सके। अशफाक को तालीम देने वाले मौलवी भी निराले थे। वे अपने विषय में काफी योग्य व्यक्ति थे। लेकिन वे पढ़ाते वक्त अंग्रेजी को कोसने उसके अवगुणों के बखान में ज्यादा वक्त लगाते थे। मौलवी साहब का विचार था कि अंग्रेजी पढ़ने का अर्थ है नरक का मार्ग बनाना। उन्हें अंग्रेजी व्यवहार, कपड़े, भाषा सबसे घृणा थी। इस हेतु वे सदैव तत्पर रहते थे। मौलवी साहब सुनी सुनाई या स्वयं से गढ़कर ऐसी कहानी सुनाते थे कि उनके शिष्यों में अंग्रेजी के प्रति नफरत पैदा हो जाय।

---

1. शहीद अशफाक उल्ला खाँ, सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ 7
2. शहीद अशफाक उल्ला - सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ 7

अंग्रेजी या अंग्रेजों के प्रति घृणा का प्रथम बीज मौलवी साहब ने ही बोया जो आगे चलकर अंकुरित हो गया। अशफाक देह से मजबूत इंसान थे चौदह वर्ष की अवस्था में ही वे एक तगड़े नवयुवक की तरह लग रहे थे। गणित के कमजोर अशफाक को कोई अध्यापक यदि डाँट देता था वे ऐंठ जाते थे। शायद उन्हें अपने बुजुर्गों की परम्पराओं पर गर्व हो न हो। हांलाकि बाद में चलकर अशफाक ने ऐसी गलती के लिए दुख व्यक्त किया है। अध्यापकों के प्रति उपेक्षा पूर्ण व्यवहार से प्रायः हर अध्यापक उनसे खुश नहीं रहते थे। अशफाक ने लिखा है- 'चूँकि मैं बचपन से ही गबजनार और लड़ाकू था, यूँ लड़के तो फिर लड़के थे, मास्टरों से जरा भी न दबता था, वह भी अगर कुछ कह सकते थे इतना उनसे हो सकता था कि इम्तिहान में ख्याल रखें और अक्सर हमारे मास्टर पृथ्वी सिंह साहब आंजहानी कहा करते थे कि खाँ साहब! अप्रैल के महीने का भी ख्याल है? और बेचारे अपना वायदा पूरा करते।'[1]

पढ़ाई के प्रति लापरवाह अशफाक एक दबंग विद्यार्थी तो थे ही, प्रारम्भ के दिनों में टोने-टोटके और गंडे-ताबीज में विश्वास रखते थे। लापरवाह होने के वावजूद वे तीव्र बुद्धि वाले कुशाग्र विद्यार्थी थे। रेखागणित में काफी कमजोर थे लेकिन छठवी कक्षा का पूरा कोर्स मात्र छः घंटो में पूरा कर लिया और परीक्षा के दिनों में छः में से पाँच सवाल सही कर आये।

विद्यार्थी अशफाक उल्ला खाँ अंग्रेजी स्कूल (मिशन स्कूल) शाहजहाँपुर के छात्र हो गये। यही वह काल था जब मैनपुरी काण्ड हुआ और राम प्रसाद बिस्मिल जो उनके शहर के थे और कुछ अन्य क्रांतिकारियों पर केस चला। उनके विद्यालय से भी एक क्रांतिकारी की गिरफ्तारी हुई।

---

1. अशफाक उल्ला खां, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-21

यह देखकर अशफाक का उत्साह बढ़ गया और भीतर हलचलें तेज हो गई थी। अंग्रेजी स्कूल के कारण अशफाक का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। वे नौवी कक्षा से आगे नही पढ़ सके। उनका मन तो कहीं और लग गया था। अध्ययन से अरुचि होने के कई कारण हो सकते हैं लेकिन इसमें उनके एक मित्र का विशेष हाथ रहा है। अशफाक ने मित्र का नाम लिए बगैर लिखा भी है। अशफाक के स्कूल के दिनों में उनके बहुत सारे साथी हो गये थे। वे मनोहर लाल ज्योतिषी के बेंत से डरते थे और बचते रहते थे। इसके लिए वे फूँक-फूँक कर कदम रखते थे। फाँसी घर से लिखे गये वक्तव्य में वे एक दोस्त का जिक्र करते है कि, 'मुझे एक दोस्त से शिकवा है, जिसे मैं दिलोजान से चाहता हूँ।'[1] अशफाक दोस्त की दोस्ती के इतने कायल थे कि दुनिया की खबर ही नही रही, उसे वह अपना दीनोईमान मानते थे। अपना सब कुछ समझते थे। वे बाद में इतने दुखी हुए कि तामील हासिल करने में रुकावट का सबसे बड़ा कारण अशफाक ने दोस्त को मान लिया।

अशफाक उल्ला खाँ को बचपन में कसरत का बड़ा शौक था। यही कारण था कि वे अच्छी खासी देह के मालिक थे। उन्हें तैरने का भी बड़ा शौक था। लेकिन जब वे बड़े हुए तो अच्छे खिलाड़ी होते हुए भी उनका शौक धीरे-धीरे छूटता गया। सदैव देश के विषय में या मैनपुरी काण्ड के विषय में सोचा करते थे।[2] मैनपुरी षडयंत्र के मुकदमें ने तो उनकी मानसिक स्थिति ही बदल दी। अब अशफाक मन-मस्तिष्क से परिपक्व हो चुके थे।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-22
2. शहीद अशफाक उल्ला, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ-8

आठ पास कर आये तो उन्होंने अपने पाठयक्रम की किताबों में सर वाल्टर स्कॉट की लिखी हुई नज्म **'लव ऑफ कन्ट्री'** पढ़ी। होरेशस का किस्सा भी पढ़ा। जिसमें उसने कहा था कि देश पर शत्रु के आक्रमण के समय यदि पुल तोड़ दिया जाय तो टाईबर नदी को पार कर फौज नही आ सकती... मैं जाता हूँ और इस तंग रास्ते में मैं तीन साथियों सहित खड़े होकर लडूँगा और इधर पुल तोड़कर नदी में डाल दिया जायेगा। वैसा ही हुआ और रोम बच गया। आज भी बच्चे वीर होरेशस की कहानियाँ पढ़कर देशभक्ति हेतु प्रेरणा पाते हैं। देश भक्ति की यह कहानी और वाल्टर स्कॉट की नज्म अशफाक के अध्यापक ने कुछ इस तरह सुनायी कि अशफाक अपने को रोक न सके और खूब रोये।[1]

यह सत्य है कि किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उसकी शिक्षा, उसका अध्ययन और उसका परिवेश, सामाजिक वातावरण खासा प्रभाव डालता है। निर्माण जब व्यक्तित्व का होता है तो ये उक्त चीजे अपना असर जरूर दिखाती हैं और अपने इर्द-गिर्द तमाम आरोहों-अवरोहो के बीच मनुष्य का निर्माण होता रहता है। अशफाक की भूमि भी इसी परिवेश और समाज से निर्मित हुई है। उनके सामने बहुमत, अल्पमत, जय, पराजय, अमीरी गरीबी के ऐसे चिह्न बन गये कि उनकी दशा ही बदल गयी और वे आगे की शिक्षा ग्रहण नही कर सके। अशफाक शिक्षा को खूब महत्व देते थे। इसके बावजूद वे तामील (अच्छी तामील) की वह ऊँचाई नहीं छू सके जिसका स्वप्न वे कभी देखते थे। निश्चित ही एक सुलझा और कुशाग्र बुद्धि का नागरिक देश से बहुत पहले विदा हो गया। हो सकता था कि यदि वे

1. शहीद अशफाक उल्ला, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 9

उच्च शिक्षा प्राप्त करते तो देश को अपने गहरे वैचारिक सरोकारों से भी परिचत कराते जो नव भारत के निर्माण में कारगर सिद्ध होता। उच्च शिक्षा से वंचित रहने का मलाल अशफाक को था और वे स्वयं को दोषी मानते हैं। वे अपने अभिभावक को इसका दोष नही देते क्योंकि वे उच्च तामील के गुणों से वंचित थे, उन्हें शिक्षा की अहमियत का पता नही था। अंग्रेजी से वंचित रहने और संसार को दूर तक न देखने का भी उन्हें मलाल था। उन्होंने लिखा है-'... यों मैं बड़ा और हट्टा-कट्टा पहलवान हो गया था, जब अंग्रेजी पढ़ने का शौक हुआ था। खैर, खुदा का शुक्र है कि उर्दू-फारसी ही पढ़ा दी थी। जो मैं आज उर्दू में अपनी जिन्दगी पर नोट लिख रहा हूँ और सच पूछिये तो वही पुराना रवैया तामील का अब तक हमारे यहाँ चला आ रहा है, कि मौलवी साहब 20-30 लड़को को लिए हुए उर्दू की तामील दे रहे हैं और डंडा बरसा रहे हैं।[1]

अशफाक उल्ला खाँ समाज में हो रहे परिवर्तन पर दृष्टि जमाये थे। समय बदल रहा था और शिक्षा थी कि अपनी परम्परा से आगे नही जा रही थी। बावजूद इसके कुछ ऐसे भी शिक्षाविद् थे जो अंग्रेजी तामील की जरूरत महसूस करते थे। अशफाक के सामने देश भक्ति बड़ी चीज थी। कई बार वे स्वयं को देश भक्तों के बीच खड़ा पाते और मन ही मन संकल्प करते कि मैं ऐसा क्रांतिकारी बनूँगा जो देश की शान पर आजादी के लिए मर मिटने को हमेशा तैयार रहे। अशफाक को एक बार उनके अन्य अध्यापक ने एक ऐसी पुस्तक पढ़ने को दी जिसमें संसार भर के देश भक्तों, वीर सपूतों की कहानियाँ भरी पड़ी थी। पुस्तक देते समय अध्यापक महोदय ने अशफाक से कहा था कि, 'मैं यह किताब तुमको बिल्कुल देता हूँ, क्योंकि तुम

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-23

इसके योग्य हो।[1] देशभक्ति की उन कथा-कहानियों को अशफाक ने पढ़ा। परिणाम यह हुआ कि अशफाक की मानसिकता और प्रौढ़ हो गयी। उनके इरादों में मजबूती आ गयी। वे एक सच्चे वीर सपूत बनना चाहते थे। यही नही उन्हें पुस्तके पढ़ने का शौक भी लग गया।

अशफाक उल्ला खाँ का बचपन सिर्फ जंग, युद्ध की कथाएँ, लड़ाई लड़ने और अस्त्र शस्त्र का शौक, देश भक्ति का सपना, अंग्रेजी से नफरत, पुस्तक पढ़ने के शौक में बीता। यही उनके व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक हो सके हैं। यह भी सत्य है कि उनकी माँ और मौलवी साहब ने भी प्रारम्भिक चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। अशफाक के कृतित्व और व्यक्तित्व से आज हम गौरवान्वित होते हैं।

---

1. शहीद अशफाक उल्ला, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ-10

अध्याय-तीन

अध्याय-तीन

मैनपुरी षड्यंत्र और अशफाक उल्ला खाँ

बचपन के सामाजिक वातावरण ने अशफाक उल्ला का मानसिक वातावरण तो तैयार कर ही दिया था। पुस्तक पढ़ने के शौक के क्रम में अशफाक ने अपने एक साथी से **'आनन्द मठ'** नामक उपन्यास मंगा कर पढ़वाया और एकाग्र होकर आनंदमठ की कथा सुनने लगे थे।[1] वे हिन्दी कम जानते थे। इस साथी ने भी अशफाक के क्रांतिकारी बनने में विशेष योगदान दिया। एक बार तो उनके मन में आया कि वे देश से बाहर जाकर देश का कार्य करें। परन्तु इसी मित्र ने देश में रहकर देश सेवा हेतु क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होने की सलाह दी। अशफाक उल्ला को यह सलाह अच्छी लगी और वे इस प्रयास में लग गये कि कब क्रांतिकारी दल के सदस्यों से मुलाकात हो और वे दल में शामिल होकर अपनी प्रतिभा दर्ज करा सकें।

अंग्रेजों के अत्याचार से और उनकी घोर दमन नीति के कारण देश में भीषण असंतोष फैल गया था। भारतीय युवा विदेशी सत्ता के विरुद्ध आक्रोशित हो उठे थे। युवाओं में अंग्रेजी शासन के पूर्णतया सफाया करने का उमंग और जोश उमड़ रहा था। ऐसे में उ0प्र0 भी अपवाद भला कैसे रहता। 1915-16 के वाराणसी षड्यंत्र काण्ड के रूप में अक्रोश फूट चुका था। मैनपुरी में अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध एक गुप्त संस्था की स्थापना हो चुकी थी। मैनपुरी प्रमुख केन्द्र था।[2] वैसे तो उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारी आन्दोलन का नेतृत्व बनारस के निवासी बंगाली क्रांतिकारियों ने किया लेकिन मैनपुरी काण्ड की प्रमुख विशेषता थी कि इसे उ0प्र0 के निवासियों ने किया। इस काण्ड पर बंगाली क्रांतिकारियों का प्रभाव नहीं था।[3]

---

1. शहीद अशफाक उल्ला, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 10
2. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-61
3. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्यथनाथ गुप्त पृष्ठ 94

मैनपुरी काण्ड का प्रभाव अशफाक उल्ला पर इतना पड़ा कि वे देश के क्रांतिकारी बनने के अतिरिक्त कुछ सोच ही नहीं सकते। निश्चित ही वे मैनपुरी काण्ड की घटना से खासे प्रभावित थे और यह भी तय था कि मैनपुरी काण्ड की घटना की एक-एक जानकारी हासिल करने का अशफाक ने प्रयास किया होगा। संयुक्त प्रान्त

(उत्तर प्रदेश) में बनारस षड़यन्त्र (1915-16) के बाद दूसरे प्रमुख षड्यंत्र की सफल रचना मैनपुरी में हुई। जिसका प्रभाव अशफाक पर पड़ा था। शाहजहाँपुर के अनेक क्रांतिकारी इस घटना में सम्मिलित थे। अशफाक की मानसिक संरचना उन्हें क्रांतिकारी कृतित्व की ओर खींचती है।

मैनपुरी काण्ड के प्रमुख नेता गेंदा लाल दीक्षित थे। गेंदा लाल का आगरा जिले के बाह तहसील में 20 नवम्बर 1888 को जन्म हुआ। धनाभाव गेंदा लाल को भी हाई स्कूल से आगे शिक्षा पाने में रुकावट बना। राम प्रसाद बिस्मिल की तरह ही गेंदा लाल भी आर्य समाज से खूब प्रभावित थे। आजादी की लड़ाई में गेंदा लाल ने अथक प्रयास किया। यह भी कहा जाता है कि आजादी हेतु क्रांति का प्रथम पाठ राम प्रसाद बिस्मिल ने भी पढ़ा उन्हीं से था। दीक्षित जी एक बार हुए शिवाजी उत्सव से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने शिवाजी नाम से एक संस्था ही बना डाली। वे लोकमान्य तिलक के भक्त थे और राम प्रसाद बिस्मिल से प्रभावित थे। यही राम प्रसाद बिस्मिल अशफाक के मित्र ही नहीं प्रेरणास्तम्भ भी थे। 'शिवाजी समिति' के कई सदस्य बने। निः सन्देह मैनपुरी काण्ड जिसके अगुआ गेंदालाल दीक्षित थे और जिसका प्रभाव अशफाक पर सबसे ज्यादा पड़ा, वह काण्ड अंग्रेजी शासन के विरुद्ध देशभक्त युवकों के आक्रोश का प्रतीक था।

गेंदा लाल जी ने 1916 में मैनपुरी में **'मातृवेदी'** नामक क्रांतिकारी संस्था बनाई।[1] यह संस्था गुप्त रूप से बनायी गयी थी। इस संस्था का उद्देश्य ही था कि देश को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराना। थोड़े ही समय के बाद इस संस्था की गतिविधियाँ लखनऊ, शाहजहाँपुर, आगरा, मथुरा, इटावा, फर्रुखाबाद, कानपुर, फतेहपुर और मुरादाबाद में भी फैल गयी। मैनपुरी जनपद का नेतृत्व शिव कृष्ण ने किया और शाहजहाँपुर में राम प्रसाद बिस्मिल, लखनऊ में गंगा सिंह ने नेतृत्व का भार सम्भाला। गेंदालाल जी पूरे उ0प्र0 का नेतृत्व कर रहे थे।[2] यह संयोग ही था कि गेंदा लाल ने डाकुओं के सरदार पंचम सिंह को अपनी तरफ मिला लिया। पंचम सिंह के सम्मिलित होने के कारण पाँच सौ घुड़सवार और दो सौ पैदल एवं लाखों की सम्पत्ति क्रांतिकारियों के काम आयी। यह भी उल्लेखनीय है कि - संस्था में श्री कृष्ण पालीवाल, श्री चन्द्रधर जौहरी आदि अनेक नामी गिरामी क्रांतिकारियों ने कार्य किया। मातृवेदी संस्था की गतिविधियों की प्रमुख चार शाखाएं थीं, जो निम्नवत् हैं -

1. विदेशी सरकार के खिलाफ पुस्तकों, कविताओं और इस्तहार का प्रयोग।
2. सैनिक विभाग का कार्य धन एकट्ठा करने के लिए डकैती डालने हेतु अस्त्र शस्त्रों का संग्रह करना था। साथ ही इसका कार्य सैनिक तैयार करना था।
3. ब्रिटिश और देशी राज्यों की विभिन्न सैनिक छावनियों के सदस्यों की जानकारी एकत्र करने और सरकारी खजाने के धन और अस्त्र शस्त्र के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए 'गुप्ताचार्य' या जासूसी विभाग था। इस विभाग का कार्य डकैती डालने वाले स्थानों की सूचना भी एकत्र करना था।

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-61
2. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-62

4. इस क्रांतिकारी संस्था की 'शिल्पकारी' शाखा भी थी। इसका कार्य भारतीय उद्योगों को प्रोत्साहित करना, विदेशी वस्तुओं को रोकना और बम आदि युद्ध सामग्री बनाने का प्रशिक्षण देना था।[1]

क्रांतिकारियों को उक्त शाखाओं को सम्पादित करना था। इस हेतु उन्हें एक शपथ पत्र पर नाम, दिनांक, पूरा पता सहित हस्ताक्षर करना आवश्यक था।

शपथ पत्र इस प्रकार था :-

शपथ-पत्र

वन्देमातरम्

श्रीमान जी,

मैं अपने प्रति नतमस्तक होता हूँ।

''आज मैं अपने को गुप्त संस्था के सदस्य के रूप में भरती करता हूँ। सर्वान्तर्यामी एवं सर्वव्यापी ईश्वर के नाम पर मैं यहाँ प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कभी संस्था के हित के विरुद्ध विश्वासघात नही करूंगा। भारत माता के नाम पर मैं घोषित करता हूँ कि मैं उसे विदेशियों की दासता से मुक्त करूँगा और उसका सच्चा कर्तव्यपरायण पुत्र बना रहूँगा। मृत्यु पर्यन्त देश की सेवा से परांगमुख नही बनूँगा। मैं मातृभूमि के लिए अपना तन मन धन अर्पण करने को तैयार रहूँगा। मैं माता का सच्चा पुत्र हूँ और कभी संस्था के कार्य में बाधक नहीं बनूँगा। सूर्य अपनी ऊष्मा और चन्द्रमा अपनी शीतलता भले ही छोड़ दे लेकिन मैं अपने कर्तव्यों के प्रति कभी पीठ नहीं दिखाऊँगा। आवश्यकता पड़ने पर मैं पारिवारिक बन्धनों की भी चिन्ता नहीं करूँगा।

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-62

''मैं माता की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं संस्था के आदेशों का पालन करने में असफल नही बनूँगा। असफलता की दशा में संस्था को मुझे मृत्यु दण्ड देने का अधिकार होगा।''[1]

गेंदा लाल की गुप्त संस्था के सदस्यों के नाम एवं उपनाम इस प्रकार है :-

1. माधोराम उर्फ मास्टर या बृज किशोर
2. प्रताप सिंह उर्फ प्रीतम या गणेश
3. देवनारायण उर्फ हरी या भगवानदीन या चक्कन
4. गोविन्द सिंह उर्फ लक्ष्मण
5. राम प्रसाद बिस्मिल उर्फ गया
6. राम नारायण उर्फ जगदीश
7. गेंदालाल दीक्षित उर्फ फूल
8. गंगा सिंह उर्फ राम नाथ
9. शिवकृष्ण उर्फ सेठ या महेन्द्र या शिव
10. गोपीनाथ उर्फ महेश
11. दम्भीलाल पाण्डे उर्फ राम लाल
12. सिद्धगोपाल उर्फ थालपाल
13. प्रभाकर पाण्डे उर्फ आदित्य
14. चन्द्रधर जौहरी उर्फ गनपत
15. राजाराम उर्फ गुट्टन या गुट्टा
16. फतेहसिंह उर्फ भूदेव
17. मुकुन्दी लाल उर्फ भंगड़ी या भारतवीर

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल पृष्ठ-63

अन्य क्रांतिकारी सदस्य जिनके उपनाम नही थे वे इस प्रकार है - लाल सिंह, भैरो सिंह, टोड़ी सिंह, रामदीन, उल्फत सिंह, किढोरी लाल, कालीचरन, शिव चरन लाल।[1] पं0 गेंदालाल दीक्षित का विचार था कि देश का शिक्षित समाज इस समयदेश प्रेम की भावना से बिल्कुल शून्य है। अतः दीक्षित जी को इस शिक्षित समाज से निराशा होने लगी। वे डाकुओं से सम्पर्क स्थापित करने लगे। दीक्षित जी का मत था कि डाकू किसी विवशतावश ही डाकू जीवन अपना लेता है। डाकू के पास अदम्य साहस होता है। यदि उनका उचित मार्ग दर्शन किया जाय तो वे अच्छे व्यक्ति बन सकते हैं। अपने उद्‌देश्य में सफल सिद्ध होने को ध्यान में रखकर गेंदालाल दीक्षित ने साधनों की पवित्रता को गौण समझा। उन्होंने डाकुओं को अपने संगठन का सदस्य बनाया, वे इनके भीतर अंग्रेजी सत्ता के प्रति विद्रोह की भावना जगाना चाहते थे और इनकी सहायता से जेलों पर धावा बोलकर बंदियों को मुक्त कराना चाहते थे। इस प्रकार वे जेल के कैदियों को भी संगठन का सदस्य बनाना चाहते थे। दीक्षित जी सशस्त्र क्रांति द्वारा देश को स्वाधीन कराने का सपना देखते थे।[2] बाद में पता चला कि दीक्षित जी ने ऐसी उम्मीद कर बड़ी भूल की। जो डाकू थे भला उनका क्या उपयोग हो सकता था। वे तो आन्दोलन को कलुषित ही करते। शचीन्द्र नाथ सान्याल ने लिखा है - 'पहले वे भी समझते थे कि जिस समय आम विद्रोह हो उस समय जेल में बन्द कैदी रिहा कर दिये जायँ तो उस समय उसमें मदद देंगे, किन्दु बाद को जब साधारण कैदियों में बहुत दिन रहे तो उनका यह ख्याल बदला।[3]

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल पृष्ठ-63
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-29
3. भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मयनाथगुप्त, पृष्ठ-95

यह डाकू संगठन ग्वालियर राज्य में डाका डालने से संबंधित कार्य में ही उलझ गया और एक दिन ऐसी ही योजना में पुलिस से मुठभेड़ हो गयी और दल के पैंतीस सदस्य मारे गये। गेंदालाल दीक्षित बन्दी बनाकर पकड़ लिए गये। दीक्षित जी को ग्वालियर किलें में भेज दिया। अब पं० गेंदालाल दीक्षित को मुक्त कराने के लिए **'मातृवेदी'** के सदस्य राम प्रसाद बिस्मिल, मुकुन्दी लाल, शिवकृष्ण आदि सदस्यों ने योजना बनायी। लेकिन अपने ही साथियों की अल्पज्ञता के कारण भेद खुल गया और क्रांतिकारियों की धर-पकड़ शुरू हो गयी। राम प्रसाद बिस्मिल तो फरार हो गये थे। मैनपुरी षडयंत्र के नाम से पकड़े गये सदस्यों पर मुकदमा चला।[1]

यह वही समय था जब अशफाक उल्ला खाँ शाहजहाँपुर के मिशन स्कूल में सातवीं कक्षा के छात्र थे। षड़यंत्र के सिलसिले में गिरफ्तारियॉ करने पुलिस मिशन स्कूल में भी जा पहुँची। सरकारी गवाह की पहचान पर उनके स्कूल का एक छात्र राजाराम भारती भी बन्दी बनाया गया। राजाराम उस समय दसवीं कक्षा का छात्र था। संदेह के आधार पर दो-तीन विघार्थी और हिरासत में लिये गये। जिस दिन मिशन स्कूल में षड़यंत्र के विषय में पुलिस पहुँची, वहॉ भय का वातावरण व्याप्त हो गया। अशफाक ने इसका उल्लेख किया है-'मैं मिशन स्कूल का एक छोटे दर्जे का ताबिले इल्म था, जबकि मैनपुरी साजिश का मुकदमा चला, हमारे स्कूल में भी इस केस का अप्रूवर शिनाख्त की गरज से लाया गया था और उसने दसवें दर्जे से राजाराम भारती को गिरफ्तार कराया और उस समय वह भी हिरासत में ले लिए गये। गरज यह कि वह दिन भी अजीब दिन था, पुलिस की लाल पगड़ियाँ स्कूल के चारों ओर दिखाई पड़ती थीं।

1. राम प्रसाद 'बिस्मिल' रचनावली, दिनेश शर्मा, पृष्ठ-160

यह एक नयी बात थी कि स्कूल का ताबिलेइल्म इस सूरत में गिरफ्तार हुआ है। क्योंकि बंगाल में यह मामूली बात और आये दिन का मामला है। मगर यू0पी0 में यह बात कहाँ थी? गरज की अजीब दहशत व खौफ स्कूल पर छाया हुआ था और हर एक लड़का अपनी जान की खैर मनाता था। मैं उस रोज स्कूल जरा देर से गया था। कोई लड़का अन्दर से बाहर नहीं निकल सकता था और हर दर्जे में शिनाख्त हो रही थी। मैं भी अपने दर्जे में खामोशी से जा बैठा, मगर नफ्से मामला मालूम करने के लिए बेचैन था, जो मेरे नेचर में था। चूंकि मैं स्कूल का एक हाकी खेलने वाला आजाद खयाल ताबिलेइल्म था, मास्टर साहब से पूछने को झुका, मगर मास्टर साहब बताने से डरे कि एक लड़के ने कहा राजाराम ने कहीं डाका मारा है और वह गिरफ्तार किये गये है। साथ ही और भी लड़के गिरफ्तार हुए हैं।[1] सबसे अलग-थलग रहने वाले विघार्थी थे राजाराम। अशफाक उल्ला को सहसा विश्वास ही नही हुआ था कि राजाराम जैसे एकान्त प्रिय शान्त प्रकृति के व्यक्ति जो छात्र हैं क्रांतिकारी भी हो सकते हैं। अशफाक ने तो पहले यही सोचा कि राजाराम ने कहीं डाका डाला होगा। जब उनके एक साथी ने बताया कि राजाराम किसी खुफिया सोसायटी का मेम्बर है न तो राजाराम कातिल है न डाकू। यह सुनकर अशफाक को आश्चर्य हुआ। अशफाक ने उस मित्र में भी क्रांतिकारी होने के गुण देखे। जब उस मित्र ने निर्भीकता से कहा कि मैं भी देश के लिए मरने को तैयार हूँ अशफाक बहुत प्रभावित हुए। अशफाक पर हुए प्रभाव का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि वे इसी समय राम प्रसाद बिस्मिल से मिलने को बेताब हो गये। बिस्मिल शाहजहाँपुर के ही थे और वे इस समय फरार थे।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवानी सिंह राणा, पृष्ठ-33

उनके साथ ही कई क्रांतिकारी फरार हो गये थे।[1] शाहजहाँपुर के जो क्रांतिकारी मैनपुरी षड़यंत्र केस में सम्मिलित थे, उनका विवरण निम्नवत् है।

फरार होने वाले व्यक्तियों में पं0 कालीचरन भी थे। अशफाक की हाकी टीम में कालीचरन खिलाड़ी के रूप में भी थे। निश्चित ही उनका असर अशफाक पर पड़ा होगा। पं0 कालीचरन के धोखे में पुलिस ने अशफाक से भी पूछताछ की थी। पंडित कालीचरन, जानकी प्रसाद के पुत्र थे, जो बद्रीपुर हदीश, पुवायां के निवासी थे। अशफाक के खिलाड़ी साथी कालीचरन मिशन हाई स्कूल के छात्र थे। उन्हें पुलिस ने 18 जनवरी 1919 को गिरफ्तार किया।[2] जिस समय कालीचरन को गिरफ्तार किया गया वे बरेली कालेज बरेली के छात्र थे। पुलिस ने कालीचरन पर आरोप लगाया कि उनके कमरे से कुछ कागजात मिले जिन पर उर्दू, हिन्दी व अंग्रेजी में सरकार विरोधी कविताएं लिखी थीं। कालीचरन के लेख की पुष्टि बरेली कालेज के इतिहास विभाग के प्राध्यापक एस0सी0 दत्त ने की। कविताओं का मुख्य अर्थ जनता को देश के प्रति बलिदान देने हेतु प्रेरित करना था। एक कविता उदाहरणार्थ दी जा रही है - 'प्रिय देश वासियों! निद्रात्यागो समय कम है। प्रियवर! विलम्ब न करो। देशहित हेतु क्रांतिकारियों का साथ दो।[3] मैनपुरी काण्ड के तहत लालारामधीन को गिरफ्तार कर लिया गया। रामधीन वस्त्र विक्रेता थे और सदर बाजार में रहते थे। लेकिन लाला रामधीन के विरुद्ध कोई प्रमाण न होने के कारण 23 जनवरी, 1919 को छोड़ दिया गया।[4] राम प्रसाद बिस्मिल तो फरार थे ही वे कुछ दिन आगरा में रहे और रूप सिंह नाम रखकर डॉक्टरी भी की।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवानी सिंह राणा, पृष्ठ-34
2. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहॉपुर का योगदान, डा0एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-92
3. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहॉपुर का योगदान, डा0एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-92
4. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहॉपुर का योगदान, डा0एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-88

इसके बाद वे **मिनहाट** में रहने लगे। खेती के साथ-साथ वे साहित्य की रचना भी करते थे। इसी बीच बिस्मिल ने बंगला भाषा भी सीखी जो बहुत काम आयी। उन्होंने पुस्तकों का अनुवाद भी किया (निहिलिस्ट रहस्य, बोल शेविकों की करतूत) जो काकोरी केस में उनके विरुद्ध दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत किया गया। शाहजहाँपुर के बिस्मिल के बाद सबसे सक्रिय व्यक्ति देव नारायण थे जिनका उपनाम भारतीय था, छक्कन लाल के नाम से भी जाने जाते थे। गेंदालाल के बाद मातृवेदी के नेतृत्व की दावेदारी भी उन्होंने प्रस्तुत कर दी। देव नारायण आगरा के निवासी थे। देवनारायण की प्रशंसा में शचीन्द्र नाथ सन्याल ने लिखा है-'देव नारायण बहुत गम्भीर प्रकृति के समझदार आदमी थे। लेकिन हमारे देश का परम दुर्भाग्य है कि गम्भीर प्रकृति के समझदार व्यक्तियों ने निहायत ही कम संख्या में भारतीय विद्रोह आन्दोलन में भाग लिया है।.... उनसे बात-चीत करके यह तय हुआ था कि देव नारायण अपने गाँव को छोड़कर आगरा में जाकर अपना केन्द्र स्थापित करेंगे। यदि देव नारायन ऐसा करते तो उत्तर भारत का विप्लव आन्दोलन और भी गौरवमय रूप धारण करता।[1]

रंगीसिंह के पुत्र गंगा सिंह चन्देल जो नयागंज, थाना-परौर, जलालाबाद के निवासी थे, मैनपुरी काण्ड में फरार रहे। गंगा सिंह का छद्म नाम **'रामनाथ चिरईया'** था। 1 सितम्बर 1918 में मोहल्ला रंग महला (शाहजहाँपुर) शक्ति सिंह के मकान के कमरे में विस्फोटक पदार्थयुक्त बोतल गंगा सिंह के हाथ से फट गयी। पुलिस का आरोप था कि 25 जून 1918 को मिशन हाई स्कूल, मैनपुरी की विज्ञान प्रयोगशाला से तेजाब व पारा की जो बोतले चुराई गई थी,

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहाँपुर का योगदान, डा०एन०सी० मेहरोत्रा, पृष्ठ-93

उसका प्रयोग गंगासिंह विस्फोटक सामग्री बनाने में करते थे।[1] शाहजहाँपुर के राजाराम की चर्चा की जा चुकी है, जो अशफाक के प्रेरणादायक बने थे। अशफाक ने राजाराम के विषय में लिखा भी है। यहाँ थोड़ी और चर्चा आवश्यक जान पड़ती है। राजाराम की पुष्टि शक्ति प्रसाद (मकान मालिक) और उनके नौकर वजीर खाँ ने की। मिशन स्कूल के हेड मास्टर रूफस चरन के सामने राजाराम की तलाशी ली गई। पुलिस के अनुसार निम्नलिखित आपत्तिजनक सामग्री मिली।

(क) बास्टक से एक डायरी जिसमें 17 मार्च 1917 से 18 अक्टूबर 1918 तक की कई प्रविष्ठियॉ अंग्रेजी में राजाराम की हस्तलिपि में मिली थीं।

(ख) टोपी से एक कागज

(ग) एक कागज जो उन्होंने फाड़कर फेक दिया तथा पुलिस ने उसे जोड़ा। इसके अतिरिक्त राजाराम के कमरे से दो नकली मूँछे मिली। इसी प्रकार की मूंछे जून 1918 में बरेली में डाली गयी डकैती के स्थान से मिली थी। उनके कमरे में शस्त्रों के अवशेष पाये गये तथा स्वदेशी शपथ की 242 छपी प्रतियाँ मिली।[2]

मुखबिर सोमदेव के अनुसार राजाराम भारतीय संडा खेड़ा व परेली की डकैती में शामिल थे। उन्होंने स्वाधीनता की प्रतियाँ शाहजहाँपुर व दिल्ली में बेची। राजाराम बाजपेई का छ्दम नाम गौतम था जबकि राजाराम का कथन था कि वह आर्य कुमार सभा तथा सेवा समिति का स्वयं सेवक था तथा उसकी शाखा उसने अपने ग्राम में स्थापित की। सोमदेव के अनुसार राजाराम एक गुप्त संगठन 'मातृवेदी' के सदस्य थे। डायरी में 'हरि' 'गनेश' व 'लक्ष्मण' नाम की चर्चा थी।

---

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहॉपुर का योगदान, डा०एन०सी० मेहरोत्रा, पृष्ठ-90
2. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहॉपुर का योगदान, डा०एन०सी० मेहरोत्रा, पृष्ठ-91

यह छ्दम नाम देव नारायण भारतीय, प्रताप सिंह और गोविन्द सिंह के थे।[1] डायरी में 18 अक्टूबर 1917 की एक प्रविष्टि में कहा गया था- जी0एस0 (गंगा सिंह) द्वारा जीवन दान दूँगा।'' पुलिस का कहना था कि यह गुप्त संगठन के सदस्य बनने की शपथ थी। लेकिन चतुर राजाराम का कहना था कि उनके पिता उनकी शादी कराना चाहते थे परन्तु उन्होंने शिक्षा पूरी न होने तक शादी करने से इनकार कर दिया। उन्होंने गंगा सिंह द्वारा मुझ पर दबाव डलवाया, अतः इन शब्दों का सम्बन्ध 'जी0एस0' द्वारा विवाह सम्बन्ध जुड़ने से था।'' डायरी के 2 मार्च 1918 की प्रविष्टि में कहा गया कि समस्त क्रांतिकारी पैम्फलेट रात में तैयार कर लिए गये। पैम्फलेट में लिखा था - 'अंग्रेजों को मारो तथा देश को आजाद करो। वन्दे मातरम्।''....''देश भक्तों! देश की सुरक्षा हेतु शिवाजी तथा प्रताप के समान अपनी तलवारों को म्यान से निकालो। फिरंगियों को मारकर उनकी लाशों को बोरों में भरो। एक स्वर से कहो कि हिन्दुस्तान आजाद है''[2] जो कागज राजाराम ने फाड़कर फेंका था, उनके टुकड़ों को जब जोड़ा गया तो उससे जो शब्द बने वे इस प्रकार है- 'हमारा शरीर अंग्रेजों को मार डालने के काम आये। यह नश्वर शरीर मातृभूमि को स्वतंत्र कराने हेतु अर्पित है। अंग्रेजों के सिर काट दो और बता दो कि यह उनके अन्याय का परिणाम है। ऐसे थे राजाराम जो अशफाक उल्ला खाँ के छात्र जीवन के खिलाड़ी साथी थे।

मैनपुरी षड्यंत्र का खुलासा हो जाने के बाद मुजरिम गेंदालाल दीक्षित को ग्वालियर से मैनपुरी जेल लाया गया। पुलिस को मुखबिर द्वारा यह सूचना मिली की मैनपुरी काण्ड में मुख्य व्यक्ति और सर्वे-सर्वा गेंदालाल दीक्षित है।

---

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहाँपुर का योगदान, डा0एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-91
2. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहाँपुर का योगदान, डा0एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-92

मैनपुरी जेल में दीक्षित जी को तपेदिक रोग हो गया। ग्वालियर और मैनपुरी में उन पर मुकदमा चल रहा था। उन्हें यह ज्ञात हो गया था कि उन्हें या तो फाँसी दे दी जायेगी या काला पानी की सजा। गेंदालाल जी बुद्धि के तेज थे वे किसी भी आफत-विपत्ति से उबरने का मार्ग ढूँढ़ लेते थे। इस हेतु भी उन्होंने एक युक्ति निकाली, उन्होंने कहा कि वह स्वयं मुखबिर बनना चाहते हैं। उन्होंने पुलिस को यह भी विश्वास दिलाया कि वह क्रांतिकारियों को पकड़वा देंगे। पुलिस प्रसन्न हो गयी कि क्रांतिकारी दल का प्रमुख नेता मुखबिर बनना चाहता है। उन्हें जेल से निकालकर दूसरे सरकारी गवाहों के निकट रखा गया। वहाँ सारा विवरण प्राप्त कर रात्रि के समय सरकारी गवाह रामनारायण को लेकर वे भाग निकले।[1] रामनारायन के भाग जाने के बाद दीक्षित जी कोटा से आगरा पहुँचे और फिर दिल्ली। वहाँ प्याऊ पर पानी पिलाने की नौकरी की लेकिन रोग तो बढ़ता ही गया। अन्त में वे मृत्यु की गोद में समा गये। मरते समय दीक्षित जी ने पत्नी से कहा-'मेरा शरीर नष्ट हो जायेगा। मैं मोक्ष नहीं चाहता, मैं तो चाहता हूँ कि बार-बार इसी भूमि में जन्म लूँ और बार-बार इसी के लिए मरूँ। ऐसा तब तक करता रहूँ जब तक देश गुलामी की जंजीर से न छूट जाय।[2] पं0 गेंदालाल दीक्षित का देहावसान 21 दिसम्बर 1920 को हुआ।[3] यह अमर शहीद सिर्फ अपनी यादें, अपनी संवेदनाएँ और अपने ओजस्वी स्वर भारतीय क्रांतिकारियों के लिए छोड़कर सदैव के लिए विदा हो गया।

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-94
2. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-94
3. रामप्रसाद बिस्मिल रचनावली, दिनेश शर्मा, पृष्ठ-164

<u>मैनपुरी षड्यंत्र केस का निर्णय :-</u> मैनपुरी षड्यंत्र केस का निर्णय 1 सितम्बर 1919 को अंग्रेज न्यायाधीश मि0 किस ने सुनाया। इस निर्णय में दम्भी लाल पांडे, सिद्ध गोपाल, गोपीनाथ को 7 वर्ष की सजा, श्रीचन्द्रधर जौहरी को 5 वर्ष की सजा, किढ़ोरी लाल गुप्त, मुकुन्दी लाल, राजाराम बाजपेई, मिजाजी लाल को 3 वर्ष की सजा सुनाई गयी। शिव चरन लाल शर्मा, प्रभाकर शर्मा, फतहसिंह को जेल और दण्ड दिया गया। ठाकुर प्रसाद, रामरतन, रामदीन, कालीचरन, शम्भु दयाल सक्सेना साक्ष्य के अभाव में छोड़ दिये गये।[1] निश्चित ही मैनपुरी काण्ड का प्रभाव अशफाक उल्ला खाँ पर इतना पड़ा कि उनका जीवन ही बदल गया। वे आम नागरिकों से ऊपर उठ गये।

<u>मैनपुरी षड्यंत्र के क्रांतिकारियों के गीत :-</u>

गीतों, कविताओं ने ऊर्जायुक्त होने में काफी सहयोग दिया है, यही कारण है कि क्रांतिकारी इनसे प्रेरणा पाने एवं समर्पित होने का उत्साह पाते एवं तैयार होते। निश्चित एक लय ही ऐसी है जो मानसिक खुराक देती है।

<u>- पं0 गेंदालाल दीक्षित द्वारा संचालित 'शिवाजी समिति में गाया जाने वाला प्रिय सैनिक गीत -</u>

'उठो! उठो!! उठो!!!
'उठो! उठो!! उठो!!!
बंधन मुक्त करो मैय्या को, हे भारत के वीरो!
हे भारत के वीरो!!
नाम कमाया जो पुरखों ने, क्या हम उसे गँवायेंगे
दूध पिया है भारत माँ का, क्या हम उसे लजायेंगे

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ74,75 एवं मैनपुरी षणयंत्र केस, पत्रांक सं0 11/919-राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ।

कर्मवीर बन जाओ प्यारो! हे भारत के वीरो!
बंधन मुक्त करो!...

- पं0 गेंदालाल दीक्षित द्वारा गाये जाने वाले प्रिय गीत इस प्रकार हैं -

'...नौजवानों यह मौका है, उठो खुल खेलो।
और जो सर पै बला आये, खुशी से झेलो।।
देश के नाम पर, सिदके में जवानी दे दो।
फिर न मिलेंगी ये माता की दुआयें ले लो।।

- क्रांतिकारियों की प्रतिज्ञा का गीत -

'है देश को स्वाधीन करना जन्म इस संसार में,
तत्पर रहूँगा मैं सदा अंग्रेज दल संहार में,
अन्याय का बदला चुकाना मुख्य मेरा धर्म है,
मद-दलन अत्याचारियों का यह प्रथम शुचिकर्म है।
अंग्रेज-रुधिर-प्रवाह में निज पितृगण तर्पण करूँ,
अंग्रेज सिर सहित भक्ति में जननि के अर्पण करूँ,
होते हमारे मात जग में पददलित होगी नहीं,
रहते करोड़ों पुत्र के जननी दुखित होगी नही,
हे ईश। भारतवर्ष में शतवार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशौपकारक कर्म हो,'

- क्रांतिकारी शिव कृष्ण द्वारा गाया जाने वाला गीत -

'जुबां को बन्द करे या मुझे लासीर करे।
मेरे ख्याल को बेड़ी पिन्हा नहीं सकते।।
खुशी से जेल को दे या चढ़ाय शूली पर।

यह गन मशीन तेरे अब, डरा नहीं सकते।।
आत्मा अमर है शिव जिस्म है नश्वर मेरा।
लाख यह यत्न करे, पर मिटा नहीं सकते।।[1]

राम प्रसाद बिस्मिल तो खुद ही समर्थ रचनाकार थे, उनके गीत और उनकी गजलें क्रांतिकारियों की जुबान पर चढ़ी रहती थी। कविताओं की संवेदनात्मक यात्रा देखें तो स्पष्ट हो जायेगा कि क्रांतिकारियों के हृदय में कितनी तड़प, टीस और बेचैनी थी, जो काव्य के माध्यम से सम्प्रेषित होती रहती थी। अशफाक भी एक अच्छे रचनाकार थे। उ0प्र0 का मैनपुरी काण्ड भारत वर्ष के क्रांतिकारी आन्दोलन की एक विशेष कड़ी है। इस काण्ड से अशफाक ही नहीं कई युवा क्रांतिकारियों को प्रेरणा मिली होगी।

संयुक्त प्रान्त में बनारस षड्यन्त्र के बाद यह दूसरा षड्यंत्र था। यह षड्यंत्र अन्य षड्यन्त्रों की अपेक्षा कई विशेषताएं रखता है। इस षड्यंत्र की पहली विशेषता बड़ी विचित्र है जो जज ने अपने फैसले में खुले शब्दों में प्रकाशित की है - ''यह बड़े दुर्भाग्य का विषय है कि शिव कृष्ण के भाग जाने के बाद कोई भी असली नेता कचहरी में मौजूद नहीं। यदि वे लोग कोर्ट में होते तो उन्हें सख्त से सख्त सजा दी जाती।''[2]

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-79
2. राम प्रसाद बिस्मिल रचनावली, दिनेश शर्मा, पृष्ठ-160

अध्याय-चार

अध्याय-चार

उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन

उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन की भूमिका महत्वपूर्ण है। क्रांतिकारी आन्दोलन की बढ़ती लहर इस प्रान्त में भी ठहरी नहीं थी। यह प्रदेश तीन काण्डों (षड्यन्त्रों) के द्वारा इतिहास में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त कर चुका है-बनारस षड्यंत्र, मैनपुरी षड्यंत्र और काकोरी काण्ड।

1899 में लार्ड कर्जन को भारत का वाइसराय नियुक्त किया गया था। कर्जन ने राष्ट्रीय आन्दोलन को पूरी शक्ति के साथ दमन करने और खुले नसली भेदभाव की नीति का अनुसरण किया। वायसराय कर्जन भारतीय बुद्धिजीवियों से घृणा करता था, उसने कर के द्वारा शहरी मध्यम वर्गों के व्यापक हिस्सों को गम्भीर नुकसान पहुँचाया। 1898 और 1904 में भारतीय राष्ट्रीय प्रेस के खिलाफ निर्दिष्ट सरकारी गोपनीयता कानून को अधिक व्यापक कर दिया गया।[1] कर्जन की दमनकारी नीतियों ने उपनिवेशवाद विरोधी रुखों को मजबूत बनाने तथा क्रांतिकारी आन्दोलन को बढ़ाने में ही सहायता की।

क्रांतिकारी उत्थान के कई कारण हो सकते हैं लेकिन मुख्यतः वही कारण थे जिनसे राष्ट्रीय आन्दोलन में उग्रवाद का उदय हुआ। भेद यह था कि क्रांतिकारी शीघ्र परिणाम चाहते थे। उदारवादी दल ने प्रेरणा को लोकप्रिय बनाया था। उग्रवादियों ने धीमें प्रभाव की नीति को अपनाया था[2] लेकिन क्रांतिकारी इन सब चीजों में विश्वास नहीं करते थे। क्रांतिकारियों का विश्वास था कि राष्ट्रीय जीवन में जो भी उपयुक्त तत्व हैं, उसे विदेशी सत्ता समाप्त कर देगी चाहे धार्मिक,

1. भारत का इतिहास, ग्रि0 कोतोस्की, कोअ0 अंतोनोवा, पृष्ठ 502
2. आधुनिक भारत का इतिहास, बी0एल0ग्रोवर, पृष्ठ 309

राजनैतिक स्वतंत्रता हो या नैतिक मूल्य या भारतीय संस्कृति।[1] इसी कारण क्रांतिकारियों का मुख्य उद्देश्य भारत भूमि को अंग्रेजी शासन से मुक्त कराना था।

ज्ञातव्य है कि उत्तर प्रदेश का क्रांतिकारी आन्दोलन मुख्यतः बंगाल से फैला। सर्वप्रथम इस प्रान्त में, जो शान्तिपूर्ण प्रान्त कहा जाता था, नवम्बर 1907 के 'स्वराज्य' नाम से इलाहाबाद से प्रकाशित पत्र के माध्यम से क्रांतिकारी प्रचार प्रारम्भ हुआ। संयुक्त प्रान्त (उ0प्र0) में 1908 में शचीन्द्र नाथ सन्याल ने एक क्लब की स्थापना की। इसी क्लब के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रारम्भ हुआ। इस क्लब का नाम अनुशीलन समिति रखा गया। दिखावे के लिए ऊपरी तौर पर समिति का उद्देश्य मानसिक, नैतिक, शारीरिक उन्नति करना था।[2] यह समिति 1914 तक लगभग निष्क्रिय रही। जब रास बिहारी बोस 1914 में बनारस पहुँचे तब उन्होंने संयुक्त प्रान्त में क्रांतिकारी गतिविधियों का संचालन अपने हाथ में ले लिया। हॉलाकि पुलिस को उनकी तलाश थी और इनाम की भी घोषणा हो गयी थी। पुलिस को चकमा देकर सन् 1914 के अधिकांश समय में वे बनारस रहे। उनके नेतृत्व में अनुशीलन समिति काफी सक्रिय हो गयी। बम तैयार किये गये और बंगाल से भी काफी मात्रा में बम प्राप्त किये गये।[3] **'अनुशीलन समिति'** संस्था खोलने का मुख्य उद्देश्य राजद्रोह प्रचार करना था। यह समिति 1909 से 1913 तक कायम रही। इस समिति से वे सदस्य अलग हो गये जो समिति की कार्य प्रणाली से असहमत थे, वे नहीं चाहते थे कि अंग्रेजों से इस प्रकार मुकाबला किया जाय। गरमदल के सदस्य भी बाद में अलग हो गये,

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास, बी0एल0ग्रोवर, पृष्ठ -310
2. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त पृष्ठ-83
3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, रामगोपाल पृष्ठ -207

इनमें शचीन्द्रनाथ सन्याल भी थे। बाद में इन लोगों ने नई समिति बनाई। एक मुखबिर के बयान के अनुसार शचीन्द्रनाथ कलकत्ता जाते-आते रहते थे। वहाँ से वे बम और धन प्राप्त करते थे। 1913 की शरद ऋतु में शचीन्द्र नाथ के साथियों ने बनारस के स्कूल कालेजों में राजद्रोहात्मक पर्चे बाँटे और डाक द्वारा दूसरी जगह भी भेजे। लोग गाँवों में जाते थे, भाषण देते थे। भाषण के दो विषय होते थे। एक तो यह कि अंग्रेजों को बाहर करो दूसरा यह कि अपनी हालत सुधारो। यह बात खुल्लम-खुल्ला कही जाती थी।

वर्ष 1914 में रास बिहारी जो दिल्ली और पंजाब के षड्यंत्रों में मशहूर हो गये थे बनारस आये और सारा नेतृत्व अपने अधिकार में ले लिया। शचीन्द्र दल के सदस्य समय-समय पर उनसे मिलते थे। 1914 के नवम्बर की रात जब वे एक बम की टोपी की जाँच कर रहे थे तो वह फट गई, इससे शचीन्द्र नाथ और रास बिहारी को चोट आ गयी।[1] इसके बाद विष्णु गणेश पिंगले से मुलाकात हुई। पिंगले ने बताया कि 4000 आदमी विद्रोह की गरज से अमेरिका से आ चुके हैं और 2000 और आने वाले है। 1915 में पिंगले और शचीन्द्रनाथ सन्याल मिले और रास बिहारी के साथ महत्वपूर्ण सभा की। इसमें उन्होंने बतलाया कि शीघ्र ही एक विराट विद्रोह होने वाला है और वे देश के लिए मरने को तैयार रहें। बाद में शचीन्द्र नाथ पकड़े गये। अधिकारियों को पता चल चुका था कि बनारस को केन्द्र मानकर संयुक्त प्रान्त, मध्य प्रदेश, पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, तीनों प्रान्तों की पुलिस सजग कर दी गई।[2] भारत रक्षा कानून के मुताबिक बनायी गयी एक अदालत में मुकदमा चला।

1. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्यथनाथ गुप्त पृष्ठ 85
2. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, राम गोपाल, पृष्ठ-208

दस व्यक्तियों को लम्बी कैद की सजा हुई। शचीन्द्रनाथ सन्याल को साढ़े बाइस साल की सजा हुई।[1] गवाहों के बयान से साबित हो गया था कि कई बार फौजों को भड़काने की चेष्ठा की गयी, राजद्रोही परचे बाँटे गये। पुलिस को तलाशी में निम्न वस्तुएं प्राप्त हुई -

1. एक 450 छै फायर वाला रिवाल्वर
2. एक टिन कारतूस
3. एक ब्रीच लोडिंग राइफल
4. एक दोनाली 500 एक्सप्रेस राइफल
5. एक दोनाली बन्दूक
6. सत्रह करौलियाँ
7. बहुत से कारतूस
8. एक पैकेट बारूद
9. 'स्वाधीन भारत' और 'लिबर्टी' पर्चे

विनायक राव कापले जो बनारस षड्यन्त्र से सम्बन्ध रखते थे 9 फरवरी 1918 को मार डाले गये। बाद में उन्हीं से सम्बन्ध रखने वाले सुशील लाहिड़ी पकड़े गये।

सुशील लाहिड़ी ने भी संयुक्त प्रान्त में क्रांतिकारी गतिविधियाँ चलाने का प्रयास किया। संयुक्त प्रान्त में दूसरा बड़ा आन्दोलन जो क्रांतिकारियों द्वारा हुआ वह था मैनपुरी काण्ड जिसकी चर्चा की जा चुकी है। उत्तर प्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन का नेतृत्व बनारस के बंगाली क्रांतिकारियों ने किया। यह ज्ञातव्य है कि इसकी प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के बहुत से देश भक्त क्रांतिकारी गतिविधियों की ओर आकर्षित हुए।

---

1. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त पृष्ठ-86

यही प्रेरणा कही न कहीं मैनपुरी षड्यंत्र की मानसिकता से भी जुड़ती है। यह भी लगता है कि बालक अशफाक भी क्रांतिकारियों की गतिविधियों से परिचित होते रहे होंगे। अशफाक पहले से ही अपनी माता को अखबार पढ़ते देखा करते होंगे तो सूचना से वंचित कैसे होंगे।

मैनपुरी षड्यंत्र के प्रमुख नेता गेंदा लाल ने उ0प्र0 के युवाओं में पुनः आग सुलगा दी और सिद्ध कर दिया कि अभी युवा वर्ग सोया नही है। षड्यंत्र की महत्वपूर्ण घटना है कि ब्रह्मचारी और गेंदालाल ने एक धनी व्यक्ति के यहाँ डाका डालने का निश्चय किया। वह स्थान इतनी दूर था कि एक दिन में नहीं पहुंच सकते थे। इसलिए पड़ाव डालना पड़ा। गिरोह में 80 आदमी थे। इस गिरोह के एक भेदिया ने किसी तरह पकड़वाने का निश्चय किया। भेदिया तो मार दिया गया लेकिन अन्य साथी पकड़े गये। मैनपुरी षड्यंत्र उ0प्र0 के क्रांतिकारी इतिहास का दूसरा पड़ाव है जिसकी चर्चा की जा चुकी है लेकिन यह बताना भी आवश्यक है कि चूँकि मैनपुरी षड्यंत्र में शाहजहाँपुर की भूमिका काफी रही है और यही एक काण्ड है जिसके कारण अशफाक ने क्रांतिकारी जीवन अपनाया। क्रांतिकारियों का एक प्रमुख कार्य यह भी था कि देश के युवाओं में अंग्रेजों के प्रति घृणा पैदा करना और जनता को क्रांति के लिए तैयार करना। इस हेतु क्रांतिकारी साहित्य का खूब वितरण होता था। क्रांतिकारी सशस्त्र विद्रोह में विश्वास रखते थे और अंग्रेजों का वध करके आतंक पैदा करना चाहते थे। लेकिन इसकी भूमिका क्रांतिकारी साहित्य से ही बनती थी। क्रांतिकारी पर्चों को गुप्त रूप से उ0प्र0 के विभिन्न नगरों में चिपका दिया करते थे। ये पर्चे लखनऊ और दूसरे नगरों में प्रकाशित किये जाते थे। क्रांतिकारी पर्चे का एक नमूना इस प्रकार है -

''ओउम्

वन्दे मातरम् वन्दे मातरम् - स्वदेशाभिमानियों को संदेश -

''वीर पुरुषों, आगे आवो और फोर्ट विलियम पर अधिकार करो। वह कितने अंग्रेज हैं? उनको जल्दी बिन लो। प्रिय साथियों, देशवासियों, हम सब जानते है कि जिस प्रकार भारत की सोने की चिड़िया पिछले 600 वर्षों में विदेशियों के अत्याचार से पीड़ित रही है। चार सौ वर्षों तक यवनों ने हमारी मातृभूमि को आक्रान्त किया लेकिन उन्होंने केवल हमारे भौतिक शरीरों को ही पीड़ित किया था, मगर अपनी सभ्यता की डींग हाँकने वाले अंग्रेजों ने तो एक सौ साल के अन्दर हमारी सारी सम्पत्ति लूट ली और इसे लूट कर इग्लैण्ड ले गये। उन्होंने हमारी महानता को नष्ट कर दिया है और हमारे पुरुषों को स्त्रियों में परिवर्तित कर दिया है। हम सब उनकी कूटनीति के शिकार बना दिये गये हैं। उन्होंने हमें झूठे प्रलोभन से ठगा है और इस प्रकार का जाल हमारे चारों तरफ फैलाया है कि हर कदम पर हमें इसके काँटे चुभते हैं। किसी ने सत्य ही कहा है -

अपने प्रति

''तुमने भारत के लोगों को प्रेम से आकर्षित किया
और फिर उन्हें ही मार डाला,
तुम हमारी प्रतिमा बने, तुमने हमें अपना
उपासक बनाया और फिर हमें ही मार डाला।
यह हमारी हत्या कितनी भयंकर है
तुमने हमें अपना बनाया और फिर हमें ही मार डाला।
वे जो मृत्यु के सन्निकट थे,
उन्हें बार-बार जीवित किया और फिर उन्हें मार डाला।''[1]

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणि शुक्ल-पृष्ठ 80

''अब तक वैसे ही स्वराज्य के प्रलोभन में हमें फँसाया जा रहा है लेकिन कोई भी देश कभी तलवार पकड़े बिना स्वतंत्र नही हुआ है। अब हे देश प्रेमियों! वीर शिवाजी और प्रताप के समान अपनी तलवार उठाओ और प्यारी भारत माता के उत्पीड़कों को पाठ पढ़ाओ। भारत के प्रत्येक स्त्री पुरुष प्रतिज्ञा लो कि जब तक दुष्ट बेईमान, धोखेबाज और छद्मी एवं धूर्त अंग्रेजों को, जो भारत के उत्पीड़क हैं, हम नहीं निकाल देंगे तब तक हम प्रिय से प्रिय कार्यों को जिसमें हम संलग्न हैं, भूल जायेंगे और अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को हम इस कर्तव्य में लगा देंगे। उन्हें स्पष्ट समझा दो कि अब भविष्य में हम तुम्हारी धूर्ततापूर्ण चालाकियों से प्रवंचित नहीं होंगे। हमारा प्रमुख लक्ष्य और उद्देश्य है और हमेशा यह रहेगा कि हम उनका सम्पूर्ण विनाश करेंगे।''

''अब सब भारतीयों को एक स्वर से घोषित करना है कि भविष्य में हिन्दुस्तान वास्तविक हिन्दुस्तान होगा''[1]। उक्त पर्चा 1 मार्च 1918 की रात को लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, आगरा, मथुरा, बरेली, फैजाबाद, शाहजहाँपुर, तिलहर, पोवान, इटावा, गोंडा, मिर्जापुर, सुल्तानपुर, हरदोई में चिपकाये गये। शिवकृष्ण, गोपीनाथ, दलपत, राम नारायण, सिद्ध गोपाल, प्रभाकर और चन्द्रधर ने उक्त पर्चे चिपकाये। बस्ती में 2 मार्च 1918 की रात में पर्चे चिपकाये गये। 'अंग्रेजों को मारो और स्वतंत्र बनो' शब्दों से युक्त पर्चे मैनपुरी, मेरठ, एटा और फतेहगढ़ डाक द्वारा भेजे गये। यह कार्य छात्र प्रभाकर ने किया।[2] मार्च 1918 के लगभग **'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली'** नामक पुस्तक का प्रकाशन लखनऊ से हुआ। इस पुस्तक का संकलन 'अमेरिका की स्वाधीनता का इतिहास' नामक पुस्तक के आधार पर देव नारायण ने किया था।

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-81
2. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-81

गंगा सिंह ने अंग्रेजी उद्धरणों का इसमें समावेश किया था। इस पुस्तक के शीर्षक पृष्ठ पर ये शब्द अंकित थे -''हे वीर भारतीयों उठो, अस्त्र उठाओ, अपनी तलवार खोलो और साहस के साथ आगे बढ़ो। विजय प्राप्त करो या युद्ध क्षेत्र पर अपने जीवन का बलिदान करो। विदेशी शासन ही अकाल और भारत की सब आपत्तियों का उत्तरदायी है। स्वतंत्रता के लिये तलवार उठाना पाप नहीं।'' इस पर्चे में बनारस षड्यंत्र के मुखबिरों की भी राजद्रोही कहकर भर्त्सना की गयी थी। इस पुस्तक में उल्लेख किया गया था कि इंग्लैण्ड का तुच्छतम निवासी भी अपने को सर्वप्रभु समझता है और हमें अपना गुलाम समझता है। इस पुस्तक का समापन कविता से होता है, जिसका आशय है - 'हम बाग को नष्ट करने वालों को पाठ पढ़ायेंगे... हे हत्यारे! दैनिक उत्पीड़न अच्छा नहीं है। हमें बताओ कि तुम्हारे और हमारे बीच अन्तिम फैसला कब होगा?[1]

24 दिसम्बर 1918 को उ0प्र0 सरकार के आदेशानुसार यह पुस्तक जब्त कर ली गयी। क्रांतिकारी संस्था के सदस्यों में अंग्रेजी सत्ता को समाप्त कर देने की इतनी आग थी और तड़पन थी कि वे स्वतंत्रता की वेदी पर मर-मिटने को तैयार रहा करते थे। उस समय की कविताओं का अर्थ यही संकेत देता है। उदाहरण - 'हृदय में उस समय तक विश्राम नहीं लूँगा जब तक भारत में अपना ही शासन फिर से स्थापित नही करूँगा, गौरव से अलंकृत नही करूँगा और शत्रु से कोहनूर वापिस नहीं लूँगा। अगर मैं इसमें असफल रहा तो अपना सिर काट लूँगा या अपने को डुबा दूँगा या अपने को अग्नि की भेंट कर दूँगा।' कविताओं के आशय स्पष्ट रूप से विद्रोहात्मक थे और आग उगलते शब्द जोश पैदा करते थे।

---

1. मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास, चिन्तामणिशुक्ल, पृष्ठ-82

कविताएँ अण्डमान भेजने वालों और फाँसी पर लटकाने वालों की देह पर पिघला कर शीशा डालने को कहती हैं। कहीं कुलीगीरी प्रथा का विरोध है तो कहीं निरंकुशता से उत्पन्न हुए संत्रास, बेचैनी। क्रांतिकारियों पर विदेशी सत्ता के गुप्तचर विभाग की कड़ी नजर रहती थी। तलाशियों, गिरफ्तारियों का सामना करते ये क्रांतिकारी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए सदैव भूखे रहते थे। शायद यही भूख जो कभी मिटी नही, अशफाक उल्ला खाँ में भी थी।

काकोरी काण्ड के पूर्व भी कई डकैतियाँ डाली गयी थीं, जिसका प्रभाव अशफाक पर निश्चित ही पड़ा था। खास तौर पर शाहजहाँपुर के क्रांतिकारियों द्वारा किये गये कार्यों का असर तो अशफाक पर पड़ना ही था।

1. **खंडा खेला (तिलहर थाना निगोही): -** जून 1918 के तीसरे सप्ताह का वह दिन डकैती के लिए क्रांतिकारियों ने नियुक्त कर रखा था। इस दिन क्रांतिकारी खंडा खेड़ा ग्राम के प्रमुख के घर डाका डालने हेतु गये। इस गाँव में एक बारात आयी थी। घर में प्रवेश की युक्ति नहीं सूझी। देर होने पर ग्रामवासी सतर्क हो गये और क्रांतिकारियों को बिना कार्य सम्पन्न किये वापस आना पड़ा।[1]

2. **परेली (शाहाबाद, हरदोई) : -** क्रांतिकारियों ने 23 जून 1918 को हरदोई के शाहाबाद नामक थाने के अन्तर्गत परेली में एक विधवा ब्राह्मणी के घर डाका डाला। यह विधवा ब्राह्मणी क्रांतिकारी राजाराम बाजपेई की मौसी थी। राजाराम ने ही उस विधवा के कंधे पर छूरा रखा और चाभियाँ प्राप्त की। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार डकैती में क्रांतिकारियों ने दस हजार रूपये लूटे।

---

1. स्वतंत्रता आदोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, एन0सी0 मेहरोत्रा पृष्ठ -115

इस डकैती में राम प्रसाद बिस्मिल, राजाराम भारतीय, गंगा सिंह चन्देल आदि सम्मिलित थे। यह संयोग ही था कि राजाराम बाजपेई की नकली मूछें छूट गई। जब वे पकड़े गये तो पुलिस ने उनके कमरे से वैसी ही मूछें प्राप्त की थी।[1]

3. <u>ढकिया हमीदनगर (पुवायाँ, शाहजहाँपुर) :-</u> शाहजहाँपुर जनपद की पुवायाँ तहसील के सिंधौली थानान्तर्गत ग्राम-ढकिया हमीदपुर में क्रांतिकारियों ने डकैती डाली। डकैती डालने की तिथि थी 29 सितम्बर 1918। क्रांतिकारी एक ऊँट गाड़ी पर हथियारों का बक्सा रखकर वापस आ रहे थे। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 30 सितम्बर 1918 को दल के दो सदस्य जलालपुर चुंकी चौकी पर ऊँट गाड़ी छोड़कर भाग गये। उक्त बाक्स से एक 450 बोर की दोनाली राइफल, एक नली बन्दूक, 3 छः नम्बर के रिवाल्वर, 30 कारतूस तथा दो पैकेट गोला बारूद निकला। राजाराम बाजपेई पर उक्त डकैती में शामिल होने का आरोप लगाया गया था।[2]

4. <u>बमरौली (पीलीभीत) :-</u> ग्राम बमरौली जो पीलीभीत के अन्तर्गत है, के निवासी बलदेव प्रसाद के घर क्रांतिकारियों ने डकैती डाली। बलदेव प्रसाद सूदखोरी व शक्कर की खांडसार का काम करते थे। इस डकैती में क्रांतिकारियों के हाथ 600 रूपये नकद एवं 4000 रूपये के आभूषण हाथ लगे थे।[3] मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार, धन का उपयोग 'दि रिबोल्युशनरी' नामक पर्चे के छपवाने में खर्च किया गया। क्रांतिकारियों को चुनौती देने वाला एक ग्रामवासी क्रांतिकारियों की गोली से मारा गया।

---

1. स्वतंत्रता आदोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, एन0सी0 मेहरोत्रा पृष्ठ -115
2. स्वतंत्रता आदोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, एन0सी0 मेहरोत्रा पृष्ठ -116
3. पूर्वो, एच-डब्लू-हेल, पृष्ठ-57

5. **<u>बिचपुरी (पीलीभीत) :-</u>** 9 मार्च 1925 को टोटी नामक कुर्मी के घर क्रांतिकारियों ने डकैती डाली। टोटी बिचपुरी जो पीलीभीत जिले के अन्तर्गत गाँव था, वहीं का वह निवासी था। उसके पास 36 एकड़ जमीन थी। इस डकैती में क्रांतिकारियों ने 800-900 रूपये लूट लिये। दुर्भाग्य से इस डकैती में भी श्यामलाल नाम का एक ग्रामवासी मारा गया। मुखबिर बनारसी लाल के अनुसार इस डकैती में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, मन्मथनाथ गुप्त, राम कृष्ण खत्री, चन्द्रशेखर आजाद सम्मिलित हुए थे। क्योंकि ये लोग शहबाजनगर स्टेशन पर एकत्र हुए थे। इस डकैती में राम प्रसाद बिस्मिल ने कुछ पेशेवर डाकुओं को भी शामिल किया था।[1]

6. **<u>द्वारकापुर (प्रतापगढ़) :-</u>** क्रांतिकारियों ने प्रतापगढ़ के द्वारकापुर गाँव में शिवरतन वैश्य के मकान में 24 मई 1925 को डकैती डाली। इस डकैती में ग्रामवासियों पर भी गोलियाँ चलाई गयी थी, जिससे रामसरन नाम का एक बालक भी मारा गया था। जिसमें एक रिवाल्वर भी खो गया था। राम प्रसाद बिस्मिल ग्राम वासियों पर गोली चलाये जाने से दुखी और निराश थे।[2] यह डकैती आर्थिक दृष्टि से लाभ दायक नहीं थी। क्रांतिकारियों पर मुकदमा भी हुआ। लेकिन जब यह ग्राम वासियों को ज्ञात हुआ कि डाकू कोई और नही भारत के क्रांतिकारी थे तो ग्रामीणों ने कहा-'पहले क्यों नही बताया कि आप लोग क्रांतिकारी हैं। यदि हमें मालूम होता तो हम सेठ के लिए नहीं लड़ते।''

---

1. टैरारिज्म इन इंडिया, 1917-36, गृह विभाग, भारत सरकार क्रम संख्या बी 38/3 पृष्ठ - 79
2. दे लिव्ड डैन्जरसली, मन्मथनाथ गुप्त- पृष्ठ 111

ग्रामवासियों ने बाद में गवाही नहीं दी।[1] इस डकैती से निराशा ही हाथ लगी। सुधीर विद्यार्थी ने लिखा है-'ऐसी डकैती के बाद बिस्मिल का मन भारी बोझ से दब गया। वे सोचने लगे कि इस तरह देशवासियों को सताना उचित नहीं है। इनसे खतरा उठाकर भी न तो दल को आर्थिक रूप से सुदृढ़ता मिलती है और न ही दल की प्रतिष्ठा को ही लाभ होता है। बिस्मिल इन कामों से अब थक गये थे और वे दूसरे साधनों व तरीकों पर गम्भीरता से सोचने लगे थे, ताकि जनता के बीच क्रांतिकारियों के कार्यों पर उंगली न उठ सके।[2] इस प्रकार काफी विचार-विमर्श के बाद हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की प्रान्तीय समिति ने तय किया कि गाँव में डकैती डालने के अभियान को समाप्त किया जाय और केवल बैंक और सरकारी सम्पत्ति ही लूटी जाय।[3] समिति ने यह निर्णय खास तौर पर इसलिए लिया कि इस प्रकार की लगातार डकैतियों से क्षेत्र की जनता राम प्रसाद बिस्मिल को पहचान लेगी। इसी समय पिस्तौल हेतु नकद रूपयों की जरूरत थी जो जर्मन की थी और रूपये देकर कलकत्ता से प्राप्त करना था। यह योजना गुप्त थी और यह भी था कि ऐसा मौका हाथ से जाने नहीं दिया जा सकता, परन्तु रूपयों की बहुत कमी थी। ऐसे समय में गाँव में डकैती डालने का विचार छोड़ा जा चुका था।[4] निश्चित ही यह भी कारण था जो काकोरी काण्ड के रूप में सम्पादित हुआ। यह सत्य था कि संघर्ष हेतु भारत के क्रांतिकारी संगठित होने लगे थे और घटनाएँ कहीं न कहीं घटती रहती थीं।

---

1. क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री से विश्वमित्र उपाध्याय की भेंटवार्ता -29 अगस्त 1982
2. शहीद रोशन सिंह -सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ-23
3. पूर्वो टैरारिज्म इन इण्डिया, रिपोर्ट - पृष्ठ 79
4. अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ, बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ-128

नेतृत्व की क्षमता वाले नेता थे रामप्रसाद बिस्मिल, योगेश चटर्जी, शचीन्द्रनाथ सन्याल, गेंदालाल दीक्षित। शचीन्द्र नाथ सन्याल की पुस्तक 'बंदीजीवन' तो क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए पाठ्य पुस्तक ही बन गयी थी।[1] अक्टूबर 1924 में क्रांतिकारी युवकों का कानपुर में एक सम्मेलन हुआ। इसके तहत **'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन'** का गठन किया गया। इसका उद्देश्य था सशस्त्र क्रांति के माध्यम से औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना और एक संघीय गणतंत्र 'संयुक्त राज्य भारत' की स्थापना करना था।[2] इसके लिए बड़े पैमाने पर प्रचार की जरूरत थी। नवयुवकों को अपने दल में मिलाना, प्रशिक्षित करना और हथियार जुटाने जैसे कार्य मुख्यतः थे। इस सब कार्यो के लिए पैसे की आवश्यकता थी। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी ने पैसा एकत्र करने के उद्देश्य से काकोरी जैसी बड़ी घटना को सम्पादित किया। सरकारी खजाना लूटने की यह घटना 'काकोरी काण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है।[3]

9 अगस्त 1925 को उत्तर प्रदेश के क्रांतिकारियों ने सहारनपुर लखनऊ लाइन पर काकोरी जाने वाली गाड़ी को सफलता पूर्वक लूट लिया। इस काकोरी काण्ड के अभियोग में जनता ने बहुत सी सहानुभूति का प्रदर्शन किया। विधान परिषद में प्रस्ताव रखे गये। उनके नेता राम प्रसाद बिस्मिल यह कहते हुए कि - 'मैं अंग्रेजी राज्य के पतन की इच्छा करता हूँ प्रसन्नता पूर्वक फाँसी पर लटक गये।

---

1. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष - बिपिन चन्द्र, पृष्ठ-190
2. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष - बिपिन चन्द्र, पृष्ठ-190
3. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष - बिपिन चन्द्र, पृष्ठ-190

रोशन लाल वंदेमातरम् गाते हुए शहीद हो गये।[1] इस लूट में सरकारी खजाना लूटा गया था। अशफाक उल्ला खाँ, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी दे दी गयी। चार क्रांतिकारियों को आजीवन कारावास की सजा देकर अंडमान भेज दिया गया। 17 अन्य क्रांतिकारियों को भी लम्बी सजाएं हुई। चन्द्रशेखर आजाद फरार हो गये।[2]

आज भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले क्रांतिकारी उन शहीदों के रूप में याद किये जाते हैं, जिन्होंने मातृभूमि के लिए जान दे दी।

''शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही नामों निशा होगा।''

---

1. आधुनिक भारत का इतिहास, बी0एल0 ग्रोवर पृष्ठ 314
2. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, बिपिन चन्द्र, पृष्ठ 190

अध्याय-पाँच

अध्याय-पांच

अशफाक के क्रांतिकारी जीवन की पृष्ठभूमि : समाजवादी विचारधारा का प्रभाव - क्रांति पथ का वरण

आज भारत देश स्वतंत्र है। हम सब स्वतंत्रता के विशाल वृक्ष की शीतल छाया का आनन्द ले रहे हैं, उसके मधुर फलों का स्वाद ले रहे हैं। लेकिन स्वतंत्रता का बीज बोने में तमाम देश भक्त क्रांतिकारियों के साथ अपने रक्त से सींचने वाले अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला खॉ का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इन दोनों क्रांतिकारियों में रेखांकित करने योग्य महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों क्रांतिकारी होने के साथ-साथ रचनाकार भी थे, कवि थे। अशफाक और बिस्मिल स्वतंत्रता आन्दोलन के क्रांतिकारी सिपाही ही नहीं वरन् वे कलम के भी सिपाही थे। इनकी रचनाएं आग उगलती तो थी ही, संवेदना के स्तर पर भी स्तरीय हुआ करती थीं। यह भी कहा जा सकता है कि दोनों शस्त्र और शास्त्र में पारंगत थे जैसे एक माला के दो सुमन हो, एक से बढ़कर एक सुगंध बिखेरने वाले। एक नदी के दो घाट, दोनों का पानी एक, दिल एक, दिमाग एक, कर्म एक, धर्म एक। दोनों फाँसी पर चढ़े, शहीद हुए, अमर हुए। राष्ट्र हित चिन्तन में दोनों का जीवन समर्पित हो गया, धन्य हो गया।[1]

अशफाक उल्ला खाँ के हृदय में मौलवी साहब की शिक्षाओं का असर कभी गया नहीं। बाल्यकाल से ही अंग्रेजों के प्रति घृणा तो थी ही, जिसका जिक्र पहले भी किया जा चुका है। लेकिन बाद में चलकर उनका मानसिक रूप से समाजीकरण हो गया।

---

1. साहित्य भारती, जुलाई-सितम्बर 1997, प्रधान सम्पादक - विनोद चन्द्र पाण्डेय पृष्ठ 76 (लेख-जनार्दनदास)

बाल्यकाल के बाद प्रथम विश्वयुद्ध के समय तुर्की साम्राज्य को भारी नुकसान हुआ। तुर्की पर अंग्रेजों का अत्याचार था। तुर्की सम्राट जो मुसलमानों का धर्म गुरु (खलीफा) हुआ करता था का पद समाप्त कर दिया गया था, जिसके विरोध में आन्दोलन भी हुए। अशफाक तुर्की के पतन का समाचार पढ़ते और अंग्रेजों के अत्याचार की सूचना पाते तो बेचैन हो उठते। उस समय वे यह भी सोचते कि काश भारत पर भी खलीफा या अफगानों का शासन हो जाता।[1]

उन्हें क्या पता था कि यह उनकी अज्ञानता है। बाद में वे इस अज्ञानता और मूर्खतापूर्ण बातों को स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं-''जब यूरोप की फिजा पर हिलाल के इर्द-गिर्द ईसाइयत का तूफान उठ रहा था तब खिलाफत के झंडे को सरनगूं करने के लिए यूरोप के तसल्लीपरस्त जमा हो रहे थे, जबकि आले उस्मान के कमजोर व नफीस बदन के चारों तरफ ईसाई जागो जगन इकट्ठे हो रहे थे...अगर वहाँ अनवर व शकरी दस्ते कयरस्त में तलवार लेकर मैदान में कूद पड़ते हैं, तो इधर भी अहले दिल गर्दन में झोलियाँ डालकर दर-दर की भीख माँगते फिरते हैं और रुपये से उनका खजाना पुर कर देते है। यों बाहमी उखवत और इत्तहादे-इस्लामी की बुनियाद पड़ती है और भूला हुआ वायदा याद आता है। खोई हुई मंजिल दिखायी देती है, भाई-भाई मिलते हैं। प्रोपेगण्डा फैलता है, जिसका असर नौजवान मुसलमानों पर पड़ता है, कि इटली का माल जला दिया जाता और उसके खिलाफ शोरिश पैदा की जाती, तुर्की ख्वातीन की छुब्बुलवतनी, नौजवान तुर्की की सरफरोशिया तालिबाओं का हिसाब, कॉलिज व स्कूल की कुर्बानियाँ एक नई स्प्रिट पैदा कर देती हैं।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ - भवान सिंह राणा, पृष्ठ-25

मेरी वालिदा जो बाकायदा तामील हासिल किये हुए थीं, बराबर अखबार की मुस्तकिल खरीदार बन गयी और मैं भी बराबर अखबार पढ़ने लगा, तब मैंने जाना कि मुसलमान और भी कही हैं। क्योंकि उस वक्त मैं जुगरफिया से नावाकिफ था और महज हिन्दुस्तान को ही मुकम्मल दुनिया ख्याल करता था, जैसे मेंढ़क कुएं को तसवुर करता है। चूँकि मैं पठान था और यह कौम आम तौर पर सेंटीमेंटल ख्याल की जाती है। गो कि मैं अब ऐसा नही हूँ। इन ख्यालात में डूब गया और रोजोशब इसी दुआ में रहता था कि तुर्क हिन्दुस्तान फतह कर लें और यहाँ का बादशाह बन जाएँ तो हम खलीफये वक्त की रियाया बन जाएं और अगर अफगानिस्तान से हुकूमत कायम कर ली तो फिर क्या है, फिर हम भी हकदार ही हैं। अंग्रेज से नफरत पैदा हो गयी। मेरा यही ख्याल था कि यही बालिये फसाद हैं और इनकी हुकूमत नेस्तनाबूद होनी चाहिए।''[1]

अशफाक उल्ला खाँ का यह कथन स्पष्ट करता है कि वे भावुक खानदान के व्यक्ति हैं लेकिन खानदानी भावुकता की समझ आने पर वे इसे त्याग देते हैं। यह त्यागना भी एक नई संवेदना को जन्म देता है, वह है देश प्रेम की भावना और अंग्रेजों के प्रति घृणा। तुर्की के पतन से उपजी अंग्रेजों के प्रति उनकी घृणा उनका मानसिक खाका तैयार करती है। आगे चलकर अशफाक का वैचारिक स्तर परिपक्व होता है। अब उनको पूर्व की भावनाओं से लाज आती है। अशफाक ने स्वीकार किया है -'गरज यह कि मेरा उस वक्त का ख्याल आज मुझे बहुत जलील मालूम होता है कि हम एक का हलकमे गुलामी उतारकर दूसरे की गुलामी का जुआ अपने कंधो पर रखने में मुसर्रत सी महसूस करते हैं।

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -26

खैर वह मेरी नासमझी का जमाना था।[1] उस समय के युग को हम धारणाओं का युग भी कह सकते हैं। हिन्दुओं में एक बात बैठ गयी थी कि मुसलमान इस देश से प्रेम नही करते। शायद ऐसी ही धारणा मुसलमानों के दिमाग में भी थी कि हिन्दू उन्हें इस देश का स्थाई निवासी नही समझते हैं। निश्चित यह धारणा एक नागरिक के लिए सोचने पर मजबूर करती है कि इतने दिनों तक साथ रहने के बाद भी हमारी धारणाएं इतनी संकीर्ण क्यों बनी हैं? अशफाक ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है कि विचारों की परिपक्वता के पूर्व वह भी हिन्दुओं के विरुद्ध थे। कारण हिन्दू मानसिकता ही थी, वह भी एक हिन्दू अध्यापक की संकीर्ण मनोवृत्ति। अशफाक जब स्कूल के छात्र थे तो एक हिन्दू अध्यापक की संकीर्ण एवं भेदभाव परक मनोवृत्ति के कारण दुखी थे। अशफाक ने बाकायदा इसका जिक्र किया है - ''चूँकि हमारे करम फरमा एक मास्टर साहब थे। जिनका अगर मैं नाम लिखूँगा तो उन्हें मुफ्त में शर्मिन्दगी हासिल होगी, और वह मेरे मास्टर थे। जब मैं गवर्नमेन्ट स्कूल में पढ़ता था, वह हमेशा हिन्दू-मुस्लिम में बहुत इम्तियाज करते थे। जो मैं अब कहूँगा कि उस्ताद का कमीनापन है और यही लोग मुल्क के असल दुश्मन हैं। मगर आज मेरा दिल ऐसा ही कुशादा एक हिन्दू के लिए भी है जैसा एक मुसलमान के लिए । खैर उस वक्त के लीडर अब भी इत्तिहादे इस्लामी पर आमिल हैं। गो कि एक हद तक मैं भी उनसे इतिफाक करता हूँ कि भाई समझने में कोई नुकसान नहीं है। मदद करना हमारा फर्ज है, क्योंकि हम फैयाज मुल्क के फैयाज वाशिन्दे हैं। मगर किसी की हुकूमत अपने ऊपर कुबूल करना हमारी पस्त हिम्मती और बद-किस्मती है। यह किसी तरह हमारे शयानेशान नहीं।

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-26

दुनिया में इन्कलाब का तगटयुरात कितनी तेजी से हुआ करते हैं। कल मैं क्या था और आज मैं क्या हूँ। कल मैं तुर्की की हुकूमत अपने ऊपर बायसेसद नाजो इफ्तिखार और जरियए बख्शिश समझता था और आज बदतरीन जिल्लत। आज मैं हर विदेशी हुकूमत को बुरा समझता हूँ।'' अशफाक को अपने हिन्दू अध्यापक से शिकायत थी और संकीर्ण विचारों से उन्हें दुख था। यही भावना उन्हें देश प्रेम की ओर ले जाती है। भेदभाव की प्रदूषित मानसिकता को वे शत्रु समझते हैं। यही कारण भी था हम गुलाम हुए। भेद-भाव हमारी विकास यात्रा का अवरोधक है, यह अशफाक उल्ला जानते थे। शायद यही कारण था कि एक कट्टर मुस्लिम परिवार के होते हुए भी अशफाक की मानसिक संरचना सामाजिक हो सकी। सामाजिक विचारों के अंकुर फूटने लगे थे। साम्प्रदायिक एकता के तो वे उदाहरण मात्र थे। आगे चलकर अशफाक की समझ में बढ़ोत्तरी हुई तो पता चला कि अध्यापक ही राष्ट्र का निर्माता है। वह एक ऐसे दिमाग में उपकरण सजाता है जहाँ रिक्त है सब कुछ और जब वही संकीर्ण मानसिकता की बीमारी से राष्ट्र या पीढ़ी का निर्माता ग्रसित रहेगा तो समाज का भविष्य कैसा होगा। जबकि अध्यापक को बिना किसी भेदभाव के राष्ट्र की एकता के लिए मस्तिष्क तैयार करना चाहिए ताकि एक सुसभ्य, सुसंस्कृत समाज बनाया जा सके। अशफाक की दृष्टि में अध्यापक ही ऐसा प्राणी है जो सामाजिक बुराइयों को दूर कर सकता है।

यह ज्ञातव्य है कि अशफाक को युद्ध विषयक पुस्तकें पढ़ने का बचपन से ही शौक था। आगे चलकर वे बंगाल के क्रांतिकारियों के विषय में भी बाकायदा सुन रखे थे। वे समाचारों से अवगत होते रहते। यह भी ज्ञातव्य है कि बंगाली क्रांतिकारी ही उ0प्र0 की क्रांतिकारी गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान निभा रहे थे। अशफाक कन्हाई दत्त और खुदीराम बोस के कार्यों से बहुत ज्यादा प्रभावित थे।

इन दोनों क्रांतिकारियों का पूरा असर अशफाक पर था। वे इन क्रांतिकारियों की कहानियाँ सुनते। यही नही वे बंगाली बमों का भी हाल सुनते रहते। अशफाक के हृदय में जिज्ञासा जागती कि कितना अच्छा होता कि मैं भी ऐसा होता। उन्हें क्या पता कि वे भी उनकी तरह फाँसी घर में कैद रहेंगे। एक दिन का समाचार है कि अशफाक स्कूल जा रहे थे कि अचानक उन्होंने सुना कि दिल्ली में वायसराय बहादुर पर किसी ने बम मार दिया और स्कूल बन्द हो गया। अब क्या था अशफाक की खुशी का ठिकाना न रहा। वे बाजारों में होने वाली चर्चाएं सुनते रहते और प्रभावित होते, प्रेरणा पाते, स्वप्न देखते कि मैं भी ऐसा काम करूँगा कि लोग मेरे नाम की चर्चा आम बाजारों में करें। अशफाक के दिल में दबा हुआ देशभक्ति का बीज अंकुरित होने लगा। वे देश में होने वाली घटनाओं से परिचित होने लगे थे।

1918 में मैनपुरी षड्यंत्र की घटना जब प्रकाश में आई तो अशफाक भला बिना सूचित हुए कैसे रह सकते थे। यही घटना अशफाक के क्रांतिकारी अंकुरण को पल्लवित करने में सहायक बनी। मैनपुरी घटना ने उर्वरक का काम किया। इस षड्यंत्र का भेद खुल जाने के बाद अशफाक के स्कूल की तलाशी ली गयी, पहचान हुई और एक छात्र राजाराम गिरफ्तार हुए। संदेह के आधार पर कुछ और छात्र पकड़े गये। बंगाल के विद्यार्थी क्रांतिकारी संगठनों के सदस्य थे और खूब भाग लिया करते थे लेकिन उत्तर प्रदेश के लिए यह घटना नई थी। जिस दिन स्कूल में पुलिस पहुँची उस दिन अशफाक स्कूल देर से पहुँचे। वहाँ दहशत का महौल था। हर तरफ पगड़ियाँ ही नजर आ रही थी। कोई लड़का अन्दर से बाहर नहीं निकल सकता था। हर कक्षा में पहचान हो रही थी। कोई ऐसा छात्र नहीं था जो अपनी जान की खैर न मनाता हो। पहचान करने वाले सरकारी गवाह पुलिस साथ लेकर आई थी।

अशफाक अपने स्वभाव के कारण हालात पर नजर रखे हुए थे और मामले को गहराई से जानने समझने के लिए बेचैन थे। अशफाक खिलाडी थे (हाकी) और लगभग खिलाड़ियों को सभी पहचानते भी है और खेलने वाले छात्र भी अपने अध्यापकों से बोल-बतिया लेते हैं। अशफाक ने अपने एक अध्यापक से पूछा लेकिन वे डर के कारण कुछ बता न सके। फिर एक स्कूली छात्र-मित्र ने अशफाक को सारा विवरण सुनाया। वह छात्र भी देश भक्त था और भारत की बलिवेदी पर मरने-मिटने को तैयार था। अशफाक को एक बार फिर स्वतंत्रता हेतु संघर्ष करने की औषधि मिल गयी।

निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि मैनपुरी षड्यंत्र की घटना ने अशफाक उल्ला खाँ को मातृभूमि का पुजारी बना दिया। मैनपुरी षड्यंत्र से संबंधित घटना के बाद की कार्यवाहियों में से एक-दो के वे प्रत्यक्ष दर्शक भी थे। सो ऊर्जा मिलती ही थी। अब अशफाक क्रांतिकारी देशभक्तों को अपना आदर्श मानने लगे। अभी वे आठवीं कक्षा के ही विघार्थी थे। आठवीं कक्षा की अंग्रेजी पुस्तक में सर वाल्टर स्काट की लिखी एक कविता **'लव ऑफ कंट्री'** और एक अन्य पाठ **'वीर होरेशस'** के विषय में था। अशफाक ने इन दोनों पाठों को कई बार पढ़ा। उनकी भावनाएँ दृढ़ होती गयीं। सर वाल्टर स्काट की कविता से तो वे इतने प्रभावित हुए कि मानो उनके तन-बदन में आग लग गई हो। अशफाक ने लिखा है-''मेरे मास्टर साहब ने कुछ ऐसी तर्ज में इस सबक को पढ़ाया कि तन-बदन में आग लग गई। कविता इस प्रकार थी -

" To every man upon the earth
Death cometh soon or late
Then how can a man die or better death,
Then faceing fearful odds

For the ashes of his father
And the temples of his Gods."[1]

अशफाक की भावुकता की हद इस प्रकार थी कि इस कविता को पढ़कर वे रो पड़े। अशफाक की भावना को अध्यापक ने भी देखा। उनके मनोभावों को अच्छी तरह समझते हुए अशफाक को श्पंजतपवजे वf जीम ूवतसकश नामक पुस्तक पढ़ने को दी। इस पुस्तक का अशफाक पर गहरा असर हुआ। बेचैन अशफाक क्रांतिकारियों से मिलने के लिये प्रयत्नशील हो गये। उसी समय उनका सम्पर्क बनारसी लाल से हो गया। अशफाक को क्या पता था कि बनारसी लाल पुलिस का मुखबिर है। उसके मुखबिर होने की बात तो बाद में उन्हें मालुम हुई। राजाराम बनारसी लाल के घर में ही रहता था। अशफाक की क्रांतिकारी आन्दोलन में गहरी रुचि देखकर उसने राम प्रसाद बिस्मिल की चर्चा की। भ्रम में पड़े अशफाक बनारसी को सच्चा देशभक्त और मैनपुरी षड्यंत्र का क्रांतिकारी समझने लगे थे। बनारसी लाल अभी और मानसिक अधिकार अशफाक पर करना चाहता था, विश्वास पात्र होने की गरज से उसने **'आनन्दमठ'** नामक पुस्तक अशफाक को पढ़कर सुनाई।[2]

अशफाक अभी तक हिन्दी नही जानते थे। अब अशफाक को यह लगने लगा था कि अब उनकी सारी समस्याएँ हल हो जायेंगी और वे क्रांतिकारियों की जमात में सम्मिलित हो जायेंगे, उन्हें बनारसी लाल पर पूरा विश्वास था। देखने में बनारसी हमेशा कुछ परेशान सा रहता था। अशफाक ने समझा कि शायद साथियों के बिछुड़ जाने के कारण मन बैचेन हो बनारसी का।

1920 में प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर सभी राजनीतिक बंदियों को क्षमा कर दिया गया, लगभग सभी कैदी रिहा कर दिये गये।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवानसिंह राणा, पृष्ठ-35
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-36

अभियोग के दौरान राम प्रसाद बिस्मिल फरार थे। मैनपुरी षड्यंत्र के कैदी मुकुन्दीलाल को क्षमा नही किया गया। उन्हें पूरी सजा काटनी पड़ी, वे 1923 में जेल से रिहा हुए। क्षमा की घोषणा होने के बाद बिस्मिल शाहजहाँपुर आ गये। यहाँ आने पर राम प्रसाद बिस्मिल ने समाज के बदले हुए तेवर को देखा। उनके पास कोई खड़ा भी नहीं होता था। कोई बात भी नही करता था, पुलिस की निगाह हर जगह गड़ी रहती थी। राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखा है -

''राजकीय घोषणा के पश्चात् जब मैं शाहजहाँपुर आया तो शहर की अद्‌भुत दशा देखी। कोई पास तक खड़े होने का साहस न करता था। जिसके पास मैं जाकर खड़ा हो जाता था, वह नमस्ते कर चल देता था। पुलिस वालों का बड़ा प्रकोप था। प्रत्येक समय छाया की भाँति पीछे-पीछे छिपा करती थी। इस प्रकार का जीवन कब तक व्यतीत किया जावें।''[1]

राम प्रसाद बिस्मिल को निराशा तब हुई जब **''मातृवेदी''** संगठन बिखर गया। यह संगठन स्थानीय क्रांतिकारियों का प्राण था। इसी समय वे साथी क्रांतिकारियों से कटु अनुभव भी प्राप्त किये। अब बिस्मिल स्वतंत्र रूप से रेशमी कपड़ा बुनने का उघोग चलाने लगे। अशफाक को यह पता चला कि शाहजहाँपुर के एक क्रांतिकारी राम प्रसाद वर्मा के नाम का भी गिरफ्तारी का वारन्ट है। राम प्रसाद बिस्मिल के प्रशंसक अशफाक की खुशी का ठिकाना न रहा। बिस्मिल के शाहजहाँपुर आने पर अशफाक उनसे मिलने का यत्न करने लगे और वह दिन आया-एक दिन अशफाक राम प्रसाद बिस्मिल से मिले किन्तु यह क्या! स्कूल का एक सामान्य मुसलमान विघार्थी समझकर बिस्मिल ने कोई उत्साहजनक या प्रेरणादायक बात नहीं की।

---

1. राम प्रसाद बिस्मिल रचनावली, सम्पादक दिनेश शर्मा, पृष्ठ-73

वह तो अशफाक को एक सामान्य विद्यार्थी ही समझ रहे थे। उनके उत्साह का उन्हें ज्ञान नहीं। बिना संज्ञान में लिए क्रांतिकारी बात करना उचित भी नहीं था। इससे अशफाक निराश हुए, उन्हें दुख हुआ। परन्तु अशफाक का उत्साह मरा नहीं था। बनारसी लाल अभी भी अशफाक के सम्पर्क में थे। अशफाक ने बनारसी लाल से अनुरोध किया कि वह राम प्रसाद से मिला दे। अशफाक के बड़े भाई और बिस्मिल साथ-साथ पढ़े भी थे। भाई के सहपाठी होने के कारण बनारसी लाल ने राम प्रसाद बिस्मिल से अशफाक को अच्छी तरह से परिचित करा दिया। अशफाक उल्ला खाँ स्वयं लिखते हैं - ''फिर मैंने बनारसी लाल से कहा कि राम प्रसाद के पास चलो और मुझको उनसे इण्ट्रोड्यूस करा दो। क्योकि राम प्रसाद मेरे बड़े भाई के क्लासफेलो उर्दू स्कूल में रह चुके थे और आपस में दोस्त भी थे। मेरे भी स्कूलफेलो रह चुके थे मगर मेरे ताल्लुकात कम थे। चूँकि राम प्रसाद शुरू से ही खासी शख्सियत रखने वाले इन्सान थे और कसरती व होशियार तलिबेइल्म समझे जाते थे, आम तौर पर मशहूर भी थे। मैंने ख्याल किया कि राम प्रसाद से मिलो शायद वहाँ दवा मिल जाय और कोई तस्कीन कल्ब की सूरत निकल आये। गरज यह कि एक दिन खन्नौत के किनारे जलसा हुआ। राम प्रसाद ने उसमें एक मुख्तसर सा लेक्चर दिया और शुरू में यह शेर पढ़ा -

बहे बहरे फना में जल्द या रब लाश बिस्मिल की,
कि भूखी मछलियाँ है जौहरे शमशीरे कातिल की।[1]

जो मुझे अब भी याद है इसे मैंने कन्डेम्ड सेल में मुलाकात के वक्त पढ़ा था। मैंने भी कुछ कहा था। गरज कि बनारसी ने हम दोनों का इन्ट्रोडक्शन करा दिया। गो कि इससे कब्ल भी एक दिन मैं राम प्रसाद से मिला था।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-38

मगर वह इतनी सर्दमेहरी से मिले थे कि मुझे बहुत दुख हुआ था। जिसकी वह माफी अक्सर माँग लिया करते थे।'' चाहे जो हो अशफाक का प्रयास रंग लाया और वे राम प्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में अच्छी तरह आ गये।

ऐसी परिस्थितियों में किसी को भी निराशा हो सकती है। जब वह उत्तेजना और ओज से भरा हो और मन मुताबिक बात न बने। हर उत्साही अपने अनुसार उत्तर चाहता है। वह अपना मन ऊँचा उठाना चाहता है। यदि देखा जाय तो राम प्रसाद बिस्मिल ने ठीक ही किया कि वे निराशा जनक उत्तर दिये। विचारणीय यह है कि, भला वह कैसे एक ऐसे विघार्थी से जो सर्वथा अपरिचित और मैनपुरी षड्यंत्र के विषय में पूछ रहा है, राम प्रसाद निराश न करते तो क्या करते, जबकि पुलिस हाथ धोकर पीछे पड़ी है। यह भी संदेह था कि कोई भी व्यक्ति पुलिस का मुखबिर हो सकता है। लेकिन बाद की स्थिति पर विचार करें तो स्पष्ट दिख जायेगा कि राम प्रसाद ने ठोंक-बजाकर इस बात का विश्वास कर लिया कि यह अशफाक सच्चा देश भक्त है, तब उन्होंने अशफाक को अपना अभिन्नमित्र बना लिया। अब तो दोस्ती एक प्राण हो गयी। एक हिन्दू एक मुसलमान जिसकी मिसाल दी जाने लगी।

राम प्रसाद बिस्मिल कट्टर आर्य समाजी थे और अशफाक कट्टर मुस्लिम परिवार के, लेकिन धार्मिकता का लबादा कही रुकावट नही बना क्योंकि दोनों सच्चे देशभक्त थे। दो दोस्तों के बीच कभी भेद भाव की दूषित भावना नही रही। दोनो का उद्देश्य भी था कि सामाजिक बुराइयों को दूर किया जाय और इस प्रकार के भेदभाव को समाप्त किया जाय और दोनों ने मुकाबला भी किया।

राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा है- ''मुझे भली भाँति याद है जब मैं बादशाही एलान के बाद शाहजहाँपुर आया था, तो तुमसे स्कूल में भेट हुई थी। तुम्हारी मुझसे मिलने की बड़ी हार्दिक इच्छा थी।

तुमने मुझसे मैनपुरी काण्ड के सम्बन्ध में कुछ बातचीत करनी चाही थी। मैंने वह समझकर कि एक स्कूल का मुसलमान विद्यार्थी मुझसे इस तरह की बातचीत क्यों करता है, तुम्हारी बातों का उत्तर उपेक्षा की दृष्टि से दिया था। तुम्हें उस समय बड़ा खेद हुआ था। तुम्हारे मुख से हार्दिक भावों का प्रकाश हो रहा था। तुमने अपने इरादे को यों ही नही छोड़ दिया, अपने निश्चय पर डटे रहे। जिस प्रकार हो सका काँग्रेस में बातचीत की। अपने इष्ट मित्रों द्वारा इस बात का विश्वास दिलाने की कोशिश की कि तुम बनावटी आदमी नही, तुम्हारे दिल में मुल्क की खिदमतकरने की ख्वाहिश थी। अन्त में तुम्हारी विजय हुई। तुम्हारी कोशिशों ने मेरे दिल में जगह पैदा कर ली। तुम्हारे बड़े भाई मेरे उर्दू मिडिल के सहपाठी तथा मित्र थे। यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। थोड़े दिनों में ही तुम मेरे छोटे भाई के समान हो गये थे, किन्तु छोटे भाई बनकर तुम्हें संतोष न हुआ। तुम समानता के अधिकार चाहते थे, मित्र की श्रेणी में अपनी गणना चाहते थे, वही हुआ। तुम सच्चे मित्र बन गये। सबको आश्चर्य था कि एक कट्टर आर्य समाजी और मुसलमान का मेल कैसा? मैं मुसलमानों की शुद्धि करता था। आर्य समाज मंदिर में मेरा निवास था, किन्तु तुम इन बातों की किंचित मात्र चिन्ता न करते थे। मेरे कुछ साथी तुम्हारे मुसलमान होने के कारण कुछ घृणा की दृष्टि से देखते थे, किन्तु तुम अपने निश्चय में दृढ़ थे। मेरे साथ आर्य समाज मंदिर में आते जाते थे। हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा होने पर तुम्हारे मुहल्ले के सब कोई तुम्हे खुल्लम खुल्ला गालियाँ देते थे, काफिर के नाम से पुकारते थे, पर तुम कभी भी उनके विचारों से सहमत न हुए। सदैव हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य के पक्षपाती रहे। तुम एक सच्चे मुसलमान तथा सच्चे स्वदेश भक्त थे। तुम्हें यदि जीवन में कोई विचार था, तो यही कि मुसलमानों को खुदा अक्ल देता, कि वे हिन्दुओं के साथ मिल करके हिन्दुस्तान की भलाई करते। जब मैं हिन्दी में कोई लेख या पुस्तक लिखता तो तुम सदैव यही अनुरोध करते कि उर्दू में क्यों नहीं लिखते, जो मुसलमान भी

पढ़ सके? तुमने स्वदेश-भक्ति के भावों को भलीभांति समझने के लिए हिन्दी का अच्छा अध्ययन किया। अपने घर पर जब माता जी तथा भ्राता जी से बातचीत करते थे, तो तुम्हारे मुँह से हिन्दी शब्द निकल जाते थे, जिससे सबको बड़ा आश्चर्य होता था।''

राम प्रसाद बिस्मिल अशफाक के बारे में आगे लिखते हैं - ''तुम्हारी इस प्रकार की प्रवृत्ति देखकर बहुतो को संदेह होता था, कि कही इस्लाम धर्म त्यागकर शुद्धि न करा लो। पर तुम्हारा हृदय तो किसी प्रकार अशुद्ध न था, फिर तुम शुद्धि किस वस्तु का कराते? तुम्हारी इस प्रकार की प्रगति ने मेरे हृदय पर पूर्ण विजय पा ली। बहुधा मित्र मण्डली में बात छिड़ती कि कहीं मुसलमान पर विश्वास करके धोखा न खाना। तुम्हारी जीत हुई, मुझमें तुममें कोई भेद न था। बहुधा मैंने तुमने एक थाली में भोजन किए। मेरे हृदय से यह विचार ही जाता रहा कि हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद है। तुम मुझ पर अटल विश्वास तथ अगाध प्रीति रखते थे। हाँ तुम मेरा नाम लेकर नही पुकार सकते थे। तुम मुझे सदैव 'राम' कहा करते थे। एक समय जब तुम्हें हृदय कम्प का दौरा हुआ था, तुम अचेत थे, तुम्हारे मुँह से बराबर 'राम' 'हाय राम' शब्द निकल रहे थे। पास खड़े हुए भाई बाधवों को आश्चर्य हुआ कि 'राम' 'राम' कहता है। कहते कि 'अल्लाह' 'अल्लाह' कहो, पर तुम्हारी 'राम-राम' की रट थी। उसी समय किसी मित्र का आगमन हुआ, जो राम के भेद को जानते थे। तुरन्त मैं बुलाया गया। मुझसे मिलने पर तुम्हें शान्ति हुई। तब सब लोग 'राम! राम!' के भेस को समझे।

अन्त में इस प्रेम, प्रीति तथ्य मित्रता का परिणाम क्या हुआ? मेरे विचारों के रंग में तुम भी रंग गये। तुम भी एक कट्टर क्रांतिकारी बन गये। अब तो तुम्हारा दिन रात प्रयत्न यही था कि, कि किस प्रकार हो मुसलमान नवयुवकों में भी क्रांतिकारी भावों का प्रवेश हो। वे भी क्रांतिकारी आन्दोलन में सहयोग दें। जितने तुम्हारे बन्धु तथा मित्र थे सब पर तुमने अपने विचारों का प्रभाव डालने का प्रयत्न किया। बहुधा क्रांतिकारी सदस्यों को भी बड़ा आश्चर्य होता कि मैंने कैसे एक मुसलमान

को क्रांतिकारी दल का प्रतिष्ठित सदस्य बना लिया। मेरे साथ तुमने जो कार्य किये वे सराहनीय हैं। तुमने कभी भी मेरी आज्ञा की अवहेलना नही की। एक आज्ञाकारी भक्त के समान मेरी आज्ञा पालन में तत्पर रहते थे। तुम्हारा ह्दय बड़ा विशाल था। तुम्हारे भाव ऊँचे थे। मुझे शान्ति है तो यही कि तुमने संसार में मेरा मुख उज्जवल कर दिया। भारत के इतिहास में यह घटना भी उल्लेखनीय हो गयी कि अशफाक उल्ला ने क्रांतिकारी आन्दोलन में योगदान दिया। अपने भाई बन्धु तथा संबंधियों के समझाने पर कुछ भी ध्यान न दिया। गिरफ्तार हो जाने पर भी अपने विचारों में दृढ़ रहे। जैसे तुम शारीरिक बलशाली थे वैसे ही मानसिक वीर तथा आत्मा से उच्च सिद्ध हुए। इन सबके परिणाम स्वरूप अदालत में तुमको मेरा सहकारी (लेफ्टीनेन्ट) ठहराया गया और जज ने मुकदमें का फैसला लिखते समय तुम्हारे गले में जयमाल (फाँसी की रस्सी) पहना दी। प्यारे भाई, तुम्हें यह समझ कर संतोष होगा कि जिसने अपने माता-पिता की धन-सम्पत्ति को देश सेवा में अर्पण करके उन्हें भिखारी बना दिया, जिसने अपने सहोदर के भावी भाग्य को भी देश सेवा की भेंट कर दिया, जिसने अपना तन-मन धन सर्वस्व मातृ सेवा में अर्पण करके अपना अन्तिम बलिदान भी दे दिया, उसने अपने प्रिय सखा अशफाक को भी उसी मातृभूमि की भेंट चढ़ा दिया।

'असगर' हरीम इश्क में हस्ती ही जुर्म है।
रखना कभी न पॉव यहाँ सर किये हुए।।''[1]

राम प्रसाद बिस्मिल के उपरोक्त कथन से अशफाक के व्यक्तित्व को पूरी तरह स्पष्टतः देखा जा सकता है। मुसलमानों में सबसे बड़ा दोष माना जाता है जब कोई मुसलमान काफिर कहलाता है। काफिर धर्म से डिगने वाला व्यक्ति होता है। अशफाक **'काफिर'** शब्द सुनते हैं लेकिन यह शब्द

1. राम प्रसाद बिस्मिल रचनावली, दिनेश शर्मा, पृष्ठ 101 से 103 तक

उन्हें अपने कर्म से डिगा नही पाता। अशफाक प्रयास करते हैं कि वे क्रांतिकारी बनें। राम प्रसाद बिस्मिल ने उनके प्रयास को स्वीकार ही नहीं किया है, सराहा भी है। अशफाक को कितना सच्चा और शुद्ध मनुष्य समझते थे राम प्रसाद बिस्मिल यह भी स्पष्ट हो जाता है। यह भेदभाव से परे साम्प्रदायिक एकता ही नहीं वरन् एक मानवीय समाज की संरचना की ओर संकेत भी हैं। अशफाक घृणा से घबराते नहीं है, शान्ति के साथ मुस्कराते हुए उसका सामना करते हैं। भावनाओं की जीत होती है। निश्चित ही अशफाक के भीतर एक सामाजिक विचारधारा प्रवाहित हो रही थी, जो देश भक्ति की नदी में बह रही थी।

अशफाक कट्टर मुसलमान ही नहीं वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के भी कट्टर समर्थक थे। भाषा का भेद भी नहीं था, अशफाक हिन्दी जानने की कोशिश करते और बिस्मिल से उर्दू में लिखने को कहते। यह चीज अशफाक को महान बनाती है। अशफाक राम प्रसाद बिस्मिल के सम्पर्क में सच्चे देश भक्त तो बन ही गये, एक सुसंस्कृत, सुसभ्य, अच्छे इन्सान भी बन गये। वे सिर्फ मनुष्य के लिए निर्मित हो गये।

1920 में जब क्षमादान दिया गया तो राम प्रसाद बिस्मिल का अन्य क्रांतिकारियों से लगभग सम्बन्ध समाप्त हो गया और क्रांतिकारी गतिविधियॉ भी प्रायः समाप्त हो गयी।

चौरी-चौरा की घटना पर महात्मा गाँधी ने अपना असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया, जिसके कारण युवा वर्ग बेचैन हो गया।[1] इसी समय प्रसिद्ध क्रांतिकारी शचीन्द्र नाथ सन्याल ने एक क्रांतिकारी संगठन बनाया। शचीन्द्रनाथ का मुख्य केन्द्र बनारस था। कुछ दिनों बाद **'अनुशीलन समिति'** को भी मिला लिया गया। अब **'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन'** या **'हिन्दुस्तान गण- तांन्त्रिक संघ'** नामक संगठन बना।[2] जिसका उद्देश्य था, क्रांति द्वारा राज्यों का एक गणतांत्रिक संघ स्थापित करना। उद्देश्यों की पंक्ति में यह भी था कि संघ शोषण रहित समाज की स्थापना करेगा। यह स्पष्ट होता है कि हिन्दुस्तान गणतांत्रिक संगठन पर सोवियत संघ की क्रांति का प्रभाव था लेकिन मन्मथनाथ गुप्त का मत था कि -''यह सब बातें होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता है कि इस विधान के बनाने वालों का आदर्श सोवियत रूस या किसान मजदूर वर्ग का अधिनायकत्व था। इस षड्यंत्र के सिलसिले में बहुत दिनों बाद जाकर अर्थात् जनवरी सन् 1925 में एक क्रांतिकारी पर्चा बाँटा गया, जिसका नाम 'The Revolutionary' था। उसमें यह लिखा गया था कि हमारे सामने आधुनिक रूस का आदर्श है, किन्तु लेखक ने इस वक्तव्य को बिना पूरी तरह समझे ऐसा लिखा था। जहाँ उसमें यह बात थी कि रूस का आदर्श भी हमारे सम्मुख है, - वहाँ यह बात भी थी कि प्राचीन ऋषियों मुनियों का आदर्श भी हमारे सम्मुख है। इससे भी यही ज्ञात होता है कि प्राचीन ऋषियों का आदर्श उनके सम्मुख था।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ 41
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ 42

साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि लेखक ने रूस के आदर्श को अच्छी तरह नही समझा था। इस युग का कोई भी व्यक्ति इस आदर्श को पूरी तरह नहीं समझ पाया था।''[1] चाहे जो हो यह तो स्पष्ट ही है कि समाजवादी विचारधारा क्रांतिकारियों में प्रवाहित हो रही थी और अशफाक इससे खूब प्रभावित थे, मन ही मन भेद भाव रहित समाज चाहते थे। राम प्रसाद बिस्मिल तो जन्मजात क्रांतिकारी थे। कुछ दिनों के ठहराव के बाद वे एक नये क्रांतिकारी संगठन में शामिल कर लिए गये। संगठन में शामिल होने के लिए बिस्मिल 1923 में कानपुर पहुँचे थे और उनका अनुभव काम आया।

राम प्रसाद बिस्मिल को हिन्दुस्तान गण तांत्रिक संगठन में पाकर योगश चन्द्र चटर्जी खुश हुए थे। शीघ्र ही बिस्मिल महत्वपूर्ण सदस्यों की श्रेणी में आ गये। बिस्मिल को दल के लिए हथियार इकठ्ठा करने का काम सौंपा गया। अब क्या था, जब राम प्रसाद स्वयं क्रांतिकारी दल के मुख्य सदस्यों में आ गये तो अशफाक कैसे वंचित रह सकते हैं। अशफाक भी संगठन के सदस्य बन गये। अशफाक के हृदय में देश भक्ति का जोश तो था ही, मातृभूमि की भावना से भरे अशफाक कुछ कर दिखाना चाहते थे। राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में अशफाक के विषय में वृहद चर्चा की है, जिसका उल्लेख किया जा चुका है।

शचीन्द्र नाथ ने भी लिखा है -''अशफाक उल्ला खाँ स्वयं अपने प्रयत्नों से ही क्रांतिकारी दल के सदस्य बने थे।''[2] उनके इस कथन का समर्थन बिस्मिल की आत्मकथा से नहीं होता। मन्मथनाथ गुप्त कहते हैं - ''राम प्रसाद बिस्मिल ने जिन युवकों को शाहजहाँपुर में क्रांतिकारी दल की ओर प्रवृत्त किया था,

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -42
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -44

अशफाक उल्ला उनमें प्रमुख थे, पर यह समझना गलत होगा जैसा कि श्री शचीन्द्र नाथ जिन्हें उनके साथ हवालात में लम्बी अवधि तक रहने का मौका मिला था, का कहना है कि अशफाक उल्ला स्वयं ही कोशिश करके क्रांतिकारी दल में आये थे। उनका जन्म एक प्रसिद्ध पठान परिवार में हुआ था उनके भाई भोपाल राज्य में किसी ऊंचे सरकारी पद पर थे। असहयोग आन्दोलन के समय जो देश व्यापी लहर आयी थी, उसमें अशफाक की पढ़ाई खत्म हो गयी और उनकी आत्मा कुछ करने के लिए व्याकुल रहने लगी। उन्हीं दिनों राम प्रसाद फरारी से लौटकर आये थे और अशफाक उल्ला ने किसी न किसी तरह उनसे परिचय प्राप्त किया था।[1] चाहे जो हो अशफाक पूर्ण रूप से समर्पित क्रांतिकारी सदस्य बन गये थे। अशफाक का क्रांतिकारी दल में सम्मिलित होना एक मुस्लिम परिवार का होने के कारण एक नया अध्याय जोड़ता है।

अशफाक उल्ला खाँ ने निश्चित ही यह बता दिया कि वे एक ऐसा समाज चाहते हैं जहाँ धनी-गरीब एक साथ रह सकें। शोषण रहित समाज की उन्होंने कल्पना की थी। समाजवादी विचारधारा से पोषित अशफाक के चिन्तन में स्वतंत्र भारत की एक तस्वीर थी। अवश्य ही अशफाक को समझना भारत की संस्कृति और इतिहास की झलक पाना है। यही नहीं हिन्दू-मुस्लिम या इसी प्रकार की अन्य प्रदूषित भावनाओं से दूर मानवी हित की बात अशफाक ने की है। वे एकता के समर्थक थे। अपने विचारों में उन्होंने एक स्थान पर लिखा भी है - ''मैं हिन्दुस्तान की ऐसी आजादी का ख्वाहिशमन्द हूँ, जिसमें गरीब खुश और आराम से रहते और सब बराबर के होते।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -44

क्रांतिधर्मी अशफाक ने शहीद भगत सिंह से पहले कहा था कि अगर हिन्दुस्तान आजाद हुआ और बजाए हमारे गोरे आकाओं के हमारे वतनी भाई सल्तनत व हुकूमत की बागडोर अपने हाथ में लेते और तफरी को तमीज, अमीर व गरीब, जमींदार व काश्तकार में रहें तो ऐ खुदा, मुझे ऐसी आजादी उस वक्त तक न देना जब तक मेरी मखलूक में मसावात (बराबरी) कायम न हो जाय।''[1]

अशफाक क्रांतिकारी जीवन में अपने मित्रों को भी आत्म बलिदान की प्रेरणा देते थे। समर्पित जीवन के धनी अशफाक के लिए एक मात्र लक्ष्य था मातृभूमि की स्वतंत्रता, और इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक महत्वपूर्ण घटना **'काकोरी काण्ड'** नाम से घटी जो क्रांतिकारी इतिहास में महत्वपूर्ण षड्यंत्रों में गिनी जाती है।

---

1. जांबाज पत्रिका (लेख), राजेश कुमार मित्तल, पृष्ठ -59

अध्याय-छः

अध्याय-छः

काकोरी काण्ड

शचीन्द्रनाथ सन्याल का यह कथन सत्य है कि क्रांतिकारियों ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए उत्प्रेरक तथा पूरक भूमिका निभायी।[1] वे कांग्रेस द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में बाधक भी नहीं बने। विचारधारा भिन्न जरूर थी। क्रान्तिकारियों ने अपने शौर्यपूर्ण कार्यों व बलिदानों से जनता में राष्ट्रीय चेतना और जुझारू संघर्ष की भावना जागृत की।

अशफाक क्रांतिकारियों के गुप्त संगठन 'हिन्दुस्तान गणतांत्रिक संघ' के सक्रिय सदस्य थे। यही एक ऐसा काण्ड था, जिससे अशफाक को दल की पूर्ण समस्याओं और कार्यप्रणाली से परिचित होने का अवसर मिला। स्पष्ट था कि क्रांतिकारी संगठनों के पास धन की समस्या थी। कमजोर अर्थ पक्ष गतिविधियों को प्रभावित कर रहा था। हिन्दुस्तान गणतांत्रिक संगठन को भी धनाभाव की विषम परिस्थितियों से गुजरना होता था। आय का कोई अन्य रास्ता न था। यह भी कहा जा सकता है कि आय के ठोस स्रोत न होने के कारण आर्थिक समस्याएं क्रांतिकारी संगठन की असफलता का कारण थीं। राम प्रसाद बिस्मिल ने लिखा है कि - ''..............जब कार्य प्रारम्भ हो गया और असहयोग को टटोला गया तो वे आन्दोलन से कहीं अधिक शिथिल हो चुके थे। उनकी आशाओं पर पूरी तरह पानी फिर चुका था। अपने पास की पूंजी समाप्त हो चुकी थी। घर में फाकें हो रहे थे। आगे की भी कोई विशेष आशा नहीं थी। कांग्रेस में भी स्वराज्य दल पर जोर हो गया था। जिनके पास कुछ धन तथा इष्ट मित्रों का संगठन था, वे कौंसिल तथा असेम्बली के सदस्य बन गये थे।

---

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहाँपुर का योगदान, पृष्ठ-106 - डॉ०एन०सी० मेहरोत्रा

ऐसी अवस्थाओं में यदि क्रांतिकारी संगठन-कर्ताओं के पास पर्याप्त धन होता तो वे असहयोगियों को अपने हाथ में लेकर उनसे काम ले सकते थे। कितना भी सच्चा काम करने वाला हो, किन्तु पेट तो सबका है।'' स्पष्ट है कि संगठन को धन की आवश्यकता थी और कोई सार्थक जरिया दिखाई भी नहीं दे रहा था। प्रसिद्ध क्रांतिकारी और संगठन के प्रमुख राम प्रसाद इस हेतु मुख्य प्रबन्धक शाहजहांपुर हुए। वे संगठन के महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। धन के अभाव मं क्रांतिकारी किसी कार्य को परिणाम तक पहुंचाने में असफल हो रहे थे। हथियार बढ़ाने, सदस्यों की संख्या अधिक करने, पर्चे आदि हेतु धन की आवश्यकता थी। सदस्यों द्वारा अर्जित किये गये चंदे का धन पर्याप्त न था।

संगठन के कुछ सदस्यों ने अपने घरों से पैसा लगाया तो किसी ने चोरी की। बावजूद इसके धन की कमी रहती ही थी। देश को स्वतंत्र कराने हेतु पर्याप्त धन आये कहां से यह चिन्ता की बात थी। क्रांतिकारियों से सहानुभूति रखने वालों से सहायता तो मिलती ही थी, जिसमें प्रमुख थे - पं० मोती लाल नेहरू, उपन्यासकार शरत् चन्द, राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन, अटार्नी जनरल सर एस०एन० सरकार।[1]

राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने गांव भी लूटे, अशफाक भी पूर्णतः सम्मिलित हुए थे। अशफाक ने अपने भाई की राइफल का उपयोग भी किया। लेकिन जो धन प्राप्त हुआ था, वह मात्र सौ से दो सौ रूपये तक ही सीमित रहा। राम प्रसाद इन (डकैती) कार्यों से प्रसन्न नहीं थे। वैसे भी यह धन राष्ट्र की आजादी के लिए ही खर्च होता था। लेकिन राम प्रसाद बिस्मिल का मत था कि भारतवासी ग्रामीण जनता को नुकसान पहुंचाने का कोई अधिकार किसी के पास नहीं है और यह अनुचित है।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -47

राम प्रसाद बिस्मिल पर क्रांतिकारी गतिविधियों का उत्तरदायित्व अधिक था, लेकिन वे कर भी क्या सकते थे। संगठन को नियमित रूप से सहायता देने वालों ने भी हाथ खींच लिया था। कई कार्यकर्ताओं के ऊपर ऋण का बोझ हो चुका था, अनेकों ने खराब आर्थिक स्थिति के कारण दल से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था।[1] राम प्रसाद बिस्मिल ने अपनी जिम्मेदारी पर ऋण लेकर जिला कार्यकर्ताओं को मासिक व्यय हेतु धन दिया किन्तु ऐसा करना हमेशा सम्भव नहीं था। उसी समय बंगाल में आर्डीनेंस लागू हो गया, जिसके तहत कई कार्यकर्ता तुरन्त बन्दी बना लिये गये। कार्यकर्ताओं में उदासीनता व्याप्त होने लगी। संगठन पर भीषण आर्थिक संकट आ गया, जिसका वर्णन बिस्मिल ने इन शब्दों में किया है- ''इस समय समिति के सदस्यों को बड़ी ही दुर्दशा का सामना करना पड़ रहा था। चने मिलना भी कठिन था। सब पर कुछ-न-कुछ कर्ज हो गया था। किसी के पास साबुत कपड़े तक न थे। कुछ विघार्थी बनकर धर्म क्षेत्रों तक में भोजन करते थे। चार-पांच सदस्यों ने अपने-अपने केन्द्र त्याग दिये थे। पांच सौ से अधिक रूपये मैं कर्ज लेकर व्यय कर चुका था। यह दुर्दशा देखकर मुझे बड़ा कष्ट होने लगा। मुझसे भरपेट भोजन नहीं किया जाता था। सहायता के लिए सहानुभूति रखने वालों का द्वार खटखटाया, किन्तु कोरा उत्तर मिला। किंकर्तव्यविमूढ़ था। कुछ समझ में नहीं आता था। कोमल "दय नवयुवक मेरे चारों ओर बैठकर कहा करते थे - 'पंडित जी अब क्या करें।' मैं उनके सूखे मुख को देखकर बहुधा रो पड़ता था कि स्वदेश सेवा का व्रत लेने के कारण उनकी फकीरों से भी बुरी दशा हो रही है। एक-एक कुर्ता तथा धोती भी ऐसी नहीं थी, जो साबुत होती।

1. अशफाक उल्ला खां, भवान सिंह राणा, पृष्ठ - 47

सारा-सारा दिन लंगोट बांधकर गुजारते थे। अंगोछे पहनकर नहाते थे, एक समय भोजन करते थे, एक समय दो-दो पैसे का सत्तू खा लेते थे। मैं पन्द्रह वर्ष से एक समय दूध पीता था। इन लोगों की दशा देखकर मुझे दूध पीने का जरा भी साहस नहीं होता था। मैं सबके साथ बैठकर सत्तू खा लेता था। मैंने विचार किया कि इतने नवयुवकों का जीवन नष्ट करके उन्हें कहां भेजा जाए? जब समिति का सदस्य बनाया था, तो लोगों ने बड़ी-बड़ी आशा बंधाई थी। कइयों का पढ़ना लिखना छुड़ाकर काम में लगा दिया था।''[1]

अर्थ का प्रबन्ध करना आवश्यक था। किन्तु कैसे हो प्रबन्ध? प्रश्न यह था। कोई उपाय न देख डाका डालना ही तय हुआ। किन्तु किसी व्यक्ति विशेष के यहां डाका डालना उचित नहीं समझा गया। यह भी सोचना हुआ कि क्यों न सरकारी खजाना ही लूटा जाय। भीषण अभावों में जीवन यापन करने वाले मातृभूमि के उपासक अपने उद्‌देश्यों की पूर्ति में कोई भी अवसर हाथ से जाने देना नहीं चाहते थे। यह क्रांतिकारियों का ही साहस था कि संगठन के प्रत्येक केन्द्र पर हथियारों का अच्छा संग्रह तैयार हो गया और सदा अवसर की ताक में रहते कि कुछ कर दिखायें। अंग्रेजी सत्ता यह सोचने के लिए बाध्य हो जाये कि कोई चुनौती देने वाला है। योजना के अनुसार एक ही दिन क्रांति के पर्चे वितरित करने की बात हुई। पर्चों में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने का जिक्र था। यह भी कहा गया कि क्रांतिकारियों के सामने सोवियत संघ का आदर्श है।[2] पर्चों के वितरण का कार्य गोपनीयता से हुआ। किसी को भनक तक न लगी। सरकार हैरान थी और संगठन की व्यापकता पर आश्चर्य व्यक्त कर रही थी।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-48
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-50

जनता को क्रांतिकारियों के इस संगठन से परिचित होने का अवसर मिला। इन सब गतिविधियों और आर्थिक संकटों से जूझते आगे बढ़ते हुए प्रमुख क्रांतिकारी राम प्रसाद बिस्मिल एक दिन शाहजहांपुर से लखनऊ यात्रा कर रहे थे। वे डिब्बे के बाहर आये। वे गार्ड के पास वाले डिब्बे में ही बैठे थे। जब स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो स्टेशन मास्टर एक थैली लाया और गार्ड के डिब्बे में डाल दिया। कुछ खटपट की आवाज हुई। राम प्रसाद ने देखा कि एक लोहे का संदूक रखा है। उन्होंने अनुमान लगा लिया कि इसी में थैली डाली होगी। अगले स्टेशन पर भी थैली डाली गयी। लोहे का संदूक गार्ड के डिब्बे में जंजीर से बंधा था और ताला भी पड़ा था। यह सब राम प्रसाद ने अनुमान ही लगाया। कुछ दिनों के बाद राम प्रसाद को लखनऊ स्टेशन पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। राम प्रसाद ने देखा कि गाड़ी में से कुली लोहे का संदूक (आमदनी वाले सन्दूक) उतार रहे हैं। पता करने पर राम प्रसाद बिस्मिल को ज्ञात हुआ कि इस सन्दूक में जंजीर ताला कुछ नहीं पड़ता, यूं ही रखा जाता है। राम प्रसाद ने उसी समय निश्चय किया कि इसी पर हाथ मारूँगा।[1] धुन सवार हो गयी। राम प्रसाद ने तुरन्त जाकर टाइम-टेबुल देखा और अनुमान लगाया कि सहारनपुर से गाड़ी चलती है, लखनऊ तक निश्चित ही दस हजार रु० की आमदनी होती है। बिस्मिल ने अब दृढ़ निश्चय कर लिया कि अब वे इस खजाने को लूटकर रहेंगे। उन्होंने अपना विचार दल के अन्य सदस्यों को बता दिया। काफी बहस-विमर्श के बाद तय हुआ था कि रेल खजाना ही लूटा जाय।

1. राम प्रसाद बिस्मिल, पूर्वो, पृष्ठ-88

अशफाक का विरोध :-

रेल का खजाना लूटने की योजना राम प्रसाद बिस्मिल के दिमाग की उपज थी। यह योजना जब दल के अन्य सदस्यों के सामने रखी गयी, तो सबने इसे स्वीकार कर लिया और अब पूर्णरूप से रेल खजाना लूटने की योजना बन गयी। किन्तु अशफाक इस योजना से सहमत नहीं थे। अशफाक का स्पष्ट रूप से कहना था कि सरकारी खजाने पर धावा बोलना उचित नहीं है, इसका अर्थ सरकार से सीधी टक्कर लेना है।[1] अशफाक ने नये कदम का डटकर मुकाबला किया। उन्होंने कहा कि जहाँ तक चुनौती का सम्बन्ध है, इस काम से हम सरकार को चुनौती तो अवश्य दे देंगे लेकिन पार्टी के अन्त का प्रारम्भ हो जायेगा। उन्होंने साफ-साफ कह दिया कि अभी पार्टी बहुत कमजोर है और इस काबिल नहीं है कि सरकार के साथ युद्ध कर सके। अशफाक ने यह भी कहा कि जिस प्रकार यह प्रस्तावित काम करने का इरादा किया जा रहा है, इससे फौरन सरकार को संदेह हो जायेगा और जल्द ही सरकार हमारे ऊपर टूट पड़ेगी।[2] अशफाक कारण जानते थे कि दल के पास धन भी नहीं हैं और न अन्य साधन। ऐसी स्थिति में सरकार से टक्कर लेना अपना ही सिर फोड़ना है। अशफाक ने बहुत प्रयास किया कि उनकी बात मान ली जाय। अशफाक जानते थे कि यह कार्य अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने जैसा है। लेकिन अशफाक को सफलता न मिली। विरोध सार्थक था और इससे अशफाक की दूरदर्शिता का पता भी चलता है। वे स्थायित्व में विश्वास करते थे। वे कोई ऐसा कार्य नहीं चाहते थे, जिससे दल को भारी नुकसान हो। यह विरोधात्मक स्वर भी अशफाक के व्यक्तित्व ही नहीं कृतित्व को भी दर्शाता है।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -59
2. जांबाज (पत्रिका), मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ-3

क्रांतिकारी दल की मुख्य समिति ने बिस्मिल की योजना को स्वीकृति दे दी। इसके बाद भी अशफाक बार-बार बिस्मिल को इस कार्य के सम्भावित घातक परिणामों से सचेत करते रहे। लेकिन अब तो जो हो गया सो हो गया। अब निर्णय को बदलना बिस्मिल के लिए भी असम्भव था। अन्त में अशफाक को बिस्मिल ने सहमत कर लिया। अन्ततः रेलगाड़ी लूटने की योजना बनाई गयी। योजना के प्रत्येक पहलू पर खूब विचार किया गया। प्रथम चरण में यह निश्चित हुआ कि रेलगाड़ी जब किसी छोटे स्टेशन पर खड़ी हो तो स्टेशन के तारघर पर अधिकार कर लिया जाये।[1]

अशफाक ने भले ही स्वीकार कर लिया लेकिन उनका भीतरी व्यक्तित्व इस कार्य हेतु स्वीकृति नहीं देता था। वहीं चन्द्रशेखर आजाद सबसे अधिक प्रसन्न थे। वे सरकार को खुली चुनौती देते हुए सीधी टक्कर लेने में विश्वास रखते थे। यही कारण था कि योजना के सबसे अधिक प्रबल समर्थक चन्द्रशेखर आजाद ही थे। चन्द्रशेखर आजाद जैसी विचारधारा वाले संगठन के सदस्यों का मत था कि यदि गाड़ी का गार्ड, ड्राइवर आदि अंग्रेज हुए तो उन्हें भी गोली मार दी जाये। बिस्मिल ऐसे विचार से कतई सहमत नहीं थे। वे व्यर्थ की हत्या या रक्तपात के विरोधी थे। अशफाक उल्ला खां तो प्रारम्भ से ही इस प्रकार की डकैती के विरुद्ध थे।[2] वे चाहते थे कि क्रांतिकारी जो भी कार्य करें छिपकर करें।

क्रांतिकारी मन्मथ नाथ गुप्त जो स्वयं काकोरी काण्ड में सम्मिलित हुए थे, वे अशफाक की असहमति पर लिखते हैं कि - 'इस बार एक बड़ी योजना बनाई गई थी। यह तय किया गया कि लखनऊ के पास काकोरी नामक स्थान पर 8 डाउन रेल को

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहांपुर का योगदान, डॉ0 एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-118
2. स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहांपुर का योगदान, डॉ0 एन0सी0 मेहरोत्रा, पृष्ठ-118

रोककर उसमें आने वाला रेल खजाना लूट लिया जाए। काकोरी स्टेशन के पास एक वीरान जगह चुन ली गई थी। सारी तैयारियां गुपचुप, लेकिन बड़ी सरगर्मी के साथ होती रहीं। पर अशफाक अब भी इस डाके का विरोध करते रहे। यह मानना पड़ेगा कि वह बहुत दूर की चीज सोच रहे थे। उनका कहना था कि हमारा दल अभी इतना मजबूत नहीं है कि हम ब्रिटिश सरकार को खुली चुनौती दे सकें। अभी हम इस हालत में नहीं हैं कि हम सरकार से सीधी लड़ाई छेड़कर दल को कायम रख सकें। लेकिन सब जोश के मारे फड़क रहे थे, और अशफाक उल्ला की बात नक्कार खाने में तूती की आवाज बनकर रह गयी।''[1]

मन्मथ नाथ गुप्त ने आगे लिखा कि - '.......एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि यों तो अशफाक उल्ला सरकारी खजाने की डकैती के विरोधी थे, पर जब उन्होंने देखा कि उनकी एक न चली और क्रांतिकारी इस काम को करने पर ही तुले हैं, तब उन्होंने भी कमर कस ली। उनकी सुन्दर बड़ी-बड़ी आँखे तेज से दीप्त हो उठीं ओर वह अपना पार्ट अदा करने के लिए अत्यन्त साहस तथा प्रसन्नता से प्रस्तुत हो गये। उनका विरोध किसी डर या भय से प्रेरित न था, बल्कि वह बुद्धिमत्ता की आवाज थी। बाद के इतिहास ने सिद्ध कर दिया कि अशफाक सही थे और बाकी सभी क्रांतिकारी गलती पर थे। यह बात तो निश्चित है कि यदि हम इस कार्य को न करते तो इतनी जल्दी हमारे पांव न उखड़ते।''[2]

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -61
2. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ-209-210

उपरोक्त कथनों से स्पष्ट हो जाता है कि अशफाक उल्ला खां दूरदर्शी मस्तिष्क के धनी थे और उस समय के क्रांतिकारियों में मानसिक रूप से उनका स्थान ऊंचा था। अशफाक का विरोधात्मक स्वर व्यर्थ गया और इस कार्य हेतु दस क्रांतिकारी युवकों का चयन कर लिया गया, जो इस प्रकार है - पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, मुकुन्दी लाल, मन्मथनाथ गुप्त, बनवारी लाल, शचीन्द्र नाथ बख्शी, मुरारी लाल, कुन्दन लाल। राम प्रसाद बिस्मिल इस योजना को क्रियान्वित करने वाले दल के नेता बने। अत्यन्त गुप्त रूप से, पूरी सावधानी रखते हुए तेजी से तैयारियों होने लगीं। इसके लिए लखनऊ से कुछ दूर काकोरी नामक स्थान का चयन भी कर लिया गया।[1]

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -60

काकोरी काण्ड की योजना का अंतिम चरण और अशफाक का एक बार पुनः विरोध-

काकोरी नामक स्थान का चयन तो हो ही गया था। काकोरी लखनऊ जिले का छोटा सा गांव है। इस गांव का कोई खास मतलब भी नहीं था। काकोरी नाम से रेलवे का छोटा सा स्टेशन भी है। विचार किया गया कि इसी छोटे स्टेशन पर गाड़ी खड़ी होने पर तुरन्त स्टेशन तथा वहां स्थित तारघर पर अधिकार कर लिया जाए और गाड़ी का सन्दूक उतारकर उसे तोड़ डाला जाए। इस कार्य सम्पादन के पश्चात् जो कुछ भी प्राप्त हो, उसे लेकर तुरन्त भाग लिया जाये। अन्ततः कार्यक्रम बिल्कुल स्पष्ट हो गया। किन्तु अभी भी कई बातें तय होनी थीं। कार्यक्रम यह था कि किस स्टेशन पर क्रांतिकारी चढ़ेंगे और किन दो स्थानों के बीच में जंजीर खींचकर गाड़ी खड़ी करेंगे। यह भी तय हुआ कि गाड़ी खड़ी करके लोहे का सन्दूक खींच कर बाहर निकाल लिया जाये और उस पर कब्जा कर लिया जाय। प्रतिदिन सारे स्टेशनों पर जो आमदनी होती थी, उसे आठ नम्बर की डाउन ट्रेन लेकर लखनऊ हेड आफिस में पहुंचती थी। योजना यह थी कि सदस्य किसी दिन इसी गाड़ी पर किसी स्टेशन पर सवार हो जायें और दो स्टेशनों के बीच गाड़ी रोक ली जाय। पहले यह योजना बनी थी कि किसी स्टेशन पर ही रोककर खजाने को लूटा जाय। इस हेतु लखनऊ में छेलालाल धर्मशाला में क्रांतिकारी ठहरे थे।[1] ये सभी सदस्य टोली के रूप में नहीं वरन् एक-दूसरे से अपरिचित बनते हुए अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में ठहरे थे। निश्चित तिथि को अपने-अपने गुप्त स्थानों पर ठहरे हुए थे। योजना भी यही थी कि गाड़ी खड़ी होने पर स्टेशन मास्टर को पकड़ लें। सभी क्रांतिकारी लखनऊ के अगले स्टेशन के लिए पैदल ही चल

1. जाँबाज (पत्रिका) - मन्मथनाथ गुप्त - पृष्ठ-3

पड़े किन्तु अभी वे अगले स्टेशन के सिग्नल के पास भी नहीं पहुँच पाये थे कि गाड़ी निकली चली जा रही है, जिसमें खजाना लूटा जाना है। मन्मथ नाथ गुप्त लिखते हैं कि - 'हमें इससे गहरी निराशा हुई, उसकी कल्पना आसानी से नहीं की जा सकती।' यह देरी खल गयी और क्रांतिकारी पैदल ही लखनऊ लौट आये। फिर पता किया गया कि यह गाड़ी 8 डाउन ही थी कि नहीं। पता चला कि वह गाड़ी 8 डाउन ही थी। मुकुन्दी लाल के अनुसार - 'इसी प्रकार दो दिन असफलता का मुंह देखना पड़ा था। दो दिन तक लगातार कोशिशों के बावजूद वह असफल रहे। तीसरे दिन 9 अगस्त, 1925 को हमारे साथी योजना में आखिर कामयाब हो गये'। स्पष्ट है कि क्रांतिकारी इस कार्य हेतु 7 और 8 अगस्त को प्रयत्नशील रहे। ....और अभियान में सफलता नहीं मिली। दो दिन की असफलता के बाद दल शाहजहांपुर चला गया था। इस संबंध में मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है - 'हम लोग 9 तारीख की संध्या समय शाहजहांपुर में हथियार छेनी, घन, हथौड़े आदि से लैस होकर गाड़ी पर सवार हो गये।'[1] स्टेशन पर खजाना लूटने की योजना को त्याग दिया गया था क्योंकि इस कार्य हेतु अधिक लोगों की आवश्यकता थी। अतः यह योजना बन गयी कि अब दो स्टेशनों के बीच में गाड़ी रोककर खजाना लूटा जाय और इसी कार्य हेतु दल के सदस्य ट्रेन में सवार हुए थे। अशफाक ने अपने साथियों से खूब विरोध जताया। यह उनका अन्तिम प्रयास था। बिस्मिल दल के नेता थे, अशफाक बार-बार उन्हें समझाते, परन्तु बिस्मिल के सिर पर तो कुछ और जुनून सवार था, वे समझा-बुझा कर अशफाक को शांतकर देते थे। मन्मथ नाथ गुप्त ने लिखा है - ''9 अगस्त 1925 को ट्रेन डकैती का निश्चय किया गया था। हम लोग जब दस आदमी काकोरी स्टेशन पहुँचे, उस समय भी अशफाक यही कहते रहे कि राम प्रसाद मेरी बात मान जाओ।

1. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -209

अब भी लौट चलो। पर उनका कहना-सुनना बेकार ही गया। पं0 राम प्रसाद बिस्मिल ने मुझे (मन्मथनाथ) बुलाकर कहा कि अशफाक को समझाओ और उसे बताओ कि लोग उसके विरोध के कारण उसे क्या-क्या कह रहे हैं। ....मैंने अशफाक को यह बताया कि ऐन मौके पर पहुंच कर तुम जो विरोध कर रहे हो, उसकी प्रतिक्रिया साथियों पर बड़ा खराब असर डालेगी। वे तुम्हें डरपोक कहने लगे हैं। दरअसल हमारे कई साथी कह रहे थे कि अशफाक डर गया है। पं0 राम प्रसाद बिस्मिल भी यही सोच रहे थे कि तुम डर गये हो। परन्तु अशफाक की एक ही रट थी कि - लौट चलो, यह काम नहीं होना चाहिए।''[1]

काकोरी ट्रेन डकैती-

संध्या होने वाली थी। आसमान बादलों से घिरा था। वह रात होने वाली थी, जिसका जिक्र किये बिना कोई क्रांतिकारी इतिहास पूरा नहीं होता। छिट-पुट बूँदा-बांदी भी हो रही थी। गाड़ी चार बजे शाम को आई और सभी सवार हो गये। सुधीर विघार्थी ने लिखा है - 'आज उन्हें अपने लक्ष्य की ओर जाना था। वे सिर पर कफन बांधकर एक शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती देने निकल पड़े थे। गिनती में सिर्फ दस थे वे, पर उनके इरादे ऊँचे और मजबूत थे। वे देश की आजादी के लिए क्रांति के इस रास्ते पर सीना तानकर चले थे। इसलिए आज उन्हें अपने अभियान पर नाज था।[2] क्रांतिकारी अपने औजार और हथियार को लिए गाड़ी में सवार हो चुके थे। तीन व्यक्ति सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में सवार हुए थे, इस कार्य हेतु अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी और शचीन्द्र नाथ बख्शी को चुना गया था।

1- अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -64

2- अशफाक उल्ला खां और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ-37

शेष सात सदस्य तीसरे क्लास डिब्बे में सवार हुए थे। राम प्रसाद बिस्मिल दल का नेतृत्व कर रहे थे। ऐसे कार्यों में वे सदैव नेतृत्व ही किया करते थे। तीसरे डिब्बे में सवार सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं - बिस्मिल, केशव चक्रवती, मुरारी लाल, मुकुन्दीलाल, चन्द्रशेखर आजाद, बनवारी लाल और मन्मथ नाथ गुप्त। दल के सदस्य गाड़ी में फैले हुए थे। अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिड़ी, शचीन्द्र नाथ बख्शी का काम था कि जंजीर खींचकर गाड़ी को खड़ी कर देंगे। क्रांतिकारियों के पास चार नए माऊजर पिस्तौल थी और अन्य छोट-मोटे हथियार थे। प्रत्येक पिस्तौल के लिए पचास से अधिक गोलियाँ थीं। योजना के अनुसार अक्षरशः पालन हुआ। निर्धारित स्थान पर जंजीर खींच दी गयी।[1] जंजीर खींचते ही गाड़ी रुक गयी। उस समय संध्या का समय था, अँधेरा छाने लगा था। गाड़ी के रुकते ही मुसाफिर जंगले से मुँह निकालकर झाँकने लगे। वह यह जानना चाहते थे कि मामला क्या है। गार्ड भी उतरकर उसी ओर जाने लगा कि मामला क्या है? अभी दिन की रोशनी थोड़ी बाकी थी। गाड़ी खड़ी होते ही दल के सदस्य अपने-अपने डिब्बों से उतर गये और कुछ क्षणों में कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। गार्ड साहब को क्रांतिकारियों ने पिस्तौल दिखाकर जमीन पर लेटने के लिए आज्ञा दे दी। गार्ड साहब औंधे मुंह जमीन पर लेट गये। दल के सभी सदस्यों ने अपने-अपने हथियार निकाल लिए। माऊजर पिस्तौलें भी निकाल ली गयी थीं। इस पिस्तौल की मार एक हजार गज तक होती थी और एक साथ दस गोलियां भरी जाती थीं। दल के सदस्यों ने एक-दो हवाई फायर करते हुए यात्रियों को चेतावनी दी कि वे सभी तुरन्त अपने-अपने डिब्बों के अन्दर रहें। यात्रियों को कुछ नहीं कहा जायेगा, सिर्फ सरकारी खजाना लूटा जायेगा। यात्री किसी प्रकार की चिन्ता न करें, वे केवल अपने-अपने स्थानों पर शांतिपूर्वक बैठे रहें।

---

1. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ-210

गाड़ी के दोनों ओर पगडण्डी को छोड़कर घास के मैदानों में दो-दो युवकों को नियुक्त कर दिया गया, उनके पास माऊजर पिस्तौले थीं। इन पिस्तौलों को बट पहनाकर राइफल की तरह प्रयोग में लाया जा सकता था, जिससे यह एक हजार गज तक मारकर सकती थी। इन दो युवकों को कठोर आदेश दिया गया था कि किसी भी व्यक्ति पर गोली न चलायी जाये। सिर्फ हवा में कुछ देर तक गोलियाँ चलाई जाती रहें। संयोग ही ऐसा था कि अमजद अली नामक एक युवक व्यर्थ में मारा गया। उस व्यक्ति का नया विवाह हुआ था और उसकी पत्नी महिलाओं वाले डिब्बे में बैठी थी। क्रांतिकारियों की बार-बार चेतावनी के बावजूद वह डिब्बे से बाहर निकल आया, शायद वह अपनी पत्नी को आश्वस्त करने जा रहा था कि गोली का शिकार हो गया और मारा गया।[1] राम प्रसाद बिस्मिल ने घटना का वर्णन करते हुए लिखा है - ''एक सज्जन गार्ड के डिब्बे से उतरे। उनके पास भी माऊजर पिस्तौल थी। विचारा कि ऐसा शुभ अवसर जाने कब हाथ आए। माऊजर पिस्तौल काहे को चलाने को मिलेगा। इसी उमंग में सीधी गोली दागने लगे। मैंने जो देखा तो डांटा क्योंकि गोली चलाने की उनकी ड्यूटी ही नहीं थी। फिर भी यदि कोई मुसाफिर कौतूहलवश बाहर को सिर निकाले, तो उसको गोली जरूर लग जायेगी। हुआ भी ऐसा ही जो व्यक्ति रेल से उतरकर अपनी स्त्री के पास जा रहा था, मेरा ख्याल है कि इन्हीं महाशय की गोली उसके लग गई, क्योंकि जिस समय यह महाशय सन्दूक नीचे डालकर गार्ड के डिब्बे से उतरे थे, केवल दो-तीन फायर हुए थे। उसी समय स्त्री ने कोलाहल किया होगा और उसका पति उसके पास जा रहा था, जो उस महाशय की उमंग का शिकार हो गया।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-65

मैंने यथा शीघ्र पूर्ण प्रबन्ध किया था कि जब तक कोई व्यक्ति बन्दूक लेकर सामना करने न आये या मुकाबले में गोली न चले, तब तक किसी आदमी पर फायर न होने पाये। मैं नर -हत्या कराके डकैती को भीषण रूप नहीं देना चाहता था। फिर भी मेरा कहा न मानकर अपना काम छोड़ गोली चला देने का यह परिणाम हुआ। गोली चलाने की ड्यूटी जिनको मैंने दी थी, वे बड़े दक्ष तथा अनुभवी मनुष्य थे। उनसे भूल होना सम्भव न था। उन लोगों को मैंने देखा था कि वे अपने स्थान से पाँच मिनट बाद पाँच फायर करते थे। यही मेरा आदेश था।''[1]

कार्य को परिणाम तक पहुँचाने का उपक्रम सुनियोजित तरीके से हो रहा था। दो व्यक्ति घास में पगडंडियों के पास तो थे ही, जो ट्रेन की निगरानी कर रहे थे। बाकी सदस्य खजाने वाले डिब्बे में घुस गये और धक्का देकर खजाने के सन्दूक को डिब्बे से नीचे गिरा दिया। सभी उसे तोड़ने लगे। सन्दूक इतना मजबूत था कि टूटने का नाम ही नहीं ले रहा था। हाँ बार-बार प्रहार से उसमें छेद अवश्य हो गया था। गार्ड या किसी अन्य के पास चाबी होती तो खोलने की समस्या हल हो जाती, किन्तु गाड़ी में किसी के पास चाबी नहीं थी।[2] तरीका यह था कि प्रत्येक स्टेशन मास्टर अपना थैला लाकर उस सन्दूक मं डाल जाता था। यदि कोई उसमें थैला डालना चाहे तो डाल सकता है किन्तु कोई उसमें से निकाल नहीं सकता। उसकी बनावट ही ऐसी होती है।[3] .....घन पर घन बरसते रहे परन्तु प्रयास व्यर्थ ही रहा। अशफाक उल्ला पहरा देने वाले व्यक्तियों में थे और जब उन्होंने देखा कि यह दशा तो उचित परिणाम तक नहीं पहुंचाएगी तो पिस्तौल मन्मथनाथ गुप्त को दे दी

1.अशफाक उल्ला खां, भवान सिंह राणा - पृष्ठ -66

2.भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -210

3.भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -210

और घन लेकर जुट गये। अशफाक सभी सदस्यों से बलिष्ठ थे, इसलिए थोड़ी देर में सुराख बड़ा हो गया और रुपये से भरी थैलियां बाहर निकालकर चादर में बाँध दिया गया।........और इसी वक्त कोई दूसरी गाड़ी आ गयी तो क्रांतिकारियों की मनोदशा क्या रही होगी, अनुमान लगाना कठिन है। इसका वर्णन स्वयं मन्मथनाथ गुप्त ने किया है -'इस समय जबकि सफलता बिल्कुल सामने थी। एक गाड़ी की आवाज आती हुई सुनाई पड़ी। हाँ इसमें कोई संदह नहीं था कि गाड़ी हमारी तरफ आ रही थी। भला यह कैसी गाड़ी थी? यह कैसे हो गया कि अगले स्टेशन पर हमारी खबर पहुँच गयी। यह सम्भव नहीं था, तो क्या इसके मायने यह हुआ कि किसी ने विश्वासघात किया? अन्य कितने ही प्रश्न हमारे मन में कौंध गये। सम्भव है कि यह सैनिक गाड़ी है। यह सम्भावना करीब-करीब जम गयी। ....अब हमारे नेता लोहे के सन्दूक के पास आ गये। हमने उनकी तरफ देखा। वे बिल्कुल स्थिर खड़े थे और अन्य सब लोगों की तरह एकाग्र होकर ट्रेन की तरफ देख रहे थे। ऐसा लगा कि ट्रेन के यात्रियों में भी थोड़ी-बहुत सुगसुगाहट हो रही थी। हम चाहते तो उस वक्त अंधेरे में लुप्त हो सकते थे, पर हमने फैसला किया कि अब जो कुछ भी हो, उसका सामना करना ही है। अधिक से अधिक यह हो सकता था कि दोनो तरफ से गोलियों की बौछारें हो और हम लोग सब मारे जाएं। पर जबकि हम पर खतरा आ चुका था, हमें बिल्कुल डर नहीं लग रहा था। क्या यह बात सच नहीं है कि हम मौका मिलने पर वीरता का आदर्श पेश करना चाहते थे। हमने हाथों में अपने अस्त्रों को कसकर पकड़ लिया और आती हुई रेलगाड़ी की तरफ देखने लगे। अशफाक हथौड़ा चलाकर अपना काम आगे बढ़ा रहे थे और छेद करीब-करीब इतने बड़े हो गये थे कि सन्दूक में पड़ी थैलियां निकाली जा सकती थीं। इस समय हथौड़े की चोट के अलावा बाकी सब लोग शान्त थे।

यात्रियों को ट्रेन के अन्दर रखने के लिए बराबर गोलियां दागी जा रही थी।''[1] मन्मथ नाथ गुप्त ने आगे भी इसका वर्णन करते हुए लिखा है - ''हिमगिरी की तेजी से रेल हमारी तरफ दौड़ी आ रही थी। रेल की आवाज चारो तरफ छाई हुई थी। आखिर क्या होने वाला है? मृत्यु ? कौन जानता है क्या होगा? पर अब हमें कोई भय नहीं था। उसी समय राम प्रसाद ने देखा कि जहाँ हम खड़े थे, वहाँ डबल लाइन थी। एकाएक उनको याद आया कि पंजाब मेल आ रही है और इसमें कोई संदेह नहीं था कि यह रात वाली पंजाब मेल थी। उन्होंने यह बात हमें बता दी। हमारे नेता सामने मौजूद थे। उनकी तात्कालिक बुद्धि बड़ी प्रखर थी। उन्होंने इससे पहले खतरों की स्थिति से निकाला था। क्या यह बात सच नहीं थी कि इससे पहले हर मौके पर उन्होंने इससे भी गम्भीर स्थिति में सही फैसले किये थे। शायद वे हमसे कहें कि लौट चलो या कहें कि पास के पेड़ों के पीछे हो जाओ और वहाँ से जबरदस्त मोर्चा सम्भालो।'' ''आती हुई गाड़ी पास पहुँचने ही वाली थी। ऐसे मौके पर बिस्मिल ने हमसे कहा कि हम अपने अस्त्रों को छिपा लें। उससे यह होगा कि यदि कोई गाड़ी से झाँकेगा, तो हम लोगों को साधारण भटके हुए यात्रियों के रूप में देखेंगे। उन्होंने अशफाक को इस प्रकार खड़े होने के लिए कहा मानो वे कोई दृश्य देख रहे हों। गाड़ी बहुत तेजी से आ रही थी और चारो तरफ उसका शोर था। एक लम्हे के अन्दर गाड़ी हमारे सामने से निकल गयी और सारी स्थिति एक दुःस्वप्न की तरह होकर चली गयी। अब वह एक गोली की तरह अगले स्टेशन की ओर जा रही थी। हमारे चेहरों पर तथा हमारी गाड़ी पर तेज रोशनी गिरी, बहुत जोर से दोनों गाड़ियों की हवाएं टकरायीं और देखते-देखते सब खत्म हो गया। इस प्रकार यह खतरा टल गया

1. अशफाक उल्ला खां, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-67

और हर मिनट उस गाड़ी का शब्द धीमा होता चला गया।''[1]

अशफाक उल्ला खां का कृतित्व ही ऐसा था कि जहां बल का काम हो बिना अशफाक के सम्भव कहाँ। अशफाक के पास भीमबल था। अनेक इतिहासकारों, टिप्पणीकारों ने उनके इस अद्‌भुत बल शौर्य का बखान किया है। ....रेल रोकने और तिजोरी टूटने में मात्र दस मिनट का समय लगा होगा। यह अशफाक के कारण ही हुआ कि कार्य में सफलता मिली। यह भी ज्ञातव्य है कि उसी ट्रेन में चौदह पुरुष ऐसे थे, जिनके पास बन्दूके थीं या रायफलें थीं। दो सशस्त्र अंग्रेजी फौजी जवान भी थे परन्तु सब शान्त रहे। ड्राइवर और इंजीनियर का बुरा हाल था। ये दोनों अंग्रेज थे। ड्राइवर महाशय इंजिन में लेट गये थे और इंजीनियर साहब पाखाने में जा छिपे थे।[2] मुसाफिर भी डरे थे, वे समझ बैठे थे कि गाड़ी को लगभग चालीस आदमियों ने घेर लिया है। केवल दस युवकों ने इतना बड़ा काण्ड कर डाला। साधारण रूप से विश्वास नहीं होता था, लेकिन यह सत्य था कि राम प्रसाद बिस्मिल के कुशल नेतृत्व में और अशफाक के भीमबल के कारण खजाना लूट लिया गया और इस असाधारण कार्य को परिणाम तक पहुँचा दिया गया। रूपये की थैलियों को बाँध लेने के बाद बिस्मिल ने सभी सदस्यों को सावधान किया कि वे स्थान को अच्छी तरह देख लें कि कोई वस्तु छूट तो नहीं गयी। इसके बावजूद एक सदस्य अपनी चादर वहीं भूल आया था। यात्रियों को धोखा देने के लिए क्रांतिकारी पहले तो विपरीत दिशा में भागे परन्तु झाड़ियों में लुप्त होने के बाद सभी एक साथ लखनऊ की ओर मुड़ गये। लूटे हुए रूपये चमड़े के थैलों में थे। रास्ते में ये रूपये निकाल लिए गये और थैलों को खाली ही बरसात में रूके हुए पानी के गड्ढों में डाल दिये।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -68
2. राम प्रसाद बिस्मिल, रचनावली सम्पादक, दिनेश शर्मा, पृष्ठ -3

इसके बाद सभी युवक चौक की ओर से लखनऊ शहर में प्रवेश किये। क्रांतिकारियों ने शहर में इस रास्ते से प्रवेश इसलिए किया कि कोई संदेह नहीं कर सकता था। रात्रि में अन्य स्थानों से जाने पर शक पैदा हो सकता था और यह इलाका वेश्याओं का था और इधर रात भर चहल-पहल रहती थी।

दल के नेता बिस्मिल पर संगठन की अर्थव्यवस्था का भार था। लखनऊ पहुँचने पर राम प्रसाद बिस्मिल ने समस्त धनराशि अपने किसी विश्वसनीय व्यक्ति के पास छिपा दी थी। इस विषय में अन्य किसी सदस्य को जानकारी नहीं थी। इस कार्य के बाद सभी सदस्य अपने-अपने परिचितों के यहाँ चले गये। चन्द्रशेखर आजाद और मन्मथ नाथ गुप्त का लखनऊ में कोई परिचित नहीं था और वे एक पार्क में जाकर सो गये।[1] इस काण्ड की सूचना समाचार पत्रों को रात्रि में ही मिल गयी थी। मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है - ''जब प्रातः काल भक्तगण गोमती में स्नान करने के लिए जा रहे थे, इस समय हम अपने गुप्त स्थानों से प्रकट हुए। थोड़ी देर में हम सड़क की बढ़ती हुई जनता में मिल गये। इसके बाद हमने सुना कि उस समय लखनऊ के प्रसिद्ध **'इण्डियन डेली टेलीग्राफ'** के हॉकर जोर-जोर से चिल्ला रहे थे - 'काकोरी के पास सनसनीपूर्ण ट्रेन डकैती।' मैंने इस अखबार की एक प्रति खरीदी और प्रातः काल की धुँधली रोशनी में इस घटना की कई कालमों की विस्तृत अजीबोगरीब रिपोर्ट पढ़ी। इस रिपोर्ट से हमें ज्ञात हुआ कि तीन व्यक्ति, जिसमें एक गोरा भी था, मारे गये। हमें इन हत्याओं के संबंध में कुछ पता नहीं था। चूँकि उस समय मैं एक आतंकवादी ऐडवेन्चरिस्ट था। इसलिए मैंने इस खबर का स्वागत किया, कि इस अवसर पर एक गोरा मारा गया है, किन्तु दो भारतीयों की हत्या से मुझे दुः ख हुआ।

1. अशफाक उल्ला खां, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-71

........मैंनें उस समय जो कुछ सोचा और अनुभव किया उसी का सच्चा चित्र पाठकों के सम्मुख रख रहा हूँ। किन्तु इस स्थल में यह भी बता रहा हूं कि **'इंडियन डेली टेलीग्राफ'** की दी हुई खबर बिल्कुल गलत थी। बाद में हमें ज्ञात हुआ कि कोई गोरा नहीं मारा गया। .....जहां तक गोरे के मारे जांने का सम्बन्ध है, तथ्य कुछ और ही निकला। जिस गोरे के विषय में यह बात कही गई थी, वह पलटन का मेजर या कर्नल था। जिस समय गोली चल रही थी, उस समय उसने अपने डिब्बे के सारे दरवाजे बन्द कर लिये थे और शौचालय के अन्दर अपने को बन्द कर लिया था। जब गाड़ी लखनऊ पहुंची, तभी यह गोरा अपने को सुरक्षित स्थान से निकाला।''[1]

''अशफाक की बात सही निकली। ट्रेन डकैती सर्वशक्तिमान ब्रिटिश सरकार के प्रति एक चुनौती थी और सरकार ने इसे इसी रूप में लिया भी। पुलिस फौरन समझ गयी थी कि यह एक राजनैतिक डकैती है। पहले पुलिस यदा-कदा हमारी खबर जान लिया करती थी, किन्तु अब दिन-रात हमारे पीछे खुफिया चलने लगे। दो खुफिया दिन-रात मेरे इर्द-गिर्द रहने लगे।''[2]

काकोरी काण्ड से संगठन को अवश्य ही कुछ आर्थिक लाभ हुआ। पहली बात तो यह थी कि दल के सदस्यों का आत्मविश्वास बढ़ा, वे साहस से भर गये। उन्हें अपने ऊपर विश्वास हो गया कि वे भविष्य में ऐसी बड़ी घटना को अंजाम दे सकते हैं। दूसरा लाभ यह हुआ कि संगठन के ऊपर जो ऋण हो गया था, उसे चुका दिया गया। नये अस्त्र-शस्त्र हेतु भी रुपये भेजे जाने लगे। तीसरा लाभ यह रहा कि प्रत्येक केन्द्र की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए और उसकी व्यवस्था हेतु नये कार्यकर्ताओं को भी भेज दिया गया। अब अर्थ आड़े नहीं आ रहा था।

---

1. जांबाज पत्रिका, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -7
2. जांबाज पत्रिका, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ-7

संगठन के सभी सदस्य प्रसन्न थे। राम प्रसाद बिस्मिल एक नये उत्साह के साथ संगठन को फिर से सशक्त बनाने में जुट गये। दुर्भाग्य ही था कि सभी लाभ क्षणिक सिद्ध हुए। पुलिस भी सक्रिय हो गयी थी और संगठन में भी दरार पड़ गयी थी। बिस्मिल को अन्त तक इसका गहरा दुःख रहा। स्वयं बिस्मिल ने लिखा है - ''मैं इस विषय में कुछ भी न जान सका कि दूसरे देश में क्रांतिकारियों ने अपनी आरम्भिक अवस्था में हम लोगों की भाँति प्रयत्न किया था या नहीं। यदि पर्याप्त अनुभव होता, तो हम इतनी साधारण भूलें ना करते। त्रुटियों के होते हुए भी ना बिगड़ता, और ना कुछ भेद खुलता, ना ही इस अवस्था को पहुँचते, क्योंकि मैंने जो संगठन बनाया था, उसमें किसी भी ओर से मुझे कमजोरी नहीं दिखाई देती थी। कोई भी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं समझ सकता था। इसी कारण आँख बन्द किये बैठे रहे, किन्तु आस्तीन में साँप छिपा हुआ था, ऐसा गहरा मुँह मारा कि चारों खाने चित्त कर दिया।

''जिन्हें हम हार समझे थे, गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे, हमारे काट खाने को।।''

नवयुवकों की आपसी होड़ के कारण आपस में ईर्ष्या-द्वेष फैल रही थी, जिस कारण रोज कलह हो जाती थी, जो कभी-कभी भयंकर रूप धारण कर लेती थी। मेरे पास जब कोई मामला आता तो मैं प्रेमपूर्वक क्रांतिकारी समिति की दशा का अवलोकन कराके उन सबको शान्त कर देता था। कभी-कभी नेतृत्व को लेकर भी वाद-विवाद चल जाता था। एक केन्द्र के निरीक्षक से वहां के कार्यकर्ता अत्यन्त असंतुष्ट थे। क्योंकि निरीक्षक से अनुशासनहीनता के कारण कुछ भूलें हो गयी थीं। इस अवस्था को देखकर मुझे बड़ा दुःख तथा आश्चर्य हुआ, क्योंकि नेतागीरी का भूत सबसे ज्यादा भयानक होता है। जिस समय यह भूत खोपड़ी पर सवार होता है, उसी समय सब काम चौपट हो जाता है। केवल एक दूसरे के दोष देखने में ही समय व्यतीत होता है और वैमनस्य बढ़कर बड़े भयंकर परिणामों का उत्पादक होता है।

इस प्रकार के समाचारों को सुनकर मैंने सबको एकत्रित कर खूब फटकारा। उस समय सब अपनी त्रुटि समझकर पछताए और प्रेमपूर्वक आपस में मिलकर सारे कार्य करने लगे। पर ऐसी अवस्था हो गयी थी कि दल गुटबन्दी का शिकार हो गया था। इस पर भी मुझ पर सबकी श्रद्धा थी और मेरी बात को सब मान लेते थे। इतना सब कुछ होने पर भी मुझे किसी प्रकार का संदेह न था। किन्तु परमात्मा को ऐसा ही स्वीकार था, जो इस अवस्था का दर्शन करना पड़ा।''[1]

काकोरी काण्ड से अशफाक का कृतित्व स्पष्ट होकर दिखता है। अशफाक की दूरदर्शिता और उनका भीमबल निश्चित ही दृष्टिगत होता है। अब पछतावा होता है कि काश अशफाक इस काण्ड से अपने को रोक लिए होते। अशफाक के एक-एक कथन सत्य साबित हो रहे थे और निश्चित ही क्रांतिकारी अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार चुके थे। यह जोश में आकर होश खोने जैसा था। अशफाक ही एक ऐसे क्रान्तिकारी व्यक्ति थे, जो हमेशा सचेत रहते थे, उनके लिए जोश में आकर होश खोने वाली कोई बात नहीं थी। बाद के इतिहास ने सिद्ध कर दिया कि अशफाक सही थे और अन्य क्रांतिकारियों का निर्णय नितांत आत्मघाती था। बहुमत की बात भले हो किन्तु यह सत्य हो अथवा उचित हो कोई आवश्यक नहीं है। बहुमत से अल्पमत या एक व्यक्ति की बात भी सत्य अथवा कल्याणकारी, उपयोगी सिद्ध होती है। ....निश्चित ही हमें अशफाक के मानसिक बल की भी पहचान होती है।

----

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-73

अध्याय-सात

अध्याय-सात

काकोरी काण्ड के बाद की स्थिति का अध्ययन

जांच : काकोरी काण्ड को सरकार ने एक खुली चुनौती के रूप में लिया। सरकार पूरी तरह सावधान हो गयी। सरकार के दो महत्वपूर्ण विभाग सक्रिय हो गये, ये विभाग थे पुलिस और गुप्तचर विभाग। ऐसी रोमांचकारी घटना पहले कभी सुनी नहीं गयी थी। अतः सबका चकित होना स्वाभाविक। इसमें किसी मुसाफिर को लूटने का प्रयास नहीं किया गया था। लखनऊ के मुख्य चीफ कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश ने अपने फैसले में इस डकैती को भारत की अनोखी डकैती बतलाया।[1]

यह घटना सरकार के लिए एक चुनौती थी। इस ट्रेन डकैती का पता लगाने के लिए सरकार द्वारा हार्टन की अध्यक्षता में एक विशेष पुलिस इकाई गठित की गयी। सरकार के सौभाग्य से हार्टन को सफलता मिलने लगी थी।[2] घटना स्थल पर मिले साक्ष्यों से रेलवे पुलिस की रिपोर्ट का अध्ययन करने के बाद यह जांच दल इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यह कार्य क्रांतिकारियों का ही हो सकता है। सरकार इसे राजनैतिक डकैती मानती थी। मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है- ''अशफाक ने जो भविष्यवाणी की थी, वह सत्य ही सिद्ध हुई। हमने जो कहा था कि हम सरकारी खजाना लूटना चाहते हैं, किसी यात्री से लूटमार करना हमारा उद्देश्य नहीं है, उससे हमारा राजनीतिक रूप सामने आ गया था। यों तो पुलिस वाले बड़े आलसी और धीरे काम करने वाले होते हैं, पर इस सूचना से उनमें बिजली सी दौड़ गयी।'' स्पष्ट है कि क्रांतिकारी पुलिस वालों को मूर्ख और अयोग्य समझते थे और

---

1. पूर्वो, बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ -11

2.स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, एन0सी0मेहरोत्रा, पृष्ठ 121

इधर सरकार के लिए यह डकैती प्रतिष्ठता का प्रश्न बन गयी। जांच दल को ट्रेन डकैती के तीन नोट शाहजहांपुर में मिले। पुलिस को यह भी पता चला कि 8, 9, 10 अगस्त, 1925 को राम प्रसाद बिस्मिल शाहजहांपुर में नहीं थे। अब पुलिस ने जांच में तीव्रता दिखाई। मालूम हुआ कि शाहजहांपुर के गवर्नमेण्ट हाईस्कूल के एक विद्यार्थी इन्द्र भूषण मिश्र के पास बिस्मिल के क्रांतिकारी दल संबंधी पत्र आते थे, जो वह बिस्मिल को देता था। इन्हीं पत्रों के आधार पर हार्टन को मेरठ में 13 सितम्बर, 1925 को होने वाली बैठक की जानकारी मिली। इस बैठक में एक श्राद्ध का जिक्र था।

मेरठ की बैठक - काकोरी ट्रेन डकैती के उपरान्त संगठन को अधिक सक्रिय बनाने के लिए राम प्रसाद बिस्मिल ने मेरठ अनाथालय में 13 सितम्बर, 1925 को एक बैठक बुलाई थी, जिसमें दल की केन्द्रीय समिति तथा कुछ जिला संगठन के विशिष्ट कार्यकर्ताओं को आमंत्रित किया गया था। बिस्मिल ने एक पत्र अंग्रेजी में लिखा था - उसका हिन्दी अनुवाद निम्नवत् है -

'' मेरे प्यारे,

हम अच्छी तरह से हैं। सम्भवतः आपको मालूम ही होगा कि हमारे पितामह का श्राद्ध संस्कार इस महीने की तेरहवीं तारीख (रविवार) को होगा। उसमें आपकी उपस्थिति अनिवार्य है। अतः मेरा निवेदन है कि नियत समय पर पहुंचे और कृतार्थ करें।

आपका

रुद्र

पुनश्चः -कृपया इस महीने की बारहवीं तारीख को दिल्ली के लिए प्रस्थान करें। वहां से आपको आसानी से गाड़ी मिल जायेगी।

आप मुझे अनाथालय में मिल सकेंगे।''[1]

क्रांतिकारी उस समय छद्म नाम रखकर काम करते थे। राम प्रसाद बिस्मिल के कई नाम थे, इसी में से एक नाम **'रुद्र राय'** भी था। अन्य क्रांतिकारियों के छद्म नाम की चर्चा योगेश चन्द्र चटर्जी ने की है, जो निम्न है -

<u>वास्तविक नाम</u>	<u>छद्म नाम</u>
1. राम प्रसाद बिस्मिल	आनंद प्रकाश, रुदराय, मास्टर महाशय, महंत
2. राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी	निताई, निताई चन्द्र, निताई मामा, जुगुल किशोर, दीक्षित, मथुरा प्रसाद, जवाहर लाल बाजपेई, के0पी0 श्रीवास्तव।
3. राम कृष्ण खत्री	नरेन्द्र, गंगाराम, गोविन्द प्रकाश
4. योगेश चन्द्र चटजी	राय, प्रफुल्ल चन्द्र राय, राय महाशय
5. मुकुन्दी लाल	महाराज
6. बनवारी लाल	तारा सिंह, रामान्दा सिंह
7. अशफाक उल्ला	कुंवर जी, मन्ताना, वारी, कृष्ण
8. बनारसी	बाबा
9. मन्मथनाथ गुप्त	नवाब, नवाब साहब
10. चन्द्रशेखर आजाद	क्यूइक सिल्वर
11. एस0एन0 बख्शी	बद्री, कन्हई लाल, बागची
12. सेठ दामोदर स्वरुप	लाला जी
13. जी0सी0 कर	चौधरी

---

1. पूर्वो, सुधीर विद्यार्थी (उद्धत), पृष्ठ -37

वास्तविक नाम	छद्म नाम
14. इन्द्रभूषण	- गोवर्ड-[1]

एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार मीटिंग का उद्देश्य पिछले कार्यों की समीक्षा करना तथा भविष्य के कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना था। रिपोर्ट के अनुसार मेरठ की बैठक में राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, सुरेश चन्द्र भट्टाचार्य सहित अनेक सदस्य अनाथालय में विष्णु शरण दुबलिस के रहने के स्थान पर इकट्ठा हुए थे। इस कार्यवाही को पुलिस सब-इंस्पेक्टर ब्रह्मा सिंह और पेरू सिंह ने देखा था।[2]

गिरफ्तारियां -

बिस्मिल और अशफाक अपने-अपने घर शाहजहांपुर पहुंच गये थे। अन्य क्रांतिकारी भी अपने-अपने जिला केन्द्रों की ओर चले गये थे। पुलिस उनकी गतिविधियों पर नजर रख रही थी। डकैती में लूटे गये नोटों के नम्बरों के आधार पर पुलिस को इस बात का पूरा संदेह हो गया था कि शाहजहांपुर का कोई न कोई व्यक्ति काकोरी की डकैती में अवश्य सम्बद्ध है। राम प्रसाद बिस्मिल को बन्दी बनाये जाने की आशंका को देखकर उनके कुछ मित्रों ने उन्हें पूरी तरह सावधान रहने का परामर्श दिया था, किन्तु बिस्मिल को इस बात का पूरा विश्वास था कि पुलिस को उनके विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं मिलेगा। सरकार ने डकैती में शामिल किसी भी अभियुक्त को पकड़वाने में मदद करने वाले को 5000 रू0 इनाम देने की घोषणा की।

---

1. पूर्वो, योगेश चन्द्र चटर्जी, पृष्ठ -379-80
2. पूर्वो, योगेश चन्द्र चटर्जी, पृष्ठ -351-352

इस घोषणा के इस्तहार प्रत्येक रेलवे स्टेशन और पुलिस थाने पर चस्पा कर दिये गये थें।[1] पुलिस ने एकाएक संदिग्ध व्यक्तियों के घरों पर छापे मारे, जिससे पुलिस को महत्वपूर्ण दस्तावेज हाथ लगे, जिसके द्वारा उन व्यक्तियों का क्रांतिकारी गतिविधियों से सम्पर्क होने का पता लगता था। जब गोविन्द चरण को लखनऊ में गिरफ्तार कर लिया गया, तो उनके कमरे से पार्टी के संविधान का पीला कागज प्राप्त हुआ।[2] 26 सितम्बर, 1925 की प्रातः चार बजे समूचे प्रान्त की पुलिस ने एक साथ छापा मारा, जिसमें अनेक व्यक्तियों को एक साथ गिरफ्तार किया गया किन्तु अशफाक उल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी और शचीन्द्र नाथ बख्शी उसी दिन गिरफ्तार नहीं किये जा सके।[3] राम प्रसाद बिस्मिल उसी दिन अवश्य गिरफ्तार हो गये। राम प्रसाद बिस्मिल ने इसका जिक्र किया है - ''रात्रि के समय ग्यारह बजे के लगभग एक मित्र के यहां से अपने घर पर गया। रास्ते में खुफिया पुलिस के सिपाहियों से भेंट हुई। कुछ विशेष रूप से उस समय भी वे मेरी देखभाल कर रहे थे। मैंने कोई चिन्ता न की और घर पर जाकर सो गया। प्रातः काल चार बजने पर जगा, शौचादि से निवृत होने पर बाहर द्वार पर बन्दूक के कुन्दों के शब्द सुनाई दिये। मैं समझ गया कि पुलिस आ गयी है। मैं तुरन्त ही द्वार खोलकर बाहर आया। एक पुलिस अफसर ने बढ़कर हाथ पकड़ लिया। मैं गिरफ्तार हो गया। मैं केवल एक अंगोछा पहने हुए था।''[4] पुलिस ने घर की तलाशी ली परन्तु कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली लेकिन बिस्मिल की तलाशी लेने पर जेब से कुछ पत्र मिल गये, जो उन्होंने लिखे थे।

---

1. दे लिव्ड डेन्जरसली, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -144
2. कार्यवाही काकोरी षड़यंत्र केस अपील - पृष्ठ -37
3. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -77
4. पूर्वो, राम प्रसाद बिस्मिल, पृष्ठ -92-93

वह उन्हें डालने के लिए डाकखाने भी गये थे, परन्तु डाक निकल जाने के कारण वह लेटर बाक्स में न डाल सके। इसलिए वापस ले आये थे। उनकी यही असावधानी उनके लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुई। इसमें एक पत्र दल की गतिविधियों के विषय में था, जिसे पुलिस ने अपने अधिकार में ले लिया।

अशफाक उल्ला खाँ शाहजहाँपुर से फरार हो गये थे। उनके मन में रूस जाने का विचार आया था। इसके लिए वे पहले काबुल जाना चाहते थे। छापामारी के दौरान फसाहत हुसैन सब-इंस्पेक्टर ने बताया कि वे अशफाक उल्ला खां के घर पांच बजे 26 सितम्बर, 1925 को गये। वे साथ में एक सर्च वारन्ट लेकर गये थे। अशफाक उल्ला खां अनुपस्थित थे और उनके भाई ने इंस्पेक्टर से कहा कि उन्होंने रिश्तेदार अब्दुल कादिर खान डिप्टी कलेक्टर के यहां रात बिताई। सब-इंस्पेक्टर वहां भी गया, जिससे अशफाक उल्ला को गिरफ्तार किया जा सके, परन्तु वे वहां भी आरोपी को पाने में असफल रहे। अशफाक उल्ला के घर 12 बोर की बन्दूक, ढेर सारी खाली-खाली गोलियां, एक सही गोली और चार झोले छोटी गोलियां प्राप्त हुईं। बन्दूक अब्दुल कादिर खान की थी और एक लाइसेंस मिला, जिसमें अशफाक उल्ला के भाई का नाम था। बन्दूक और गोली का मिलना यह प्रदर्शित करता है कि अशफाक उल्ला की पहुंच गोली एवं बन्दूक तक है।[1]

उसी दिन (26 सितम्बर, 1925) प्रेम किशन खन्ना, इन्द्र भूषण मित्र, हरगोविन्द और बनारसी लाल को पकड़ लिया गया। ठाकुर रोशन सिंह भी पुलिस की पकड़ में आ गये। कानपुर में कांग्रेस कार्यालय सहित क्रांतिकारी वीरभद्र तिवारी और **'प्रताप'** समाचार पत्र के सहायक सम्पादक सुरेश चन्द्र भट्टाचार्य के यहां छापे मारे गये।

---

1. सी0आई0डी0 वायल्यूम-2, काकोरी षणयन्त्र केस, उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, पृष्ठ-41

राजेन्द्र लाहिड़ी के घर भी छापा मारा गया किन्तु वे दल की ओर से बम बनाना सिखाने के लिए कलकत्ता जा चुके थे।[1]

राजकुमार सिन्हा को गिरफ्तार कर लिया गया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के जिस कमरे में रहते थे, उसकी तलाशी ली गयी, जहां से दो राइफलें पकड़ी गयीं। रामकृष्ण खत्री पूना में पकड़े गये। भूपेन्द्र नाथ सन्याल इलाहाबाद में पुलिस द्वारा पकड़े गये। इलाहाबाद में हीबट रोड पर जब एक बंगाली छात्र बम लेकर जा रहा था, तो अचानक बम फट गया और छात्र घायल हो गया। उसने पकड़े जाने पर भूपेन्द्र नाथ सन्याल का नाम बताया। इस प्रकार भूपेन्द्र नाथ को भी काकोरी केस में शामिल कर लिया गया। इसी प्रकार शचीन्द्र नाथ सन्याल को लखनऊ में, विष्णु शरण दुबलिस को मेरठ में, शिव चरन लाल को मथुरा में, बनवारी लाल को रायबरेली में तथा मुकुन्दी लाल को बनारस में पकड़ा गया।[2]

कुन्दल लाल और चन्द्रशेखर आजाद को फरार घोषित किया गया। आजाद की गिरफ्तारी पर दो हजार रू0 का ईनाम था परन्तु आजाद को गिरफ्तार करना कोई सरल कार्य न था। आजाद कहा करते थे कि उन्हें कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता ओर वे आजाद के रूप में जीवित रहेंगे।[3] जब कभी आजाद का कोई साथी पकड़ा जाता था तो वे अपने रहने का स्थान बदल देते थे और किसी से पत्र व्यवहार नहीं करते थे।[4] पुलिस बेचैन हो गयी अशफाक को गिरफ्तार करने के लिए और अशफाक उल्ला फरार हो गये। पुलिस ने अशफाक को गिरफ्तार करने की चाल भी चली।

1.स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, एन0सी0मेहरोत्रा, पृष्ठ-123

2.स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान, एन0सी0मेहरोत्रा, पृष्ठ-123

3.मैमायर्स, शिव वर्मा, पृष्ठ -54

4.अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, वैशमपायन, पृष्ठ -6 एवं 225

इन्द्रभूषण मित्र जो अशफाक का मित्र ही था, पुलिस का मुखबिर बन गया था। लेकिन इन्द्रभूषण द्वारा पुलिस की चाल को अशफाक के भाई रियासत उल्ला खाँ ने नाकाम कर दिया। इस घटना से और असफलता के कारण हार्टन रियासत उल्ला पर नाराज भी हो गये और मुकदमा चलाने की धमकी भी दी, परन्तु खान बहादुर तसद्दुक हुसैन डिप्टी सुपरिण्टेण्डेंट पुलिस ने अपना दोस्त बताकर माफी दिला दी लेकिन पुलिस रियासत पर दबाव डालती रही कि अशफाक को सरकारी गवाह बना दिया जाय। पुलिस तुली हुई थी कि अशफाक अपना मार्ग छोड़कर सरकारी गवाह बन जाये। पुलिस ने इस हेतु अशफाक के घर के लोगों को तंग भी किया। गुप्तचर विभाग के लोग कई प्रकार से भेष बदलकर, जिनमें प्रायः महिलाएं होती थी, घर जाते थे, लेकिन अशफाक तो फरार थे। बाद में पुलिस को विश्वास हो गया कि अशफाक उल्ला वास्तव में फरार है। पुलिस किसी भी कीमत पर अशफाक को गिरफ्तार करना चाहती थी। उन्हें घर में न पाकर पुलिस ने उनके भाई की बन्दूक जब्त कर ली थी।[1]

अशफाक का फरार होना-

अशफाक उल्ला खाँ को अब घर में रखना उचित नहीं था। वे घर से बाहर आधा मील दूर एक गन्ने के खेत में छिपे रहते थे। घरवालों से सम्पर्क बना हुआ था, उनका खाना वहीं पहुंचा दिया जाता था। यही नहीं अशफाक को पुलिस की गतिविधियों की जानकारी भी मिलती थी। अशफाक चार दिनों तक गन्ने के खेत में छिपे रहे।

पुलिस के गुप्तचर विभाग का जब आना-जाना कम हुआ तो घरवालों ने उन्हें कुछ रूपये देकर नेपाल भेज दिया। वहां तक पहुंचाने चार सशस्त्र व्यक्ति भी साथ गये।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -84

वहां भी अशफाक ने अनुमान लगाया कि पुलिस को संदेह हो गया है। इसके पहले कि पुलिस उन तक पहुंचती, वे वहां से भाग गये। वे नेपाल से चलकर दिल्ली आये।वहां लकड़ी का ठेकेदार परिचित था, उसने अशफाक को पहचान लिया। फिर अशफाक घर समाचार भेजने को कहकर लखनऊ चले आये। कुछ दिनों तक लखनऊ रहने के बाद वे कानपुर चले आये। गणेश शंकर विद्यार्थी अशफाक के प्रशंसक थे। अशफाक गणेश शंकर विद्यार्थी के पास जा पहुंचे। उस समय वे **'प्रताप'** नामक समाचार पत्र का सम्पादन कर रहे थे। विद्यार्थी जी ने दो दिन तक कार्यालय में छिपाकर रखा और फिर कुछ रूपये देकर बनारस चले जाने का परामर्श दिया।[1]

अशफाक उल्ला बनारस जा पहुंचे। बनारस में उन्हें कोई क्रांतिकारी नहीं मिला। पुलिस के भय से सभी भूमिगत हो गये थे या तो बन्दी बना लिए गये थे। अशफाक वहां से डाल्टनगंज (बिहार) एक अधिशासी अभियंता के पास पहुंचे। अशफाक ने यहां स्वयं को मथुरा का कायस्थ बताया और हिन्दू बनकर उसके यहां नौकरी करने लगे। अधिशासी अभियंता साहित्य प्रेमी था। उसे जब पता चला कि अशफाक शायर हैं, तो खूब प्रभावित हुआ और अशफाक का वेतन बढ़ा दिया। यहां रहकर अशफाक ने बंगला भाषा और साहित्य का अध्ययन किया। शचीन्द्र नाथ बख्शी भी हजारी बाग और भागलपुर में छिपकर रह रहे थे, लेकिन अशफाक के डाल्टनगंज में होने की सूचना से बेखबर थे। शचीन्द्र नाथ ने लिखा है -

''डाल्टनगंज में रहने के दौरान ही अशफाक उल्ला खां ने बंगला भाषा सीख ली थी और बंगला थोड़ी-बहुत बोलने भी लगे थे और समझने भी लगे थे। उन्हें बंगला गानों का भी अभ्यास हो गया था।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-86

बंगला साहित्य के सम्पर्क में आने के कारण उन्हें हिन्दू संस्कृति का अच्छा परिचय मिला। वे पठान होते हुए भी हिन्दू संस्कृति की तह तक पहुंच गये थे। डाल्टनगंज में आठ महीने अध्ययन, शिकार और शायरी में अशफाक ने बिताए। उन दिनों मैं पलामू से सौ मील के अन्दर भागलपुर और हजारीबाग में रहा, पर मेरा अशफाक से कोई सम्पर्क स्थापित न हो सका, क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे की स्थिति से एकदम अनभिज्ञ थे। न तो मुझे मालूम हुआ था कि अशफाक मेरे इतने करीब हैं और ना ही अशफाक यह जानते थे कि मैं यहीं भागलपुर में हूँ, ये बातें हमें बाद में मालुम हुईं, जब हम दोनों गिरफ्तार होकर लखनऊ सेन्ट्रल जेल में जाकर मिले।[1]

आठ-दस माह तक डाल्टनगंज में रहने के बाद अशफाक ने वह स्थान छोड़ दिया। वे एक बार शाहजहांपुर भी सिख के भेष में आये थे। वे अपने मित्र मुहम्मद फकीर उल्ला से मिलना चाहते थे लेकिन असमय ही फकीर उल्ला की मौत हो चुकी थी। अशफाक को बहुत दुः ख हुआ। अशफाक वापस डाल्टनगंज आ गये। उन्होंने प्रतापगढ़ में अपनी बहन को पत्र भी लिखा और भेजा था लेकिन पत्र शायद गुप्तचर विभाग के हाथ लग गया और घर तक नहीं पहुंच पाया।

अशफाक के चले जाने के बाद पुलिस ने उनके परिवारवालों को खूब परेशान किया। खानदान के एक महाशय अशफाक को गिरफ्तार कराना चाहते थे। वे पुलिस विभाग में थे और पुलिस तो चाहती ही थी, घर की कुर्की तक हुई। अशफाक डाल्टनगंज से पुनः गणेश शंकर विद्यार्थी के यहां कानपुर आये। दो दिन बाद विद्यार्थी ने उन्हें दो सौ रुपये देकर उनके भाई शहंशाह खाँ के पास भोपाल भेज दिया।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -87

अशफाक दो महीने अपने भाई शहनशाह खां के पास रहे, लेकिन उनका मन नहीं लगा। शहनशाह खाँ ने समझाया कि ऐसी परिस्थितियों में इधर-उधर भटकना उचित नहीं है, परन्तु अशफाक नहीं माने। वे एक स्थान पर रुकना नहीं चाहते थे, वे मुल्क की खिदमत करना चाहते थे। भोपाल के बाद अशफाक दिल्ली जा पहुंचे। वहां वे बचपन के साथी और साथ-साथ पढ़े दोस्त सैयद हबीब अहमद के मकान पर रहने लगे। सैयद हबीब भी शाहजहांपुर का ही रहने वाला था। सैयद हबीब का एक और घर भी था, जहाँ वह रहता था।[1]

अशफाक की फरारी का जीवन समाप्त हो गया। आखिर वे पकड़े गये। अशफाक उल्ला को दिल्ली सी0आई0डी0 के खान बहादुर हाकिम इकरामुल हक डिप्टी सुपरिन्टेन्डेण्ट ने 9: 30 बजे 8 सितम्बर, 1926 को अरेस्ट किया[2] और इधर रियासत उल्ला खाँ को दिल्ली के नूर मुहम्मद बैरिस्टर का एक तार मिला। यह तार उनके बड़े भाई शफी उल्ला के नाम था। उसमें लिखा था - 'आपके भाई अशफाक उल्ला बन्दी बना लिए गये हैं, शीघ्र आओ।' अशफाक को गिरफ्तार कराने में उनके ही मित्र सैयद हबीब अहमद का हाथ था।[3] डिप्टी इंस्पेक्टर ने उसी दिन सूचना प्राप्त की कि अशफाक एक घर में रह रहा है। एक इंस्पेक्टर, चार कांस्टेबल वहां के लिए रवाना कर दिये गये। घर में प्रवेश करने से पहले दो गवाह पाये गये। उन्होंने पाया कि अशफाक उल्ला एक चारपाई पर बैठे हुए थे। डिप्टी सुपरिन्टेण्डेन्ट ने कमरे से प्राप्त सामानों की सूची तैयार की। एक बाक्स भी था, जो कागजों से भरा था। बक्से को सील कर दिया गया। अगले दिन प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट सैयद गुलाम मुस्तफा शाह के समक्ष पेश किया गया।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -95

2 सी0आई0डी0 वायल्यूम-2, काकोरी षणयन्त्र केस,उ0प्र0रा0 अभि0, पृष्ठ-41

3. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ - 95

प्राप्त सामानों में एक चिट्ठी भी थी और एक फोटो, जो अशफाक उल्ला खां का था, प्राप्त हुआ था।[1]

गिरफ्तारी का तार मिलते अशफाक के भाई रियासत उल्ला खाँ दिल्ली के लिए रवाना हो गये। वे सैयद हबीब से मिले और फिर बैरिस्टर नूर मुहम्मद के पास गये। जेलर के पास सूचना भिजवाई गई कि अशफाक के भाई आये हैं और मिलना चाहते हैं। निर्धारित समय पर रियासत उल्ला खां अशफाक से मिले। अशफाक बड़े प्रसन्न लग रहे थे। विदा होते समय अशफाक ने अपने भाई से कहा कि - 'वालिदा साहिब को सलाम अर्ज कीजिएगा और यह अर्ज कीजिएगा कि आप कतई परेशान न हों, जो हुक्म खुदा देगा, वह होकर रहेगा।' रियासत उल्ला वापस शाहजहाँपुर आ गये। सुबह सैयद फरजन्द अली, जो गुप्तचार विभाग का व्यक्ति था, उनके पास आया और कहा कि - आपको मिस्टर ऐनुद्दीन स्पेशल मजिस्ट्रेट और खान बहादुर तसद्दुक हुसैन डिप्टी सुपरिन्टेण्डेन्ट ने लखनऊ बुलाया है। रियासत उल्ला खां लखनऊ गये। अशफाक को जुर्म कबूल करने का जोर देने की बात करने लगे। रियासत उल्ला उन दोनों अधिकारियों के साथ दिल्ली आये।[2] लेकिन अशफाक ने एक बात नहीं मानी। वे किसी और का नाम लेकर फंसाना नहीं चाहते थे। वे कहते रहे कि यदि मुझे फांसी देने में सी0आई0डी0 को खुशी है, तो अच्छा ही है, मैंने तो आजादिये हिन्द का बीड़ा उठाया था।[3] पुलिस अशफाक को लेकर लखनऊ आयी। पुलिस किसी भी प्रकार अशफाक को अपने पक्ष में कर लेना चाहती थी।

---

1. सी0आई0डी0, बायल्यू-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-41
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -97-98
3. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -99

ऐनुद्दीन ने अशफाक से कहा - 'तुम अकेले मुसलमान हो, जो इन हिन्दुओं के साथ फांसी पर लटकाये जाओगे। तुम उनका साथ छोड़ दो। मैं तुम्हे बचा लूंगा।'[1] अशफाक अपनी जिम्मेदारी समझते थे। उन्हें अपने मुसलमान होने और देश की सेवा करने का गर्व था। वे अपनी कौम पर किसी भी प्रकार का धब्बा नहीं लगाना चाहते थे। अतः अशफाक को लखनऊ में कैद कर रखा गया।

मिस्टर हार्टन दिल्ली से लखनऊ आये। अशफाक को डर था कि सी0आई0डी0 उनके फोटोग्राफ के द्वारा गवाहों को मेरी स्थिति के विषय में बताकर न्यायालय के समक्ष अशफाक उल्ला बताया जा सकता है। पुलिस ने मिस्टर हार्टन को अवगत कराया कि अशफाक के कक्ष से मिले सामान और गवाहों से स्पष्ट हो चुका है कि यह व्यक्ति अशफाक उल्ला खान ही है[2] और वह फोटोग्राफ 30 अक्टूबर 1926 तक दिल्ली में सील करके रखा है। ......जब अशफाक को पहली बार मजिस्ट्रेट के सामने लाया गया, तो कुछ समय बाद उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि वे अशफाक उल्ला खान ही हैं।[3]

जांच के दौरान प्राप्त सामानों में एक पैम्फलेट प्राप्त हुआ, जो **''मैनीफेस्टो आफ कम्युनिष्ट पार्टी ऑफ इण्डिया''** था, जिसे बंगाल सरकार द्वारा तथा सेन्ट्रल प्राविंस द्वारा प्रतिबन्धित किया गया था। 6 पृष्ठों के मुद्रित पैम्फलेट, जिस पर 'हिन्दू-मुस्लिम समस्या' के विषय में चर्चा की गयी थी, उस पर 15 मार्च, 1926 की तिथि अंकित थी। उसके प्रथम पृष्ठ पर लिखा था कि वह जल्दी ही अशफाक को दिया गया है।

---

1. पूर्वो-बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ-167
2. सी0आई0डी0, बायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-41
3. सी0आई0डी0, बायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-41

उस मेनीफेस्टो में राष्ट्रीय आन्दोलन तथा आर्थिक कार्यक्रम के सम्बन्ध में लिखा था और यह भी कि यह प्रचार सरकार धार्मिक आधार पर करा रही है। यह असुरक्षित और गैर व्यवहारिक है। इसके पूर्व भी लेखक सरकारों द्वारा धार्मिक पूर्वाग्रह के आधार पर असहयोग आन्दोलन एवं खिलाफत आन्दोलन में किए गये क्रूर व्यवहारों पर टिप्पणी करता था, जिसका सार यह है - 'हमारे हिन्दू भाइयों ने खिलाफत आन्दोलन में शामिल होकर खिलाफत में शामिल मुसलमानों के धैर्य एवं दृढ़ निश्चय को देखा और महसूस किया। उन्हें विश्वास हुआ कि एक निश्चित सीमा तक हिन्दुओं के कट्टरपंथ की तरह ही वे भी अपनी भावनाओं को जागृत करने में समर्थ हैं। उन्हें समाज के प्रतिक्रियावादी तत्वों जैसे हिन्दू शुद्धि संगठन, महासभा, जो मुसलमानों को तब लीग तानिज्म जैसे कार्यों को करने की तरफ उन्मुख किये। वर्तमान समस्या तो समाप्त हो गयी लेकिन अन्ततः एक बुरी प्रथा का प्रारम्भ हो गया।

इन समस्याओं के मूल में केवल यही प्रतीत होता है कि आन्दोलन अचानक ठहरने की स्थिति में धर्म ने ही मुख्य भूमिका अदा करनी शुरु कर दी है। प्राप्त दस्तावेजों में भारतीय आन्दोलन एवं समस्याओं पर विस्तृत जानकारी दी गयी है। यह भी कहा गया है कि - हमें अपने देशवासियों को हर प्रकार से आर्थिक कार्यक्रमों को लक्ष्य करते हुए नये आन्दोलन के लिए प्रभावित करना होगा। तरुण भारत के लिए न तो वेदों के स्वर्ण युग में जाने की आवश्यकता है और न ही खिलाफत की सल्तनत को बचाने की आवश्यकता है। भारत के लोगों को राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से स्वतंत्रता दिये जाने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय कार्यक्रमों को भारतीय जनता के लिए उनकी दैनिक आवश्यकताओं जैसे - भूमि,

रोटी, आवास, कपड़े के लिए प्रयास करना चाहिए।[1]

कुछ अन्य दस्तावेज भी अशफाक के बक्से से प्राप्त हुए। उनमें से एक पत्र भी था, जो अशफाक ने अपने माता-पिता को लिखा था। अशफाक पत्र द्वारा सूचित करते हैं कि वे अभी भारत में ही हैं। अभी न तो उपयुक्त समय आया है और न ही अवसर ही प्राप्त हुआ है। योजना बनायी जा रही है। स्पष्ट है कि अशफाक भारत छोड़ना चाहते हैं।[2] एक अन्य पत्र जो मौलाना मजिद को है। अशफाक इस पत्र में अपनी फरारी का जिक्र करते हैं और भारत छोड़ने की मदद मांगते हैं। अशफाक ने दो रास्ते भी सुझाये हैं। एक रास्ता पासपोर्ट और दूसरा आर्थिक सहायता हेतु है। वे यह भी लिखते हैं कि यदि पर्याप्त धन वे पा जायें तो बचकर भाग भी सकते हैं। एक सुझाव वे यह भी देते हैं कि - हो सके तो जहाज में क्लर्क की नौकरी की व्यवस्था कर दें और मैं जहाज से बम्बई से जर्मनी चला जाऊं।[3] एक अन्य पत्र मौलाना अब्दुल कादिर को लिखा गया है, जो अवकाश प्राप्त डिप्टी कलेक्टर हैं। अशफाक उल्ला से वे संबंधित है। अब्दुल कादिर की बन्दूक अशफाक के पास मिली। इस पत्र में भी अपने जीवन को खतरे में बताते हैं और आर्थिक सहायता की गुहार करते हैं। वे इस पत्र में हैदराबाद प्रवेश करना चाहते हैं।

पत्रों की श्रृंखला में एक पत्र बहन को लिखा गया है। इस पत्र में अपने संबोधनों का जिक्र करते हैं और बेदार का नाम लेते हैं। भगवती सहाय बेदार शाहजहांपुर के षड़यंत्रकारियों में से एक थे।

---

1. सी0आई0डी0, बायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-41
2. सी0आई0डी0, बायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-44
3. सी0आई0डी0, बायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-45

अशफाक द्वारा कोर्ट में दिये गये बयानों से 'रिपब्लिक' का अर्थ कम्यूनिज़्म लगाया गया था। निश्चित ही अशफाक कम्युनिष्ट सिद्धांतों के पक्षधर थे और उनके पास एक **'कम्युनिष्ट मैनीफेस्टो'** पुस्तक भी प्राप्त हुई थी।

अशफाक दिल्ली में गिरफ्तार होने के 15 दिनों के बाद लखनऊ लाये गये। सुख दर्शन सिंह, मैनेजर, होटल रायल के सबूत से ज्ञात होता है कि अशफाक 25 अगस्त को मुरारी मोहन के नाम से आए जो कि होटल बुक में भी लिखा हुआ है। उनके बाक्स से एक पत्र भी प्राप्त हुआ, जो दर्शाता है कि अशफाक नाम बदलते रहते थे।[1]

अशफाक के तीन-चार मास बाद शचीन्द्र नाथ भी बन्दी बना लिये गये। काकोरी काण्ड के तहत कुल 43 लोग गिरफ्तार किये गये, जिनके नाम व कोड निम्नवत हैं :-

<u>केन्द्र</u>	<u>गिरफ्तार व्यक्तियों के नाम</u>
1.शाहजहांपुर-	राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशन सिंह, बनारसी लाल, हरगोविन्द, प्रेम किशन खन्ना, इन्द्र भूषण मित्र
2.बनारस -	दामोदर स्वरूप सेठ, मन्मथनाथ गुप्त, राम नाथ पाण्डेय, डी0डी0 भट्टाचार्य, इन्द्र विक्रम सिंह, मुकुन्दी लाल, राजेन्द्र लाहिड़ी, शचीन्द्रनाथ बख्शी
3.कानपुर -	वीरभद्र तिवारी, रामदुलारे त्रिवेदी, गोपी मोहन, राजकुमार सिन्हा, सुरेश चन्द्र भट्टाचार्य।
4.इलाहाबाद -	शीतला सहाय, भूपेन्द्र नाथ सन्याल, शचीन्द्र नाथ सन्याल

1. सी0आई0डी0, काकोरी षड़यंत्र केस-1, उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-46

	केन्द्र	गिरफ्तार व्यक्तियों के नाम
5.	आगरा-	चन्द्रधर जौहरी, चन्द्रभाल जौहरी, शिव चरन लाल शर्मा
6.	लखनऊ-	हरनाम सुन्दर लाल, शचीन्द्र विश्वास, गोविन्द चरमकर
7.	रायबरेली-	बनवारी लाल, कुंवर बहादुर
8.	मेरठ -	विष्णु दुब्लिश
9.	एटा -	बाबू राम वर्मा
10.	कलकत्ता-	शरच्चन्द्र गुप्त, योगेश चन्द्र चटर्जी
11.	बहरामपुर-	कालिदास बोस
12.	लाहौर-	मोहन लाल गौतम
13.	पूना -	राम कृष्ण खत्री
14.	जबलपुर-	प्रमवेश चन्द्र चटर्जी

15. अन्य व्यक्ति - रामदास शुक्ल, मदन लाल, भैरो सिंह, राम रत्न शुक्ल[1]।

गिरफ्तारी के बाद वास्तविक मामला शुरू होने के पहले ही पन्द्रह व्यक्तियों को छोड़ दिया गया। इन व्यक्तियों के विरुद्ध सरकार को कोई प्रमाण न मिला। पुलिस का एक उद्देश्य यह भी था कि मुकदमें में जनता की सहानुभूति बनी रहे। इसी कारण पुलिस ने प्रतिष्ठित लोगों को छोड़ दिया। रिहा कर दिये गये व्यक्तियों के नाम निम्नवत् हैं - शीतला सहाय, चन्द्रधर जौहरी, चन्द्रभाल जौहरी, मदन लाल, रामरत्न शुक्ल, मोहन लाल गौतम, हरनाम सुन्दर लाल, डी0डी0 भट्टाचार्य, बाबूराम वर्मा, गोपी मोहन, शरच्चन्द्र, भैरो सिंह, कालिदास बोस, इन्द्र विक्रम सिंह, रामदास शुक्ला।[2]

---

1. राम प्रसाद बिस्मिल, रचनावली, सम्पादक दिनेश शर्मा, पृष्ठ -4
2. राम प्रसाद बिस्मिल, रचनावली, सम्पादक दिनेश शर्मा, पृष्ठ -5

शेष 28 व्यक्तियों पर निम्नलिखित अभियोग लगाये गये।

1- धारा 121 - ब्रिटिश सम्राट के विरुद्ध युद्ध की घोषणा

2- धारा 120 - राजनीतिक षड़यंत्र करना

3- धारा 369 - हत्या तथा डकैती

4- धारा 302 - हत्या[1]

न्यायिक प्रक्रिया-

काकोरी काण्ड के सभी बन्दी लखनऊ में रखे गये। गुप्तचर विभाग ने ऐसा प्रबन्ध किया था कि ये बन्दी आपस में न मिल सकें। पहली बार बन्दी बनाये गये अभियुक्तों को सरकारी गवाह बनाने का खूब प्रयास हुआ। वैसे तो काकोरी काण्ड में दस व्यक्तियों ने भाग लिया था। लेकिन 28 अभियुक्तों पर चार्जशीट लगायी जानी थी। शाहजहाँपुर के बनारसी लाल और इन्द्र भूषण मित्र मुखबिर बन गये। डकैती में भाग लेने वाला बनवारी लाल इकबाली गवाह बन गया। कानपुर का गोपी मोहन भी गवाह बन गया। कुंवर बहादुर ने भी सरकारी गवाह बनना स्वीकार कर लिया। सेठ दामोदर स्वरूप गम्भीर रूप से बीमार हो गये, इसी कारण से वे अदालत से मुक्त हो गये।

काकोरी काण्ड में पहले बन्दी बनाये गये अभियुक्तों पर 4 जनवरी, 1926 को मुकदमा आरम्भ हुआ। अशफाक और शचीन्द्र नाथ बख्शी बाद में बन्दी बनाये गये। अतः उन पर मुकदमा भी अलग से चला। योगेश चटर्जी के कथनानुसार - 'उस समय ब्रिटिश सरकार क्रांतिकारियों से निपटने के लिए मुसलमान अधिकारियों पर विश्वास करती थी। क्योंकि वह सोचती थी कि क्रांतिकारी आन्दोलन मुख्यतः एक हिन्दू आन्दोलन था।'[2] ब्रिटिश सरकार की मानसिकता इससे भी जाहिर हो जाती है।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -105
2. पूर्वो, योगेश चन्द्र चटर्जी, पृष्ठ -317

कि क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए अधिकतर अधिकारी मुसलमान ही थे। सुनवाई के लिए ऐनुद्दीन की अदालत भी मानसिकता को प्रभावित करती है। ऐनुद्दीन अभियुक्तों के सामने मधुर व्यवहार करता था, लगता था कि यह व्यक्ति क्रांतिकारियों का शुभचिन्तक है, किन्तु वह विष भरा सोने का कलश था। योगेश चन्द्र चटर्जी ने लिखा है -''स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन किसी भी व्यक्ति के पीछे से छूरा भोंकने में निपुण थे। ....यदि कोई व्यक्ति उनकी शिनाख्त संबंधी रिपोर्ट पढ़ ले तो तत्काल समझ जायेगा कि वे क्रांतिकारियों के शत्रु थे।[1]

ऐनुद्दीन के विषय में राम प्रसाद बिस्मिल ने भी लिखा है - ''दिखाने के लिए कागजी कार्यवाही खूब साफ रखी गयी। जबान के बड़े मीठे थे। प्रत्येक अभियुक्त से बड़े तपाक से मिलते थे। बड़ी मीठी-मीठी बातें करते थे। सब समझते थे कि हमसे सहानुभूति रखते हैं। कोई न समझ सका कि अन्दर ही अन्दर घाव कर रहे हैं। इतना चालाक अफसर शायद ही कोई दूसरा हो। जब तक मुकदमा उनकी अदालत में रहा, किसी को भी कोई शिकायत का मौका ही नहीं दिया। यदि कभी कोई बात हो जाती, तो वह ऐसे ढंग से उसे टालने की कोशिश करते कि किसी को भी बुरा नहीं लगता। बहुधा ऐसा भी हुआ कि खुली अदालत में अभियुक्तों से क्षमा मांगने में भी उन्हें संकोच नहीं होता। किन्तु कागजी कार्यवाही में वे इतने होशियार थे कि जो कुछ लिखा, सदैव अभियुक्तों के विरुद्ध। जब मामला सेशन सुपुर्द किया और आज्ञा पत्र में युक्तियां दीं, तब आंखे खुली कि कितना गहरा घाव मार दिया था।[2] पुलिस की मदद ऐनुद्दीन ने खूब किया। क्रांतिकारी खुली गाड़ी में पुलिस स्टेशन लाये जाते थे।

---

1. पूर्वो, योगेश चन्द्र चटर्जी, पृष्ठ -318
2. पूर्वो, राम प्रसाद बिस्मिल, पृष्ठ -96

पुलिस सादी वर्दी में रहती थी। शिनाख्त के समय भिन्न लोगों के सामने क्रांतिकारी खड़े किये जाते। शिनाख्त सफल न होती, तब भी मुकदमा चलाया जाता। कोई भी व्यक्ति जमानत पर नहीं छोड़ा जाता।[1]

क्रांतिकारियों की सहायता के लिए एक डिफेन्स कमेटी बनाई गयी, जिसमें मोती लाल नेहरू, गणेश शंकर विद्यार्थी, शिव प्रसाद गुप्त, गोविन्द बल्लभ पंत, श्री प्रकाश तथा जवाहर लाल नेहरू किसी न किसी रूप में सम्बद्ध थे। हरकरन लाल मिश्र, मोहनलाल सक्सेना, चन्द्रभान गुप्त, कृपा शंकर हजेला, क्रांतिकारियों की ओर से वकील थे। डिफेन्स कमेटी की ओर से कलकत्ता के वैरिस्टर वी0के0 चौधरी को भी मुकदमें की पैरवी के लिए बुलाया गया था। मोती लाल नेहरू तथा लाला लाजपत राय ने सार्वजनिक रूप से क्रांतिकारियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की। श्रीप्रकाश, आचार्य नरेन्द्र देव सहित अनेक प्रमुख कांग्रेसी नेता क्रांतिकारियों से जेल में मिलने गये परन्तु सरकार ने आचार्य नरेन्द्र देव को क्रांतिकारियों से मिलने नहीं दिया।[2] गणेश शंकर विद्यार्थी का **'प्रताप'** समाचार पत्र क्रांतिकारियों की सबसे अधिक मदद करता था।

स्पेशल मजिस्ट्रेट ऐनुद्दीन ने मुकदमें को सेशन सुपुर्द करने के आदेश तैयार करने में अधिक समय लगाया। कारण था कि - प्रत्येक क्रांतिकारी की अत्यधिक खराब तस्वीर पेश करने में उन्होंने कोई कसर नहीं उठा रखी। उनके न्यायालय में 28 व्यक्तियों पर मुकदमा चलाया गया। इनमें तीन क्रांतिकारी क्रमशः शचीन्द्र नाथ बख्शी, चन्द्रशेखर आजाद और अशफाक उल्ला खाँ फरार रहे। दो क्रांतिकारियों से मुकदमा उठा लिया गया और दो क्रांतिकारी सरकारी गवाह बनाकर छोड़ दिये गये। शेष 21 व्यक्तियों को सेशन सुपुर्द किया गया।

---

1. पूर्वो, बनारसी दास चतुर्वेदी, पृष्ठ 31-37
2. दे लिव्ड डेन्जरसली, मन्मथ नाथ गुप्त, पृष्ठ-166

अशफाक का मुकदमा - अशफाक का बयान

अशफाक और शचीन्द्र नाथ बख्शी का मुकदमा बाद में चला। यह मुकदमा पहले ऐनुद्दीन की अदालत में पेश किया गया। अशफाक के बड़े भाई रियासत उल्ला खां ने चन्द्रभानु गुप्त के कहने पर श्री कृपाशंकर हजेला को अपना वकील बनाया। 24 मार्च, 1927 को यह मुकदमा सत्र न्यायालय भेजा गया।[1]

अपने बयान में मजिस्ट्रेट के समक्ष अशफाक उल्ला खान ने अपने विरुद्ध लगाये गये समस्त आरोपों को नकार दिया। उन्होंने कहा कि वे राम प्रसाद बिस्मिल, हरगोविन्द, प्रेम किशन, बनारसी लाल और इन्द्रभूषण को ऐसे ही जानते हैं, जैसे शाहजहांपुर के अन्य निवासियों को। उन्होंने सफेद और पीले पैकेट से संबंधित जानकारी से इंकार किया। यही नहीं अशफाक ने अपनी गिरफ्तारी के समय पाये गये समस्त कागजात और पत्रों को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने बनारसी लाल से किये गये पत्राचार को भी इंकार कर दिया। यह भी इंकार किया कि वे 25 और 26 अगस्त, 1926 को रायल होटल दिल्ली में **'मुरारी मोहन'** के नाम से टिके थे।[2]

अशफाक ने स्वीकार किया कि वे 26 सितम्बर, 1925 को पुलिस के डर से लुप्त हो गये थे क्योंकि उनके नाम के वारन्ट का पता चला था। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि आबिद रजा खान के नाम से दस्तखत किया लेकिन यह सब मजाक में ही किया गया था। अशफाक ने बयान दिया कि उनकी पहचान गवाह के द्वारा उनके फोटोग्राफ जो कि पुलिस के अधिकार में थे, की वजह से हुई जबकि

1.अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -109
2.सी0आई0डी0, वायल्यूम -2, काकोरी षड़यंत्र केस -उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-95

पहचान के वक्त खेरात नबी पब्लिक प्रासीक्यूटर ने पहचान के विषय में कोई प्रश्न नहीं किया। यह आरोप झूठे सबूत की वजह से मजिस्ट्रेट खान बहादुर सैयद ऐनुद्दीन के समक्ष बेकार साबित हुआ, जिससे पहचान को छिपाये रखे जाने की स्थिति स्पष्ट होती है।[1]

इस न्यायालय में अशफाक ने पहचान के विषय में अपने आब्जेक्शन को विस्तार दिया और कहा कि दिल्ली में उनकी गिरफ्तारी के पश्चात् उनका चेहरा अनेकों अवसरों पर खुला रखा गया। एक फोटो उनके बक्से से प्राप्त हुई, जो मजिस्ट्रेट से अनुरोध के बाद भी सील नहीं किया गया, जिन पांच व्यक्तियों की परेड उनके समक्ष की गयी, उनमें भी भिन्नता है। बनारसी लाल के संबंधों को भी अशफाक नकारते हैं कि दो-तीन साल से बनारसी से उनके संबंध नहीं है। अशफाक ने 1924 में शाहजहांपुर में हुए दंगों के समय राम प्रसाद बिस्मिल से हुए संबंधों को स्वीकार किया। इसका कारण स्वयं बताते हैं कि यूरोपीयन वस्त्रों की होली जलाने के कारण बनारसी से संबंध बने। बक्से में रखी पाण्डुलिपियों की लेखनी (हस्तलिखित) भी वे स्वीकारते हैं। बक्से में **'मैनीफेस्टो ऑफ कम्युनिस्ट पार्टी'** होने में वे असहजता महसूस करते हैं और स्वीकारने से कतराते हैं कि किसी ने उनके बक्से में रख दिया होगा या किसी कारण से बक्से में रख दिया गया होगा।[2]

अशफाक उल्ला खां ने स्वीकार किया कि 1921 में वे स्कूल छोड़ दिये और असहयोग आन्दोलन में शामिल हो गये। बाद में उन्हें इससे अरुचि होने लगी और वे पुनः स्कूल में प्रवेश ले लिए, तब तक उन्हें राजनीति में कोई रुचि नहीं थी।

1.सी0आई0डी0, वायल्यूम -2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ -95
2.सी0आई0डी0, वायल्यूम -2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ -96

अशफाक की कविताओं का अनुवाद करके यह भी कहा गया कि अशफाक कवि हैं। अशफाक ने बेदार एम0एल0सी0 की जो लाइनें लिखी हैं, उसका कारण सिर्फ सोचना था कि वे आन्दोलन ज्वाइन नहीं किये हैं, जिससे उनका नाम पुलिस के पास न जाय। अशफाक ने कहा कि उनके परिवार ने सरकार को सहयोग ही दिया है। 1857 के आन्दोलन के समय उनके परिवार ने परिणाम भी भुगते हैं। उनका परिवार सरकार के खिलाफ षड़यंत्र के विषय में सोच नहीं सकता। उन्होंने अपेक्षानुसार इसकी गारन्टी देने को कहा।[1]

अशफाक ने डिफेंस में चार गवाह सम्मन किये परन्तु 27 गवाहों का परीक्षण किया गया। अधिकतर गवाहों ने कोर्ट में कहा कि डकैती के दिन वे किसी अन्य कार्य में व्यस्त थे। शेष गवाहों से सिद्ध हुआ कि राम प्रसाद और अशफाक के बीच साम्प्रदायिक दंगों के समय कोई संबंध नहीं था। उनका परिवार हमेशा आदरणीय रहा। अलीबी सबूतो के आधार पर यह नोट किया जाना चाहिए कि अशफाक ने न्यायालय या मजिस्ट्रेट के समक्ष यह बयान दिया कि वे किसी घटना, जैसे जहां डकैती हुई थी, नहीं गये थे, वे वहां थे भी नहीं। यह सच है कि बहुत सारे गवाहों को सम्मन किया, परन्तु वे गवाह आये नहीं।[2]

तीन विभिन्न तारीखों में पांच गवाहों का परीक्षण सिर्फ यह सिद्ध करने के लिए हुआ कि बमरौली की डकैती वाले दिन अशफाक शाहजहांपुर के एक गांव में, जहां उनकी भूमि भी थी, शिकार पर थे या नहीं थे। अशफाक के बड़े भाई ने कहा कि क्रिसमस के कुछ दिन पहले वे कपड़ा खरीदने शाहजहांपुर आये थे।

1.सी0आई0डी0, वायल्यूम -2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ -95

2.सी0आई0डी0, वायल्यूम -2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ -96

उन्होंने यह भी बताया कि अशफाक को भोपाल के सिहोर में 1 अगस्त (मोहर्रम) के बाद (8 या 10 दिन बाद) देखा था। अशफाक बस से भोपाल लौट रहे थे। एक अन्य गवाह भागवत सिंह ने बताया कि वे सिहोर से अस्ता उसी मोटर में गये थे, जिसमें अशफाक यात्रा कर रहे थे, उस दिन 8 अगस्त की तारीख थी।[1]

उपर्युक्त गवाहों के बयान से सरकार को विश्वास नहीं हुआ कि विशेषकर तिथि को लेकर। उनके कहने के अनुसार अशफाक को भोपाल स्टेट में देखा लेकिन गवाहों ने 7, 8 या 9 अगस्त को ही देखा, यह सत्य नहीं है।[2]

अशफाक और राम प्रसाद 1924 के शाहजहांपुर दंगे में अलग-अलग थे। इस हेतु अनेक गवाहों को न्यायालय में बुलाया गया। रजा अली खान जो पेशे से वकील थे ने कहा कि अशफाक ने अता हुसैन के लिए पैरवी की और राम प्रसाद ने हिन्दुओं के लिए पैरवी की थी। लेकिन कोई विश्लेषण उपलब्ध नहीं हो पाया कि किस केस की पैरवी की गयी। मोहम्मद शफी उल्ला खान ने कहा कि उन्होंने अशफाक से दंगे के वक्त कहा था - 'जो व्यक्ति राष्ट्रवादी है, वे ही झगड़ों में भाग ले रहे हैं।' करीमुल रजा, वकील ने असहयोग आन्दोलन के समय अपनी प्रैक्टिस स्थगित कर दी थी। वे अताहुसैन के वकील के रूप में आये थे। उन्होंने कहा कि अशफाक ने अताहुसैन की पैरवी की थी, क्योंकि वे साथ-साथ कमरे में रहते थे। यह स्वीकार करते हैं कि अशफाक ने कभी कोई निर्देश नहीं दिया। उन्होंने यह भी कहा कि राम प्रसाद ने हिन्दुओं की पैरवी दंगों के लिए की, इस बयान का केवल यह अर्थ है कि मैंने उन्हें हिन्दुओं के साथ देखा है।[3]

1.सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस- उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-100
2.सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षणयंत्र केस- उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-101
3.सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षणयत्र केस- उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-101

अताहुसैन खान जो दंगों के लिए दोषी सिद्ध हुए थे, कहा कि - वे अशफाक और कुछ मुसलमानों के साथ ताजिया जुलूस में थे। यह अफवाह उड़ाई गई कि करियाटोला मोहल्ले के हिन्दू जुलूस रोक देंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योंकि वहां मुसलमान बहुत अधिक है। उन्होंने हिन्दुओं का समूह देखा था, जिसमें राम प्रसाद बिस्मिल भी थे। उस रात करियाटोले मोहल्ले में एक मुसलमान की हत्या कर दी गयी थी। उन्होंने अशफाक से कहा कि कांग्रेस के लोग यह समस्या पैदा कर रहे हैं, परन्तु अशफाक ने यह कहा कि उन लोगों के साथ बहुत बुरा हुआ।[1]

गवाहों के बयान से सिद्ध होता है कि कोई कारण ही नहीं था कि कहा जाय अशफाक और राम प्रसाद में शत्रुता थी। बिना किसी व्यक्तिगत विवादों के दोनों व्यक्ति धार्मिक कार्यक्रमों का समर्थन करते हैं। बयानों से कोई ऐसा सबूत नहीं दिखाई दिया कि इनका हाथ दंगे में था। यह तो पूर्व में भी स्पष्ट हो चुका है कि क्रांतिकारियों ने धार्मिक प्रश्नों को पीछे छोड़कर अपने उद्देश्यों हेतु कार्य किया। जो दस्तावेज अशफाक के पास पाये गये, उससे भी प्रतीत होता है कि अशफाक धार्मिक पूर्वाग्रहों से ऊपर थे।[2]

मुख्य बहस अशफाक के पहचान पर थी। यह कहा गया कि कुछ गवाह अशफाक को अशफाक के रूप में और कुछ बख्शी के रूप में पहचानते हैं। अशफाक ने यह भी शिकायत की कि किसी व्यक्ति को उनके साथ सहायता हेतु अनुमति नहीं दी गयी, जो व्यक्ति उनके साथ न्यायालय में उनका पक्ष रखने हेतु लाये गये, वह उपयुक्त नहीं थे।[3]

---

1. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-102
2. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस- उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-103
3. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-103

क्राउन के वकील ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि अशफाक को बहुत गवाहों ने पहचाना, वे सबसे अलग दिखने वाले थे। उनका प्रदर्शन असामान्य था, देखने में लगते अच्छे थे और हर डकैती में मुख्य भूमिका अदा करने वाले व्यक्ति थे।

अशफाक को पहचान के सिलसिले में बहुत से गवाह दिल्ली से भी लाये गये थे कि वास्तव में उस दिन क्या हुआ? अशफाक की गिरफ्तारी 8 सितम्बर को हुई थी और मिले बाक्स को सीलकर दिया गया था। अगले दिन अशफाक को गिरफ्तार करने वाले डिप्टी सुपरिन्टेण्डेन्ट खान बहादुर हकीम इकरामुल हक और मजिस्ट्रेट सैयद मुस्तफासाह ने लिस्ट बनाई थी, जो समान अशफाक से प्राप्त हुआ था। उस समय अशफाक ने कहा भी था कि फोटो को नष्ट कर दीजिए लेकिन नष्ट नहीं किया गया। अपनी बहन को अशफाक द्वारा लिखे गये पत्र से प्रतीत होता था कि वे अपने फोटो बहन को भेजना चाहते थे।[1]

अशफाक जब 13 तारीख को पहली बार आए और फोटो के प्रति उत्सुकता जाहिर की तो सुपरिन्टेण्डेन्ट ने कहा कि वह पुनः बक्से में रख दी गयी है और उसकी चाभी उनके पास है। उन्होंने यह आश्वासन दिया कि बेवजह उसका कोई फायदा नहीं लेने पायेगा। बाक्स पुलिस मालखाने में बन्द है। इस साक्ष्य से स्पष्ट होता है कि फोटो लखनऊ नहीं भेजा गया है। 13 सितम्बर को मिस्टर हार्टन दिल्ली आये। वे अशफाक के पास से प्राप्त वस्तुओं को देखना चाहते थे। खान बहादुर हुसैन डिप्टी सुपरिटेंडेंट को डायरेक्ट क्रिमिनल इंटेलिजेंस के यहां सम्बद्ध कर दिया गया। उन्होंने मालखाने आकर अशफाक के बाक्स की चीजों का निरीक्षण किया और कुछ चीजें लेकर चले गये। लेकिन फोटोग्राफ नहीं ले गये।

---

1. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-104

इसी तिथि को फोटोग्राफ एक सील्ड कवर में सब-इंस्पेक्टर सिराजुल हक द्वारा रख दिया गया। 14 सितम्बर को डिप्टी सुपरिटेंडेंट खान बहादुर इकरामुल हक ने यह जांच की कि यह अच्छी प्रकार से रखा है कि नहीं ओर वह मालखाना लौटा दिया गया। उसी हालत में 30 सितम्बर को लखनऊ लाया गया। उसके साथ फोटो और मिले सामान से जुड़ी तमाम रिपोर्ट भी लायी गयी।[1]

महत्वपूर्ण साक्ष्यों से यह प्रतीत होता है कि अशफाक को लेकर मजिस्ट्रेट सैयद ऐनुद्दीन दिल्ली पहुंचे। जेल छोड़ने के पहले उन्होंने अशफाक से कहा कि अपनी पहचान छुपाए रखें, क्योंकि पहचान की विधिक कार्यवाही हो सकती हैं। अशफाक एक बन्द लारी में लखनऊ स्टेशन से दिल्ली तथा दिल्ली से लखनऊ एक द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में यात्रा की और मुंह पूरा ढका हुआ था। वे एक काले रंग का चश्मा भी पहने थे।[2]

सैयद ऐनुद्दीन ने लखनऊ में पब्लिक प्रासीक्यूटर सी0आई0डी0 के द्वारा एक पत्र पाया। इस पत्र में सूचना थी कि गवाह दूसरे मजिस्ट्रेट के यहां प्रतीक्षा कर रहे हैं। अशफाक को सेन्ट्रल जेल छोड़ने के बाद वे दूसरे मजिस्ट्रेट के यहां गये। वे वहां से दोपहर में लौटे। सारे गवाह दो मोटर गाड़ी में जेल लाए गए। मजिस्ट्रेट के समक्ष पहुंचने पर उन्हें जेल ले जाया गया। वहां कहा गया कि कोई पठान जो अशफाक की शक्ल का है, इन्तजार कर रहा है। फिर अशफाक से कहा गया कि कुछ बाहरी लोग जो जेल के नहीं है, उनके साथ मजिस्ट्रेट के सामने परेड करेंगे लेकिन मजिस्ट्रेट इस व्यवस्था में सफल नहीं रहे। प्रोसीडिंग प्रारम्भ होने के पहले ही अशफाक ने अपने फोटो के विषय में शिकायत की।

---

1. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षणयंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-105
2. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षणयंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-105

अशफाक द्वारा लगाये गये मुख्य आरोप इस प्रकार हैं - अशफाक के बायें पैर के नाखून काले थे। मैंने उसे छिपाने के लिए लाल रंग के टेप की अनुमति दी और ऐसा ही उनके साथ शामिल किये गये समस्त व्यक्तियों का किया गया। उनके व्यक्तिगत अनुरोध पर मैंने उनके कपड़े उतरवाकर कैदियों के कपड़े पहनने का कहा। उन सभी के पास छोटी दाढ़ी और मूंछे थी जैसे पठानों की होती हैं। जब प्रोसीडिंग समाप्त हो गयी तो अशफाक ने हमें बाएं माथे पर एक निशान दिखाया। अशफाक ने कभी इस सच को हमें नहीं बताया था। गवाहों ने सीधे चेहरे पर देखा और बिना हिचकिचाहट के एक ही बार में पहचान लिया।[1]

अन्य तर्कों के आधार पर कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण केस के ट्रायल के पश्चात् मजिस्ट्रेट द्वारा जांच के उपरान्त प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर समस्त कार्यवाही निष्पक्षता तथा बिना दबाव के आधार पर की गयी।[2]

<u>निर्णय एवं प्रतिक्रिया :-</u>

सेशन जज जे0आर0 डब्लू वैनट ने काकोरी काण्ड के लिए तथा बिचपुर डकैती के लिए फांसी की सजा तथा तीन अन्य मुकदमों के लिए काले पानी की सजा सुनाई। इस निर्णय को सुनने पर वह शान्त और प्रसन्न भाव से खड़े रहे। काकोरी काण्ड के अन्य अभियुक्तों को निम्न सजाएं हुईं -

- मृत्यु दण्ड - राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी
- आजन्म कालापानी - शचीन्द्र नाथ सन्याल, शचीन्द्र नाथ बख्शी
- चौदह वर्ष का कारावास - मन्मथनाथ गुप्त

---

1. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षणयंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-106
2. सी0आई0डी0, वायल्यूम-2, काकोरी षणयंत्र केस-उ0प्र0रा0अभि0, पृष्ठ-106

- दस वर्ष का कारावास- योगेश चन्द्र चटर्जी, मुकुन्दी लाल, गोविन्द चरमकर, राम कुमार सिन्हा, रामकृष्ण खत्री
- सात वर्ष का कारवास- विष्णु शरण दुब्लिस, सुरेश भट्टाचार्य
- चार वर्ष का कारवास- प्रणवेश चटर्जी
- पांच वर्ष का कारवास- भूपेन्द्र नाथ सन्याल, प्रेमकृष्ण खन्ना, राम दुलारे द्विवेदी[1]

काकोरी काण्ड के अभियुक्तों की सुनवाई रिंग थियेटर में होती थी। सरकारी पक्ष के वकील जगत नारायण शुक्ला थे। जिन पर कटाक्ष करते हुए अशफाक ने एक शेर कहा कि- 'चलो-चलो यारो रिंग थियेटर दिखाएं तुमको, जो चन्द टुकड़ों पर सीमोजर के, नया तमाशा दिखा रहे हैं।[2]

निर्णय के विरुद्ध पूरे देश में प्रतिक्रिया हुई। ठा0 मनजीत सिंह (एम0एल0सी0) ने इस मामले को कौंसिल के आगामी अधिवेशन में उठाने का प्रयत्न किया। वे फांसी की सजा को कम से कम काले पानी में बदलवाना चाहते थे। इस हेतु उन्होंने गर्वनर को प्रार्थना पत्र भी दिया और अन्य सदस्यों से सम्पर्क भी किया। लाभ सिर्फ यह हुआ कि सजा की तिथि 16 सितम्बर से अक्टूबर कर दी गयी। पं0 गोविन्द बल्लभ पंत ने भी इसकी आलोचना की। मदन मोहन मालवीय तथा असेम्बली के अन्य सदस्यों ने वायसराय से मुलाकात की और मृत्युदण्ड को बदलने की प्रार्थना की। लेकिन कोई परिणाम न निकला। अशफाक को फैजाबाद जेल भेज दिया गया। इस निर्णय के विरुद्ध चीफ कोर्ट में अपील की गयी, लेकिन यहां भी निराशा ही हाथ लगी।[3]

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-115
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-114
3. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ-116-117

काकोरी काण्ड के क्रांतिकारी शिक्षित और सभ्य परिवारों के युवक थे, लेकिन उनके साथ जेल में उचित व्यवहार नहीं किया जाता था। संयुक्त प्रांत की कौंसिल के कुछ सदस्यों ने इस मामले को उठाया किन्तु सरकार द्वारा कोई संतोषजनक उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। गोविन्द बल्लभ पंत ने तारांकित प्रश्न नं0 75 दिनांक 29 अक्टूबर, 1927 के माध्यम से जानना चाहा कि - काकोरी षड़यंत्र केस में दोष सिद्ध व्यक्तियों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति क्या है? उनमें से कौन लोग भूख हड़ताल पर गये और कितने दिन रहे हैं? वे कितने कारागारों में हैं।[1]

संयुक्त प्रान्त की ओर से इसकी जानकारी प्रस्तुत की गयी थी। तमाम विरोधों, असंतोषों के बावजूद अन्ततः अशफाक को 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी पर (फैजाबाद जेल) लटका दिया गया।[2] 18 दिसम्बर को अशफाक को पुराने कपड़े मिले, जिसे अशफाक ने धोया और सुखाया। 19 दिसम्बर की सुबह (प्रातः चार बजे) उठे गये, नहाया और नमाज अदा की। सज-धजकर तैयार हो गये। इसके बाद वे एक नज़्म गाने लगे :-

बुजदिलों को सदा मौत से डरते देखा,
गो कि सौ बार उन्हें रोज ही मरते देखा।
मौत से वीर को हमने नहीं डरते देखा,
तख्त ए मौत पे भी खेल ही करते देखा।
तंग आकर हम भी अपने जुल्म से बेदाद से,
चल दिये सूये अमन जिन्दाने फैजाबाद से।

---

1. शब्द (गोविन्द बल्लभ पंत के भाषणों का संकलन) 1924-1929, पृष्ठ 27
2. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त

19 दिसम्बर को खुशी के साथ कुरान-शरीफ का बस्ता कंधे से टांगे हाजियों की भांति **'लवेक'** कहते और कलाम पढ़ते फांसी के तख्ते के पास गये। तख्ते को उन्होंने बोसा दिया और फिर उपस्थित जनता से कहा - ''मेरे हाथ इन्सानी खून से कभी नहीं रंगे, मेरे ऊपर जो इल्जाम लगाया गया, वह गलत है, खुदा के यहां मेरा इंसाफ होगा।'' इसके बाद उनके गले में फंदा पड़ा और खुदा का नाम लेते हुए वह इस दुनिया से कूच कर गये। अशफाक के रिश्तेदार उनकी लाश को शाहजहांपुर ले जाना चाहते थे। इसके लिए काफी प्रयास हुआ, तब जाकर इजाजत मिली। शाहजहांपुर ले जाते समय जब उनकी लाश लखनऊ स्टेशन पर उतारी गई, तब कुछ लोगों को देखने का मौका मिला। चेहरे पर 10 घण्टे बाद भी बड़ी शांति थी और मधुरता थी। चेहरा ऐसा कि मानो अभी-अभी नींद आई है, यह नींद अनन्त थी।[1]

काकोरी काण्ड में मृत्युदण्ड प्राप्त अन्य क्रांतिकारियों में राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को 17 दिसम्बर को गोण्डा जेल और पं0 राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में, ठाकुर रोशन सिंह को इलाहाबाद जेल में 19 दिसम्बर, 1927 को फांसी दे दी गयी ....और इस प्रकार भारत मां के सपूत सदैव के लिए चिरनिद्रा में सो गये।

---

1. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -215

अध्याय-आठ

अध्याय-आठ

काकोरी काण्ड का प्रभाव

काकोरी षड़यंत्र, असहयोग आन्दोलन के बाद सब षड़यन्त्रों का जनक है क्योंकि इसी षड़यंत्र के लोगों ने बिहार, पंजाब, मध्य प्रान्त, बम्बई तक में अपनी शाखाएं स्थापित की थी।[1]

काकोरी काण्ड में सरकारी खजाना रेल डकैती द्वारा लूटा गया था। सरकार इस घटना से कुपित थी। घटना में शामिल क्रांतिकारी पकड़े गये और फांसी, काला पानी, कठोर दण्ड की सजाएं हुई थी। चन्द्रशेखर आजाद फरार ही थे। उत्तर भारत के क्रांतिकारियों के लिए काकोरी काण्ड एक बड़ा आघात था, पर ऐसा नहीं था कि, जो क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए मौत साबित हों। इस घटना का प्रभाव इतना हुआ कि क्रांति हेतु अन्य युवा भी तैयार हो गये। युवाओं में समाजवादी विचारधारा जो ऊर्जा का काम कर रही थी, पूरी तरह प्रभावित थी। काकोरी काण्ड के क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी के बाद दल छिन्न-भिन्न हो गया, इसे संभालने का कार्य चन्द्रशेखर ने उठाया। साधन उपयुक्त न होने से कुछ खास नहीं कर पाये। हां इतना अवश्य था कि 1926 में पंजाब में संगठन जोर-शोर से बनने लगा।[2]

उ0प्र0, पंजाब, बिहार में संगठन था, किन्तु इसमें कोई आपसी घनिष्ठ सहयोग नहीं था। 8 दिसम्बर, 1928 को समस्त भारत के प्रमुख क्रांतिकारियों की सभा हुई। इस सभा में जय देव, शिव वर्मा, विजय कुमार सिंह, सुखदेव, ब्रह्मदत्त, सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय, भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा, चन्द्रशेखर आजाद, फणीन्द्रनाथ घोष प्रमुख थे।

1.भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -217
2.भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -225

इन सदस्यों ने चन्द्रशेखर आजाद को अध्यक्ष चुना और उनके नेतृत्व में केन्द्रीय समिति (एच0आर0ए0) बनाई।[1]

क्रांतिकारी युवाओं ने समाजवादी विचारधारा से प्रभावित होकर हिंसा का मार्ग धीरे-धीरे छोड़ने का मन बनाया। भगत सिंह और उनके साथियों ने पहली बार क्रांतिकारियों के समक्ष क्रांतिकारी दर्शन रखा। काकोरी काण्ड के बाद संगठन का उद्देश्य था कि जहां भी एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करता था, उसे व्यवस्था का उन्मूलन करना होगा। जेल की कोठरी में अशफाक उल्ला खां ने लिखा कि - 'हिंसा के मार्ग को छोड़कर आन्दोलन मूल धारा में आ जाए और हिन्दू-मुसलमान एकता बनाये रखने का प्रयास करें। क्योंकि इन्हीं जातियों में अंग्रेज फूट डालने की भरपूर कोशिश करते थे।' अशफाक को भी लालच देकर सरकार द्वारा गवाह बनाने का प्रयास किया गया था।

काकोरी काण्ड भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में पहला ऐसा ठोस प्रयास था कि जिसके प्रतिफल के रूप में हमें क्रांतिकारी गतिविधियों की बारम्बारता दिखाई पड़ती है। इन क्रांतिकारी गतिविधियों में मुख्यतया एच0एस0आर0ए0 संगठन के माध्यम से अनेक प्रयास किये गये।

काकोरी काण्ड के पश्चात् अंग्रेजी सरकार की खिलाफत करने के लिए भारी संख्या में युवा वर्ग सामने आया। क्रांतिकारी युवा व्यक्तिगत आतंकवाद और हत्या की राजनीति छोड़कर संगठित क्रांतिकारी कार्यवाही में विश्वास करने लगे थे। साइमन कमीशन के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान लाला लाजपतराय पर लाठीचार्ज और उसके बाद उनकी मौत ने युवा क्रांतिकारियों को एक बार फिर व्यक्तिगत आतंकवाद और हत्या की राह पकड़ने पर मजबूर कर दिया।

1.भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त, पृष्ठ -226

देशभर में इस मृत्यु से बहुत खलबली मची। युवा क्रांतिकारियों ने इसे अपने पौरुष के लिए चुनौती समझा और स्वीकार किया। 17 सितम्बर, 1928 को भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राज गुरु ने लाठी बरसाने वाले एक पुलिस अधिकारी सैण्डर्स की हत्या कर दी। काकोरीकाण्ड में शहीद युवाओं का बलिदान खाली नहीं गया। यही नहीं भगत सिंह ने एच0एस0आर0ए0 के माध्यम से सरकार द्वारा किये जा रहे दमन कार्यों के विरुद्ध विरोध जताने के लिए असेम्बली में बम फेंका। यह विरोध की आवाज थी। काकोरी काण्ड का प्रभाव केवल क्रांतिकारी आन्दोलन में ऊर्जा के रूप में ही नहीं, वरन् राजनीतिक आन्दोलन में भी प्रतिस्पर्धा की भावना को लेकर अनेक नेताओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में कार्य किया। अंग्रेजी सरकार ने प्रथम गोलमेज सम्मेलन में जब अनेक नेताओं को आमंत्रित किया, तो कांग्रेस ने भाग नहीं लिया। यह राष्ट्रीय आन्दोलन पहली बार क्रांतिकारियों के लिए जनक्रांति के रूप में दिखाई पड़ता है। महात्मा गांधी अपने सिद्धान्तों से समझौता न कर पाने की स्थिति में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में भाग नहीं लेते हैं परन्तु भगत सिंह को क्रांतिकारियों और जनता का व्यापक समर्थन मिला। इस समय भगत सिंह एक महान ख्यातिलब्ध व्यक्तित्व के रूप में उभरे।

काकोरी काण्ड का राजनीतिक रूप से पहली बार अंग्रेजों के खजाने पर किए गये लूटपाट का परिणाम यह हुआ कि देश में विभिन्न संगठनों का निर्माण हुआ। अंग्रेजी सरकार का भय बढ़ गया। स्वराज्य कार्यकर्ताओं को कांग्रेस से हटकर एक नयी पार्टी बनाकर चुनाव में भाग लेने और अपने संविधान निर्माण की बात सूझी। सुभाष चन्द्र बोस जैसे बड़े क्रांतिकारी नेता को नेहरू रिपोर्ट निर्माण की समिति में रखना पड़ा। नेहरू रिपोर्ट आने के पश्चात् भारत की क्रांतिकारी गतिविधियों में इजाफा दिखाई पड़ता है। सर्वप्रथम एच0एस0आर0ए0 के सदस्यों में से एक महत्वपूर्ण सदस्य भगत सिंह ने क्रांतिकारी दर्शन देते हुए अनेक कार्यों को परिणाम तक पहुंचाया जो पहली बार क्रांतिकारी आन्दोलन में दिखाई

पड़ा। 1925 के एच0एस0आर0ए0 के घोषणा पत्र में कहा गया कि संगठन का उद्देश्य उन तमाम व्यवस्थाओं का उन्मूलन करना है, जिसके तहत एक व्यक्ति दूसरे का शोषण करता था। क्रांतिकारियों ने रेल, परिवहन, इस्पात और जहाज जैसे निर्माणकारी उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का भी प्रस्ताव रखा। बिस्मिल ने जेल से एक संदेश भेजा कि वे पिस्तौल व रिवाल्वर रखने की इच्छा छोड़ दें। क्रांतिकारी षड़यंत्रों में हिस्सा न लें। खुला आन्दोलन चलाएं। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाए रखने की अपील की। यही नहीं उन्होंने साम्यवाद में अपनी आस्था व्यक्त की। वे यह भी कहते हैं कि प्रकृति की हर सम्पदा पर प्रत्येक इंसान का बराबर का हक है।

काकोरी काण्ड के पश्चात् बंगाल में धीमी पड़ चुकी क्रांतिकारी कार्यवाहियों में तेजी आ गयी। पुरुषों तक सीमित क्रांतिकारी आन्दोलन में 1925 आते-आते महिलाएं भी शामिल हो गयीं। प्रीतिलता वाडेदार, कल्पना राव आदि अनेक महिलाएं प्रमुख रूप से भाग लेती थीं। स्पष्ट था कि अंग्रेजी सरकार सर्तक हो गयी। 1925 के आसपास चटगांव विद्रोह के रूप में एक महत्वपूर्ण घटना दृष्टिगत होती है। काकोरी काण्ड के बाद हमें क्रांतिकारी संगठनों के विचारों में तेजी से हुए परिवर्तन भी स्पष्ट होते हैं। पूर्व के विचारों में हिंसा का बाहुल्य था। हिंसा के द्वारा ही जनता में अपनी पैठ बनाना उद्देश्य था। परन्तु काकोरी काण्ड में हुई फांसी से यह प्रश्न आया कि इतना कैडर कहां से आयेगा कि इतने लोग घर-बार छोड़कर जनता के बीच पूरे समय के लिए काम कर सकें। उनका मानना था कि कुछ चमत्कारिक एवं बहादुरी के कार्यों द्वारा प्रचार होगा। आगे चलकर एच0एस0आर0ए0 ने भी युवकों से अनुरोध किया कि क्रांतिकारी आतंकवाद का रास्ता छोड़ दें। ब्रिटिश सरकार की कूटनीतियों के कारण क्रांतिकारी आन्दोलन का पराभव होता गया। तत्कालीन सरकार ने इन क्रांतिकारियों को छोटे से दोष के लिए बड़े से बड़ा कड़ा दण्ड देकर समाज में एक प्रकार का भय पैदा कर दिया, जिससे युवा वर्ग इन कार्यों से दूर रहें।

काकोरी काण्ड के मूल में युवाओं की विचारधारा में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। देश में एक भावना आई कि अंग्रेजों की सत्ता को चुनौती दी जा सकती है, जो पहले असम्भव प्रतीत होती थी। समय-समय पर पूरे देश में अनेक गतिविधियों का घटित होना अंग्रेजों के लिए एक गम्भीर समस्या ही नहीं चुनौती भी बन गयी थी। युवाओं के आदर्श के रूप में काकोरी काण्ड के शहीद राम प्रसाद, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खां हो गये थे। फांसी से बचे और सजाएं काटने वाले या फरार क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, शचीन्द्र नाथ सन्याल, राम कृष्ण खत्री इत्यादि ने भी आगे चलकर अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों को गति प्रदान की। युवा क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश सरकार की क्रूर नीतियों के बावजूद आगामी युवा पीढ़ी को भारत माता की सौगन्ध देकर एवं भावनात्मक रूप से समझाकर अनेक घटनाओं की पूर्णाहुति की। परन्तु दमनात्मक नीतियों से फरवरी 1931 में इलाहाबाद के एक पार्क में चन्द्रशेखर आजाद के मारे जाने के बाद पंजाब, उ0प्र0 और बिहार में क्रांतिकारी आन्दोलन खत्म हो गया। अनेक क्रांतिकारी एच0एस0आर0ए0 के प्रभाव के कारण मार्क्सवादी हो गये और जनता सामाजिक क्रांति में विश्वास करने लगी। इनमें से कुछ कम्युनिस्ट पार्टी में हो गये, कुछ सोशलिस्ट पार्टी और कुछ वामपंथी दलों में और बहुत से उदारवादी पार्टी में शामिल हो गये।

यह सच था कि हिंसात्मक आन्दोलन की एक सीमा होती है क्योंकि शहादत एक सीमित समय का युवाओं का उद्‌गार था। गांधी जी के आन्दोलन में जनसहभागिता थी, क्योंकि वे अहिंसा को आधार मानकर अपना आन्दोलन चला रहे

थे। अहिंसा को गांधी जी ने इतना मजबूत अस्त्र माना कि चौरी-चौरा काण्ड में हिंसा हो जाने से असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया। ये घटनाएं आम जनता में सहज रूप से इतना विश्वास पैदा करने में सफल हुई कि आम सहभागिता उदारवादी आन्दोलन में अधिसंख्य हो गयी।

इस घटना के दो वर्ष बाद काकोरी ट्रेन डकैती की घटना हुयी, यह अपने में एक साहसिक कदम था। परन्तु जिस भावना से यह कार्य किया गया, उसे लम्बे समय तक बरकरार नहीं रखा जा सकता था। क्योंकि वे जनता को राजनीतिक रूप से उद्वेलित करने या राजनीतिक संघर्ष में शरीक करने में विफल रहे।

बावजूद इसके काकोरी काण्ड का राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष में अमूल्य योगदान है। इन क्रांतिकारियों का अनन्य राष्ट्र प्रेम, अटूट प्रतिबद्धता, अदम्य साहस और गौरवमय बलिदान भारतीय जनता के लिए प्रेरणा स्रोत बने। उन्होंने अपनी गतिविधियों से राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। युवाओं के प्रेरणास्रोत बने क्रांतिकारियों में मुख्यतः अशफाक उल्ला खाँ ने सामाजिक एकता की वह मिसाल कायम की जो अद्वितीय है। अभी तक मुस्लिम समुदाय का योगदान समाज में आलोचना का विषय था, लेकिन अशफाक के शहीद होने के पश्चात् गौरवमयी अध्याय के रूप में लोगों द्वारा याद किया जाने लगा। निश्चित ही अशफाक का बलिदान अतुलनीय है।

अध्याय-नौ

अध्याय-नौ

अशफाक उल्ला खाँ : पत्र कविताएँ, रचना....
(एक रचनात्मक अध्ययन)

किसी के कृतित्व और व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके द्वारा लिखे गये शब्द-अभिव्यक्ति किसी गवाह की तरह आवश्यक हो जाते हैं, यदि वह व्यक्ति रचनाकार है। अशफाक उल्ला खाँ एक सतर्क और संघर्षशील क्रांतिकारी सदस्य थे। अशफाक एक कवि थे, जिनकी कविताएँ (गीत, गजल, नज्में) निश्चित ही एक मानवीय संवेदना की यात्रा हैं। अशफाक उल्ला के वैचारिक पहलू का ज्ञान हमें उनकी कविताओं और पत्रों से ही मिलता है।

अशफाक के पत्र :- पत्रों के माध्यम से अशफाक ने स्वयं को व्यक्त किया है। ये पत्र एक बंदी व्यक्ति के हैं। एक क्रांतिकारी के पत्र हैं, एक देशभक्त युवा के पत्र है, जिसके अपने स्वप्न हैं, अपना सम्मान है, अपनी मानसिकता है, जहाँ किसी प्रकार की बुनावट या बनावट नहीं है। बिना किसी छिपाव या दुराव के, आडम्बर के बगैर और ऐसा भी नहीं कि कोई चीज बेवजह बढ़ा चढ़ाकर कही गयी हो, पत्र पूरी गवाही देते हैं। अशफाक के पत्र देश के प्रति उनकी कर्तव्य भावना की हार्दिकता को भली प्रकार समझने में सहायक हैं। सुधीर विघार्थी ने कहा है कि, ''अशफाक के पत्र उनके विचारों पर बखूबी रोशनी डालते हैं। यह पत्र स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का जीवन्त दस्तावेज और राष्ट्र की बहुमूल्य निधि हैं।[1] अशफाक के पत्रों के आइने में हम अपने अतीत की ओर झाँक कर देख सकते हैं और नई पीढ़ी इनसे अवश्य ही दिशा लेकर आगे का रास्ता भी साफ कर सकती है।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -117

अशफाक ने बनारसी लाल को एक पत्र लिखा था जो काकोरी के मुकदमें में सबूत के तौर पर प्रयोग किया गया - ''मैं इस बार कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर विचार-विमर्श करना चाहता हूँ। मैंने उर्दू में पत्र लिखना ठीक समझा। मुझे लेनिन का पता आपके पत्र से मालूम हुआ। मैं आज ही उन्हें पत्र लिखने का विचार कर रहा हूँ। राम का क्या हाल है? उनसे मुलाकात होती है या नही? तुम्हें आशिक का जो पत्र मिला है उसे तुरन्त राम तक पहुँचा दो। राम जितनी जल्दी हो सके मुझे उत्तर दें। तुम्हें ज्ञात है कि मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। जिससे मैं काम चला सकूँ। नौकरी का अर्थ है कि मैं अपनी भावनाओं का खून करुँ। तुम्हें अच्छी तरह याद है कि मैं स्वतंत्र जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ। मैं तो स्वतंत्रता का पुजारी हूँ और उसकी एक झलक देखने के लिए प्राण तक निछावर कर सकता हूँ। दासता की माला चाहे वह किसी प्रकार की हो मैं उसे अपने गले में पहिनना नहीं चाहता। मैं उसके विचार से ही घंटों रोता रहता हूँ। लेकिन संबंधियों की इच्छा है कि मैं कोई नौकरी कर लूँ और अपनी वृद्धा माँ की सेवा करुँ। बात एक हद तक ठीक भी है और हमारा धर्म भी यही आदेश देता है, परन्तु मुझे मातृभूमि की सेवा का अवसर न मिलेगा।

यदि आज मैं भोपाल में नौकरी करना चाहूँ तो सर असरार हसन खाँ साहब मुझे कोई-न-कोई नौकरी दिला देंगे। मेरे भाई ने मुझे उनसे मिलने के लिए कहा है और उनकी सिफारिश से मुझे फौज में सुबेदारी तुरन्त मिल सकती है। लेकिन इससे मेरी तमाम योजनाओं पर पानी फिर जायेगा। मैं केवल इसीलिए तो अपने जीवन से प्यार नहीं करता कि खूब रुपया कमाऊँ और मौज करूँ, बल्कि मैं तो इसलिए जीवित रहना चाहता हूँ कि मातृभूमि के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करुँ। मैं बड़े से बड़े खतरे की भी कोई चिन्ता नहीं करता और न मुझे इस बात की फिकर है कि दुनिया मुझे दीवाना या पागल कहती है।

यह मेरा विश्वास है कि मैं इसी के लिए जीऊँगा और इसी के लिए मरूँगा। यही मैं अनुभव करता हूँ। शाहजहाँपुर की गलियों में घूमते-घूमते थक गया हूँ।

तुम जानते हो कि मैं गाँव का मालिक हूँ, मेरी माँ जमींदार है इसलिए मैं जितनी जमीन चाहूँ मुझे मिल सकती है। मैं खेती-बाड़ी करना चाहता हूँ। लेकिन उसके लिए मेरे पास आवश्यक धन नहीं है। यदि तुम भी खेती-बाड़ी पसन्द करो तो इस कार्य में कुछ पैसा लगाओ और आओ हम तुम दोनों वहाँ चलकर रहें। इस तरह हम अपने किसान भाइयों के बीच रहेंगे और अपनी योजनाओं को कार्य रूप में परिणित करेंगे और इस तरह कुछ ही वर्षों में हमारे पास धन भी एकत्र हो जायेगा। तब हम बड़े पैमाने पर प्रचार कर सकेंगे और दूसरे मित्रों से कहेंगे कि वे भी हमारे साथ आकर रहे और काम करें। तात्पर्य यह है कि यदि संसार में कोई पवित्र और लाभदायक काम हो सकता है तो वह खेती ही है लेकिन यदि तुम न करना चाहो और अगर अस्वीकार कर दिया तो उससे मेरा दिल टूट जायेगा। तुम्हें हर हालत में अपने बाल-बच्चों के लिए कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। तब फिर क्यों न खेती ही शुरू कर दी जाय। पूँजी तुम्हारी, भूमि मेरी और श्रम हम दोनों का। हम दोनों सांसारिक बाधाओं का सामना करने के लिए गाँव में सगे भाइयों की तरह रहेंगे और संसार को दिखा देंगे कि संसार में नवयुवकों के लिए कौन सा काम सम्भव नही। परन्तु यह आवश्यक है कि उसका दिल एक हो, इरादा एक हो और रास्ता एक हो। नंदिया और सालपुर की जमीनें हमारे लिए गोद पसारे हुए है और फिर प्रेम से हमारी बाट जोह रही हैं। वहाँ के किसान हमारे स्वागत के लिए तैयार है। इसलिए प्यारे भाई, उन जमीनों को निराश न करो, किसानों के दिल न तोड़ों और मुझे अपने निर्णय से सूचित करो। क्या तुम इसके लिए तैयार हो। यदि मेरे पास पूँजी होती तो मैं फौरन काम शुरू कर देता और तुम्हें अपना भागीदार बना लेता। परन्तु खेद है कि मेरे पास पाई भी नहीं।

मेरे सम्बन्धी किसी भी प्रकार की सहायता करने के बजाय मुझे दासता के गड्ढ़े में ही ढकेलना चाहते हैं। वे खेती के महत्व को समझते ही नहीं कि भारत की स्वतंत्रता किसानों पर निर्भर है। अतः आओ हम तुम खेती-बाड़ी शुरू कर दें। देखो, देवनारायण और गंगा सिंह खेती-बाड़ी से कितना लाभ उठा रहे हैं।दो साल बाद बहुत से लोग हमारे साथ आकर मिलने को तैयार हो जायेंगे। तब हम अपनी योजनाओं को कार्य रूप में परिपक्व करने योग्य हो जायेंगे।''[1] - **वारसी**

वारसी कोई और नहीं अशफाक उल्ला खाँ ही हैं जो उपनाम **'वारसी'** से रचनाएँ लिखते थे। अशफाक का व्यक्तित्व उक्त पत्र के माध्यम से स्पष्ट होता है। वे कर्म प्रधान व्यक्ति थे। क्रांति को कर्म से जोड़ने में उनका विश्वास था। कृषि कार्य को महान कर्म समझना भी अशफाक को जमीनी सच्चाइयों से जोड़ता है। अशफाक चाहते थे कि वे अपनी बात आम जनता तक ले जायें। खेती-बाड़ी से एक लाभ तो यह होगा कि वे किसानों के बीच रहेंगे, अपनी बात कहेंगे, देश प्रेम की भावनाएं भरेंगे और किसान की सच्चाई जानेंगे। वे आम आदमी की गहरी पीड़ाओं से परिचित होंगे, समस्याओं पर बहस करेंगे और इसे वे क्रांतिकारी नेताओं के माध्यम से सत्ता तक अपनी आवाज बुलंद करेंगे। शायद यही कारण है कि वे किसान के करीब जाना चाहते हैं। पत्र यह भी कहता है कि हिन्दू-मुसलमान की एकता के लिए अशफाक संकल्पित थे। बनारसी को अपना सगा भाई समझते थे।

काकोरी काण्ड में अशफाक पर मुकदमा चला। उन्हें लखनऊ से फाँसी की सजा सुना दी गयी। अशफाक को फैजाबाद जेल में डाल दिया गया।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 117से119 तक

जिला जेल लखनऊ या फैजाबाद जेल (फाँसी घर) से लिखे गये पत्र से अशफाक के महान क्रांतिकारी जीवन और मातृभूमि के लिए त्याग की भावना का परिचय मिलता है।

बड़े भाइयों को पत्र

डिस्ट्रिक्ट जेल, लखनऊ

26 फरवरी, 1927

बनाम रियासत उल्ला खाँ साहब!

बसद अदब गुजारिश है कि कल 25 माह हाल को स्पेशल मजिस्ट्रेट साहब ने तलब किया था कि गवाहों के सफाई की फेहरिख्त वजाहत के साथ पेश करो ताकि यह मालूम हो सके कि हर एक चार्ज के मुतल्लिक गवाह पेश करना है? और गवाहान की फेहरिस्त में इख्तसार की जरूरत है। मैंने इनकार कर दिया कि बगैर भाई से मशविरा किये हुए मैं कोई राय कायम नहीं कर सकता। लिहाजा 11 मार्च, फिर पेशी की मुकर्रर है। इस दरमियान में आप मुझसे जरूर मिल लीजिए मय उन गवाहान की मुकम्मिल फेहरिस्त, मय बलदियत व सकूनत, जिनका आप ने जिक्र किया था और जब आप जेल पर आयें, हजेला साहब को हमराह लाइएगा। उस रोज के वास्ते वक्त आध घंटे से ज्यादा दिया जायेगा और भी सबको साथ लाइएगा।

खादिम

अशफाक.....1

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -132

बड़े भाई रियासत उल्ला खाँ के नाम दूसरा पत्र

डिस्ट्रिक्ट जेल, लखनऊ

19 जून 1927

खत बनाम रियासत उल्ला खाँ,

भाई साहब किबलाबाद, आदाब अर्ज है कि इस इतवार को हस्बे वायदा आं जनाब का सख्त इन्तजार रहा। आपकी इस इतवार को सख्त जरूरत थी। खैर अगली इतवार को जरूरत बिल जरूर मय वालिदा साहिबा वगैरह आइएगा। अब सिर्फ तीन इतवार दरम्यान में हैं। क्योंकि 13 जुलाई को फैसला हो जायेगा। मैंने जो लिफाफा वालिदा साहिबा को लिखा था, जिसकी बावत आपने कहा था, लेते आइएगा। बख्शी के वालिदा कानपुर जाने वाले थे। आपका इन्तजार करते रहे, मगर वह गालिबन आजकल में चले जायेंगे। आप भी ठीक करा लीजिए। मेरी गजल भी हमराह भेज दीजिएगा, जिसको आपने दरयाफ्त किया था। बहार आई है शोरिश जनूने सामां की। मगर मुझसे मिलकर जाइएगा। अलीगढ़ का जाने का इरादा ही रहा, या जाइएगा भी? फैजाबाद भी जरूर चले जाइएगा। वक्त कम है, लम्बे चौड़े खत लिखने की अब जरूरत नहीं है। यूँ कार्ड लिख दिया। आप खुद अक्लमन्द हैं। जो मुनासिब समझें करें। दवा हो चुकी, अब दुआ बाकी है। बब्बन व आशिक बगैरह से सलाम कह दीजिए। मुलाकात के बारे में भी कह दीजिएगा। फोटो की एक कापी बख्शी के वालिद को दे दीजिएगा। बख्शी की ख्वाहिश है। मगर अपने हमराह लाइएगा ताकि हम भी देख लें। ज्यादा क्या लिखूँ।[1]

- अशफाक वारसी

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ -133

जिला जेल फैजाबाद से लिखा गया पत्र

डिस्ट्रिक्ट जेल, फैजाबाद

21 जुलाई 1927

बनाम रियासत उल्ला खाँ,

जनाब भाई साहब किबला बसद अदब गुजारिश है कि मैं बखैरियत हूँ और व आफियत आप लोगों की बदरगाहे रब्बे बेनियाज नेक-मतलूब-कार्ड मुरसिला पहुँचा- हालात से आगाही हुई। ऐनुद्दीन साहब के बारे में जो लिखा है उनके लिए मुझे किसी का एक शेर याद आ गया। लिखे देता हूँ -

''की मेरे कत्ल के बाद उसने जफा से तौबा
हाय उस जूद यशेमाँ का यशेमाँ होना।''

जिस-जिस ने मुझे फँसाने की कोशिश की उन सबका शुक्रिया। अगर मेरी जान की कुर्बानी उन लोगों के मुफीदकार हो तो जहे किस्मत। मैं भला कहाँ तक काबिल था कि मैं दुनिया में किसी तरक्की व नामवरी का बाइस होता। जिन्दगी और मौत यह तो दुनिया में चला ही जाता है। अगर मौत और जिन्दगी का साथ न होता तो न तो जिन्दगी का ही मजा रहता और न कोई मौत का ख्याल करता और न खुदा की खुदाई मानता। जो पैदा हुआ और कुरये आलम की हवा में साँस ली, उसके लिए मौत जरूरी हो गयी। अज़आदम ताईदम। बड़े-बड़े अंबिया औलिया व अतकिया पहलवानानेतुहमतन हसीनानेदहर गर्ज की सभी किस्म के आदमी आए और अपना-अपना पार्ट दुनिया के स्टेज पर खेल खेलकर चले गये। अब न मूसा हैं, न फिरऔन, न यूसुफ है न अनीजे मिस्त्र, न कृष्ण हैं न कंस, न राम हैं न रावण, न कारून हैं न उनका खजाना और न इमामहुसैन है न यजीद।

हाँ अगर उनकी याद, उनके कारनामे, उनके आमाल व अकवाल दुनिया के सामने मौजूद हैं और वह उनसे अच्छा या बुरा नतीजा निकालती है। दुनिया में आज मुझ पर इन डकैतियों के इलजाम में फाँसकर सजा दे दी जाए, दे लें, हम बेवश हैं। हाँ मगर हाँ, मुंसिफेहकीकी के यहाँ फैसला जरूर होगा, वहाँ न सी0आई0डी0 की चालबाजी और न पब्लिक प्रासीक्यूटर के ही आरगूमेंट चलेंगे। दूध का दूध और पानी का पानी होगा, मुझे इत्मीनान है, मुझे सुकून है, मैं खुश हूँ। मेरा फर्ज और क्या है, राजी बरजाए मौला रहना।

''फैज़े मुहब्बत से है, कैदे मेहन
मेरे लिए एक बलाए हुस्न।''

खुदा का खुद कौल है दुनिया में कुछ होता है मिनजानिब अल्लाह होता है। यह हमारा ईमान है।...यह भी खुदा की मर्जी है कि मैं फाँसी की कोठरी में बन्द किया गया और इसमें भी कोई भलाई योशीदा है जो बादी उन नजर में हम लोगों को नहीं मालूम होती। आप लोगों को सब्रो-शुक्र से काम लेना चाहिए और जनाबे वालिदा साहिबा को अपनी नजर खुदा की तरफ करनी चाहिए।

''अजब क्या है जो बेड़ा गर्क होकर फिर उभर आये,
कि हमने इनकलाबे चर्खे गरदूँ यूँ भी देखे हैं।''

खुदा में बड़ी ताकत है, वह सबकुछ कर सकता है। दुआ करना इनसान का काम है, कबूल करना उनका। अगर जिन्दगी की रस्सी दराज़ है, तो फैजाबाद से एक दिन दूसरी जगह जरूर जायेंगे। वरना यहीं से जिन्दगी की आखिरी साँस लेकर दुनिया को खैरबाद कहेंगे और फिर रोजेकयामत ज़मीने फैजाबाद ही से उठकर खुदायेरब्बेजलील से फरयारी होंगे। बहरहाल अभी तो कुछ महीने उम्मीदे जीस्त है, यह भी बहुत काफी है। आप सबको मेरा समझाना बेकार है, क्योंकि मैं आप सबका छोटा हूँ। आप लोग खुद अक्लमन्द है। मेरे मुकदमें की अपील की समायत शुरू हो गयी होगी। न मालूम कैसा रंग है।

आप हजेला साहब और गुप्ता साहब को लिख दीजिएगा कि मुझको बराबर मुत्तिला करते रहेंकि रंग क्या है। और नतीजे से मुफस्सिल तौर पर इत्तला दें। बख्शी के वालिद का क्या रहा? और उनकी बहन वगैरह गई या अभी नहीं? सब मुफस्सिल लिखियेगा। बख्शी के वालिद के मुकदमें का फैसला जो भी हो लिखिएगा। अपील यहाँ भेज दी है। कल नकले-फैसला भी थी। वह खुद वहाँ वापस हो जायेगी। देखिए वकील कौन लिया जायेगा।

आप लखनऊ चौधरी साहब से आकर मिलिएगा और मेरा सलाम कह दीजिएगा कि मेरे केस को आप करें और दीगर कार्यवाहियों से गाफिल न हों। अपील में चौधरी साहब का नाम, हजेला साहब का नाम लिख दिया है। अब देखिये कौन मिले। मगर आप कौंसिल के मुतालिक गाफिल न रहिएगा। अपना आदमी चीफ कोर्ट के अन्दर होना जरूरी है। हजेला साहब से सलाम कह दीजिएगा, ज्यादा क्या लिखूँ। भाई साहब अगर आएँ और फल लाएँ तो वह गालिबन मुझको मिल सकते हैं। लखनऊ जेल में बनिस्बत यहाँ के ज्यादा आराम था। आज तक तो वही खाना मिलता है जो एक अख़लारी मुजरिम को मिलता है। मगर आज से शायद सुपरिटेंडेन्ट साहब कुछ बेहतर दें। मगर कहाँ लखनऊ जेल और कहाँ फैजाबाद -

''हजार शेख़ ने दाढ़ी बढ़ाई सन की-सी,
वलै वह बात कहाँ मौलवी मदन की-सी''

खैर फीअआनिउल्ला बुजुर्गों की खिदमत में आदाब दस्तबस्ता कुबूल हो। बच्चों को प्यार, छोटो को दुआ-

''हसरत बहुत है मरतबाए-आशकी बुलंद,
मुझको तो मुफ्त लोगों ने मशहूर कर दिया।''

खुदा का शुक्र है, यह दिन भी गुजर जायेंगे। राम प्रसाद का कौन वकील है या खुद वह चीफ कोर्ट में लाए जायेंगे। और कौन-कौन किस-किसकी तरफ से है। और जाहिर क्या असबाब है? भाई साहब जब यहाँ आएँ तो लखनऊ में हज़ेला साहब और गुप्ता जी से मिलकर आएँ और फल बगैरह भी लेकर आएँ। मुन्नू भैय्या को मेरी खैरियत लिख दीजिएगा। और वहाँ के अहबाव को सलाम कहिए। जिनको लिखा था, उनसे सलाम कह दीजिएगा। अगर वह दोनों आ सके तो आ सकते है, वरना उनकी मर्जी। मुसीबत और दुख में कोई किसी का दोस्त नहीं होता। बनी के सब साथी और दोस्त हैं, यही हाल उनका भी है, नई बात नहीं है। मेरा सबको सलाम। उम्मीद है आप मुफस्सिल जवाब देंगे। सैयद को भी खत लिख देना कि मैं अच्छा हूँ और तुम्हारी सबकी मुहब्बत का ख्वाह हूँ और लिख दीजिएगा कि बूढ़े को भी सलाम कह दें और मि0 जान को भी सलाम कह दें। अब देखना है कि आखिर क्या रहे। दुआ करो उससे जिसको तुम नहीं मानते। खैर खुदा मद्द फरमाए! आमीन! यह इबारत बजिनसही लिख दीजिएगा।[1]

<u>अशफाक वारसी **'हसरत'**</u>
अज़ जिन्दाने, फैजाबाद
29 नवम्बर, 1927

खत बनाम रियासत उल्ला खाँ,
प्यारे भाई साहब, कार्ड मुरसिला आँ जनाब मिला। हालात से अगाही हुइ। कज़ा व कदर में चारा ही क्या है? रंजो-मुसीबत में इला-विल्लाह पढ़कर सब्र करना चाहिए।

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 120-123

इससे कब्ल के खत में साफ लिख दिया कि खुदा हर सूरत से माल से, औलाद से, जानों से, जानवरों से इम्तिहान लेता है, यस जिसने सब्र किया, उसने उसे राजी कर लिया। क्योंकि वह साबिर और शाकिर का साथी है। खुदा ही देता है और खुदा ही लेता है और वह फिर देगा। हर हाल में शुक्र कीजिए। भाभी को खुदा के सुपुर्द करता हूँ। खैरियत से मुत्तला फरमाइएगा और उम्मीद है कि इस मर्तबा भाई साहब मुझसे मुलाकात करने आयेंगे। क्योंकि इस मर्तबा उनसे मुलाकात करने की मुझे सख्त जरूरत है। मसनवीशरीफ मिल गई, खूब है। भाभी की तरफ से फिक्र है, जल्द मुत्तला फरमाइए। वालिदा साहिबा व भाई साहब किबला की खिदमत में आदाब दस्तबस्ता कबूल हो।''[1]

-कैदिए ज़िंद़ाने फ़रंग अशफ़ाक वारसी

अशफाक उल्ला खाँ जेल से लिखे अपने भाइयों के पत्रों में जिन्दगी और मौत की बातें बेफिक्र होकर करते है, खुदा को याद करते हैं, मृत्यु से भय नहीं है उनको, वे दाशर्निक भी नहीं बनना चाहते जबकि दार्शनिकता की झलक मिलती है। ऐसा नहीं है कि मृत्यु सामने हो तो वे डर जायं या सिर्फ खुदा को याद करें या आसमानी बातें ही करें। वे निडर होकर लड़ना चाहते हैं अन्तिम सांस तक। बावजूद इसके वे मृत्यु का सामना करने हेतु स्वागत के रूप में तैयार बैठे हैं। वे जीवन और मृत्यु के बीच जूझते हुए अपना मानसिक संतुलन एक सामान्य व्यक्ति की तरह बनाये हुए हैं। ऐसा भी नहीं है कि वे अति भावुक हो उठे हों। यही उनके मानसिक व्यक्तित्व की पहचान है। निश्चित ही उनका मानसिक पोषण उचित वातावरण में हुआ है। वे एक सफल क्रांतिकारी ही नहीं, एक स्वस्थ विचार वाले व्यक्ति थे।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 123-124

अशफाक उल्ला खाँ बेहद भावुक और संवेदनशील व्यक्ति थे। वे अपने सम्बन्धों का आदर करते थे और यदि सम्बन्ध आदरणीय हों तो वे आदर और सम्मान के साथ उसकी मर्यादा भी रखते थे। अशफाक ने अपनी माँ को कई पत्र विस्तार से लिखे हैं। अशफाक उल्ला का पहला पत्र जिला जेल लखनऊ से लिखा गया है। वे अपनी माँ को तसल्ली देते हैं और अपने बलिदान को प्रभावित करते है। स्पष्ट है कि वे अपने कार्य एवं बलिदान की सार्थकता का गुण गाते हैं। यही नहीं वे अपने खानदान में स्वयं को गौरवान्वित महसूसते हुए माँ को भी गर्व की याद दिलाते हैं।

<u>माँ को पत्र</u>

डिस्ट्रिक्ट जेल, लखनऊ

जनाब वालिदा साहिबा,

बाद अदब ये गुजारिश - खिदमते बाबरकत है कि बंदा खैरियत है और सेहनबरी मिजाजे ऑजनाबा नेक मतलूब। 4 जून को मुकदमें की सुनवाई खत्म हो गयी और असेसरान की राय भी ले ली गयी। यह सुनकर आपको दुख होगा कि मो अज्जज हिन्दुस्तानी अससेरान ने क्या राय दी। मैं आपको हरगिज न लिखता मगर मैं इसको अपना फर्ज खयाल करता हूँ कि अपने मुकदमें के हालात से आपको काफी तौर से आगाहकर दूँ। यह तो आप जानती ही हैं कि चार असेसरों में से एक का इन्तकाल हो गया था और तीन बाकी रह गये थे। जिनमें एक खुदातरस बूढ़े ने हम दोनों को बिल्कुल बेकसूर कहा और दो ने न सिर्फ खुफिया साजिश करने वाला ही कहा, बल्कि डाकू भी कहा। खैर इसका अफसोस मुझे तो कुछ भी नहीं, आप करें न करें। यह हिन्दुस्तान ही है जो हम पर जुल्म कर रहे हैं और वह भी हिन्दुस्तानी ही तो थे जिन्होंने मुझको इस मुकदमें में ख्वाहमख्वाह घसीटा।

अगर अंग्रेज आज मेरे खिलाफ हों और मुझ पर ज्यादती करें, हक बजानिब है क्योंकि अपने मुल्क को फायदा वह इसी हाल में पहुँचा सकते हैं कि हम पर हुकूमत करें, मगर तआज्जुब तो इन हिंदुस्तानियों पर है जो इस तरह ख्वाहम ख्वाह बगैर वह यह नही जानते कि हकीकतन उनकी क्या इज्जत अंग्रेज कौम के दिल में है। अंग्रेज किसी भी ऐसे इंसानों को पसन्द नहीं करते जो काम निकालने की खातिर उनकी पीठ ठोंक दिया करते है। खैर, मुझे इस मसले पर बहस नहीं करना है। मुझे तो आपको समझाना है। आपसे इस बात के लिए कहना है कि जो आप जैसी जईफ के लिए न सिर्फ बेजा बल्कि जुर्म होगा। यानि सबरोसुकून के बारे में। बजाहिर सब्र तल्ख मालूम होता है मगर बाद को मीठा फल लाता है। मैं बचपन से आपकी सब्र आज़मा तबीयत देखता चला आ रहा हूँ और आपको एक साबिर और राजीबर जाए मौला पाया...।[1]

अशफाक उल्ला खाँ अपने मुकदमें के सम्बन्ध में पुनः अपील करने की बात अपने पत्रों में करते हैं। वे माँ को लिखे पत्र में अफसोस जताते हैं कि माँ को उम्र के आखिरी दिनों में तकलीफ होगी। दुख का जिक्र करते हुए वे संघर्ष का बखान भी करते हैं और कर्बला की याद दिलाते हैं। अशफाक आगे लिखते हैं-...सब कुछ हुआ और क्यों? महज इसलिए कि आइन्दा जब किसी पर दुख और तकलीफ आए, वह मिसाल को सामने रखे और सब्र करे। आपको इस किस्म की मिसालें देना, मेरी हिमाकत होगी, क्योंकि बफजले तआला आप मुझसे ज्यादा लायक और वाकिफ़ हैं। मैं इसे अब मजाक समझता हूँ कि लिखूँ कि मैं बेकसूर हूँ क्योंकि मेरा सबसे बड़ा कसूर यह था कि मैं मोटा-ताजा हूँ और मिस्टर खैरात नबी की बहस के मुताबिक मुझको बड़ा मुजरिम होना चाहिए।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ - 126-127

वह मसख़रापन कोर्ट में हुआ कि खुदा की पनाह। मुझे तो न पहले उम्मीद थी न अब है, मगर भाई साहब और लल्लू भैया के कहने के मुताबिक सफाई बगैरह पेश कर दी और चाराजोई की खैर! अब सुनिए, आपको मालूम हो जाना चाहिए कि खैरात नबी ने साफ अलफाज में कह दिया है कि इंतहाई सजा मिलेगी। मेरे लिए तो यह बड़े मजे की बात है। मेरे लिए इससे ज्यादा फख्र की बात कौन-सी हो सकती है। मेरी माँ से बढ़कर मेरे खानदान में कौन सी माँ हो सकती है जिसका बेटा जमाँमर्दी और बहादुरी से, इस्तकामत व इस्तकलाता से रास्तबाज़ी के सास मासूमियत का जामा पहने हुए, कुर्बानगाहे वतन पर कुरबान हो जाए। मेरे सकून व इत्मीनान यू है कि मैं अपने को मासूम समझता हूँ और आपके भी सब्र के लिए यह काफी है कि आपका मासूम लड़का एक ऐसे मकसद की खातिर जान से जायेगा जो बड़ा ऊँचा और नेक व पाक है।

इस इजलामात जो मुझ पर लगाये गये हैं मैं कभी भी इसके लिए तैयार नहीं हूँ। हॉ एक हिन्दुस्तानी होने की वजह से अगर यह तमाम बातें है तो खैर-दुनियावी बादशाहतें खत्म हो जायेंगी। किब्रो-गरूर मिट्टी में मिल जायेगा-शौकत और हशमत का कहीं पता भी न होगा मगर हाँ खुदावंद कुद्दूस के दरबार में बाकियात असली रोशनी में होंगे और वह हकीम हकीकी जिसने मूसा और फिरऔन का फैसला किया था मेरा भी करेगा। चन्दरोज जिन्दगी पर खुश होने वाले इंसान जुल्मो तअद्दी करने वाले सी0आई0डी0 के लोग उस दिन मालूम करेंगे कि वे किसके सामने जवाब-देह हैं। आप खुद पर शाकिर रहिये। सब्र कीजिए और मेरे लिए दुआ फरमाइये और अगर उसको मुझे शहादत की इज्जत देना मकसूद है, तो अजमो-इस्तकलाल जुरअत व हिम्मत भी अता करे और इम्तिहान के दिन मुझे बहादुर बनाये। आप कभी अफसोस न करें कि मैंने ऐनुद्दीन साहब और तसद्दुक

साहब के कहने पर अमल किया था। क्या वह इस बात की गारन्टी कर सकते थे कि मैं न मरूँगा। नहीं, मौत व जिन्दगी खुदावन्दे करीम के

हाथ में है और दुनियावी ताकतों से बालातर एक ताकत है जो निज़ामे-आलम को सम्भाले हुए है।

मौत और जिन्दगी का साथ है -जो दुनिया में आया वह एक रोज जरूर मरेगा-फिर एक ऐसी चीज से, जिसका आना लाजिमी है, जरूरी है गम करना या खौफ खाना फिजूल व अबस है। मैं अपूबर हो सकता था, मैं इकबाली बन सकता था, मगर दूसरों की जान फसाने के लिए, अपनी जिन्दगी बचाने के लिए। वह इन्सान जो अपनी जिन्दगी की खातिर कमीनी हरकत करता हैं, क्या वह आने वाली नस्लों के लिए बाइजे-नाज हो सकता है -नहीं, कभी नहीं।

मुझे इत्मीनान है-मुझे खुशी है कि आने वाली नस्ल मुझको डरपोक और कमीना न कहेगी, बल्कि सच्चा और बहादुर कहेगी। दुनिया महज इसी पर मरती है कि मरने के बाद उसको बुरे अल्फाज से न याद किया जाय। मसजिदें, तालाब, मदरसा, कुएँ बनाकर छोड़ जाते हैं ताकि बाद को याद रखें जायं। मेरी मासूमियत भी कभी खामोश नहीं की जा सकती। बस, मुझे कुछ लिखना नहीं। आपको फख्र करना चाहिए कि आपका बच्चा बहादुरी की मौत मरेगा। अगर मौत से मुकाबला करना पड़े तो आपको भी एक बहादुर माँ साबित करना होगा-क्या आपकी रगों में खालिस अफगानी खून नही है। क्या आप मेरी माँ नहीं है। आप पठान हैं, आप मेरी माँ है। यह आपके ही दूध का ही असर है, जो मैं इन्तहाई खौफनाक बातों पर भी हँस देता हूँ। आप मुझसे मिलने को आयेंगी, बोलो व भाभी आयेंगी, मगर बहादुर बनकर आयें, जैसी पहले बनकर आयी थी। मुझको बहादुर बनाकर वापस जायेंगी। मैं आपसे एक बार मिलकर जबानी बातचीत करना चाहता हूँ। क्या मौत से पहले खुदा के हुक्म बिना मुझको कोई मार सकता है या तकलीफ में डाल सकता है।

नहीं, कभी भी नहीं। फिर जो कुछ है सब मिन जानिब अल्लाह है। इस पर सब्र करना शाने-बन्दिगी है। चंद-बंद किसी के याद आ गये, लिखे देता हूँ। उनको पढ़ लीजिए। लल्लू भैया जब इतवार को आयें तो

महबूब से मिलते आयें। अगर वह आएं तो हमराह लेते आएँ और बिस्तर बंद भी जरूर लाये ताकि सामान व बिस्तर बगैरह बाँध कर दे दूँ। बिस्तर बंद भूलें नही : -

''है अर्ज आज मादरे नाशाद के हुजूर
मायूस क्यों हैं आप अलम का है क्यों वफूर।''[1]

अशफाक ने अपनी माँ को भावुक ही नहीं, वैचारिक पत्र भी लिखा है, उनके पत्रों में स्पष्ट दिखता है कि वे जुल्म के खिलाफ लड़ने और अपील करने की बात करते हैं लेकिन अपनी जमीन और हौसला नहीं छोड़ते। माँ को लिखे पत्र में ढेर सारे शेर और नज्में लिखकर अशफाक ने अपनी संवेदना से साक्षात्कार कराया है। उनका एक-एक शेर साहस और प्रेरणा देता है : -

''सख्ती सही नहीं ईक उठाई कड़ी नही
दुनिया में क्या किसी पे मुसीबत पड़ी नहीं।''[2]

अशफाक आगे इसी क्रम में लिखते है- 'इन अशआर को जो किसी शायर ने लिखे हैं, पढ़िए और खुदा से मदद माँगिये। आप कभी भी यह ख्याल न कीजिए कि आप नुकसान में है। यहाँ पर मुझे एक किस्सा याद आ गया। इंगलैण्ड के एक बड़े शख्स हिन्दुस्तान आये। वह अपनी बीबी के हमराह आगरे गये। जब ताजमहल पहुँचे तो उनकी बीबी ने कहा कि अगर कोई वायदा करे कि मेरे मरने के बाद ऐसी आलीशान इमारत जैसा यह ताजमहल है, बनवाकर मुझे दफन करेगा तो मैं इसी वक्त अपने गोली मारने को तैयार हूँ।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ 128-129
2. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -130

यह बात उस औरत ने कैसे कही, महज इस वजह से कि मरने के बाद वह ख्वाहिशमंद थी कि याद की जाए। हर शख्स की ख्वाहिश होती है कि मर जाने के बाद लोग उसको भूले नहीं और याद करें। मैं भी फख्र करता हूँ कि ख्वाह मैं इस लायक था, या न था, मगर लोग मुझको समझते हैं और हरगिज फरामोश न करेंगे। मैं सी0आई0डी0 का मशकूर हूँ कि उसने हमेशा की जिन्दगी दे दी, मेरे खानदान को फख्र करना चाहिए। जो मैं हूँ, वह मैं खुद जानता हूँ और सी0आई0डी0 भी खूब जानती है। खैर, अब खत्म करता हूँ, खुदा आपको सब्र अता फरमाएं और मुझको इस्तकलाल दे। भाई साहब, अब्दुल कादिर दादा, बूलू-भाभी, दिल्ली वाली भाभी, शहादत भाई की दुल्हन को सलाम। रज़ी, अनीसा, ख़लील, रूकय्या, सुल्ताना, माहजबीन सबको दुआ व प्यार।[1]

- अशफाक उल्ला खाँ

अशफाक उल्ला खाँ ने परिवार को कई पत्र लिखें हैं। यह पत्र जो उन्होंने लिखा है, इसमें स्थान अंकित नही है, लेकिन हस्ताक्षर के नीचे तारीख लिख देने से दिनाँक का पता चलता है। एक बात और खास है कि उनके पत्र शायराना अन्दाज में लिखे गये हैं और बीच-बीच में शेरो, नज्मों से पत्रों की गम्भीरता तो बढ़ती ही है, रोचक भी है। पत्रों की भाषा का प्रभाव देखते बनता है।

अशफाक उल्ला खाँ का एक और पत्र

मेरी सोगवार माँ - भाइयों बहनों और अजीजो! यह खत जबकि तुम्हारे हाथ में पहुँचेगे, तब मालूम न तुम्हारा क्या हाल होगा। ना मालुम उस वक्त मैं जिन्दा रहूँगा या राही-ए-अदम हो चुका हूँगा। मुझे पूरा इत्मीनान है कि जेल के हुक्काम यह खत जरूर रवाना कर देंगे। जबकि यह मरने वाले की आखिरी ख्वाहिश है।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ -131

बहरहाल मैं लिख रहा हूँ अब खुदा आलिम है कि क्या हो। खैर, आखिरी हुक्म आ गया है अब एक-दो रोज के मेहमान हैं। इन्सान की कोशिश खुदा बन्दी को टाल नहीं सकती। जिसने बिसाते आलम पर मोहरे लगाए, वह मौत के हाथों जरूर मात खायेंगे। आज आदम ताईदम कौन रहा या कौन बाकी रहेगा। एक खानदान के अन्दर दस-पाँच आदमी होते हैं। वक्तन-फबक्तन जिसका वक्त पूरा हो जाता है वह कूच कर जाता है। बकिया रोते-धोते हैं जो तकाजाये मुहब्बत हैं। मगर इनमें से जाना हर एक को है। कोई जल्दी जाएगा कोई बदेर। जिसको आप लोग समझते हैं कि कबल अवक्त-मर गया वह उम्र ही इतनी लेकर आया था और बाकी मसलहत खुदा जानता है। जिसको हुक्म उसकी जानिब से होता है वह लब्बैक कहता है और चला जाता है। तुम्हारे दिलों को रंज होगा, गम करोगे, मगर खुदा के नाशुक्रे मत बनना। सब्र करना और मेरे लिए मगफिरत की दुआ करना कि खुदा मुझपर रहम करे और जवारे रहमत में जगह दे। मैं तुम्हारे लिए सब्र की दुआ करता हूँ। मौत इसी बहाने थी, सो आयेगी और जो लिखा है वह भी पूरा होगा। उसके हुक्म में मजाले दमजदन नहीं। उसी की अमानत थी उसी को जानिब वापस जाती है। आप लोगों के साथ इतना तआल्लुक उसने पैदा कर दिया था, वह अब रखना नहीं चाहता, तुम लोगों को क्या-क्या लिखकर समझाऊँ। मुझमें ना इतनी काबिलियत है ना मैं अलिमेदीन हूँ कि मजहबी बातें लिखूँ या आहादीस या आयत लिखूँ। हाँ, बस इतना ही जानता हूँ और इतना ही लिखना चाहता हूँ कि सब फानी है और फना होना है। सब मरेंगे ना कोई रहा है और ना कोई रहेगा, तो बस वही खुदा बन्द कुद्दूस ही रहेगा, जिसने दुनिया रची हैं। हम लोग खुदा को मानते हैं और मुनावये जनाबेरसूल करीम है अगर दावा सही है तो बस -

है रजा उसकी तो हम बहरहाल यह फर्ज
शुक्रे हमलब पर रहे शिकवये आदान करें।
मान ले फैसला ये दोस्त को बेचूनों चरा,
फिकरे इमरोज ही रखें गमे फरदा न करें।

बस जाने खुदाबन्दी के सामने सरेनियाज खम कर दें और अपने को उसकी मर्जी पर छोड़ दें। रोजे जजा का वह मालिक है। इसका भी गम ना करें क्योंकि गुलाम हैं जनाबें रसुलेकरीम सलल्ला हो अलैहे वसल्लम के। ये मातम बुनिन्नदिगाने अशफाक! सब्र करो और दुआ करो कि वहाँ की मुसीबत आसान हो।.....मेरी जिन्दगी इतनी ही थी। ना वह घट सकती है ना बढ़ सकती है। ना तुम्हारा नाल ओबुका ही काम आ सकता है। ना आहबाजरी ही जिन्दगी का एक लम्हा बढ़ा सकती है। हाँ तुम्हारी दुआएँ वहाँ मेरे काम आ सकती हैं। बस सब्र करो और दुआ से याद करो। मैं नहीं जानता कि मेरी लाश भी तुम लोगों को दी जाएगी या न दी जायेगी। यूँ तो सब जान निकल गयी है फिर मिट्टी ढेर है। मगर फिर भी मुझे तसफीश है। खैर मुर्दा बदस्त जिन्दा का मजमून है। जबरदस्ती जो चाहे करे। उसका हरफेल दुरस्त है। खैर मैं अपने दिमाग को इस ख्याल से परेशान करना नहीं चाहता। जो भी हो इसमें कोई शक नहीं कि मैं तख्तये मौत पर खड़ा हुआ यह खत लिख रहा हूँ, मगर मैं मुतमइन व खुश हूँ कि मालिक की मर्जी इसी में है बड़ा खुश किस्मत है वह इंसान जो कुर्बाने वतन पर कुर्बान हो जाये। गो कि यह फिकरा मैं जिस स्प्रिट के साथ लिख रहा हूँ वह आप लोगों में नहीं है। यूं आपको तकलीफ महसूस होगी। मेरी गजलियात मकान पर मौजूद होंगी। वह आज से बहुत पहले की लिखी हुई हैं। उनको पेशीनगोई समझिएगा और वैसा ही होना था जो कलम से निकला।

मेरे शुकून की वजह मेरी बेगुनाही है और यकीन रखिये कि अशफाक का दामन इन्सानी खून के धब्बों से पाक व साफ है।

मेरे घर में आने वाले बच्चों और मौजूदा छोटो। तुम सब दुनिया में आओगे मेरी कहानी सुनते पाओगे और तहरीर देखोगे। मेरे इस तहरीर में मेरे दिमाग का असर ना समझना मैं बिलकुल सही दिमाग का हूँ और मेरी अकल ठीक काम कर रही है। मेरा मकसद महज आने वाले बच्चों के लिए लिखना यूँ है कि वह अपने फरजाइज महसूस करें और मेरी याद ताजा रखें। प्यारे रजी व खलील-तुम्हारा चचा चन्द रोज बाद इस दुनिया में नहीं रहेगा और हमेशा-हमेशा के वास्ते तुम सबों को छोड़ जायेगा। तुमसे वह कुछ नहीं चाहता और ना ही कहना चाहता है। तुम्हारा खुदा मद्दगार रहे। तुम्हें परवान चढ़ाये। आला-तालीम अता फरमाये और तुम्हें किसी काबिल बनाये। काबिले फखरे खानदान करे।

....

....

तुमको बुजुर्गों की राय पर चलना चाहिए और तामील में तन-मन धन लगा देना चाहिए और बेहतरीन इन्सान अपने को साबित करना। मेरी तुमसे बस इतनी ख्वाहिश है और मौत का ख्याल रखना। वतन की मुहब्बत का मुझ पर इलजाम लगाया गया है और यूँ ही मुझे सजाए मौत मिली। जब तुम इस काबिल होगे तब मेरे मुकदमें की कुल कार्यवाही पढ़ना। ज्यादा क्या लिखूँ। मेरी दुआएँ तुम्हारे साथ हैं।[1]

अशफाक उल्ला खाँ

8 अक्टूबर 1927

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ 144-147

अशफाक पत्रों में आने वाले संतानों का जिक्र करते हैं और उत्साह भरते है, नेक सलाह तो देते ही हैं, देश प्रेम की प्रेरणा भी देते है। उन्हें यह पता है कि आने वाली पीढ़ियाँ उनकी कुर्बानी से ऊर्जा पायेगीऔर देश के लिए कुछ कर गुजरने के लिए प्रेरित होंगी। अशफाक को बच्चों से प्रेम था, वे उपदेश देते हैं। उन्हें उम्मीद है कि हमारे बच्चे मेरे मुकदमें की कार्यवाही पढ़ेंगे तो असलियत का अन्दाजा लगा लेगें।

<u>फैसले के एक दिन पूर्व माँ को लिखा गया पत्र</u> -

जनाबा वालिदा साहिबा,

बखैरियत हूँ और जनाबा की खैरियत का ख्वाहा हूँ। कल फैसला सुनाया जायेगा। खुदा मुझको हिम्मत दे। ताकत इत्मीनान दे। सुकूने कल्ब अता फरमाए। आप सबको सब्र दे। बीवी दुनिया सराय-फानी है। कौन रहा है और कौन रह जायेगा। अज आदम-ताईदम मौत व जीस्त का सिलसिला चला आ रहा है और चला जायेगा। कहाँ तक गम कहाँ तक रंज किया जाय। मुझे अपनी सजा का कोई गम नहीं, कोई रंज नही। सजाए कैद या कोई भी हो मेरा ईमान है कि सब मिन जानिब अल्लाह होगी। फिर 'सरे तसलीम खम है जो मिज़ाजे यार में आए'। मगर जो दुख है वह तुम्हारी जईफी का है। तकलीफ है वह तुम्हारी कमजोरी और काबिले-रहम हालत पर। खुदा वाकिफ है कि इस इतवार की मुलाकात के बाद किसी घड़ी किसी पल तुम्हारा कमजोर चेहरा और नाउम्मीदी से भरे हुए अल्फाज फरामोश नहीं कर सका। खैर, जो मर्जी मौला। मेरी गुजारिश और आखिरी गुजारिश यह है कि अगर खुदा ने जिन्दा मुझको बाहर निकाला, तो आपकी जईफी देखकर जिसकी मुझको उम्मीद तो है नहीं, वैसे दुआ है कि खुदा आपको उम्रेनूह अता फरमाएं। आप अपनी तसवीर हिंगू से खिंचवा लीजिएगा। आप कुछ फिक्र न करें। वह आपका दामाद है और सामने आता है यानि साफिया का खाविंद। कम-अज-कम बाहर आकर आपकी तस्वीर से कुछ तसल्ली होगी। आप बखूबी वाकिफ है कि आपको बिना देखें हुए मैं दो रोज भी नहीं रह

सकता। मगर यह मसला मजबूरी और इज्जत व जिल्लत का था। लिहाजा उन लोगों के कहने पर नहीं चला। क्योंकि जिन्दगी जैसी जलील चीज के लिए दुनिया की नजरों में और अपनी नजरो में गिरकर रहने से मौत बेहतर व अफ्जल है। काश कि खुदा एक मौका और अता करता कि आपकी खिदमत करूँ और कदमों से जुदा न हूँ। मैं निहायत बदकिस्मत हूँ कि आपकी खिदमत करने का जब मेरा वक्त आया तो आपके कदमों से दूर हूँ। खैर खुदा की मर्जी यही थी। आप भी सब्र कीजिए और मेरे लिए दुआ कीजिए। आपको जईफी में जो मुझसे दुख पहुँचा, आप खुदारा मुझे माफ फरमाइएगा। तब दिल को तस्कीन होगी। ज्यादा क्या लिखूँ। हाँ एक बात और वह है कि मेरे फैसले के बाद लोगों को ढोंग न फैलाने देना, जो बिहीख्वाह और दोस्त थे, सब मालूम हो गये। आपके खानदान वालों को भी देख लिया। मेरा खानदान मेरे हकीकी भाई, मेरी भावज, बहन व बहनोई हैं और मुल्क के हिन्दू और मुसलमान मेरे भाई व बुजुर्ग हैं और किसी बदमाश से वास्ता नहीं। जो मुसीबत में शरीक था, वह बहादुर और दोस्त है। बाकी सब कमीने हैं, जो आरामो-आसाइश के साथी और दुख दर्द पर अलग। मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैं उन सबसे नाराज हूँ। अगर बाहर निकलने का मौका मिल गया तो उनसे कितात आल्लुक करके जानवरों से दोस्ती कर लूगाँ। साँपों से प्यार करूँगा। भेड़ियों के गिरोह में बैठा रहूँगा, मगर इन अजीजों से अलग रहूँगा। फीअमानिल्लाह। अपना फोटो जरूर खिंचवाइएगा और जिन्दा बाहर निकला तो मेरे लिए वही काफी होगा।

अगर वक्त बराबर आ गया है तो खैर खुदा के सुपुर्द किया।[1]

आपका खादिम
अशफाक वारसी

अशफाक के पत्र संवेदना के स्तर पर काफी महत्वपूर्ण हैं। उनके पत्रों में विचार और उपदेश के साथ-साथ एक समग्र भारतीय युवा का स्वर भी निहित है। दिनाँक 15 दिसम्बर 1927 को फाँसी घर से माँ के नाम उन्होंने अन्तिम पत्र लिखा है। पत्र से स्पष्ट है कि वे दर्द और दुख से बोझिल थे, लेकिन यह दर्द मौत का डर नहीं है। अशफाक बहुत कुछ कहना चाहते थे लेकिन तमाम अवरोधों और विवशताओं के चलते वे अपनी सारी बातें नहीं लिख सके, फिर भी उनका यह माँ को लिखा अंतिम पत्र खासा महत्वपूर्ण है जो उनकी आन्तरिक वेदना और व्यक्तित्व को समझने में सहायक सिद्ध हुआ है। यह पत्र कुछ लम्बा अवश्य है लेकिन आवश्यक है। पत्र निम्नलिखित है -

अज जिंदाने फैजाबाद,
फाँसी की कोठरी
15 दिसम्बर 1927

दुखिया और बूढ़ी माँ की खिदमत में उनके मरते हुए फरजंद का सलाम पहुँचे, जो इसी हफ्ते में इस फानी दुनिया को अलविदा कहकर उस मुल्क जावेंदा को जा बसाएगा, जहाँ कि उससे पहले भी सब जा चुके हैं और हाजी रूह उसके बाद भी जायेगा -

फना है सबके लिए हमपे कुछ नहीं मैकूफ,
बफा है एक फकत जाने किब्रिया के लिए।

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग - पृष्ठ 135-137

आप भी बखूबी वाकिफ है और तालीमयाफ्ता है मगर यह जरूर है बूढ़ी सिनासीदा दुखिया माँ के लिए यह सदमा जरूर बड़ा है कि उसका जवान बेटा नामुराद दुनिया से उठ जाए और वह उसकी लाश पर दो आँसू भी न डाल सके या उसकी मरी हुई सूरत देख सके। मगर यह तो बताओ यह हुक्म किसका है? क्या दुनिया के किसी इनसान का हुक्म है? क्या मुझे उसके हुक्म के बिला मार सकता है? उसने रोज़ेअज़ल से ऐसा ही लिखा था कि अशफाक तुझको फाँसी पर मरना है और जब तू मरेगा तो कोई तेरे पास तेरे आइज्ज़ा व अकरूबा व अहबाब में से न होगा। पर हुक्म खुदाबंदी पूरा होकर रहेगा और ऐसा ही होता चला आया है। मैं यह लिख देना चाहता हूँ कि मैं ब इतमीनान और पुरसुकून मौत मर रहा हूँ। हुक्म खुदा ऐसा ही था और वह अटल है, होकर रहेगा। मौत सबके लिए है और सब मरेंगे। दुनियावी तकलीफ, माद्दी बंदिशें, इनसानी क्यूदात सब पीर के रोज तक खत्म हो जायेगी और मेरी रूह इस कफ से अंसरी से आजाद हो जायेगी। तब दूसरी मंजिल सामने है, देखिये वहाँ कैसी गुजरे। यह उनकी बखशीश व करम पर मुनहसिर है। सफर दरपेश है, जादेराह पास नहीं। बस उसी की उम्मीदे करम पर खुश-खुश मर रहा हूँ। मैं तो आपको अलविदा कहता हुआ आप सबको और खसूसन आपको बकीया जिन्दगी में वक्फे-नौहा व बुका करके उस तरफ जा रहा हूँ जहाँ से आया था और फिर वापस जाने का वायदा था। वायदा पूरा करना है। आप सबके सामने राहे अमल क्या है? मैंने तो बुरा किया या अच्छा। मैं इकरार करता हूँ कि मेंरी जिन्दगी की इतनी बरसें गुमराही, मासियत, सियाकारी और गुनाहों में गुजरी उसके लिए मेरे दोस्त, मेरे अजीज मेरे भाई और मुख्तसिर यह कि हर हमदर्द मुसलमान दुआए मगफिरत करे और आप सब लोग सब्र कीजिए। सब्र तल्खअस्त व लेकिन बरे शींरी दारद- मुझे डर है कि आप घबरा न उठें और यह न कह बैठे कि जिसकी जवान औलाद मर जाए वह कैसे सब्र करे तो सुनिए, मेरी प्यारी माँ। खुदा ने मुझको आपके शिक्म से पैदा किया था। मेरी पैदाइश पर

खुशियाँ मनाई गयी थी। शुकराने अदा किये गये थे और किस्सा मुख्तसर यह कि मुझको आँखों का नूर और दिल का सुरूर समझा जाता था। आपने इस सिले में खुदा को क्या दिया कि उसने आपको एक इनसान की शक्ल में औलाद दी। आपसे जो भी पूछता था आप यहीं कहती थीं कि खुदा का बंदा है, खुदा ने दिया है। उसी की अमानत है और मैं अमानतदार हूँ। बस अब मालिक अपने गुलाम को तलब करता है। अमानत रखने वाला अपनी अमानत तलब करता है। आप खयानात न करे, न आपकी चीज थी न आपसे छीनी गई। इतने दिन के वास्ते आपको दी गई थी कि रखो, बाद को हम वापस ले लेंगे। अब वापस लिया जा रहा है फिर आपको क्या हक है कि रद्दोकद करें। क्या आपने हमेशा से यह सोचा था कि मुझे मौत कभी न आएगी। अरे, तुम भी जानती थी और मुझे भी मालूम था कि हम तुम सब मरेंगे, कोई आगे कोई पीछे। या तो मुझको रोना पड़ता तुम्हारे लिये या तुम्हें मेरे लिए। उसका मंशा यह था कि बूढ़ी माँ जवान औलाद को रोयेगी और बाकीया तीन भाई अपने छोटे भाई का मातम करेंगे। तो क्या कोई आज इस दुनिया में इतनी ताकतवाला है कि खुदाबंद के अहकाम पलट दे? कोई नहीं। अपने खानदान ही में कितनी ऐसी माएँ हैं जो बुढ़ापे में जवान औलाद का दाग खोए बैठी हैं और कितने ऐसे भाई हैं जो अपनी आँखें अपने भाई के लिए सुर्ख कर चुके है और कितनी ही बहनें, भावजें, भतीजियाँ, भतीजे, भानजियाँ, भानजे हैं जो कि भाई, देवर, चाचा, मामू के लिए सीनाकोबी कर चुके हैं। दुनिया का यही धंधा है। दुनिया नाम ही उसका है। अगर मरना न होता तो जिन्दगी का फायदा ही क्या था। अगर रात न हो तो दिन में लज्जत ही क्या। अगर गम न हो तो शादी-ब-मंजिले ग़म है। गरज कि दुनिया एक माज़ने मुरक्कब है। जिसमें सब जाइके हैं। ऐशो मसर्रेत, गमों अंदोह, आराम व तकलीफ, गफ्लत व बेघणी, नेकी व बदी, मौत व जीस्त, गरज कि हर चीज यहाँ मिलेगी।

पास खुशकिस्मत वह है जिसने अच्छी बातें कुबूल की और बुराइयों से परहेज किया। गलफत पर होशियारी की तरजीह दी और माबूदे हकीकी की याद में लगा और होशियार रहा अपने फराइज़ की अदायगी में। नेकी को कबूल किया और बदी को ठुकराया। अबदी आराम की खातिर तकलीफ बरदाश्त की और इबादत में मसरूफ रहा, मौत को पेशेनजर रखा और जीस्त ही में सामाने आसरत जमा कर लिया।

ऐश व इशरत में पड़कर गफलत नहीं की और पेश आने वाले गम व अंदोह का खटका महसूस करता रहा। जिसने इन बातों को अख्तियार किया और हर मुसीबत व तकलीफ व आराम व राहत को मिनजानिब अल्लाह तस्सवर किया और उसकी निआमतों का शुक्रिया अदा किया। इसाइब व तकलीफ पर सब्र किया और कहा कि यह सब मिन जानिब अल्लाह हैं।

दोस्त का दिया हुआ जहरेहलाल भी शहद मसफ्फा ख्याल किया और सब्र किया, शुक्र किया यस राजी का लिया उसे जो कौनैन का मालिक और मशरिक व मगरिब का रब है। क्या तुम इसके ख्वाहिशमंद नहीं हो कि खुदा तुम्हारा पैदा करने वाला है और जिसके सामने तुम्हें जाना हैं, तुम्हें अपना दोस्त कहकर पुकारे। अरे दुनिया उसकी मुतयन्नी है और वह हमको अपना दोस्त कहे। आज मौत के सामने बैठा हुआ अशफाक कुछ ख्वाहिश नहीं रखता, मगर हाँ यह कह दे कि अशफाक मैं तुमसे राजी हूँ और तू मेरा बंदा है मैंने बंदानी में कबूल किया। वह कहता है कि ऐ ईमान वालो! बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। दूसरी जगह फरमाता है यानी खुशखबरी सुना दो उन सब्र करने वालों को कि जब कोई उनको मुसीबत पहुँचती है तो कहते हैं कि बेशक हम अल्लाह ही के हैं और बेशक हम उसकी तरफ लौटने वाले हैं। फिर फरमाता है यानी यही हैं जिसपर बरकत है उनके रब की तरफ से और रहमत है। यही लोग हिदायतवाले हैं। यह कौल आपको जनाबे बारी के लिख दिए। अब समझना न समझना आपका काम है।

आपका सब्र व शुक्र आपको उसके दरबार में मकबूल व मुकर्रब करेगा और अगर खुदानाख्वास्तां आप हद से आगे बढ़ गई तो आप खुद समझदार और पढ़ी-लिखी हैं। आपका नाल ओशेवन, आहवजारी, सीनाकाबी, मुझको जिन्दा नहीं कर सकती, न मौत से बचा सकती है। हाँ सब्र करना, कलमा व दरूद पढ़ना और बख्शना मेरे लिए कुछ सूदमंद साबित हो जाए।

यस मेरी अच्छी माँ मेरी खताएँ माफ फरमाकर मशगूले-खुदा हो जाओ। उसकी मर्जी यही थी और कौन है जो उसके हुक्म को टाल सके। मुझसे आपको दुख पहुँचा। आपका बुढ़ापा बरबाद हो गया। आपकी जिन्दगी जीक में पड़ गई। मैंने की। हाँ जाहिर असबाब में से एक मैं भी हूँ। मगर मौला की मरजी और उसका हुक्म पोशीरा रहता है। समझदार मिनजानिब अल्लाह हर बात को समझते है और ना समझ इन्साफों की तरफ खयाल दौड़ाते हैं। इससे कब्ल एक कार्ड फैसले के मुतमाल्लिक मिला होगा। कैसे मजे की बात है कि मैं अपने कलम से अपनी मौत की खबर आपको पहुँचा रहा हूँ। मैंने एक किताब लिखना शुरू की थी और वह तकमील को न पहुँच सकी। खैर मालिक की मरजी ही न थी जिसमें मेरा मकसद बच्चों के लिए नसीहत करना था। खैर उनके लिए जो मैदाने अमल है और जो सामने आए उस पर गामजन न हो। मुझे जो लिखना है थोड़ा-थोड़ा सब लिख दूँगा क्योंकि अब वक्त मेरे पास मजमून तिगारी व कलम फरसाई का नहीं हैं मुख्तसर-मुख्तसर सब को लिख दूंगा। सब अपना-अपना मतलब निकाल लें। मुझे तो सबसे जरूरी आप को लिखना था और यूँ तो ये मजमून वाहित तस्सवुर किया जाए।

सभी से सब्र की गुजारिश है और सब्र ही खुशी की कुंजी है। मुझे बूबू की भी परेशानियों का इल्म है और आप सबकी कोफ्त में ऐसे वक्त में इजाफा नए गम का है। मगर क्या मौला की मर्जी टाली जा सकती है? नहीं हरगिज नहीं। वह हर सूरत से आजमाइश कर रहा है। तुम सब्र को हाथ में न जाने दो। जो दोस्त की तरफ की खुशी व गम मिले

मुस्कराते हुए चेहरे और मुतमइन दिल के साथ कबूल करो कि फलाहे दीनी व दुनयवी हासिल कर सका। मैं कोशिश करूँगा कि यह खत तुमको मेरी मौत से पहले ही मिल जाए ताकि तुम्हारे दुख में कमी हो जाए और तुम सोच सको कि मरने वाला क्या बात है कि मरते हुए भी मुतमइन व खुश है-'फना है सबके लिए हमपे कुछ नहीं मैकूफ, बक़ा है एक फ़क़त जाते क़िब्रिया के लिए'। आदम अलेहिस्सलाम से लेकर इस वक्त तक कौन ऐसा है जो मरा न हो? जिसने बिसाते-आलम पर जिन्दगी के मोहरे बसाए और मौत के हाथों के सामने जरूर मात खाई, यस उसका गम बेकार है और आने वाली जरूर आने वाली बात के लिए परेशान होना सरासर गलती है। अब रहा मुहब्बत, डाह, मोह, प्रेम-ये सब दुनियाबी धंधे हैं। खुदा से मुहब्बत करो। उसको पूजो जो हमेशा जिन्दा व कायम रहेगा। तुम्हें अपनी बकीया जिन्दगी में कभी तो उसके लिए रोना नहीं पड़ेगा। बस उसी से मुहब्बत करो और उसी को समझो। अक्ली दलाइल, महजबी मसाइल, फलसफियाना बहस दुखे हुए दिल पर नमक-मिर्च का काम करते हैं। मैं खूब जानता हूँ कि आप सोंचेगी कि मैंने अपनी करतूतों से आपका बुढ़ापा खराब किया और भाइयों और दीगर आइज्जा की जिन्दगी दुख की जिन्दगी बना दी। मैंने क्या किया। मैंने कुछ नहीं किया। उसका हुक्म रोजेअजल से ऐसा ही था, सो होकर रहा। जो बात होने वाली होती है असबाब उसमें पेशतर से होना शुरू होते हैं और असबाब जब पायए तकमील को पहुँच जाते हैं, बात पूरी हो जाती है। यस मेरे लिए यह मौत और यह दिन था। सो मुझे मिला। और तुम्हारे लिए दुख, बुढ़ापे का धक्का और सीना सोबी लिखी थी वह तुम्हें मिल रही है। जो इसके लिए उसने मुनासिब समझा वह उसे तकसीम कर दिया। यस कौन है जो शिकवा करे और लब शिकायत के वास्ते खोले ....

तुम सबको गम उठाने के लिए इंतखाब किया और मुझे मन्सूरे वक्त बनाने का चुन लिया। मगर तुमको गिरियए याकूब अता किया तो मुझको सुन्नते यूसफी अदा करने के लिए पुकारा। अगर तुमको मातम कुनाँ मिस्ल खानदाने नबवी बनाना चाहा, बना दिया और मुझे मुत्तबए हुसैन शहीदेतेगेजफा के खिताब से नवाजा! उसकी शान निराली। उसकी अदा अनोखी, हर जगह नए रंग में हर तरफ नए रूप में, जलवागर है जो कुछ हुआ और जो होगा और हो रहा है उसकी मरजी से हो रहा है और होगा। पस कौन है जो सरताबी करे। और कौन है जो उसके हुक्म से बाहर जा सके। बस उसी पर नजर रखो और सब्र-करार हाथ से न जाने दो। शुक्र करो उसकी अमानत उसकी तरफ जा रही है और सानआ अपने मननूअ को बिगाड़ना चाहता है। फिर तुम कौन रोने वाली, तुम कौन तड़पने वाली? उसकी चीज थी उसको अखतियार है। सब्र करो, सब्र करो और बकीया जिन्दगी का बेशबहा वक्त मेरे लिए रोने में न सर्फ करो बल्कि उस सफर की तैयारी में लगाओ जो एक दिन दरपेश है। अबादत में मगफिरत है। गुनाहों में वक्त न गुजार दो क्योंकि यही काम आएगा। गफलत छोड़ो और उसको पकड़ो। दुनिया फना होने वाली है और तुम्हारा भी बुढ़ापा है। अच्छा मेरी खताएं माफ करो और मुझे अपने हकूक से सुबुकदोश करो। तुमको खुदा की अमान में दिया। तुम्हें नेक बीवी और साबिरा बीवी बनाए। आमीन!

भावजों और भाइयों! अलफराक बीनी व बीनकुम-तुम आपस में मिल-जुलकर रहना और दुनिया व बदकिस्मत माँ की खिदमत में लगी रहना और बकीया जिन्दगी को सकून से गुजरने का मौका देना। अगर तुम लोग ऐसे ही जो आपस में शिकवा व शिकायत करते रहे और शकररंजी तुम्हारे दरम्यान रही तो कुछ लुत्फ नहीं। शीरो शकर बनकर रहना और जुदा न होना। मेरी तो यही ख्वाहिश है और मुझे माफी देना। खुदा की मरजी यही थी।

भाईयों! तुमने इंतहाई कोशिश की मगर मौत और खुदा का हुक्म टाले से नही टलता और पूरा होकर रहेगा। तुम भी मजबूर हो रहे। सब्र-शुक्र करो। खुदा की मरजी ही यह है। मैं बताए देता हूँ कि मैं एक पुरसुकून मौत मर रहा हूँ। मैं नहीं कह सकता कि कौन ख्याल मुझे मस्त बनाए हुए है। फिर अंदर से फूला चला जाता है। मुझे कतई ख्याल ही नही गुजरता कि मुझे फाँसी दी जायेगी। मरेंगे तो सब ही, कुछ, मैं ही नहीं मर रहा हूँ। तुम खुदा पर नजर रखो और बजाए रोने-धोने के मेरे ईसाले सवाब में लगे रहना कि वहाँ काम आए। अब ज्यादा क्या लिखूँ। खुदा तुम सबको सब्रे जमील अता फरमाए और मुझ गुनहगार को जवारे रहमत में जगह दें।[1]

फकता अशफाक उल्ला खाँ

जेल की कोठरी से अशफाक द्वारा लिखे गये पत्रों को पढ़ने से उनकी मानसिकता को ठीक से समझा जा सकता है। अशफाक का व्यक्तित्व बहुत बड़ा था। वे परिवार के माध्यम से पूरे देश को देखते थे और अपनी संवेदना, अपना सच बयान करते थे। वे चिन्ता करते थे आने वाली पीढ़ियों का।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग-सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ 135-144

बनारस बम काण्ड में गिरफ्तार हुई शचीन्द्रनाथ बख्शी की बड़ी बहन नलिनी से भी खूब प्रभावित थे। अशफाक नलिनी को 'दीदी' कहते थे। नलिनी क्रांतिकारियों को आवश्यक संदेश भिजवाती थी। फाँसी घर से अशफाक ने नलिनी को एक मार्मिक पत्र लिखा है जो निम्नवत् है -

फाँसी घर
फैजाबाद जेल
16.12.1927

अलविदा

मेरी स्नेहमयी दीदी,

मैं अब दूसरी दुनिया में जा रहा हूँ जहाँ दुनियावी मुसीबतें नही रहेगीं और जीवन को ज्यादा उत्तम बनाने के लिए संग्राम करने की जरूरत होगी। जहाँ न मौत होगी न मरने का प्रश्न! दीदी! मैं मरने जा रहा हूँ वरन वस्तुतः अमरत्व प्राप्त करने जा रहा हूँ। जब कभी मेरे साथी बख्शी जी रिहा हों, उन्हें बताइएगा कि मैंने स्थिर मन तथा प्रसन्नचित्त होकर जिन्दगी की आखिरी साँस पूरी की है।

अगला सोमवार मेरे जीवन का अन्तिम दिन होगा। आपको मौका मिले, तो अंतिम बार इस भाई से मुलाकात कर जाइएगा। अगर अनुकूल परिस्थिति न हो, तो आप सब लोगो से हमेशा के लिए यही से विदा लेता हूँ। मेरा आखिरी प्रणाम स्वीकार कीजिए और विदा दीजिए। आपको बाद में पता चलेगा कि मैंने मृत्यु को कैसे अपनाया है। खुदा आप सबके साथ रहे। बाबा को मेरा विनम्र प्रणाम कहिएगा। सावित्री, गौर, कानू तथा अन्य बच्चों को प्यार। नेपाल को मेरा नमस्कार। सब बड़ों को प्रणाम तथा छोटो को प्यार। मेरी यह अभिलाषा है कि आप सबको एक बार फिर से देखूँ। अगर सम्भव हो तो आप लोग आ जाइएगा। खुदा का ख्याल कीजिए और मेरे लिए दुखी न होइएगा। मेरे विषय में बख्शी जी को खबर दीजिएगा।

मैं आपको अपनी दीदी मानता हूँ। आप मुझे भूलेंगी नहीं। प्रसन्नचित रहिए यह भी जानिए कि मैं वीरगति प्राप्त कर रहा हूँ। सबको प्रणाम।[1]

आपका,

अशफाक उल्ला खाँ

वारसी,

(मूल हस्ताक्षर अंग्रेजी में)

अपठनीय हस्ताक्षर ----------------

मोहर
ले0कर्नल आई0ए0एस
सुप0 जेल, फैजाबाद।

अशफाक उल्ला की समझ व्यापक है वे एकता के पक्षधर थे खासतौर पर साप्रदायिक एकता के। राम प्रसाद बिस्मिल के विषय में उनकी मित्रता और विचार उल्लिखित ही है और यह पत्र-भाषा से ही ज्ञात होता है कि वे हिन्दुस्तानी होने का गर्व महसूस करते हैं। हिन्दू को हिन्दी शब्दों से सजा कर पत्र लिखने वाले अशफाक में साप्रदायिक एकता की कितनी मजबूत संवदेना पल रही थी, यह ज्ञात होता है। अशफाक अपने परिचितों के परिवार का भी हाल चाल लेना, संदेश देना नही भूलते।

अशफाक उल्ला खाँ की काव्य रचनाएँ -

(1)

- बहार आई हुई शोरिश जुनूने फ़ितना सायाँ की,
  इलाही खैर करना तू मेरे ज़ेबो गरीबाँ की।
- सही जज़बाते हुर्रियत कहीं मेटे से मिटते हैं,
  अबस हैं धमकियाँ दारोरसन की और जिंदाँ की।

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 145

- वह गुलशन जो कभी आजाद था गुज़रे जमाने में,
  मैं शाखे खुश्क हूँ हाँ हाँ उसी उजड़े गुलिस्ताँ की।
- नहीं तुमसे शिकायत हम सफीराने चमन मुझको,
  मेरी तकदीर ही में था कफस और कैद जिंदाँ की।
- करो जब्ते मुहब्बत गर तुम्हें दावाएं उलफत है,
  खामोशी साफ बतलाती है ये तस्वीरे-जानाँ की।
- यू ही लिक्खा था किस्मत में चमन पैराये-आलम ने,
  कि फ़स्ले-गुल में गुलशन छूटकर है कैद जिन्दाँ की।
- जमीं दुश्मन जयाँ दुश्मन जो अपने थे पराये हैं,
  सुनोगे दास्ताँ क्या तुम मेरे हाले-परीशाँ की।
- ये झगड़े और बखेड़े मेटकर आपस में मिल जाओ,
  थे तफरीके अगस है, तुम में हिन्दू और मुसलमा की।
- सभी सामाने-इशरत थे मजे से अपनी कटती थी,
  वतन के इश्क ने मुझको हवा खिलवाई जिंदाँ की।
- खुदा वाकि़फ है जैसी भी गुज़रती है गुज़रती है,
  सुनोगे दास्ताँ क्या यार तुम बीमारे-हिजराँ की।
- मिसाले-कैस दीवाना किसी लैला की खातिर में,
  महीनों ठोकरें खाया किया को हो बियाबाँ की।
- बहमदल्ला चमक उठ्ठा सितारा मेरी किस्मत का,
  कि तकलीदे-हकीकी की अता शाहे-शहीदाँ की।
- इधर खौफे-खिजाँ है आशियाँ का डर उधर दिल को,
  हमें यकसाँ है तफ़रीहे-चमन कै़द और जिंदा की।

- ज़िब हसाई दरे-हज़रत की हसरत अपना ईमाँ है,
  मुबारक हज़रते वाइज़ को ख्वाहिश बागे-रिज़्बा की।[1]

(2)

- वह रंग अब कहाँ है नसरीनो नसतरन में,
  उजड़ा पड़ा हुआ है क्या ख़ाक वतन में।
- कुछ आरजू नही हैं, है आरजू तो यह है,
  रख दे कोई ज़रा-सी खाके-वतन कफ़न में।
- ऐ पुख्ताकारे उलफ्त हुशियारे डिग न जाना,
  मेराज़े आशिकाँ है इस दार और रसन में।
- था नारए-अनहलक़ और दवाए मुहब्बत,
  रखा हुआ था और क्या मन्सूरो कोहकन में।
- मौत और जिंदगी है दुनिया का एक तमाशा,
  फरमान कृष्ण का था अर्जुन को बीच रन में।
- जिसने हिला दिया है दुनिया को एक पल में,
  अफ़सोस क्यों नहीं है वह रूह अब वतन में।
- ऐ खायनीने मिल्लत में खूब याद रखना,
  हैं बोस और कन्हाई अब भी बहुत वतन में।
- सैयाद जुल्म पेश आया है जब से हसरत,
  है बुलबुले क्ररुस में जागो जगन चमन में।[2]

---

1. काकोरी शहीद स्मृति, भगवान सिंह माहौर पृष्ठ -228
2. काकोरी शहीद स्मृति, सम्पादक-भगवानदास महौर पृष्ठ -227-228

हमारी तरह से है और भी कई दिलगीर,
फिराये देखिये हमको कहाँ-कहाँ तकदीर।
असीरे गर्दिशे लैलो निहार हो के चले।।

- तिरे ही वास्ते आलम में हो गये बदनाम,
तिरे सिवा नहीं रखते किसी से हम कुछ काम,
तिरे ही नाम को जपते हैं हम तो सुबहो शाम,
वतन न दे हमें तर्के-वफा का तू इलजाम।
कि आबरू पे तेरी हम निसार हो के चले।।[1]

(5)

- वह असीरे-दामे-बला हूँ मैं जिसे साँस तक भी न आ सके।
वही कतीले-खंजरे-जुल्म हूँ जो न आँख अपनी फिरा सके।।
- मिरा हिन्दूकुश हुआ हिंदूकुश ये हिमालिया है दिवालिया।
मेरी गंगा-जमुना उतर गई है बस इतनी है कि नहा सके।।
- मिरे बच्चे भीख है माँगते, उन्हें टुकड़ा रोटी का कौन दे।
जहाँ गावे कहें परे-परे, कोई पास तक न बिठा सके।।
- मिरे कोहेनूर को क्या हुआ, उसे टुकड़े-टुकड़े ही कर दिया।
उसे खाक में ही मिला दिया, नहीं ऐसा कोई कि ला सके।।[2]

(6)

- नही अपनी हालत है बताने के काबिल।
नही माज़रा ये सुनाने के काबिल।।

---

1. काकोरी शहीद स्मृति, सम्पादक-भगवानदास माहौर, पृष्ठ -230
2. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग,सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -85

जुबाँ तक नहीं हम हिलाने के काबिल।

- बुजुर्गों का किस मुंह से हम राग गाएँ।
  जब इकगुन भी उसका न अपने में पाएँ।
  किसी को नहीं मुँह दिखाने के काबिल।।
- चमन में खिज़ा अपने इठला रही है,
  कपायत गुलों-गुंचों पर आ रही है।
  जमी चर्ख़ बनकर सितम ठा रही है,
  सुनो रो के बुलबुल ये क्या गा रही है।
- कभी खार था इसका बागे-अदन को,
  नजर हाय किसकी लगी इस चमन को।।
- कभी यों न उजड़ा था मसकन किसी का,
  न यों जल गया होगा खिरगन किसी का।
  हरदयाल आता है यूरोप से न पाल आता है,
  दिल में रह-रह के बस इतना खयाल आता है।
  भरने जाते हैं कहीं उम्र के पैमाने को,
  हिन्द को छोड़ते हैं रंज़ोअलम खाने को[1]

(7)

- उरूजे-कामयाबी पर कभी हिंदोस्ताँ होगा,
  रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशियाँ होगा।
- जुदा मत हो मिरे पहलू से ए दर्दे-वतन हरगिज़,
  न जाने वादे मुरदन मैं कहाँ, और तू कहाँ होगा।

---

1. अशफाक उल्ला खाँ और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ -86

- वचन की आबरू का पास देखें कौन करता है,
  सुना है आज मक़्तल में हमारा इम्तहाँ होगा।
- ये आये-दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ खंज़रे-क़ातिल,
  बता कब फैसला उनके हमारे दरमिया होंगा।
- शहीदों के मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले,
  वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशॉ होगा।
- कभी वो दिन भी आएगा जब अपना राज़ देखेंगे,
  जब अपनी ही ज़मी होगी, जब अपना आसमाँ होगा।[1]

(8)

- जमाना बना यूँ न दुश्मन किसी का,
  खिज़ाँ से लुटा यूँ न गुलशन किसी का।
- रहा एक बुलबुल भी जिसमें न बाक़ी,
  फ़साना जो उजड़े चमन का सुनाती।
- हमें खाक़ में वो मिलाये हुए हैं,
  ज़माने के रौंदे सताये हुए हैं।
  तनज्जुल के चक्कर में आये हुए हैं,
  कि अपने ही घर में पराये हुए हैं।
- ये सब कुछ सही है, मगर जान तन में है,
  शरारा है ये अपने ठंडे अगन में।।[2]

---

1. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ - 159-160
2. अशफाक उल्ला खाँ, भवान सिंह राणा, पृष्ठ - 160

(9)

- नहीं ग़रचे अब वे हरारत दिलों में,
वही खून बाकी है लेकिन रंगों में।
जुनूँ ग़रचे बाकी नहीं अब सरों में,
मगर अलोगिल है वही हड्ड़ियों में।
- लटे भी तो हाथी लटेगा कहाँ तक,
समंदर घटे से घटेगा कहाँ तक।
- नही गरचे रौनक वो अपने चमन में,
न वो रंग-बू है गुले-यासमन में।
है मुद्दत से गो अपना सूरज गहन में,
मगर खूँ तो है वो ही अपने बदन में।
- वह स्थान गंगोतरी का पवित्तर,
पिथौरा की लाट और उदयपुर के पत्थर।
हिमालय की वे चोटियाँ सर उठाकर-
इक आवाज़ से कह रही है बराबर -
कि, जब तक हैं हम इनको मरने न देंगे।
फना का इन्हें जाम भरने न देंगे।।[1]

(10)

- ख्याल आता है जिस दम दिल में चुभता है सिनाँ होकर,
रहे क्यों कब्ज़ा-ए-अग़ियार में हिन्दोस्ताँ होकर।

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ 87-88

- शहीदाने-वतन का खून एक दिन रंग लाएगा,
  चमन में फूट निकलेगा यह बरगे-अर्गवाँ होकर।
- फ़कत दारोसन ही कामयाबी का ज़रिया है,
  मकासिद तक यह पहुँचाएगी हमको निर्दबाँ होकर
- नहीं वाकिफ़ ये मादर और पिदर इस अमरे-शुदनी से,
  कि आफ़त में पड़ेंगे उनके बच्चे नौजवाँ होकर।
- सता ले ऐ फ़लक़ मुझको जहाँ तक तेरा जी चाहे,
  सितम परवर सितम झेलूँगा शेरे नेसताँ होकर।
- करूँ मैं इन किलाबे दहर का शिकवा मआज अल्लाह,
  है तुफ़ मुझे पर डरूँ ग़र जेल से मैं नौजवाँ होकर।
- दलहता है कलेजा दुश्मनों का देखकर 'हसरत',
  चला करते हो जब बेड़ी पहनकर शादमाँ होकर।[1]

(11) **कुछ शेर-अशआर**

- आनी थी हमको मौत सो आई वतन से दूर,
  अब देखना ये है कि ये मिट्टी कहाँ की है।
- बहुत ही जल्द टूटेंगी गुलामी की ये जंजीरे,
  किसी दिन देखना आज़ाद ये हिंदोस्तां होगा।
- जिन्दगी बादेफ़ना तुझको मिलेगी हसरत,
  तेरा ज़ीना तिरे मरने की बदौलत होगा।

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -88-89

- वतन हमेशा रहे शादकाय और आज़ाद,
  हमारा क्या है अगर हम रहे रहे न रहें।[1]
- वह जुर्मे-आरजू पै जिस क़दर-चाहें सज़ा दे लें,
  मुझे खुद ख्वाहिशे-ताजीर है मुलजिम हूँ इकरारी।[2]
- बुज़दिलों को ही सदा मौत से डरते देखा,
  गो कि सौ बार उन्हें रोज़ ही मरते देखा।
  वीर को मौत से हमने नहीं डरते देखा,
  तख्तये मौत पे भी खेल ही करते देखा।
- मौत इक़ रोज जब आनी है तो डरना क्या है,
  हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है।[3]
- तंग आकर हम भी उनके जुल्म के बेदाद से,
  चल दिए सूए-अदम ज़िंदाने फैज़ाबाद से।
  जबकि गैरों से उन्हें इक दम की भी फुरसत नहीं,
  फिर वह क्यों मिलने लगे अब हसरते-नाशाद से।
- बाइसे नाज़ जो थे अब वह फ़साने न रहे,
  जिन तरानों में मज़ा था वह तराने न रहे।
  घर छूटा बार छूटा एहले वतन छूट गए,
  माँ छूटी, बाप छूटा भाई बहन छूट गए।

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ -89
2. भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, मन्मथनाथ गुप्त पृष्ठ -201
3. काकोरी शहीद स्मृति, सम्पादक-भगवानदास माहौर, पृष्ठ -230

- अपना यह अहद सदा से था कि मर जायेंगे,
  नाम माता तेरे उश्शाक में कर जायेंगे।[1]
- कौन वाकिफ था कि यूँ सर पे बला आएगी,
  बैठे बिठलाए हुकूमत यह गज़ब ढायेगी।
- फना है सबके के लिए हम पे कुछ नहीं मौकूफ़,
  बक़ा है एक फ़क्त जाते किब्रिया के लिए।
- तनहाई गुरबत से मायूस न हो 'हसरत',
  कब तक न खबर लेंगे याराने-वतन तेरी।[2]

(12) **अशफाक की एक हिन्दी कविता**

- हे मातृभूमि तेरी सेवा किया करूँगा।
  फाँसी मिले मुझे या हो जन्म कैद मेरी,
  बेड़ी बजा-बजाकर तेरा भजन करूँगा।[3]

(13) **अकीदत के फूल**

- जुबाने हाल से अशफाक की तुरबत ये कहती है।
  मुहब्बाने वतन ने क्यों हमें दिल से भुलाया है।।
  बहुत अफ्सोस होता है बहुत तकलीफ होती है।
  शहीद अशफाक की तुरबत है और धूमों का साया है।।[4]

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ -90
2. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 90
3. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी, पृष्ठ 91
4. काकोरी शहीद स्मृति - सम्पादक- भगवानदास माहौर, पृष्ठ -231

अशफाक उल्ला खाँ अपने नाम के आगे वारसी लगाते थे और **'हसरत'** उपनाम से कविताएँ लिखा करते थे। उनकी काव्य रचना पर एक दृष्टि देने पर ज्ञात होता है कि वे उच्च कोटि के शायर थे, शायरी पर उनका अधिकार था। उन्होंने अच्छी गज़लें कहीं है, वही कत्आत, नज्मों में भी कम नहीं दिखते। कविता में उनकी आंतरिक वेदना, संवेदना, भावना का पता चलता है। कुछ रचनाएँ तो दार्शनिक भाव से कही गयी है तो कुछ आत्मलाप की मुद्रा में। उनकी रचनाओं से स्पष्ट है कि वे सिर्फ क्रांतिकारी ही नही थे, भावुक हृदय कवि भी थे। कहीं वे सरकारी वकील पर व्यंग्य करते हैं तो कही बसंत के आगमन की मस्ती। इस्लाम में उनका विश्वास था लेकिन वे सभी धर्मों का आदर करते थे। यह उनके व्यक्तित्व की खास पहचान थी। कुल मिलाकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व रेखांकित करने योग्य, प्रेरणा के योग्य और युवाओं के आदर्श।

अशफाक की कुछ अन्य कविताएं भी (गज़लें) रेखांकित करना आवश्यक है, जो उनके व्यक्तित्व को (काव्य प्रतिभा) निखारता है :-

''पहिनाने वाले अगर बेड़िया पहनाएँगे।
खुशी से कैद के गोशे को हम बसाएँगे।।
जो सन्तरी वीर जिन्दा के सो भी जाएँगे।
वह राग गा के उन्हें नींद से जगाएँगे।
तलब फजूल है काँटे को फूल के बदले।
न ले बहिश्त भी हस होमरुल के बदले।।
सन्तरी देख कर इस जोश को शरमाएँगे।

राग जंजीर की झन्कार में हम गायेंगे।।[1]
''सितमगर अब यह आलम है तेरे बीमारे फुरकत का।
लबों पर दम है दिल में बलबला शौके शहादत का।।
मेरी दीवानगी पर चारागर हैरां न हो इतना।
यही अंन्जाम होना चाहिए नाकाम उलफत का।।
बुताने संग दिल सुनते नहीं फरियाद बेकस की।
निराला ढंग है उन खुदपरस्तों की हुकूमत का।।
मिटाकर जानो दिल अपना किसी जालिम जफाजू पर।
तमाशा अपनी आँखों देखता हूँ अपनी किस्मत का।।
हविस हूरों की हो जिसमें दिलाये याद गिल्मां को।
जनाबे शेख़ मैं कायल नहीं ऐसी रियाज़त का।।
बर आएँ हसरतें हासिल सकूने कल्ब मुज़तर हो।
कहाँ ऐसा मुकद्दर हाय मुझ बरमश्ता किस्मत का।।
मज़ा जब है कि वह कह उठें 'अशफाक' उनका क्या कहना।
गज़ल है या मुरक्का है तेरे वक्ते मुसीबत का।।''[2]

अशफाक की काव्य रचनाएँ आजादी के उद्गार हैं। यही नही वे देश प्रेमी होने का दावा भी करते हैं। अपनी मिट्टी से प्यार की बुलन्दी छूने वाले अशफाक ऐसे वियोगी जान पड़ते है जिसमें उनका देश प्रेम छूट रहा है या यूँ कह ले कि वे कुछ और करना चाहते थे। अशफाक की कविताएँ सदैव प्रेरणा देती रहेंगी और इतिहास की थाती साबित होगी।

---

1. रामप्रसाद बिस्मिल, रचनावली, सम्पादक-दिनेश शर्मा, पृष्ठ -188
2. राम प्रसाद बिस्मिल रचनावली, सम्पादक-दिनेश शर्मा, पृष्ठ -188

अध्याय-दस

अध्याय-दस

उपसंहार

अशफाक उल्ला खाँ का जीवन साम्प्रदायिक एकता और देश को स्वतंत्र करने की मानसिकता में बीता। यही कारण था कि वे एक आदर्श युवा की भाँति युवाओं में प्रेरणा के स्तम्भ बने रहे। अशफाक के बलिदान के बाद तमाम प्रतिक्रियाएं हुई और अशफाक की भरपूर सूचना ली गयी। वे मिसाल बन गये। यह बात और है कि अशफाक की फाँसी से युवा वर्ग निराश जरूर हुआ लेकिन वहीं वह ऊर्जा को भरकर नये भारत की कल्पना में आ गया।

क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा से निराशा व क्षोभ तो हुआ और इसे बनारस से प्रकाशित होने वाले दैनिक समाचार पत्र ने जनता की इस असहाय स्थिति पर खेद भी प्रकट किया। इलाहाबाद से प्रकाशित पत्रिका **'चाँद'** (नवम्बर 1928) अंक फाँसी विशेषांक के रूप में निकला।[1]

अखिल भारतीय कांग्रेस ने अपने अधिवेशन में सरकार की तीव्र आलोचना की कि उसने जनता की भावनाओं की उपेक्षा करके क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा दी। क्रांतिकारियों के परिवार के प्रति कांग्रेस ने अपनी सहानुभूति प्रदान की।[2]

अशफाक उल्ला खाँ अपने खानदान पर लगे दाग धो देना चाहते थे और उन्होंने अपने कृतित्व से यह दाग धो भी डाला। अशफाक का प्रारम्भिक जीवन सिर्फ खेलकूद में ही नहीं वरन् देश की चिन्ता और आम लोगों को शोषण से निजात दिलाने के वैचारिक मंथन में बीता। वे हमेशा धीर-गम्भीर बने रहते और कभी अपनी सुन्दरता और देह बल का अभिमान न करते।

1.स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान-डॉ०एन.सी.मेहरोत्रा पृष्ठ144
2.दि हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल काँग्रेस, भाग-एक-पृष्ठ 540,पट्टाभि सीतारमैया

हाँ इतना अवश्य था कि उन्हें अपने बल पर विश्वास था। खुद के विचारों में स्वस्थ्य मानसिकता बना लेना अशफाक की खूबी थी। देश के सशस्त्र क्रांति के प्रयास में अपने जीवन की आहुति देने वाले अशफाक उल्ला खाँ ने जब क्रांतिकारी आन्दोलन में प्रवेश किया तो वे छात्र ही थे। फाँसी के समय उनकी उम्र मात्र 27 वर्ष की थी। अशफाक का क्रांतिकारी जीवन लगभग सात वर्ष का रहा और इतने ही अल्पकाल में वे देश की राजनीति और समाज की धड़कन से परिचित हो गये थे। अशफाक उल्ला खाँ सिर्फ एक सिपाही ही नहीं थे कि लड़े और मृत्यु को प्राप्त हो गये। वे हमारे समय के क्रांतिकारियों में प्रखर चिन्तक के रूप में भी हमारे बीच उपस्थित होते हैं। उनकी कविताएँ एवं उनके वैचारिक लेख और राष्ट्र के नाम संदेश तथा उनके द्वारा लिखे गये पत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि वे किस हद तक वैचारिक धरातल पर दृढ़ थे। यह स्पष्ट है कि क्रांतिकारी गतिविधियों, फरारी जीवन, जेल की जिन्दगी में से ऐसा समय ही नहीं मिला कि वे बाकायदा अपने विचार लिपिबद्ध कर पाते।

इन्ही में से समय निकाल कर जो उन्होंने लिखा है वह बहुत थोड़ा है, जिसे पढ़कर लगता है कि वे चाहते हुए भी अपने सोचे हुए को कागज पर उतार नही सके। वे बहुत कुछ लिखना चाहते थे, वे बच्चों के लिए पुस्तकों की रचना करना चाहते थे, उन्हें भावी पीढ़ी की बहुत चिन्ता थी, लेकिन उनकी इच्छा अधूरी रह गयी। उनके लिखे पत्रों, कविताओं और डायरी में लिखे अंशों से हमें उनके जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं।

देश की स्वतंत्रता और हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए शहीद होने वाले अशफाक ने फाँसी से पहले अपनी डायरी में हिन्दुस्तान का नक्शा भी बनाया था और देखने से लगता है कि वे खूब रोये थे। सुनने-देखने में यह भी आता है कि आँसुओं के निशान अभी तक ज्यों के त्यों हैं।

आज भी देश के नाम उनका संदेश प्रासंगिक है। उनकी कविताएं हमें एक सूत्र में बाँधती हैं।

न कोई इंगलिश, न कोई जर्मन,
न कोई रशियन, न कोई तुर्की।
मिटाने वाले है अपने हिंदी,
जो आज हमको मिटा रहे हैं।

यह कहना सर्वथा गलत है कि क्रांतिकारियों के पास कोई विचार नहीं था। अपने संदेश में अशफाक ने स्पष्ट कहा है कि वे किस तरह की आज़ादी चाहते हैं। अशफाक की कल्पना समाजवादी थी, जहाँ कोई ऊंच है न नीच। अशफाक ने किसान, मजदूरों की तरक्की की बात भी कही। वे कारखानों और गांवों में लोगों के बीच जमकर काम करने में विश्वास रखते थे। अशफाक शोषण के कारणों की बात करते है और उसके खिलाफ जंग लड़ने की बात करते हैं।

देश वासियों के नाम भेजा गया संदेश

''बिरादराने वतन की खिदमत में उनके उस भाई का सलाम पहुँचे जो उनकी इज्जत व नामू से वतन की खातिर फैजाबाद जेल में कुर्बान हो गया। आज जबकि मैं यह पैगाम बिरादराने वतन को भेज रहा हूँ, इसके बाद मुझको तीन दिन और चार रातें और गुजारनी हैं और फिर मैं हूँगा और आगोशे मादी वतन होगा। हम लोगों पर जो जुर्म लगाये गये थे वह इस सूरत में पब्लिक में लाए गये कि हमको बहुत से लोग गेरेतालीमयाफ्ता या हुकूमत के दस्तरख्वान की पसेखुर्दा हड्डियाँ चचोड़ने वाले थे, डाकू, खूनी, कातिल के लकब से पुकारा किए। मैं आज इस फाँसी की कोठरी में बैठा हुआ भी खुश हूँ और अपने उन भाइयों का शुक्रिया अदा करता हूँ। और कहूँगा -

मर मिटा आप पै कौन! आपने यह भी सुना,

आपकी जान से दूर! आप से शिकवा है मुझे।

खैर यह तुम्हारा फैल है कि हमारी कुर्बानियों को कबूल न करो और यह हमारा फर्ज है कि बार-बार ठुकराओ मगर हम तुम्हारा ही दम भरे जायेंगे। बिरादराने वतन, मैं उसी पाक व मुकद्दस वतन ही की कसम खाकर कहूँगा कि हम नंगे नामूसे वतन पर कुर्बान हो गए। क्या यह शर्म की बात नहीं कि हम अपनी आँखों से देखते कि नित नए मुज़ालिम हो रहे है और गरीब हिन्दुस्तानी हर हिस्साये मुल्क और खित्तयेदुनिया में जलील और रुसवा हो रहे हैं और कहीं न ठिकाना है न सहारा। किस्सा मुख्तसर ये कि हमारा वतन भी हमारा नहीं। हम पर टैक्स की भरमार, हमारी माली हालत का रोज बरोज गिरते जाना, 33 करोड़ बहादुर हिन्दुस्तानी हिन्दू और मुसलमान भेड़-बकरियों की मानिंद बनाए गए। हमारे गोरे आका हमें ठोकरे मार दें तो बाज-पुर्स न हो। जनरल डायर जलियावाला बाग को नमूनये हशर बना दे। हमारी माताओं की बेइज्जती करें। हमारे बूढ़ों और बच्चों पर बम के गोले, गन-मशीनों की गोलियाँ बरसाएं और हर नया दिन हमारे लिए नई मुसीबते लेकर आए। फिर भी हम बादये गफलत रहें और ऐशो-इशरत में अय्यायें- जवानी गुजार देते। यह खयाल करके -

जनूने हुब्बे वतन का मजा/शबाब में हैं,

लहू में फिर यह रवानी रहे/रहे न रहे।

जो भी किया, भला किया, आज हम नाकाम रहे, डाकू हैं। कामायाब होते मुहिब्बते वतन के पाक लकब से पुकारे जाते। और जो भी आज हम पर झूठी गवाहियाँ दे गए, हमारे नाम के जयकारे लगाते -

बहे बहरे फना में जल्द/यारब लाश बिस्मिल की,

कि भूखी मछलियाँ हैं/जौहरे शमशीरे क़ातिल की।

आह! क्या ऐसे दौर की जिन्दगी प्यारी ख्याल की जा सकती है। जबकि हमारे ही गिरोह-सियासी में खलफिशार मचा है। कोई तबलीग का दिलददा है, जो कोई शुद्धि पर मर मिटने को बाइसेनिजात समझ रहा है। मुझे तो रह-रहकर इन दिमागों और अक्लों पर तरस आ रहा है जो कि बेहतरीन दिमाग हैं और माहरीने सियासत हैं। काश कि वह अज़ादिए मिस्र की जद्दोजहद एहरारान मिस्र के कारनामें और बर्तानवी सियासी चाले स्टडी कर लें और हमारे हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत से मुकाबिला व मवाज़ना करें, क्या ठीक वही हाल इस वक्त नहीं है। गवर्नमेंट के खुफिया एजेन्ट प्रोपेगेंडा मजहवी बुनियाद पर फैला रहे हैं। इन लोगों का मकसद मजहब की हिफाजत या तरक्की नहीं है बल्कि चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना है। मेरे पास वक्त नहीं है न मौका है कि सब कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देता जो मुझे अय्यामे फरारी में और उसके बाद मालूम हुआ है। यहाँ तक मुझे मालूम है कि मौलवी नियामतुल्ला कादियानी कौन था कि काबुल में संगसार किया था। वह ब्रिटिश एजेन्ट था। जिसके पास हमारे करमफरमा खान बहादुर, तसद्दुम हुसैन साहब डिप्टी सुपरिटेंडेन्ट सी0आई0डी0 गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया पैगाम लेकर गए थे मगर बेदारमगज हुकूमत काबुल ने इलाज जल्द कर दिया और मर्ज को फैलने न दिया। मैं अपने हिन्दुओं और मुसलमान भाइयों को बता देना चाहता हूँ कि सब ढ़ोंग हैं, जो सी0आई0डी0 के खुफिया खजाने के रूपये से रचा गया है। मैं मर रहा हूँ और वतन पर मर रहा हूँ। मेरा फर्ज है कि हर नेको बद बात भाइयों तक पहुंचा दूँ। मानना न मानना उनका काम है। मुल्क के बड़े-बड़े लोग इससे बचे हुए नहीं हैं। बस आवाम को आँखे खोलकर इत्तबा करना चाहिए।

भाइयों! तुम्हारी खानाजंगी तुम्हारी आपस में फूट, तुम दोनों में से किसी के भी सूदमंद साबित न होगी। यह गैर मुमकिन है कि 7 करोड़ मुसलमान शुद्ध हो जाएँ और वैसे ही यह भी महमल-सी बात है कि 22 करोड़ हिन्दू मुसलमान बना लिए जाएं। मगर हाँ यह आसान है और बिल्कुल आसान है कि यह सब मिलकर गुलामी का तौक गले में डाल लें। ऐ वह कौम जिसका कोई कौमी झंडा नहीं-ऐ वह कि तेरा वतन मेरा वतन नहीं-ऐ कि दूसरों की तरफ हाथ फैलाए हुए रहम की दरख्वास्त पर नजर रखनेवाली बेकस कौम तेरी अपनी गलतियों का यही नतीजा है कि आज तू गुलाम है और फिर वही गलतियाँ कर रही है कि आने वाली नस्लों के लिए धब्बा गुलामी का छोड़ जाएगी कि जो भी सर जमीने हिन्द पर कदम रखेगा, गुलामी में रखेगा और गुलाम बनाएगा। ऐ खुदावंदे कुद्दूस क्या कोई ऐसा सबेरा नहीं आयेगा कि जिस सुबह को तेरा आफताब आजाद हिन्दुस्तान पर चमके और फिजाए हिन्द आजादी के नारों से गूँज उठे। कांग्रेस वाले हों कि सौराजिस्ट तलबीगवाले हो कि शुद्धिवाले, कम्युनिस्ट हो कि रिवोल्यूशनरी, अकाली हो कि बंगाली, मेरा पयाम हर फरजंदेवतन को पहुँचे। मैं हर शख्स को उसकी इज्जत व मज़हब का वास्ता देता हूँ। अगर वह मजहब का कायल नहीं तो उसके जमीर को और जिसको भी वह मानता हो, अपील करता हूँ कि हर काकोरी केस के मर जाने वाले नौजवानों पर तरस खाओ। और फिर हिन्दुस्तान को सन् 20 व 21 वाला हिन्दुस्तान बना दो। फिर अहमदाबाद कांग्रेस जैसा इत्तिहाद इत्तिफाक का नजारा सामने हो। बल्कि उससे बढ़कर हो और मुकम्मल आजादी का जल्द-से-जल्द ऐलान करके इन गोरे आकाओं को हटा दो कि ये अब केंचुली उतार चुके हैं और अब वह किसी मंत्र से बस में न होंगे-तबलीग व शुद्धी वालो खुदारा-आखें खोलो, कहाँ थे और कहाँ पहुँच गये, अपनी-अपनी शान खत्म करो, सोचो तो मजहब में जबरदस्ती इखतिलाफे राय पर जंग, एक काम नामुकम्मल छोड़कर दूसरी तरफ रुजू हो गये।

आज कौन ऐसा हिन्दू या मुसलमान है जो मजहबी आजादी इतनी रखता है कि जितना उसका हक है? क्या गुलाम कौम का कोई मजहब नहीं होता? तुम अपने मजहब का सुधार क्या कर सकते हो? तुम खुदा की इबादत पुरसुकून तरीके पर करो। तुम ईश्वर का ध्यान खामोशी से करो और दोनों मिलकर इस सफेद भूत को मंत्र से जंत्र से उतार भगाओ। इसी की यह सारी कार्यवाही है। जब यह भूत उतर जाएगा, हमारी आँखें खुल जायेंगी। आओ हमारी भी सुनो, पहले हिन्दुस्तान को आजाद करो, फिर कुछ और सोचना, खुदा ने जिसके लिए जो रास्ता मुंतखिब कर दिया है, वह उसी पर रहेगा। तुम किसी को भी नही हटा सकते। आपस में मिल-जुलकर रहो और मुत्तहिन्द हो जाओ नहीं तो सारे हिन्दुस्तान की बद बख्ती का वार तुम्हारी गर्दन पर है और गुलामी का बाइस तुम हो।

कम्युनिस्ट ग्रुप के अशफाक की गुजारिश है कि तुम इस गैरमुल्की की तसव्वुर करते हो, देसी चीजों से नफरत, विदेशी पोशाक और तर्जेमआशरत के दिलदादा हो, इससे काम नहीं चलेगा। अपने असली रंग में आ जाओ। देश के लिए जिओ, देश के लिए मरो। मैं तुमसे काफी तौर पर मुत्तफिक हूँ और कहूँगा कि मेरा दिल गरीब किसानों के लिए और दुखिया मजदूरों के लिए हमेशा दुखी रहा है। मैं अपने अय्यामे फरारी में भी अक्सर इनकी हालत देखकर रोया किया हूँ क्योंकि मुझे इनके साथ दिन गुजारने का मौका मिला है। मुझसे पूछो तो मैं कहूँगा कि मेरा बस हो तो मैं दुनिया की हर मुमकिन चीज इनके लिए वक्फ कर दूँ। हमारे शहरों की रौनक इनके दम से है। हमारे कारखाने उनकी वजह से आवाद और काम कर रहे हैं। हमारे पंपों से इनके हाथ का पानी निकालते हैं, गर्ज कि दुनिया का हर एक काम इनकी वजह से हुआ करता है। गरीब किसान बरसात के मूसलाधार पानी और जेठ-बैसाख की तपती दोपहर में भी खेतों पर जमा होते हैं और जंगल में मँडलाते हुए हमारी खुराक का सामान पैदा करते हैं।

यह बिल्कुल सच है कि वह जो पैदा करते है जो वह बनाते हैं उनमें उनका हिस्सा नहीं होता, हमेशा दुखी और मफलूकुल हाल रहते हैं। मैं इत्तिफाक करता हूँ कि इन तमाम बातों के जिम्मेदार हमारे गोरे आका और उनके एजेन्ट हैं। मगर इनका इलाज क्या है कि उनको उस हालत पर ले आएँ कि वह महसूस करने लगें कि वह क्या हैं। इसका वाहिद जरिया यह है कि तुम उन जैसी वज़ा किरा इख्तियार करो और जेंटिलमैनी छोड़कर देहात का चक्कर लगाओ। कारखानों में डेरे डालो और उसकी हालत स्टडी करो और उनमें एहसास पैदा करो। तुम कैथरीन ग्रांड मदर ऑफ रशिया की सवानेह उम्री पढ़ो और वहां के नौजवानों की कुरबानियाँ देखो। तुम कालर टाई और उम्दा सूट पहनकर लीडर जरूर बन सकते हो, मगर किसानों और मजदूरों के लिए फाइदेमन्द साबित नही हो सकते। <u>दीगर पॉलिटिकल जमाअतों से मुत्तहिद होकर काम करो और अपनी माद्दापरस्ती से किनारा करो कि यह फिजूल है जो तुम्हे दूसरी जमाअतों से अलग किये हुए हैं।</u>

मेरे दिल में तुम्हारी इज्जत है और मैं मरते हुए भी तुम्हारे सयासी मकसद से बिल्कुल मुत्तफिक हूँ। मैं हिन्दुस्तान की ऐसी आजादी का ख्वाहिशमंद था जिसमें गरीब खुश और आराम से रहते। खुदा मेरे बाद वह दिन जल्द आए जबकि छत्तरमंजिल लखनऊ में अब्दुल्ला मिस्त्री लोको वर्कशाप और धनिया चमार, किसान भी मिस्टर खलीकउज्जमा और जगत नारायण मुल्ला व राजा साहब महमूदाबाद के सामने कुर्सी पर बैठे हुए नजर पड़े। मेरे कामरेडो मेरे रिवोल्यूशनरी भाइयों -तुमसे मैं क्या कहूँ और तुमको क्या लिखूँ, बस अब तुम्हारे लिए क्या कुछ कम मुसर्रत की बात होगी, जब सुनोगे कि तुम्हारा एक भाई हँसता हुआ फाँसी पर चला गया और मरते-मरते खुश था। मैं खूब जानता हूँ कि जो स्प्रिट तुम्हारा तबका रखता है - चूँकि मुझको भी फख्र है और अब बहुत ज्यादा फख्र है कि एक सच्चा रिवोल्यूशनरी होकर मर रहा हूँ।

मेरा पयाम तुमको पहुँचाना फर्ज था, मैं खुश हूँ-मसरूर हूँ, मैं उस सिपाही की तरह हूँ जो फायरिंग लाइन पर हंसता चला जा रहा हो और खंदको में बैठा हुआ गा रहा हो। तुम्हें दो शेर हसर मोहानी साहब का लिख रहा हूँ -

जान को महवे गम बना दिल को वफा निहाद कर,
बंद ये इश्क है तो यू कता रहे मुराद की।
ऐ कि निजाते हिन्द की दिल से है तुझको आरजू,
हिम्मते सर बुलन्द से यास का इंसदाद कर।

हजार दुख क्यों न आएँ-बहरे जरव्वार दरमियान में मौंजे मारें-आतिशी पहाड़ क्यों न हायल हो जाएँ मगर ये आजादी के शेरों अपने-अपने गरम खून को मातृभूमि पर छिड़कते हुए और जानों को मातृवेदी पर कुर्बान करते हुए आगे बढ़े चले जाओ। क्या तुम खुश न होगे जब तुमको मालूम होगा कि हम हँसते हुए मर गए। मेरा वजन जरूर कम हो गया है और वह मेरे कम खाने की वजह से हो गया है। किसी डर या दहशत की वजह से नहीं हुआ है-और मैं कन्हाई लाल दत्त की तरह वजन न बढ़ा सका मगर खुश हूँ और बहुत खुश हूँ। क्या मेरे लिए इससे बढ़कर कोई इज्जत हो सकती है कि सबसे पहला और अब्वल मुसलमान हूँ जो आजादिए वतन की खातिर फाँसी पा रहा हूँ - मेरे भाइयो! मेरा सलाम लो और इस नामुकम्मल काम को, जो हम से रह गया है तुम पूरा करना। तुम्हारे लिए यू0पी0 में मैदाने-अमल तैयार कर दिया है, तुम्हारा काम जाने। इससे ज्यादा उम्दा मौका तुम्हारे हजार प्रोपेगंडे से न होता। स्कूल और कालेजों के तुलवा हमारी तरफ दौड़ रहे हैं, अब बहुत अर्से तक दिक्कत न होगी -

उठो-उठो सो रहे हो नाहक/पयामे बाँगे जरस तो सुन लो,
बढ़ो कि कोई बुला रहा है, निशाने मंजिल दिखा-दिखाकर।

ज्यादा क्या लिखूँ, सलाम लो-और कमर हिम्मत बाँध लो और मैदाने-सियासी लीडरों मेरा सलाम कबूल करो और तुम हम लोगों को उस नजर से न देखना जिस नजर से दुश्मनाने वतन और खाइनीने कौम देखते थे। न हम डाकू थे न कातिल -

कहाँ गया कोहेनूर हीरा/किधर गई हाय मेरी दौलत,
वह सबका सब लूटकर कि उलटा/हमीं को डाकू बता रहे हैं।

हमीं को दिन-दहाड़े लूटा, फिर हमीं डाकू हैं। हमारे भाइयों और बहनों और बच्चों को जलियानवाला बाग में भून डाला और अब हमीं को कालस बलूट फैसले में लिखा जाता है। अगर हम ऐसे हैं तो वह कैसे हैं और किस खिताब से पुकारे जाने के काबिल हैं, उन्होंने हिन्दुस्तान का सुहाग लूट लिया, जिन्होंने लाखों बहादुरों को अपनी गरज के लिए मेसोपोटामिया और रूस के मैदान में सुलवा दिया, खुँख्वार जानवर, जालिम दरिंदे वह हैं कि हम? हम बेवश थे, कमजोर थे, सब कुछ सुन लिया और ऐ वतनी भाइयों यह सब तुमने सुनवाया। आओ फिर मुत्तहिद हो जाओ, फिर मैदाने अमल में कूद पड़ो और मुकम्मल आजादी का ऐलान कर दो। अच्छा अब मैं रुखसत होता हूँ और हमेशा के लिए खैरबाद कहता हूँ। खुदा तुम्हारे साथ हो और फिजाये हिंद पर आजादी का झंडा जल्द लहराए। मेरे पास न वह ताकत है कि हिमालय की चोटी पर पहुँचकर एक ऐसी आवाज निकालूँ जो हर शख्स को बेदार कर दे और न वह असबाव है कि जिससे फिर तुम्हारे दिल मुश्ताइल कर दूँ कि तुम उसी जोश से आगे बढ़कर खड़े हो जाओ जैसे सन् 20 या 21 में थे। मैं चंद सुतूर के बाद रुख़सत होता हूँ :-

To every man upon this earth,
Death cometh soon or late,
But (then) how can a man die better,
Than facing fearful odds,
For the ashes of his fathers and,
Temples of his God.

बाद को मैं इन भाइयों से रुखसत शुक्रिए के साथ होता हूँ जिन्होंने हमारी मद्द जाहिर तौर पर की या पोशीदा और यकीन दिलाऊँगा कि अशफाक आखिरी दम तक सच्चा रहा और खुशी-खुशी मर गया और ख्यानते-वतनी का उस पर कोई नहीं लगाया जा सकता। वतनी भाइयों से गुजारिश है कि मेरे बाद मेरे भाइयों को वक्त जरूरत न भूलें और उनकी मदद करें और उनका खयाल करें।

वतन पर मर मिटने वाला
अशफाक वारसी **'हसरत'**
अज, फैजाबाद जेल

मेरी तहरीर मेरे वतनी भाइयों तक पहुँच जाए। ख्वाह विघार्थी जी अखबार के जरिए से या अग्रेंजी, हिन्दी, उर्दू में छापकर कांग्रेस के अय्याम में तकसीम करा दें, मशकूर हूँगा। मेरा सलाम कबूल करें और मेरे भाइयों को न वह कभी भूलें और न मेरे वतनी भाई फरामोश करें। अलविदा !

अशफाक उल्ला वारसी **'हसरत'**
फैजाबाद
जेल
19 दिसम्बर
1927[1]

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विघार्थी पृष्ठ 148-156

अशफाक चले गये और अलविदा से पहले देश के नाम अपना संदेश छोड़ गये। संदेश के माध्यम से हम उनके वैचारिक धरातल को ठीक से समझ सकते हैं, उनके कृतित्व व्यक्तित्व के विषय में तमाम सच्चाइयों का पता भी चलता है।

फाँसी पर जाने के पूर्व अशफाक ने कहा भी था - ''भारत माता के रंगमंच पर अपना पार्ट अब हम अदा कर चुके। हमने गलत-सही जो कुछ किया वह स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना से किया। हमारे इस काम की कोई प्रशंसा करेगा तो कोई निंदा। किन्तु हमारे साहस और वीरता की प्रशंसा हमारे दुश्मनों तक को करनी पड़ी है। क्रांतिकारी बड़े वीर योद्धा और बड़े अच्छे वेदान्ती होते है। वे सदैव अपने देश की भलाई सोचा करते हैं। वे कहते है कि हम देश को भयग्रस्त करते हैं, किन्तु बात ऐसी नही हैं। इतनी लम्बी मियाद तक हमारा मुकदमा चला, मगर हमने किसी एक गवाह तक को भयग्रस्त करने की चेष्टा नहीं की, न किसी मुखबिर को गोली मारी। हम चाहते तो किसी गवाह, किसी खुफिया पुलिस के अधिकारी या किसी अन्य ऐसे आदमी को मार सकते थे, किन्तु यह हमारा उद्देश्य नही था। हम तो कन्हाईलाल दत्त, खुदी राम बोस, गोपी मोहन साहा आदि की स्मृति में फाँसी पर चढ़ जाना चाहते थे।

जजों ने हमे निर्दय, बर्बर, मानव कलंक आदि विशेषणों से याद किया है। किन्तु हम पूछते हैं कि क्या इन जजों ने जलियावाला बाग में गोली चलाते देखा या सुना, क्या उसने निरस्त्र भारतीयों-स्त्री पुरुष, बाल वृद्ध सब पर गोलियाँ नहीं चलायी थी। कितने जजों ने उसे इन विशेषणों से विभूषित किया। फिर क्या यह मजाक हमारे ही साथ उड़ाने को है। भारतीय भाइयों, आप कोई हों, चाहे जिस धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायी हों, परन्तु आप देशहित में एक जुट होकर योग दीजिए। आप लोग व्यर्थ में लड़-झगड़ रहे हैं। सब धर्म एक है, रास्ते चाहे भिन्न-भिन्न हो परन्तु लक्ष्य सबका एक ही है।

फिर यह झगड़ा बखेड़ा क्यों? हम मरने वाले काकोरी के अभियुक्तों के लिए आप लोग एक हो जाइए और सब मिलकर नौकर शाही का मुकाबला कीजिए। यह सोचकर कि 7 करोड़ मुसलमान भारतवासियों में मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ जो भारत माता की स्वतंत्रता के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ, मैं मन ही मन अभिमान का अनुभव कर रहा हूँ किन्तु मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ किं मैं हत्यारा नहीं था, जैसा कि मुझे साबित किया गया है।

अब मैं विदा होता हूँ। ईश्वर आप सबका भला करे। इस अवसर पर एनुद्दीन, मजिस्ट्रेट श्रीखैरात अली, पब्लिक प्रोसीक्यूटर, सी0आई0डी0 के अधिकारी खासकर खान बहादुर तसद्दुक हुसैन साहब तथा अन्य गवाहों को धन्यवाद देना अनुचित न होगा। क्योंकि इन्ही की कृपा से यह मान मर्यादा प्राप्त हुई। मेरे परिवार में आज तक देश सेवा के लिए कोई त्याग न हुआ था, अब यह कलंक छूट जायेगा। अन्त में अपने साथी अभियुक्तों तथा मुखबिरों और इकबाली मुलजिमों से भी वन्दे करता हूँ। सबको आखिरी सलाम। भारतवर्ष सुखी हो मेरे भाई आनंद लाभ करें।''[1]

निश्चित ही अशफाक को समझना अपने देश की संस्कृति की झलक पाना है। अशफाक उल्ला खाँ ने स्वतंत्रता को मेहनतकश जनता के जीवन की स्वतंत्रता से जोड़ा था। क्योंकि उनके लिए देश केवल धरती, जंगल पहाड़, नदी नाले से नहीं है। जनता के बिना देश या राष्ट्र का कोई मतलब नही होता। उन्हें पता था देश की बहुसंख्यक जनता गाँव में रहती है। अधिकतर लोग गरीबी की चक्की में पिस रहे हैं, कम दिहाड़ी पर कारखानों में काम कर रहे हैं, लाखों सड़क पर हैं। इसलिए देश को आजाद करना है तो इन्हें आगे लाना होगा। किसानों, मजदूरों को संगठित करना होगा।

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -156-157

अशफाक ने कहा है कि -'मेरा दिल गरीब किसानों और दुखियों मजदूरों के लिए हमेशा दुखी रहा है। मैं तो अपने अय्यामें फरारी में भी अक्सर इनकी हालत देखकर रोया किया हूँ क्योंकि मुझे इनके साथ दिन गुजारने का मौका मिला है। निश्चित ही अशफाक उल्ला खाँ उस दौर के क्रांतिकारियों में एक मजबूत चरित्र के रूप में नजर आते हैं। जहाँ एक तरफ संवेदनशील और प्रगतिशील कवि, शायर के रूप में हमे नजर आते है वही वे एक कुशल पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में दृढ़ता से खड़े दिखते हैं और अन्त तक उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया। प्रमुख क्रांतिकारी नेता अमर शहीद सरदार भगत सिंह ने लिखा है कि -''आप (अशफाक) श्री राम प्रसाद के दायें हाथ थे, मुसलमान होने के बावजूद आपको कट्टर आर्य समाजी धर्म से हर दर्जे तक का प्रेम था। दोनों प्रेमी एक बड़े काम के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर अमर हो गये।''

शहीदे आज़म अशफाक उल्ला खाँ ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। उनका यह उत्सर्ग आने वाली पीढ़ियाँ सदैव स्मरण करेंगी तथा उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से हमेशा प्रेरणा पाती रहेंगी।

अशफाक के शब्द आज भी स्मृति में है और गूँजते हैं -

''कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है,
रख दे कोई जरा - सी खाके वतन कफन में।''

---------------- ,,, ------------------

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

-: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

प्रस्तुत शोधग्रन्थ की सर्जना हेतु मुझे अपने शोध सलाहकार श्रद्धेय प्रोफेसर श्री अनिल कुमार मिश्र एवं निम्न ग्रन्थों से, अपार सहयोग प्राप्त हुआ -

1 :- Cambridge history of india vol VI :- God well H.H

2 :- भारत में क्रान्तिकारी आंदोलन का इतिहास। :- मनमथ नाथ गुप्त

3 :- History of the Congress Part I :- पट्टाभिसीता रमैया

4 :- History of freedom movement of India, Vol II :- R.C Majumdar

5 :- A Century History of Indian national Congress Vol II :- B.N. Pandey

6 :- भारत के अमर क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खॉ :- डा० भवानी सिंह

7 :- अशफाक उल्ला खॉ और उनका युग :- सुधीर विद्यार्थी

8 :- जांबाज पत्रिका :- शहीद ए वतन अशफाक उल्ला खॉ जन्म शताब्दी समारोह समिति।

9 :- भारतीय स्वतंत्रता का इतिहास :- विपिन चन्द्रा।

10 :- स्वतंत्रता संघर्ष :- डा० तारा चन्द।

11 :- आधुनिक भारत :- डा० सुमित सरकार ।

12 :- आधुनिक भारत का इतिहास :- वी० एल० ग्रोवर।

13 :- प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय :- प्रगति प्रकाशन

14 :- काकोरी शहीद स्मृति :- डा० भगवानदास माहौर

15 :- भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष :- विपिन चन्द्र

16 :- द इंडियन पालिटिकल सिस्टम :- नार्मन डी. यामर

17 :- आजादी के दस्तावेज :- ख्वाजा हसन नियाजी

18 :- भारत में राष्ट्रीयता का विकास :- डा. एस. एल. नागोरी

19 :- हाऊ इण्डिया राट फार फ्रीडम :- एनीबेसेन्ट

20 :- भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास - राम गोपाल

21 :- भारत वर्तमान और भावी - रजनीपाल दत्त

22 :- वाजिद अलीशाह और अवध राज्य का पतन - परिपूर्णानंद वर्मा

23 :- हिस्ट्री आफ दी इंडियन म्यूटिनी - सर जान विलियम्स

24 :- स्वतंत्रता आन्दोलन में शाहजहांपुर का योगदान - डा. एन. सी. मेहरोत्रा

25 :- द इंडियन रिवेलियन - डा. ए. डफ

26 :- पूर्वा - जगदीश चन्द्र दीक्षित

27 :- अशफाक उल्ला खां - भगत सिंह राणा

28 :- मैनपुरी जनपद का राजनैतिक इतिहास - चिन्तामणि शुक्ल

29 :- रामप्रसाद 'बिस्मिल' रचनावली - दिनेश शर्मा

30 :- मैनपुरी षड़यंत्र केस - पत्रांक 11/919 - राज्य अभिलेखागार लखनऊ

31 :- टेरारिज्म इन इंडिया 1917-36, गृह विभाग, भारत सरकार क्रम सं. 38/3

32 :- दे लिव्ड डैन्जरसली - मन्मथनाथ गुप्ता

33 :- शहीद रोशन सिंह - सुधीर विद्यार्थी

34 :- अमर शहीद अशफाक उल्ला खाँ - बनारसी दास चतुर्वेदी

35 :- पूर्वा - योगेश चन्द्र चटर्जी

36 :- कार्यवाही काकोरी षड़यंत्र केस - अपील

37 :- सी.आई.डी. वाल्यूम-2, काकोरी षड़यंत्र केस - उ. प्र. राजकीय अभिलेखागार

38 :- अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद - वैशम्पायन

39 :- मेमायर्स - शिव वर्मा

40 :- शब्द - गोबिन्द बल्लभपन्त के भाषणों का संकलन

परिशिष्ट

काकोरी षडयन्त्र केस के निर्णय से उद्धृत अंश

(साभार उ0प्र0 राजकीय अभिलेखागार, लखनऊ)

evidence show that branches of the revolutionary society had been established at the other places mentioned in the first charge. I find therefore that a conspiracy existed substantially as alleged in that charge. It remains now to consider the evidence for the allegation in the charge that the two accused in this case were parties to it.

Search for Ashfaqullah on 26th September, 1925.

49. The evidence of sub-inspector Fasahat Husain (P. W. 113) shows that he went to the house of Ashfaqullah at 5 a. m. on the 26th September 1925. He had received a warrant for his arrest and also a search warrant a few hours before. Ashfaqullah was absent and one of his brothers told the Sub-Inspector that he had slept the night at the house of a relative Abdul Qadir Khan, a retired deputy collector. The Sub-Inspector went therefore to that house but failed to find the accused. He found in the house of Ashfaqullah a 12 bore gun, (Ex. P. A-18) 24 shot cartridges in a sling (Ex. P. A-19) a bag containing a large number of empty cartridge cases, one bullet cartridge and four bags of small shot. The gun belonged to Abdul Qadir Khan and a license was produced showing that one of Ashfaqullah's brothers had his name entered in the license as a retainer. The discovery of this gun and ammunition only shows therefore that Ashfaqullah had access to firearms. Search for Ashfaqullah continued to be unsuccessful in spite of attachment proceedings against his property.

O. P. 64.

Arrest and search of Ashfaqullah.

50. Ashfaqullah was arrested by Khan Bahadur Hakim Ikramul Haq (P. W. 119) Deputy Superintendent of the Delhi C. I. D. at 9-30 p. m. on the 8th September, 1926, or rather more than a year after the Kakori dacoity. The Deputy Superintendent had received information the same day that he was living in a certain house and proceeded there with an Inspector and four constables. He also obtained two search witnesses before entering the house. He found Ashfaqullah sitting alone on a *charpoy*.

Ashfaqullah gave his name as Abid Raza and refused to give his father's name and address. The Deputy Superintendent prepared a list of the things found in the room. These included a trunk which contained papers. As the witnesses were illiterate he did not examine them there but sealed up the trunk and produced it the next day before Saiyid Ghulam Mustafa Shah, a Magistrate of the First Class (P. W. 118). The latter prepared a list of the contents. These included a photograph (Ex. P. A-37) which Ashfaqullah said was a photograph of himself. It was not, however a very good likeness of the accused and both the Deputy Superintendent and the Magistrate appear to have doubted whether it was a photograph of him. A few days later when Mr.

Horton arrived at Delhi from Lucknow the accused expressed his fears that the United Provinces C. I. D. might obtain the photograph and show it to the witnesses who were to identify him. He was

O. P. 65. re-assured on the point and the evidence of the Deputy Superintendent and other witnesses proves clearly that every possible precaution was taken in regard to this photograph and that it was kept in a sealed cover at Delhi until the 30th October, 1926.

When Ashfaqullah was first taken before the Magistrate he again gave his name as Abid Raza but when it was pointed out to him that it was no use keeping up the pretence any longer as the papers found showed that his name was Ashfaqullah he admitted that it was.

Manifesto of the Communist Party of India (Ex. P. A 35).

51. Among the papers found in the trunk was Ex. P A. 35, a pamphlet which has been proscribed by the Bengal and Central Provinces Governments, entitled, 'Manifesto of the Communist Party of India'. It purports to have been published 'at the office of the Bengal Peasants' and Workers' Party for and on behalf of the Communist Party of India'. It is a six page printed pamphlet, with a sub-head 'Hindu-Muslim problem'. It is dated 15th May 1926. It was apparently given to Ashfaqullah as there is written at the top of the first page. 'A present from one whom you saw in Delhi'. The key-note of the manifesto is that the 'Freedom Movement will only succeed behind an Economic Programe, and that propaganda against the Government directed on religious lines is unsafe and impracticable. The author comments on the failure of previous anti—Government movements which were based either on sentiment or on religious prejudice, e. g. the non-co-operation and Khilafat movements. The following extracts are of interest.—

"Our Hindu countrymen joined the Khilafat movement and noticed the courage and determination of the Musalmans in redressing the Khilafat. They were made to believe and bullied

O. P. 66. to a certain extent that by similarly exploiting the fanaticism of the Hindus they would be able to rouse their consciousness. They were joined by the reactionary element of the community and started Shuddi, Sangathan and Mahasabha which led the Musalmans to start Tabligh and Tansim as a counter move. The present debacle was a foregone conclusion of such an ill-started movement."

"The root cause of all these troubles accuring in the country after the immediate collapse of the movement is that religion was allowed to play the chief part in the movement. It may be comparatively easy to fire politically backward people with religious fanaticism; but it is impossible, even dangerous, to base a political movement on such unreliable ground. The recent occurrences

amply prove its impossibility and dangerousness. If the hostility against the British Imperialism is made a religious issue, the hostility thus aroused can at any moment turn into antagonism among the two great Indian Communities as they do not profess the same religion. It is precisely what has happened now. The propaganda on religious lines could perhaps be safely and successfully carried on, if India were inhabited by people of the same religion. India embodies in its vast dimensions people of different creeds and races. It is under the yoke of the most advanced capitalist system, which holds India not to please God in heaven, but to make huge profits by exploiting the labour of starving millions in India and other countries."

"The Indian Mussalmans should take lesson from the decision of the Grand National Assembly of Angora which declared the separation of the Khilafat from the Sultanate, *i. e.*, separation of religion from politics. No protests from the Ulema of India will induce the progressive elements of the Turkish nation to discharge their decision. Turkey has entered a new era of progress O. P. 67 by separating religion and politics. The example of Nationalist Turkey should help the Indian Moslems to decide in which direction their politics should go. Let them liberate themselves from the yoke of the British, before they think of liberating other Mussalmans of the world. This cannot be done until and unless they unite heart and soul with their countrymen Hindus and other communities of India."

The author proceeds to urge that the religious character of the movement should be replaced by one of a predominating political character. He asked how the union of Hindus and Muhammedans is to be brought about, and remarks that so long as the political movement in India is conducted partially or wholly on religious lines, unity will not be realised. He proceeds, "Have the Hindus and Mussalman masses nothing in common in India? Are both of them not suffering equally under the ruthless exploitation of the foreign bureaucracy? Are they not economically ruined by the foreign and Indian capitalists and landlords? The union can only be realised when they are told of their common grievances so that they should be conscious of their common miserable plight. It may be difficult for bourgeois political philosophy to find a common ground to stand upon. The masses—the common workers and peasants—are, however, as a matter of fact already united by virtue of their common economic interests, only the consciousness of this union is interfered with by large doses of conflicting religious dogmas administered by interested parties."

"The problem of national freedom cannot be solved unless a new programme is adopted and new tactics employed. The battle of national freedom is to be fought by the masses, so let it be fought for their interests. Let us take a lesson from the failure of

O. P. 68. the gigantic movement of Non-co-operation. The Indian masses were in a fighting mood because they believed that the coming Swaraj will make an end to their misery and starvation. It is true that their enthusiasm was not aroused by any economic programme but they instinctively looked forward for a better economic condition. This belief of theirs was strengthened when the slogan of non-payment of taxes was brought forward. Let us not repeat the past mistake. Let us have a more clear outlook than hitherto possessed by our leaders. When in future we call for non-payment of taxes, let us really mean it. The masses this time will be ready to fight more vigorously and more consciously. Our work is to agitate and organise the masses on economic programme and finally lead them to a general strike or you may call it civil disobedience."

"We want to impress upon our countrymen with all the earnestness we are capable of to begin with a new phase of the movement with an economic programme reflecting the immediate demands of the workers and peasants—the proletarians of the country and commence a struggle subordinating all religious and communal questions to the great politico-economic one. The ideal before young India should be neither going to the golden age of the Vedas, nor saving of the empire of the Khalifa, but to free the Indian people from the political and economic serfdom. The National workers should speak to the Indian masses in terms of their daily needs—land, bread, housing, clothing, etc, only."

Other papers found in Ashfaqullah's box.

52. Several of the other papers found in Ashfaqullah's box are important. Ex. P. A-3 is a translation of a letter written to his mother. In this he informs her that he is still in India. 'The time has not yet come, and I got no opportunity.
O. P. 69. Plans are being made'. This clearly implies that he was trying to leave India. He refers to the attachment of the family property which had followed his disappearance and asks his mother to sign and post a letter which he is sending her. This is apparently one of the letters of which Exh. P. A 10 or P. A 11 are translations. Both these letters are addressed to the Home Member, United Provinces, in the same strain, and purport to have been written by Ashfaqullah's mother. He wanted her to send one of these letters to the press. They deal mainly with the attachment of the family property.

Ex. P. A 5 is a translation of a letter addressed to Maulana Abdul Majid. It begins by saying that the writer was wandering from place to place from the 26th September 1925. It asks the addressee to assist the writer to leave India. Two methods are suggested; first of all that a passport might be obtained for him under an assumed name from the Amir with the help of some influential man of Delhi; secondly that financial assistance might

be obtained from Mohammed Ali, Doctor Ansari, Hakim Ajmal Khan, Maulana Mazharuddin, or 'some other reliable persons.' 'If I get sufficient money I can escape.' The writer also suggests that it might be possible for the addressee to get him some employment as a ship's clerk through some Seth of Bombay. 'I shall get down in Germany. The traders of Bombay can carry me on their ship and if I am not recognised by them I shall escape.'

Ex. P. A 6 is addressed to Maulana Abdul Qadir who is a retired Deputy Collector and related to the accused. We have seen how his gun was found at the accused's house. This is couched in the same strain; the writer is wandering about and is in great need of money. 'Perhaps I might be able to secure passport through some assumed name. My life is in danger. Help me..........Are there any means by which I may enter Hyderabad under some O. P. 70.
fictitious name and lead an anonymous life there?' This letter also suggests that the writer has a claim on the addressee because of the training the latter had given him and the promises he had exacted from him, a reference apparently to the influences under which he had taken part in the non-co-operation movement.

Ex. P. A 8 is a translation of a letter addressed by Ashfaqullah to his sister. It begins 'Accept compliments from one of your separated brothers, whom his relatives call a dacoit, a murderer and everything.' The writer then proceeds to say that he had hoped to see her and his brother at Bhopal. He wanted clothes for the winter and asked her to provide some if she could.

Ex. P. A 9 is a translation of some verses written in Urdu addressed to 'Bedar' apparently Bhagwati Sahai Bedar M.L.C. who, as I have already mentioned, was known to some of the conspirators at Shahjahanpur. The translation reads:—

'For God's sake some one may carry my message to Bedar. Why are you so hankering after membership? It was only your co-operation that sent so many persons to jail; still you consider yourself to be so great a leader that you are dying for your eminence. We do not entertain any hopes from you, neither do we trust you; why are the leaders of Swaraj and Congress ruining us.?' O God, let us see the days when the republic is in full-swing.' In his statement to the Court Ashfaqullah pointed out that the word which has been translated 'Republic' would be more correctly translated 'Communism'. The prosecution agreed. This alters somewhat the significance of the verses but also suggests that the writer was more interested in the Communist Manifesto found in his possession (vide para 51) than he admits. I have already shown that the preaching of communist principles was one of the main items in the revolutionary programme. O. P. 71.

Stay at Royal Hotel, Delhi, in name of Murari Mohan.

53. Ashfaqullah appears to have arrived at Delhi about a fortnight before he was arrested there. The evidence of Sukhdarshan Singh (P. W. 124), manager of the Royal Hotel, Delhi, shows that Ashfaqullah arrived there on the 25th August, giving the name of Murari Mohan, and himself wrote particulars in the hotel book, (Ex. P. A 22,) with his own fountain pen. A fountain pen was found in his box when he was arrested (vide Ex. P. A 33) and futher corroboration of the manager's evidence is furnished by Ex. P. A 34 found at the same time. This is a slip of paper on which is written the name 'Murari Mohan', and the address which he entered in the hotel book. This suggests that he was in the habit of changing his name and kept notes about the names under which he had passed.

Association of Ashfaqullah and Banarsi Lal.

54. Banarsi Lal informs us that he and Ashfaqullah were intimate friends and that this is true is proved by the correspondence between the two found in Banarsi Lal's house. There was also found a photograph of the two with Ashfaqullah's arm round Banarsi's neck, which Banarsi Lal says was taken in 1922 by Ram Prasad (Ex. P. 28). Ex. P. 14 is an undated letter in Urdu to Banarsi Lal; (Ex. P 15) is a post card in Hindi to Banarsi, dated 11th December 1923, and Ex. P-16 is a post card in Urdu, dated 17th May 1922 to Banarsi. All of these purport to have been sent by 'Warsi' which according to Banarsi Lal was the name by which Ashfaqullah used to sign his letters.

O. P. 72.

Of these exhibits Ex. P. 14 and P. 15 are important as they show not only Ashfaqullah's friendship with Banarsi Lal but also his mentality some time prior to the establishment of the revolutionary society at Shahjahanpur. The correspondence also refers to Ram Prasad and 'brother Raushan', the latter clearly being Raushan Singh accused in the main case, both because Banarsi Lal says so and because Ex. P. 15 refers to him as having been released from Jail. In Ex. P 14 Ashfaqullah confides in Banarsi Lal in the following words :—

"You know very well about my circumstances, and you have a better idea of my finance, ideas and feelings than any other friend of mine does, and this is well known to you that I have not a single shell with me to do any business. Service means killing of my conscience. You must remember very well that I want to live free and I worship 'freedom' and I am ready to sacrifice my life even for a glimpse thereof'. After remarking that he could if he wished obtain an appointment in the Bhopal State (where his brother Munnu Khan is employed) he says that "then all my schemes would be upset". He puts forward another proposal for which he invites Banarsi's assistance. It is that they should take up farming, he obtaining land from his mother and Banarsi

providing the capital ; " we will live among our brethren cultivators, and will carry on our scheme as well and shall have sufficient money within a few years. Then we would increase our propaganda on a grand scale and would invite our companions to join us."

Summary of case against Ashfaqullah.

55. Excluding the evidence of the dacoities, the case against Ashfaqullah is mainly based on the evidence of the approvers and of Jagdish Chandar, on the fact that he absconded on the 26th September, 1925 and remained at large despite the attachment of his property, on his assumption of false names; while he was absconding, on the letters which he addressed to his friend Banarsi Lal at the end of 1923 or beginning of 1924 (Ex. P 14 and 15), showing amongst other things his acquaintance with Ram Prasad and Raushan Singh, and on the letters and papers which were found in his possession at the time of his arrest. Ex. P 14 is interesting as showing that even at that time Ashfaqullah was in favour of propaganda among the peasantry. 'The freedom of India', he writes, 'depends only on the cultivators' The manifesto of the Communist Party found in his box when he was arrested is couched in much the same style. 'The battle of national freedom' it says, 'is to be fought by the masses.' That he realised the seriousness of the case against him is shown by the various methods he suggests for escaping from India and by the language used by him in his letters to his relatives. To Abdul Qadir he writes 'My life is in danger'. To his sister he writes 'Accept compliments from one of your separated brothers whom his relatives call a dacoit, a murderer and everything.' His verses to 'Bedar' show that he has no sympathy with the Swaraj party and the concluding line praying for the advent of communism betrays the influence of Ram Prasad and the authors of the communistic pamphlets referred to above. His connection with Ram Prasad is shown by the evidence of the approvers and of Jagdish Chandar ; and by the evidence of Ram Charan (P. W. 62) Gauri Shankar (P. W. 61) and Inspector B. Parbhu Dayal Singh (P. W. 64). The slip of paper in Hindi (Ex. P. 259) found with Ram Prasad has on it (with other names) the name of 'Ashfaq'. Banarsi Lal has explained that the numbers on this slip of paper against each name refer to the number of copies of a magazine called 'Parnavir' issued by Ram Prasad to each person named. A copy of this magazine was found in the house of Kunwar Bahadur (Ex. P. 66). It is a registered monthly magazine, published at Nagpur. It deals with political subjects and personalities. The copy found with Kunwar Bahadur is for August, 1924 and a 'Tilak' number.

O. P. 73.

O. P. 74.

There are a few more points to be taken into consideration in connection with the case of Ashfaqullah. Indu Bhushan states that he went to Ashfaqullah's house on the afternoon of the 26th

September, 1925, because Ashfaqullah had sent for him through one Khalil. It transpired during the defence evidence that Khalil is the son of Ashfaqullah's elder brother, Safiullah Khan, (D. W. 21). It is argued by the prosecution that until this admission was made it was not known who Khalil was and that the mention of his name by Indu Bhushan shows therefore that Indu Bhushan's statement could not have been put into his mouth by the police. It is also argued that Ashfaqullah would not have sent for Indu Bhushan if he had not known that Indu Bhushan was Ram Prasad's 'post box'. Indu Bhushan says that he found Ashiq (a defence witness) at Ashfaqullah's house. After Ashiq's departure they talked about the arrests, Ashfaqullah telling him that he had been warned by a police constable and so had escaped arrest. Indu Bhushan's story about this is corroborated by a statement of Ashfaqullah himself in Ex. P. A. 10, one of the letters addressed to the Home Member which he wanted his mother to send to the Press. This statement is as follows:—'When he (*i. e.* Ashfaqullah) was going, he said that a respectable police officer who was his friend, had informed him that arrests would be made the following day and that he should be on his guard, and so he was going away'. Before his arrest at Delhi Ashfaqullah was clearly waiting for a friend to come and take his letters. Several of the letters refer to 'the bearer' who will give the addressee further information on certain points. Who this friend was has not transpired but one friend whom Ashfaqullah had been expecting was clearly the 'Ashiq' referred to above. The letter Ex. P. A. 4 found in his possession and addressed to 'Arfi' reproaches the latter for not coming before and begs him to come soon. Ashiq Ali (D. W. 20) admits that he was known by this name. The sentence in the letter 'I had no explosive substance with me for fear of which you did not come to me' is possibly significant. Ashfaqullah's appeal in some of the other letters for pecuniary help is explained by the fact that at the time of his arrest only two annas three pies were found on him. Lastly there are references to 'Rama' in the letter to his brother Riyasatullah *alias* Lallu (Ex. P. A. 3) and in the letter to Abdul Qadir (Ex. P. A. 6). In the former he says 'You should come after seeing Rama's father'; in the latter 'you must be knowing about Rama that he is in the cells of jail'. The natural inference is that he was referring in both cases to Ram Prasad and that he was well acquainted with him.

O. P. 75.

Search for S. N. Bakshi and discovery of his trunk at Jhansi.

56. Inspector Sardar Sundar Singh of the United Provinces C. I. D. (P. W. 95) states that he went to Jhansi in November, 1925, in search of S. N. Bakhsi and Mukandi Lal. Search had been made for Bakshi at Benares on the 26th September but without result. The Inspector could not find either Bakshi or Mukandi Lal at Jhansi. His inquiries showed that Bakshi had been on friendly terms with one Rudra Narain Singh and he therefore searched Rudra Narain Singh's house. A letter was found in the

house (Ex. P. 302) addressed to Rudra Narain Singh and signed S. N. Bakhsi. It is dated 8th May 1925. In this letter the writer said that he had left Jhansi somewhat hurriedly and had been very busy on an extensive tour all over the United Provinces. He expected to O. P. 76.
return to Jhansi shortly. There was also found in the house a trunk (Ex. LVIII) which has been identified by one Chotey Lal (P. W. 97) as belonging to Bakhshi. Chotey Lal had let a house on rent to Bakhsi who had given his name as Satish Chandar Bagchi. When Bakshi left the house it remained unoccupied for some time. After some months Chotey Lal asked Rudra Narain, who had taken the house for Bakshi, to vacate it. Rudra Narain did so and Chotey Lal took a receipt from him for the things which he had removed from the house. In the third line of this receipt Rudra Narain began to write some words, and then, after referring to the kirayanama or lease on which the house had been taken, he partially erased them and wrote the name 'Satish Chandar Bagchi.' Looking through a microscope one can see that the words partially erased begin 'Sachi.' I have little doubt that Rudra Narain wrote 'Sachindra Nath Bakshi' first of all and then it occurred to him that Bakshi had been passing under the other name. In any case it is clearly proved that it was Bakshi who had occupied the house and who owned the trunk.

Contents of trunk.

57. The contents of this trunk are numerous and important. The following is a brief list of the more important papers found in it .—

Ex. P 286 is a manuscript draft entitled 'Advance State.' This appears to be an essay on the duties of rulers and was apparently intended for Indian States.

Ex. P 287 contains quotations from the speeches or writings of Messrs C. R. Das, Bepin Chandra Pal and T. C. Goswami on revolutionary movements. It also contains a quotation from 'Rus ka kharyantra' advocating the establishment of secret societies in Russia to destroy the Russian Government.

Ex. P 288 is a paper containing writings, also apparently in O. P. 77.
Bakshi's writing. One paragraph mentions that the revolutionary pamphlets 'which were circulated in Cawnpore. Allahabad and other places and have been proscribed by the Government, have at last been circulated in Jhansi'. 'Numbers were found pasted on trees, local High School buildings and even on the main gate of the Kotwali. The police is very eager to search of the culprits.'

Ex. P 289 is a translation of a notice in Hindi appealing for funds for an athletic association in Jhansi in the name of Bakshi and Rudra Narain Singh.

Ex. P 290 consists of two pieces of paper on which are written the names Jogesh, Suresh, Biswas and Rudra. It can hardly

be a coincidence that the first three are names of Bakshi's alleged associates: Rudra might of course refer to Rudra Narain Singh but we have seen that 'Rudra' was also one of the 'society' names of Ram Prasad.

'An appeal to the Nationalists.'

58. Ex. P 281 is a four page printed pamphlet entitled 'An appeal to the Nationalists.' It is not dated but appears to have been written shortly before the Belgaum Congress meeting at the end of 1924. The current of thought running through it is very similar to that in the Manifesto of the Communist party found with Ashfaqullah. It laments 'the atmosphere of depression and decomposition' in which the Congress is about to meet at Belgaum, advocates the divorce of religion from politics, attacks the Swarajist party for entering the Councils and for their tactics there, attempts to justify revolution, and declares that the forces which 'make for militant Nationalism, having for object not a mere administrative adjustment, but the introduction of a new historical epoch through a great socio-political
O. P. 78, convulsion' are the rebellious masses 'which in the aftermath of the war asserted themselves so over-whelmingly upon the political situation that the Congress was forced to break away from its traditional non-revolutionary moorings'. The following extracts will show the tenor and tone of the pamphlet and may be compared with the extracts quoted from the Communist Manifesto (Ex. P. A. 35) written probably some time later.

'In India, as in every other country, Nationalism is a revolutionary force; it must therefore pursue a revolutionary course.'

'A recapitulation of the trend of the principal events of the past twelve months will show that the mythical goddess of Unity, whom the Belgaum Congress will enshrine, signifies only a great political reaction'. 'Hindu Moslem Unity which was made a corner stone of the Non-co-operation Movement.........has been revealed to have been a superficial makeshift. The disastrous effects of hinging a great political movement of an essentially revolutionary character, on religious fanaticism and extra-territorial patriotism are manifest to-day in the communal riots which spread all over the country despite the frantic efforts of the leaders to check them.'

'Some of the best elements of the Nationalist ranks are locked up in jail by a despotic ukase, without provoking any determined resistance on the part of the Congress. This speaks for the character of the leadership and the lamentable impotency into which the Nationalist movement has sunk, in consequence of its non-revolutionary orientation and reformist policy.'

'Revolution is not an unconstitutional affair. In fact practically all the modern constitutional states owe their origin to some sort of a revolution. India has no constitutional Government. When

one talks of constitution in India, one has in view the British constitution.' O. P. 7

'The goal of Nationalism can never be realised in the way indicated by those who, in unison with the British Government, are positively hostile to Revolution. The struggle for freedom of a subject people can never be separated from revolution. Freedom will never come as a gift from those who deprived us of it. The people of India must conquer freedom.'

'The lesson of that period (between Amritsar and Belgaum) is: 1. the Nationalist Movement can become really powerful only when it is based upon the direct action of the revolutionary masses: and 2 divorced from the mass energy, the Nationalist Movement is bound to sink into depression and decomposition.'

'The causes that created the revolutionary ferment of the post-war years, have not been eliminated. The masses are still discontented with their condition and will readily rise to free themselves from unbearable exploitation.'

'That party alone can command the lasting confidence of the masses, which, not in words but in deeds, reflects the grievances and demands of the masses. Here again realism should be the guiding principle. The every day material needs, immediate economic demands and general earthly well-being should be the determining factors. Metaphysical prejudices should be set aside. The appeal then states the following ten cardinal points of the programme of the National party:—

1. National Independence; Democratic Republic based on Universal suffrage;

2. Abolition of Feudalism and Landlordism;

3. Nationalization of land : none but the cultivator will have the right of landholding;

4. Modernization of agriculture by State aid;

5. Nationalization of Mines and Public Utilities;

6. Development of Modern Industries ; O. P. 80.

7. Protection for the Workers, Minimum wage; Eight hour day ; Abolition of child labour ; Insurance; and other advanced Social Legislation ;

8. Free and Compulsory Primary Education ;

9. Freedom of Religion and Worship ;

10. Right of Minorities.

The appeal concludes as follows:—

'Brave Patriots. Don't waste your energy in futile terrorism.

Your noble idealism and undaunted spirit demand a much wider field of action. The dynamic outburst of social forces is much more powerful than bombs. The action of the toiling masses will free India. Let us organise and lead this action.

Fraternally yours,
M. N. Roy'.

Exhibit P. 295.

59. Exhibit P. 295 is an application of S. N. Bakshi (presumably the original draft) addressed to the Chairman of the Municipal Board, Jhansi, for a post. This he succeeded in obtaining and retaining for 22 days. Either his services were then dispensed with on account of his leaving without permission or he resigned. Babu Jagdish Sahai (P. W. 88) who was then Secretary of the Jhansi Municipal Board, says that on the 22nd or 23rd December 1924, Bakhshi applied for leave to attend the Belgaum Congress, but that as the Chairman had himself already left for the Congress the application could not be granted. Bakhshi did not return to the office after the 23rd. On the reverse of this application are some remarks on the subject of revolutionary movements *e. g.* 'We are a subject race and have constitutional right to rebel'............'I do not hesitate to say that the system of Government is satanic, corrupt'........'The Government creates a revolution and counter-revolutionaries make revolutions bloody. The Government created the conditions of revolution and when it raised its head they tried to put it down by repression, which provoked further violence on the part of the revolutionaries-bloody revolution.

O. P. 81.

Exhibit P. 296.

60. Ex. P. 296 is a miscellaneous collection of papers. One refers to the arrest of Bengal revolutionaries, including S. N. Sanyal. Another is part of a letter urging that all resources must be mobilized for 'the salvation of the country from the bondage of a system that denies us our life and free existence'. This is signed 'S. C. Bagchi that Bengali friend,' and below the signature is written 'My address is here on a printed slip.' Another paper contains further quotations from Messrs. C. R. Das and Goswami explaining why revolutionary societies exist and attacking Government for its 'violation of and contempt of law.' Another paper refers to the sentences passed in the Babar Akali Conspiracy case. Exhibit P. 293 and 296 also contain various applications for posts. Exhibit P. 293 is an application to an insurance company asking for the post of agent. Ex. P. 296 contains an application to the Chairman Municipal Board, Mau, for the post of Executive Officer, an application to the Chairman of the District Board, Jhansi, for the post of clerk, an application to a Calcutta business firm for the post of agent at Lucknow, and an application on which the prosecution have laid some stress, addressed to the Editor of the 'Swadhin,' for the post of 'Manager of your Press and paper with a view to learn the art of journalism

and being interested in the Printing Press.' This application concludes 'As I am in earnestness I am ready to work under you on a nominal salary of Rs. 20 only.

Exhibit P. 297.

61. Ex. P. 297 is a writing by Bakshi in Hindi 'about the lives of those mutineers who sacrificed their lives in open fight with the Government at Baleshwar in the province of Orissa.' It is headed 'The Martyrs of Mutiny and Revolution.' Reference is made to Terence McSwiney, the Lord Mayor of Cork, and the writer says he wants to write the lives of all such brave persons of Maharashtra, Bengal, United Provinces and Punjab who have sacrificed their lives either in a good or bad way for their country. 'The Government says that they were law infringers and disloyal. Infringement of Law is not such a crime and disloyalty is also not considered a sin. But there is no greater sin than treachery to the country. All the people who are under the bondage of the present system of administration are guilty of the offence of treachery to the country.' O. P. 82.

Lists of Books.

62. Exhibit P. 298 is a list of books, 95 in number, mostly of a political nature. Exhibit P. 299 contains first of all a list of nine books which purport to have been borrowed. Then follows a list of 20 English books and 71 Hindi books with the price of each. All these relate more or less to the same topics—revolution, communism, history or politics generally. At the end is another list of 20 books, some of which have been struck off. The prosecution suggest that these are books which have been lent out and those struck off are books which have been returned. Many of the books found with other alleged conspirators are included in these lists such as 'The writings of Har Dayal' 'Revolutions of the World' 'Samavad' (communism) 'Anand Math' (The Home of Happiness) 'Bangla Biplobad' 'Political Conspiracy' 'Bandijiwan' and 'Rus ki Rajkranti' (The Russian revolution).

The finding of these lists supports the theory that the revolutionaries possessed a fairly large circulating library and directly connects Bakshi with this side of their activities. O. P. 83.

Arrest and search of S. N. Bakshi.

63. Bakshi was arrested at Bhagalpur in the province of Bihar on the 17th. January, 1927. A C. I. D. sub-inspector there named Pravash Chandra Banerji (P. W. 103) received information about a suspicious Bengali whose description agreed with that which had been circulated by the C. I. D. of S. N. Bakshi. He informed his Inspector, Mr. Jagat Bandhu Bhaumick (P. W. 94) and the two lay in wait for the Bengali near the place where he was reported to take his food. He was observed about 11 A. M, and immediately arrested. He was taken to the dispensary of Dr. Khirod Kumar Mitra and the Kotwali sub-inspector Hari Pershad Deo (P.W. 93) was sent for. On his arrival the suspect, who proved to be Bakshi, was searched and some papers were taken from his

person. Among these was an unfinished letter (Ex. P. B. 7) in Bengali and English mixed, dated 13th December, 1926, from Rangpur. The letter itself contains nothing of particular interest but on the reverse there is, a reference to the formation of a committee 'which will act as a central body and guide all activities'

There is also a reference to the formation of a military department. 'At present there was nothing like a military department. To establish one military department and to form its central body consisting of capable men and to appoint men in charge of each Division'. In Bakshi's note book was found a Hindi poem of which the following is a translation:—(Ex P. B. 3 (a)).

O. P. 84. 'I am born in the world to make the country independent. I will always be on the alert to massacre the Englishmen. I will offer oblation to my departed ancestors with the stream of blood of the Englishmen. I will offer the blood-stained head of the English to the Goddess of war'.

Ex. P. B. 11 is an unsigned letter, also found on Bakshi, addressed to 'My Countrymen at the Gauhati Congress.' The first three paragraphs of this letter read as follows:—

'You are not unaware that I am absconding for more than a year and a long sentence is awaiting for me. But the sincerity of my co-workers, the earnestness of other members of my party and the sympathy which you have so cordially accorded to me, have succeeded in saving me for so long a time, though the Satanic Government and its agents had announced,—publicly and to individuals—reward of several thousands of rupees for my arrest. I refuse to surrender and defy the Government which unarms thirty one crores of Indian population, sanctions general massacre of unarmed and peaceful citizens at Jallianwala Bagh, destroys the liberties of the jewels of Bengal like Subhas and others, and commits so many inhuman acts.

I am a rebel—a revolutionary and want complete independence of India free from foreign control; and this independence is not in responsivism, not in council entry, not in only attending the Congress but in organised armed revolution. The time has come for the Congress to define Swaraj as complete indenpence (*sic*) and to give a definite shape to the definite programme, which shall be able to make India independent'. Below this letter the following is written:-

1. Barisal connection.

2. U. P. men—to meet them and know the necessary details—
O. P. 85. and methods and policy which they are—and to advise them in case of requirements.

3. To form a central body of five members of U. P. who will

dictate and will manage the provincial and inter-provincial matters.

Though I do not know the way the U. P. men will receive me after such a great silence of more than a year.

4. Try to remove their grievance in all respects.

5. To frame a definite programme to give a great blow to the Government within five years; though it is certain that revolution will not be successful within so little time.

6. To find out ways to collect funds and arms.

As in other cases the letter found appears to have been a draft and Bakshi has utilized the spare paper to put into writing his current thoughts and plans. The Examiner of Questioned Documents has given reasons for believing that all these writings from which I have quoted were written by Bakshi.

After he had been personally searched Bakhshi was taken to the Gandhi Ashram at Bhagalpur where he was staying. He pointed out the room himself and it was opened with one of the keys found on him. Amongst other things found in the room was a locked basket which contained four loaded 12 bore cartridges (Exhibit P. B. 18). Various papers were also found purporting to belong to one Benoy Kumar Ghosh in whose name Bakshi now admits that he had been passing, and there were some letters addressed to one Mohit Chandra Adhikari, who had been sharing the room with Bakshi, but they are of no particular importance. The discovery of two maps (of Bengal and Bihar and Orissa vide Exhibit P. B. 16) is possibly significant when considered in the light of the Twelve Points (Exhibit P. 162) and the discovery of three sketch maps at the Dakhshineswar House where R. N. Lahiri was arrested (vide Exhibit P. 213). Several of the letters O. P. 86. found in his possession *e. g.* Exhibit P. B. 5 (A) P. B. 6, P. B. 9 (A) and P. B. 10 suggest that Bakhshi was carrying on correspondence with other conspirators while he was absconding. These are all written in guarded language and convey little definite information. Exhibit P. B. 6 mentions that 'my letters are intercepted and apprehending that yours too are intercepted. I was waiting for a chance, the bearer of the letter is our friend'. The letter is signed 'Atul Gobinda Deb' and the writer is told to reply to 'Amarendra Nath Chakravarty.'

Association of Bakshi with Jogesh Chandar Chatterji.

64 The association of Bakshi with Jogesh Chandar Chatterji at Benares is suggested but not definitely proved by the evidence of certain Bengalis who lived there. Jatindra Narayan Santra (P. W. 68) states that Bakshi hired a room from a relation of his in No. 164, Ganesh Mahal, at the beginning of the rainy season nearly four years ago

(*i. e.* 1923), saying that he wanted it for a friend. Sarat Chandar Vidyaratna (P. W. 67) had been living in the house where this room is for the last six years. He identified Jogesh Chandar Chatterji as one of the men who had occupied the room, and states that before Jogesh came to live there it was occupied by a man named Satish. Bakshi used to visit Satish but the witness does not remember having seen him visit Jogesh. This evidence is corroborated by that of Mr. Mukerji, Deputy Superintendent C. I. D. Benares, who states that he came to know in May, 1924, that Jogesh Chandar Chatterji was occupying one of the rooms at No. 164 Ganesh Mahal. He made a note of it in his diary at the time. An extract from his diary dated 17th May, 1924, has been exhibited (Ex. P. 436). This is to the effect that S. N. Bakshi had approached the O. P. 87. owner of No. 164, Ganesh Mahal and taken a room for Satish Chandar Singh (who according to Mr. Mukherji was known to be a revolutionary). Some time after this Jogesh Chandar Chatterji came to Benares and put up there. Satish Chandra kept Jogesh Chandar in his own room for a time and then departed leaving him there. Jogesh Chandar occupied the room for about three months and then shifted to No. 20 Pataleshwar. Pataleshwar is the locality in which the Bakshi family live. This evidence shows that Jogesh Chandra visited Benares some time before his visit to Shahjahanpur and the natural inference in the light of Ex. P. 198 (Proceedings of the Provincial Council) is that a branch of the revolutionary organisation was formed at Benares during his stay there; if it had not already been formed by his predecessor Satish Chandar.

Evidence that Bakshi and other outside members visited Shahjahanpur.

65. There is a considerable amount of evidence to corroborate the story of the approvers that certain outside members of the revolutionary society, including Bakshi, visited Shahjahanpur from time to time. I note briefly below the main points in this evidence and shall discuss its importance in connection with the dacoities later.

Kishan Lal (P. W. 22) let a house to Banarsi Lal at the end of July or the beginning of August, 1925, on the understanding that it was required for canal contractors and clerks. It was occupied by five or six men for thirteen days. He saw one of the men in the house when he went to get the grass cut on the roof and identified in Jail Bakshi as this man.

Ram Lal (P. W. 23) is the owner of a 'tikasar' or lodging house at Shahjahanpur. He saw M. N. Gupta there twice, once O. P. 88. before and once during the rains of 1925. The last occasion was ten or twelve days before the Kakori dacoity. Banwari Lal came to visit M. N. Gupta at the 'tikasar'. Ram Lal identified both these men in Jail.

Bhola Nath Naik constable (P. W. 24) used to check and make entries in the register of this 'tikasar'. Ex. P. 477 is the register. On the 19th April, 1925, two persons came to the 'tikasar' who gave their names as Mohan Lal and Badri Pershad. The Examiner of Questioned Documents says that he is definitely of the opinion that the signature 'Badri Pershad' is in the hand writing of S. N. Bakshi. On the 27th, July, 1925, a man came to the 'tikasar' who gave his name as 'Kanhaiya Lal'. He was described in the register as of 'long face, wheat complexion, ordinary build, average height, age 26 years'. The Examiner of Questioned Documents says the signature 'Kanhaiya Lal' in the register is probably by the same man who made certain entries in the Jhansi Municipal register, that is to say, S. N. Bakshi, but he is not certain about this. It is clearly proved, however, that Bakshi did visit the 'tikasar' as Bhola Nath identified him in Jail as one of the men he had seen there. Bhola Nath also said that he had seen him there two or three times in 1925 prior to the train dacoity. It is also significant that just above the entry 'Kanhaiya Lal' there is the signature of Raushan Singh who was an accused in the main case. Raushan Singh was known at the 'tikasar' and so gave his real name. It should also be noted that Babu Gobind Bihari, C. I. D. Inspector could find nobody at the addresses given by 'Badri Pershad' and 'Kanhaiya Lal.'

Gauri Shankar (P. W. 61) is the *pujari* of a temple at Shahjahanpur which was built by the father of Banarsi Lal. He had occasion to visit Banarsi Lal two or three times a week in connection with the affairs of this temple. On one occasion he saw three strangers at Banarsi Lal's house and he saw the O. P. 89.
same men the next day at the *ghat* near his temple. He identified these men in jail as M. N. Gupta, R. K. Khattri and S. N. Bakshi.

Gauri Shankar's story is supported by the evidence of Ram Charan (P. W. 62) who used to occupy the upper story of Banarsi Lal's house. He also identified in jail these same three men. He says he first saw Bakshi there in the cold weather two and a half years ago. He came to visit the three men at the tikasar of whom M. N. Gupta and R. K. Khattri were two. The following hot weather, that is the hot weather of 1925, Bakshi stayed in the house with the same three men. It is clear from this that Bakshi, M. N. Gupta, R. K. Khattri and probably also Banwari Lal, used to visit Shahjahanpur for the purpose of conferring with Banarsi Lal and others, if not for other purposes also. It may also be noted here that this last witness, Ram Charan, further states that Ram Pershad and Ashfaqullah often used to visit Banarsi Lal. As he occupied the same house he was clearly in a position to know about such visits.

with another

Activities of Bakshi at Benares.

66. The evidence of Mr. Mukherji, Deputy Superintendent C. I. D. Benares, shows that Bakshi first came to the notice of the police in 1923 when he invited the public to attend a meeting of what later became the Central Health Union. The public notices were issued in Bakshi's name. Mr. Mukherji attended the meeting and noticed that Bakshi took a leading part in it. He was secretary of the Union and R. N. Lahiri and M. N. Gupta were members. Exhibit P. 448 (*a*) which Bakshi admits is in his handwriting, is the record of the proceedings of the meeting of the managing committee, dated 7th June, 1923. Narindra Deb Bhattacharya (P. W. 65) who was acquainted with the Bakshi family

O. P. 90. and lived next door to them, was a member of the Union but his evidence does not add much to our information about it. There can be no doubt that it started purely as an athletic club and professed to eschew politics. In his statement to the magistrate Bakshi said that he became secretary of the Union in the middle of 1923 and continued as such until the middle of 1924, and the evidence of Narindra Deb is to the same effect. In this court, after examining the proceedings (Ex. P. 448), he corrected this statement pointing out that after being secretary he became assistant secretary on the 13th November, 1923. About a month later, he says he left Benares for Lucknow and then ceased to be a member of the Union. He denies being a member during the time that R. N. Lahiri and M. N. Gupta were members. To some extent this appears to be correct. An examination of the proceedings Ex. P 448 shows that Bakshi was elected secretary of the Union, then known as the Aryan Athletic Association, in March 1923. He also originally signed the proceedings as president. On the 21st June, 1923, Bakshi was again elected secretary. In July the name of the association was changed to the Central Health Union. At a meeting of the managing committee on 9th August 1923, R. N. Lahiri was admitted as a member. On the 13th November 1923 Bakshi was elected assistant secretary. When he resigned this post and severed his connection with the Union does not appear from the proceedings, but it was not until the 21st July, 1925, when he was again in Benares that M. N. Gupta was admitted as a member. At a meeting dated 25th July 1925, we find that R. N. Lahiri was elected assistant secretary in his absence, but the proceedings of the 31st August show that he did not accept this post.

O. P. 91. The record of the proceedings about this time indicate that though Bakshi had not resumed membership he was still taking an interest in the Union. Both he and M. N. Gupta, however, appear to have been in disfavour, for some reason unexplained, with those who were at that time in control. At a meeting of the 4th September, 1925, the following resolutions were passed.

(1) that no outsiders be allowed into the field without the

permission of the Captain and that S. N. Bakshi be requested by the Secretary not to come into the premises of the Union in contravention of this.

(2) that whereas the attitude of Manmotha Nath Gupta is considered to be prejudicial to the interests of the Union he be requested by the Secretary to tender resignation to (*sic*) the membership of the Union and that in case he does not tender his resignation within two days after this request is made, his name be removed from the register.

On the 6th September the resignation of M. N. Gupta was accepted. That the Union was still having trouble with Bakshi, however is shown by a resolution which reads—'Somehow to check the entrance of Mr. Sachindra N. Bakshi into the club premises'. It appears therefore that Bakshi was an active member of the Union at the same time that R. N. Lahiri was a member, but that he was not actually a member when M. N. Gupta was a member, though he visited the Union at that time.

Reports of head constable Bhawani Sahai

67. Mr. Mukherji states that Bakshi was under surveillance from May 1925, but had been a political suspect since May 1924. He ordered head constable Bhawani Sahai (P. W. 71) to watch his movements in May 1925. Reports Ex. P. 178-182 were made by Bhawani Sahai to his sub-inspector Ramini Mohan Mukherji (P. W. 72) prior to the Kakori dacoity. This evidence has been produced by the prosecution mainly to prove that Bakshi was absent from Benares at the time of the Kakori dacoity. The reports, however are also of interest and importance as showing Bakshi's association with M. N. Gupta and continued interest in the Central Health Union or its members. Relevant extracts are as follows:- O. P. 92.

Ex. P. 178 dated 5th June 1925. 'At 7 o'clock in the evening Sochin Bakshi (*i. e.* the accused) Manmotho Nath Sen Gupta and others about 30, came out of Deonik Sabha with the photo of C. R. Das and went round Dasa Sumedh Ghat for the realisation of funds for the C. R. Das Memorial and returned to Deonik Sabha about 9-30 p. m.'

Ex. P. 179 dated 5th July 1925. 'It is submitted that to-day about 8-30 p. m. Sochin Bakshi left Deonik Sabha in company with Manmotho Nath Gupta along with the members of the C. R. Das Memorial Fund.'

Ex. P. 180 dated 15th July 1925. 'At about 3 p. m. Sochin Bakshi went to star Homeopathic Medical Hall. For about an hour he remaind inside there and thereafter went on walking with a boy who is a member of the Health Union Club'.

Ex. P. 181 dated 20th July 1925, also mentions him walking

with boys who were members of the Health Union Club.

Ex. P. 182 dated 23rd July 1925 mentions him and M. N. Gupta with some boys visiting the Health Union Club. On the 28th July 1925 Bhawani Sahai reported to the Sub-Inspector as follows (Ex. P. 474) 'Today from 5 A. M. to 9 A. M. Sochin Bakshi was watched but he could not be seen. It appears that he has gone out somewhere'. It is proved by the evidence of Bhawani Sahai and sub-inspector Ramini Mohan Mukerji that Bakshi did not
O. P. 93. return to Benares till the 15th August, 1925. Bhawani Sahai reported on that date (Ex. P 475) that he had seen him talking with a boy. On the 19th August also he reported that he had seen him talking with boys and also with Manmotho Nath Gupta (Ex. P 183.) On the 20th August there is a report (Ex. P 184) that Bakshi visited the house of Manmotho Nath Gupta at 10-15. p. m. He was again in the company of M. N. Gupta on the 23rd August (Ex. P 185) and the 25th August (Ex. P 186). On the 26th August (Ex. P 187) he could not be found. Azad (absconding) was seen talking to M. N. Gupta on that date and also on the 28th August and 15th September, 1925.

Activities of Bakshi at Jhansi.

68. The evidence of constable Kunj Bihari (P. W. 98) shows that Bakshi was at Jhansi during the cold weather of 1924-25. Altogether he was there for six or seven months. Both he and Mukandi Lal used to visit the house of one Kishan Gopal, the Congress Secretary. The appeal (Ex. P 298) to the People of Jhansi for funds to support the Athletic Club there (signed by Sachindra Nath and Rudra Narayan Singh as 'organisers') considered in the light of his similar activities at Benares, suggests that Bakshi had been sent to Jhansi as district organiser of the propaganda department there. His knowledge about the broadcasting of 'the Revolutionary' as shown by Ex. P. 288 and the statement therein that the pamphlets have 'at last' been circulated in Jhansi suggest that he knew more about their circulation there and elsewhere than is admitted. I have already shown his attempts to obtain employment while at Jhansi, and his readiness to take a post on a nominal salary of Rs. 20 a month in the office of a paper called the ' Swadhin'.

Summary of case against Bakshi.

69. The case against Bakshi under section 121A, I. P. C. rests therefore on the evidence of the approvers, on the fact that he absconded on the
O. P. 94. arrest of the main body of conspirators, on his assumption of false names both before and after their arrest, on the evidence to prove his visits to Shahjahanpur and his association with other alleged revolutionaries both there and at Benares, on his activities at Benares and Jhansi, specially in the formation or attempted formation of athletic clubs, and on the papers and letters found either in his trunk at Jhansi or on his person at Bhagalpur. It is unnecessary for me to say much

more about these. The 'appeal to the Nationalists' and other papers contain unmistakeable indications of his revolutionary and communistic leanings and the letter addressed to 'My countrymen at the Gauhati Congress' frankly admits that he is a rebel and revolutionary. The lists of books found in his trunk are clear evidence of his connection with the other conspirators. The writing on Ex. P. B. 7 suggesting the formation of a military department and on Ex. P. B. 11 proposing the creation of a central body of five United Provinces members, the framing of a definite programme to give a great blow to the Government within five years and the exploration of methods to collect funds and arms, show that even while he was absconding Bakshi was interesting himself in schemes to further the revolutionary cause.

CHAPTER V. O. P. 116.

The Kakori Train Dacoity.

Story of the guard, Jagannath Prasad.

83. The story of the train dacoity on the 9th August 1925 is told in most detail by the guard Jagannath Prasad (P. W. 4). He states that after the train had proceeded a mile from Kakori outer signal in the direction of Alamnagar the communication cord was pulled. The train began to stop and before it had finally stopped he got out to see what was the matter. It will be seen from Ex. P. 86 that the train consisted (in the order given) of engine, empty brake van, three third class bogies, a first and second class composite coach, a mixed inter class and third class bogie, three third class bogies, an officer's saloon and a brake van divided into two compartments. Jagannath Prasad was in this rear brake van. On getting out he went towards the engine on the left hand side of the train. When he reached the third class compartment near the inter class compartment he saw three men dressed in khaki coming in his direction, one of whom was Ashfaqullah. Behind these three men were a railway doctor named Gupta (P. W. 25) and an ice vendor named Abdul Wadud (P. W. 28). They both told the guard that these three men had pulled the communication cord. The guard asked them if this was correct and one of them replied in the affirmative, saying he had left a box behind at Kakori. They went on past him, while he followed, asking them for their tickets. They made no reply. On reaching the brake van the guard who was still following them found that there were some men inside it and some outside it, numbering altogether 20 to 25. The three men joined O. P. 117. them. Ashfaqullah then took a bag from his neck and firing began. One man shouted to the passengers telling them to remain in their carriages and another man ordered the guard to lie down, saying that if he did not his head would be blown off. The guard did as he was ordered lying down on his side some four or five paces from the brake van which he could still partially see. He heard one man say 'Jamadar, throw the box out of the brake van' and there followed the noise of a box falling down. As soon as it had fallen down from the van the dacoits began to try and force it open. Meanwhile other dacoits continued to fire on both sides of the train and to warn the passengers not to come out of their carriages, telling them they were not going to loot them and that they only wanted the railway treasure. There was an interval while the Dehra Express passed, firing being stopped and the dacoits all assembling on the other side of the train. It took about half an hour for the dacoits to force open the safe. They then asked the guard if that was all. He replied that it was, although in fact there were three other safes in the other part of the brake van. The

main body of the dacoits then made off, leaving four of their number with the guard and telling them to come when they heard a whistle. After a short time a whistle was heard and the four men departed. after telling the guard not to get up until they had gone some way. He got up as soon as he was satisfied that it was safe to do so and examined the condition of the brake van. All the lamps had been broken and the safe had been removed. A chadar (sheet Ex. XIV) was lying in the brake van. He then went along the train and arranged for it to go on. He sat in a second class compartment with Dr. Gupta.
O. P. 118. As the train started he noticed a dead body by the line. He stopped the train again with the intention of picking it up but could get no one to help him. The train therefore proceeded and arrived at Alamnagar where he informed the assistant station master, Babu Sital Prasad, of the dacoity and also reported it by telephone to the Controller at Lucknow. On arriving at Lucknow he was met by the station master and railway police.

Story of Dr. Gupta.

84. Dr. Gupta (P. W. 25) had gone earlier in the day from Lucknow to Balamau and was returning to Lucknow by the 8 down train. He was travelling in a second class carriage, being up to Kakori the only occupant. He got out at Kakori and met the station master on the platform who asked him for some medicine for his child who was ill. Dr. Gupta went back to the carriage to get the medicine and found that three men were then sitting in it on the seat opposite his. He obtained the medicine and got out of the carriage again, gave it to the station master and then resumed his seat. The three men were dressed in khaki shirts, shorts and stockings. One was wearing a dark safa and the other two had felt caps. The man with the safa had a bundle about a foot square. Dr. Gupta has identified Ashfaqullah as this man. He also identified R. N. Lahiri, accused in the main case, as one of the other two men. He was also apparently inclined to think at the identification proceedings that Bakshi was the third man as he hesitated in front of him. He did not, however, pick him out. In his statement to the magistrate which has been brought on record, (Ex. P. B. 36) he said in cross examination with reference to Bakshi 'I cannot say whether
O. P. 119. this accused was one of the three but I can say this much that he was just like this accused' and immediately afterwards in re-examination he said 'whatever I have just said is based upon the hazy idea that I have about the third man, specially as regards the colour the the height and general features'. The train had gone about a mile and a half from Kakori when Lahiri first pulled the communication chain on the side he was sitting and then came across and pulled the chain on Dr. Gupta's side. The third man whom he did not identify also pulled the chain on his side. Dr. Gupta asked them why they had pulled the chain and they said they had left behind a box at Kakori. When the train stopped they got down and went

towards the brake van. Dr. Gupta also got out and followed them. When he saw the guard coming from his brake van he shouted that these three men had pulled the chain and as his voice was not very loud he told the ice vender Abdul Wadud, who had also got out, to tell the guard also. After going a short distance behind the men he returned to his carriage. From there he saw that the guard had met the three men and had gone with them to the brake van and that there was a gathering of men there. Firing then commenced and as soon as he realised that a dacoity was in progress he got back into his carriage, changing later on into another compartment as he thought that it was dangerous for him to remain in the same one, the reason being that the three men knew that he must have had a good view of them and might have come back to kill him.

Story of the ice vendor.

85. Abdul Wadud, ice vendor, was in a compartment adjoining that of Dr. Gupta. He got out at Kakori and passed up and down the carriages selling ice and lemonade. While passing his compartment and also on returning to it just before the train started he saw that three men were sitting in Dr. Gupta's carriage who had not previously been there. He has identified the two accused in this case as two of these men. He got out when the train stopped and followed the three men as far as the officer's saloon. He saw seven men get out of the third class carriage near the saloon. They went to the brake van and joined other men there and the three men from the second class carriage joined the whole party. Ashfaqullah took a pistol out of the bag which he was carrying and fired first of all in the air. After hearing them tell the guard to lie down and seeing the safe thrown out he ran back to his compartment.

O. P. 120.

Evidence of the Kakori station master.

86. The evidence of Babu Sukhnandan Lal (P. W. 15) station master of Kakori, supports that of Dr. Gupta. He states that while Dr. Gupta was getting the medicine for him he noticed three men sitting on the other side of the carriage, dressed in khaki. One of them was facing him and the other was looking through the window on the other side of the carriage. The witness identified Ashfaqullah as the man who was facing him. He was sent to various jails for identification purposes but could identify only Ashfaqullah.

Defence arguments.

87. The evidence of these witnesses has been attacked mainly on the following grounds:-

(i) It was not light enough at the time of the dacoity for them to distinguish the features of the dacoits.

(ii) The train did not stop long enough at Kakori for the ice vendor to have a good view of Ashfaqullah and Bakshi there, especially as according to Babu Sukhnandan Lal two of the three men

O. P. 121. were l oking out of the window the other side of the carriage, that is, they had their backs to the platform.

(iii) The mistakes made by Abdul Wadud in identification.

(iv) The mistakes made by the guard in identification.

(v) The long grass by the side of the line would have impeded the view of the witnesses.

(vi) The guard Jagannath Prasad must have known Ashfaqullah before as they had both been at the Mission School, Shahjahanpur. Moreover Ashfaqullah was often at the Shahjahanpur railway station.

(vii) As Dr. Gupta had only a pass for an inter class compartment it is improbable that he was in a second class carriage.

I take these arguments in the order given.

(i) It is admitted that the carriages were lighted at the time of the dacoity but it is submitted that the light from the carriages would not be sufficiently bright to show up people walking alongside and that there was little or no daylight left. The register Ex. P. 80, produced by Babu Ali Murad, assistant station master, Kakori, shows that the 8 down train arrived at 7-17 p. m. and left at 7-19 p. m. He says that his lantern had not been lighted when the train arrived at Kakori. The evidence of the other witnesses is to the effect that there was still some daylight left. Dr. Gupta says that there were some clouds about but not enough to have any effect on the light. The guard says there were no clouds when the train stopped but there were when it started again. Abdul Wadud says that the sun had set at the time of the dacoity but there was O. P. 122. still some daylight. Mirza Ahmad Shah (P. W. 7) who was travelling by the train says there was a little daylight left when the dacoity occurred. Babu Sital Prasad (P. W. 16) assistant station master, Alamnagar, says that 'the sun was setting when the 8 down train arrived at my station in those days' i. e. on normal days. So too Baiju (P. W. 17). From this evidence I conclude that there was sufficient daylight at the beginning of the dacoity for the witnesses to distinguish the dacoits they were near to, taking into consideration also the fact that there must have been some light from the carriages.

(ii) It is true that according to the assistant station master's register the train only stopped two minutes at Kakori. The prosecution have argued that such entries are made every day as a matter of course and cannot be absolutely depended upon. Whether this is so or not I see no reason to think that there was not time for the ice vendor, Abdul Wadud, to have a casual glance at the men in the second class carriage. The fact that two of them were looking out of the opposite window when Babu Sukhnandan looked

in the carriage proves nothing unless Abdul Wadud was looking in at the same time. Abdul Wadud's attention was specially directed to the men afterwards by Dr. Gupta when the chain was pulled so that the question whether he observed them very closely at the Kakori Station is not very important.

(iii) Abdul Wadud identified twelve men altogether, the two accused in this case, Ram Prasad, Prem Kishan Khanna, M. N. Gupta and R. K Sinha of those accused in the maincase; Damodar Sarup who has been too ill to stand his trial; one man who was dis- O. P. 123.
charged and four men who are not alleged by the prosecution to have taken part in the dacoity. Four mistakes may suggest that he is not such a reliable witness as for instance, Dr. Gupta, but the percentage is not so large as to make his evidence and his identification of the present accused altogether untrustworthy. The reason for his identifying more accused than the other witnesses appears to be partly that he had a better opportunity of seeing them and partly that being an uneducated man he is less careful to identify only those about whom he is certain. According to his evidence seven men got out of a third class carriage and looked towards the engine. As he was coming towards them he must have had a good opportunity of seeing most of these. In the identification proceedings Ex. P. A 59 it is noted that Ashfaqullah stated that he had seen this witness at the Shahjahanpur railway station and that he had once slapped him in the face because he had given him too little ice. As, however, the witness was never questioned about this story and there is no evidence to support it I cannot attach any credence to it.

(iv) Jagannath Prasad identified, in addition to Ashfaqullah, Mukandi Lal and two wrong persons. If the number of persons paraded be taken into account I do not think that two mistakes make his identification of Ashfaqullah and Mukandi Lal worthless, although they do indicate that he is not such a careful witness as Dr. Gupta, who identified Ashfaqullah and Lahiri and refused to identify Bakshi although he was clearly doubtful about him.

(v) The witnesses have admitted that there was long grass by O. P. 124.
the side of the line and from this the defence have assumed that the path by the side of the line, through which the accused and witnesses walked towards the brake van, ran through this grass. There does not appear to be any foundation for this suggestion. I have no doubt that there was plenty of room for the witnesses to walk along side the train without going into the grass.

(vi) Jagannath Prasad says that he was at the Mission School, Shahjahanpur, and it is proved that Ashfaqullah was also at this school. Jagannath Prasad, however, says that he does not know whether Ashfaqullah was there at the same time as himself. He left in 1916 and did not regularly take part in games (as Ashfaqullah did). If they were at this school together at the same time

it would seem probable that they would know each other, at least by sight, but the evidence does not prove conclusively that they were there at the same time. Jagannath Prasad also attended a Tahsili school at Shahjahanpur. He is three years younger than Ashfaqullah. If he really was acquainted with Ashfaqullah there appears to be no reason why he should not admit it.

(vii) Dr. Gupta says that although he had only a railway pass for an inter class compartment he always used to travel second class. In cross-examination he said 'I still travel some times second class, sometimes in third and sometimes inter. If the ticket collector demanded it from me, I should have to pay the difference if I travelled second with an inter class pass. O. P. 125. I travel second class when I am travelling privately'. Dr. Gupta is a railway official and railway officials, when travelling by rail are privileged persons. I see no reason to think that he was not travelling in a second class compartment. Whether his doing so would be approved by the railway authorities is another question.

In addition to the above arguments I have been referred to various discrepancies in the prosecution evidence. None of them appear to me to be of such importance as to require detailed examination. They are all such as one would naturally expect to find in a case of this kind when witnesses try to remember afterwards the order in which they saw or heard things at a time when they were probably in a state of considerable trepidation. I have no doubt that the dacoity took place substantially as narrated by the witnesses.

CHAPTER VII.

Statement and defence of Ashfaqullah Khan.

Statement to committing magistrate.

103. In his statement to the committing magistrate (Ex. P. A. 56) Ashfaqullah denied all the charges against him. He stated that he knew Ram Prasad, Hargobind, Prem Kishan, Banarsi Lal and Indu Bhushan just as he knew other residents of Shahjahanpur. He denied all knowledge of the White and Yellow leaflets and reserved his statement about the prosecution witnesses and his identification by many of them for this court. He did not admit any connection with the letters and papers found in his possession at the time of his arrest or with the letters Ex. P. 14, 15 and 16 purporting to have been sent by him to Banarsi Lal, but stated that he would make a statement about them in the court of Session. He admitted that he disappeared after the 26th September 1925 for fear of the police, as he came to know there was a warrant out against him. He denied that he had stayed at the Royal Hotel, Delhi, on the 25th and 26th, August, 1926, and that the signature "Murari Mohan" in the hotel register was his. He admitted that he signed the search list Ex. P. A. 32 in the name of Abid Raza Khan and explained that he did so for fun (tafrihan). He finally alleged that his identification by the witnesses was due to the fact that his photograph had been in the possession of the police and that at the identification parade the Public Prosecutor, M. Khairat Nabi, would not let him speak or raise objections. This latter allegation is proved to be false by the evidence of the committing magistrate, Khan Bahadur Saiyid Ainuddin who conducted the proceedings (P. W. 117) and by the record of those proceedings, (Ex. P. A. 50) which shows that he was asked in respect of each identification whether he had any objection to urge. O. P. 149.

Statement in Sessions Court.

104. In this court Ashfaqullah has further elaborated his objections in respect of the identification proceedings. He states that after his arrest in Delhi his face was uncovered on numerous occasions: a photograph found in his trunk was not sealed up for some days in spite of his request to the magistrate that it should be; the C. I. D. Inspector Mr. Gobind Bihari had an opportunity of thoroughly examining his features and described him to the identifying witnesses and there were numerous differences between him and the five men paraded with him. He denies that there has been any friendship between him and Banarsi Lal during the last two or three years, explaining that he severed all connection both with him and with Ram Prasad as a result of the communal riots in Shahjahanpur in 1924 and also because Banarsi Lal had appropriated some European cloth which had been given up for burning. He admits that the manuscript papers found in his trunk

at Delhi are in his handwriting but denies all knowledge of the "Manifesto of the Communist Party of India" Ex. P. A. 35, suggesting that someone had placed it in his room and that it had been then put into his trunk at the time of his arrest. He admits that he left school in 1921 and joined the non-co-operation movement but claims that he lost interest in the movement and rejoined his school in 1924, since when he has taken no interest in politics. The
O. P. 150. verses of which Ex. P. A. 9 is a translation he explains by saying that he is a poet and that he wrote the lines when he came to know that Mr. Bedar M. L. C. had persuaded Banarsi Lal to become an approver. The letter to Maulana Shah Abdul Qadir (Ex. P. A. 6) in which he blames the latter for his position as a fugitive and exile he explains by saying that this refers to a promise he had made to Shah Abdul Qadir to join the non-co-operation movement until the Khilafat question was settled. He had reason to think that had he not joined that movement his name would not have come to the notice of the police. Finally he claims that his family supported the Government during the Mutiny and suffered in consequence, that many of his relatives have served the Government and that a member of such a family could not think of conspiring against the Government. He offers to give any sort of guarantee or undertaking that may be required.

Defence witnesses.

105. Ashfaqullah summoned 47 witnesses in his defence but examined only 27. Most of these witnesses were produced to show that he was elsewhere on the dates when the dacoities with which he is charged were committed. By the evidence of the remaining witnesses it is sought to prove that there could have been no association between him and Ram Prasad since the Shahjahanpur communal riots in 1924 and that his family has always been a very loyal and respectable one. As regards the *alibi* evidence it must be noted that neither in his statement to the magistrate nor in his statement to this court did Ashfaqullah suggest where he was on the dates in question or say that he would produce evidence to prove that he could not have been at the places where the dacoities were committed, nor did his counsel open his defence by explaining the
O. P. 151 nature of the evidence he intended to produce. The prosecution suggest that this course was adopted in order to leave the defence free to produce such evidence as would be most advantageous to him, and that until some of the witnesses had actually arrived at Lucknow the defence could not say what evidence they would be prepared to give or whether in fact their evidence would be of any use at all. It is true that several witnesses summoned did not attend, pleading illness as an excuse, and it is also true that several who attended were not produced in Court. The prosecution also allege that in some cases witnesses required to give similar evidence were summoned for different dates with the object of making it more difficult for the prosecution to cross-examine them. This may or may not be true.

Bammuli alibi.

106. Five witnesses were examined by the defence on three different dates to prove that on Christmas Day, 1924, the date of the Bamrauli dacoity, Ashfaqullah was a member of a "shikar" party near the village in the Shahjahanpur district where his family own some land. Samiullah Khan (D. W. 19) *alias* Kallan Khan, who is closely connected with the family, being the brother-in-law of Safiullah Khan, Ashfaqullah's elder brother, states that a few days before Christmas Day, 1924 he had come to Shahjahanpur to buy cloth. He met Safiullah Khan on the 23rd December and Safiullah Khan suggested that they should travel back to his railway station, Katra, on Christmas Day together. He accordingly did so. With Safiullah were Ashfaqullah and one Liaqatullah. On arriving at Katra Station, Safiullah asked him to join his shikar party and on being pressed he did so, going with them to the village of Nawadia where the property of Ashfaqullah's family is situated. Safiullah Khan sent word to one Nawab Shakir Ali Khan, suggest- O. P. 152. ing that the party should come the next day to his village for "shikar" and in reply the Nawab asked them to come the next day and take food with him. They arrived at his village, Khitawa, the next morning about 7-30, caught quail in nets till about 11 and arrived home about 2 p. m. This story is corroborated by Safiullah Khan (D. W. 21), Liaqatullah Khan (D. W. 14), Shakir Ali Khan (D. W. 3) and Ashiq Ali Khan (D. W. 20). Safiullah Khan agrees that the date on which the party went was Christmas Day, 1924, after first of all saying it was in 1925. There are some rather serious discrepancies between his evidence and that of Kallan Khan, namely as to when they asked Samiullah Khan to join the shikar party, whether he agreed to go at once, how the party obtained their food, what Samiullah Khan did at Katra station with the cloth he had bought at Shahjahanpur and why Ashfaqullah was able to go with them at Christmas. Liaqatullah Khan is a student at the Islamia College, Lahore, who visits his home at Shahjahanpur during the vacations. There is nothing in particular to note about his evidence except that he was not certain on what date he arrived at Shahjahanpur from Lahore. He has been acquainted with Ashfaqullah since they were both students at Shahjahanpur. He also gives the date when the party left Shahjahanpur as 25th December. He admits that he is descended from the same ancestors as Ashfaqullah. Shakir Ali Khan is very vague as to the date, saying it was during the Christmas holidays, between the 24th December and the 2nd January 1925. He would not commit himself to a more definite date. Ashiq Ali Khan is a youth of 20, who, there is some reason to think, was privy to the conspiracy. He is mentioned by Indu Bhushan as an associate of Ashfaqullah and a letter from Ashfaqullah to him was found on Ashfaqullah at the time of his arrest (Ex. P. A. 4). He O. P. 153. is also called "Arfi" and it was thus that Ashfaqullah addressed him in the letter referred to. He states that he was seeing some

relatives off at Shahjahanpur railway station on Christmas Day, 1924, and saw the "shikar" party then. He was very clearly a partial witness as he would not admit that certain letters shown to him were in Ashfaqullah's handwriting although he admitted that he had received letters from Ashfaqullah and the letters shown him had been admittedly written by Ashfaqullah. He admitted that he had been convicted under the Arms Act in 1925 for having two pistols without a license. Altogether he appeared to be a very unreliable witness. My general impression from the evidence of these five witnesses is that although there may be some slight foundation for the "shikar" story, the statement that the party including Ashfaqullah, left Shahjahanpur on the 25th December, 1925, cannot be relied upon.

Bichpuri alibi.

107. Seven witnesses were produced by the defence on four different days to prove that on the 9th March 1925, the date of the Bichpuri dacoity, Ashfaqullah took part in the ceremony of "Milad Sharif" at the house of Anwar-Husain Khan (D. W. 1). The witnesses do not give the English date but give the corresponding Muhammadan date, namely the 13th of Shaban, or fix the date with reference to the Shab-i-barat festival which fell on the 14th of Shaban in 1925. Anwar Husain Khan is a connection of Ashfaqullah's family, his cousin (one witness says his sister) being married to Riyasatullah Khan, brother of Ashfaqullah. He states that he had celebrated the Milad regularly on the 13th Shaban, for the last eight years, this date being fixed for
O. P. 154. it as the month of Shaban is propitious, and convenient for him as his profits from his sugar factory have come in by then. Ashfaqullah did not attend the Milad in 1926 or 1927 but did so in 1925, when he assisted the witness in spreading the carpets and distributing sweets and *pan*. Only members of Ashfaqullah's family assisted him in the Milad, as it was the custom for only relatives to do so. The story is repeated by Saiyid Ali Ahmad (D. W. 2), a mukhtar on Rs. 15 a month of an honorary magistrate who is also said to have attended the Milad in question but who has not appeared as a witness to say so; and by Mashuqullah Khan (D. W. 5), a zamindar who first of all said that it was in 1925 that Safiullah Khan asked that prayers might be offered for Ashfaqullah on account of the case pending against him, Ashfaqullah himself not being present on that occasion. Subsequently he said that Ashfaqullah was absent for the last two Milads but he did not remember whether the last Milad was in 1927, though he knew that the present year is 1927. The house of this witness adjoins that of Ashfaqullah. As regards the evidence of Inayatullah Khan (D. W. 6), a zamindar whose antecedents do not appear to have been altogether above suspicion; of Abdul Fateh Khan (D. W. 17), a fairly large zamindar, a friend of the family and of the same "biradari"; of Amjad Ali Khan (D. W. 18), a clerk in the Shahjahanpur Municipal office; and of Safiullah Khan, Ashfaqullah's brother,

all of whom repeat the story, there is nothing in particular to note. There are small discrepancies in their evidence but not such as by themselves would excite suspicion. The counsel for the Crown has pointed to the inability of some of these witnesses to give details about the manner in which the Milad was celebrated in other years or at other peoples' houses, but on this too I do not lay much stress. More significant appear to be the admissions that none of the witnesses knows of any other family in Shahjahanpur which holds the Milad at this time and that there is at least one month more auspicious than Shaban for the purpose. The prosecution argue with some force that if a definite date were fixed for the Milad every year it would naturally be fixed at the most auspicious time. They also point out—and this is possibly the greatest weakness in the defence story—that as the Muhammadan year is shorter by ten days than the English year, after eight years Anwar Husain Khan would now be holding Milad at quite a different season from that in which he held it when he originally fixed the date, and that the reason he gives for holding it on the 13th Shaban, namely that it suits his pocket as he realises the profits of his sugar factory about a month before, is not therefore very convincing. It is rather in view of these improbabilities than because the evidence is on the face of it unreliable that I reject the story.

O. P. 156.

Kakori alibi.

108. Seven witnesses have been produced to show that Ashfaqullah was in Bhopal at the time of the Kakori dacoity. His brother, Safiullah Khan, (D. W. 21) says that in May, 1925, Ashfaqullah left school for the second time with the intention of taking service somewhere. He went to Bhopal with this object the last week of July and returned the third week of August. While he was away the witness received letters from him which he did not keep. They were to the effect that he had applied for employment but was unable to obtain it immediately "as the Begam Sahiba was away in England". Another brother of Ashfaqullah named Shahan Shah Khan *alias* Munnu Khan is employed in the Bhopal State as a criminal peshkar of the district magistrate, Ashta, and there can be no doubt that Ashfaqullah visited him from time to time. Safiullah Khan says that Ashfaqullah went to Bhopal for some time, after discontinuing his studies on account of the non-co-operation movement. He stayed there once for several months in 1923. The correspondence found with Ashfaqullah at the time of his arrest shows that he was in Bhopal part of the time that he was absconding.

It should be noted that his brother Shahan Shah Khan has not appeared to support his *alibi*.

of Ashta where Shahan Shah Khan is employed. Colonel Inamullah Khan says that Ashfaqullah came to him and asked for a post in the army. The witness replied that Her Highness and her son were in Bangalore (not England) and that no final reply could be given at the moment. As regards the date when this application was made the witness said; "It was in 1925. I am not sure of the month; it was either July or August. I think it was either the end of July or the beginning of August. I do not know the date and as I have already said I am not sure about the month. It was the rainy season. I had not seen him before nor did I see him after". The witness also said that Ashfaqullah's application for employment was not kept. Clearly this evidence is not very helpful to the defence.

Other witnesses.

110. The other witnesses, Majid Ali Khan, (D. W. 23) Inayat Khan (D. W. 24), Bhagwat Singh (D. W. 25), Ahsan Ali (D. W. 26) and Muhammad Ishaq (D. W. 27) all appear to be friends of Shahan Shah Khan. Majid Ali Khan is a kanungo at Ashta. He says that he saw Ashfaqullah there in 1923 and again in 1925. In the latter year he first saw him towards the end of July. "He left Ashta five or six days after the Muharram (1st August). He came back again two days later and stayed eight or ten days at Ashta." He understood that he had been to Bhopal to obtain a post in the army. He can give no reason for remembering the date. Inayat Khan is a clerk. He states that he saw Ashfaqullah eight or ten days after the Muharram at Sihor in the Bhopal State. Ashfaqullah was in a motor bus or lorry on his way back from Bhopal. The witness spoke to him and Ashfaqullah told him that he had been to Bhopal in search of employment. Though he thought the date was eight or ten days after the Muharram the witness admitted that it might have been only four or six days after or as many as twelve or fifteen. He says that some other men in the motor lorry, including Bhagwat Singh the next witness, were sitting in front of Ashfaqullah. This witness says that he went from Sihor to Ashta in the same motor lorry as Ashfaqullah and that the date was the Hindi date corresponding to the 8th August. He was in the main portion of the lorry while Ashfaqullah was sitting in front with the driver. Ashfaqullah did not come into the main portion at all. This does not agree with the evidence of Inayat Khan. Ahsan Ali is a dismissed police official and at present manager of a motor company. He was dismissed in connection with the disappearance of some papers and was in the Ashta lock-up in this connection for two months before being acquitted. While he was in the lock-up his uncle came and told him that his grandmother had died and that he should obtain the permission of the district magistrate to join in the funeral ceremony. The jail dafadar then took him out of the lock-up to the district magistrate but the latter refused to let him go. With the

district magistrate were Shahan Shah Khan and his brother Ashfaqullah Khan. The date was the 18th of the month of Muharram (8th August). Muhammad Ishaq, a vakil whose appearance hardly supported his statement that he made as much as Rs. 400 a month, stated that he attended the funeral ceremony of the grandmother of the last witness. As regards the date he said "I don't remember the date. It was after the Muharram. I am not sure but I think it was the 7th or 8th day after the Muharram (*i. e.* 7th or 8th August). He had come to the office of the district magistrate to request his permission to appear late in court on account of the funeral. He was there about 10 a. m. and saw both Shahan Shah Khan and Ashfaqullah coming out of the district magistrate's office. Questioned as to how he remembered the date he said "On seeing the accused in court I remembered that I had seen him about eight days after the Muharram". He was unable to give any information about the cases in which he had to appear that day before the district magistrate. The evidence of none of these witnesses inspired confidence, especially as regards the date. It is possible, indeed likely, that they saw Ashfaqullah on one or more of his visits to the Bhopal State, but I cannot accept their evidence as proving that they saw him there on the 7th, 8th or 9th August 1925. O. P. 158.

Alleged antagonism between Ashfaqullah and Ram Prasad.

111. A number of witnesses have been called by the defence to prove that Ashfaqullah and Ram Prasad wereon opposite sides during the Shahjahanpur riots of 1924, the suggestion being that men who were opposed to each other during these communal riots could not possibly have been, either at the time or afterwards, closely connected in a revolutionary conspiracy. Raza Ali Khan, a vakil (D. W. 4) says that Ashfaqullah did "pairawi" for one Ata Husain, and that Ram Prasad did "pairawi" for the Hindus but cannot give any details of the case or cases in which Ram Prasad did "pairawi". He only concluded that Ashfaqullah was doing "pairawi" for Ata Husain because he saw them together on several occasions. Muhammad Shafiqullah Khan (D. W. 7) says he spoke to Ashfaqullah about the time of the riots and Ashfaqullah complained that persons who posed as nationalists were taking part in communal quarrels. After being asked several times whether Ashfaqullah mentioned any names the witness said that he mentioned the name of Ram Prasad. The manner in which this witness after much hesitation made this statement did not impress me with his reliability. Karim-ul-Raza Khan (D. W. 8) a vakil who suspended practice during the non-co-operation movement and who appeared as counsel for Ata Husain referred to above, says that Ashfaqullah did "pairawi" for Ata Husain. His only reason for saying so, however, was that Ashfaqullah used to accompany Ata Husain to his house. O. P. 159.

He admits that Ashfaqullah never gave him any instructions. He also says that Ram Prasad did "pairawi" for the Hindus concerned in the riots, but here again his only reason for this statement is that he saw Ram Prasad occasionally with these Hindus. Ata Husain Khan (D. W. 9) who was convicted in connection with the riots, states that he was with Ashfaqullah and other Muhammadans one day during a tazia procession. It was rumoured that the Hindus of the Katiatola mohalla would stop the procession. They did not, however, do so as the Muhammadans were in a great majority. They saw groups of Hindus about as they passed through this mohalla and amongst them Ram Prasad. That evening a Muhammadan was murdered in Katiatola mohalla. He asked Ashfaqullah, who was still with him, why these Congress people (meaning Ram Prasad and the Hindus with him) created trouble in this way and Ashfaqullah said that it was very bad of them.
O. P. 160. Ata Husain says nothing whatever about Ashfaqullah doing "pairawi" for him. Matlub Husain (D. W. 10) gives similar and equally vague and unconvincing evidence. He also was prosecuted in connection with the riots but acquitted. He was formerly a police constable but resigned in connection with the non-co-operation movement. Like another defence witness whose antecedents are not above suspicion, namely Ashiq Ali Khan, he is at present employed in the Army Clothing factory at Shahjahanpur. He slightly improves on the story told by Ata Husain, saying that Ram Prasad and Ashfaqullah stared at each other when the procession passed through Katiatola mohalla. Anwar Hasan Khan (D. W. 16), was convicted during the riots under sections 325, 147 and 149 I. P. C. and sentenced to three years' imprisonment, this sentence being subsequently reduced to two years. He says that Ashfaqullah and other Muhammadans 'assisted' him in the case; Ashfaqullah attended the trial every day. It will be observed that the evidence of these witnesses is to some extent contradictory, in that it is sought to show on the one hand that Ashfaqullah blamed Ram Prasad for interesting himself in these communal disturbances, while on the other it is alleged that Ashfaqullah himself was actively engaged on the other side. Even if it is believed that Ashfaqullah and Ram Prasad were on opposite sides during these riots and that they were so is not altogether improbable, though the evidence to prove it cannot be described as convincing, I see no reason to think that there was anything in the nature of a quarrel between them. They may very well have casually supported co-religionists with whom they were friends without coming into conflict themselves, or regarding it in any way as a personal
O. P. 161. matter. There is no clear evidence to show that either played any particular part in the riots or assisted any accused materially in the cases afterwards. I have already shown that the policy of the revolutionaries was to put religious questions into the background. If we may judge from the literature found with him and his friendship with Banarsi Lal, Ashfaqullah was unusually

free from religious prejudices.

Alleged quarrel with Banarsi Lal.

112. While it is admitted that Ashfaqullah was at one time on very friendly terms with Banarsi Lal, it is alleged that the two quarrelled during the non-co-operation days because Banarsi Lal appropriated some European cloth which had been sent to the Congress Office at Shahjahanpur by one Kunwar Indar Bikram Singh to be burnt. The witnesses to prove this are Ayub Ahmad Sabar, Editor of the Sitara (D. W. 13) who admits a conviction under section 124A. I. P. C. for writing a seditious poem, and Muhammad Mujtaba Hasan Khan (D. W. 15) a "teacher of theology and student of Urani medicine." There are several reasons for distrusting this story. The first witness says that he was secretary of the Congress office at the time; the second says that Banarsi Lal was secretary and that he remained secretary afterwards. Secondly Kunwar Indar Bikram Singh himself made no complaint and apparently knew nothing about the matter nor did it come before the Congress committee. Thirdly—and this seems conclusive—the incident is stated to have taken place in the hot weather of either 1922 or 1923, yet we find Ashfaqullah writing a friendly letter to Banarsi Lal (Ex. P. 15) on the 11th December 1923, and the still more friendly letter Ex. P. 14 was probably written after that date. It may also be noted that in his statement in court Ashfaqullah says nothing about quarrelling with Banarsi Lal. In the Magistrate's court he did not mention the story of the cloth at all. In this court he only said that he had heard that Banarsi Lal had misused some foreign cloth. Banarsi Lal was not cross-examined by Ashfaqullah's counsel on this point. In answer to Bakshi's counsel he admitted that some clothes for burning were deposited at his house but denied that his honesty in the matter had ever been called in question. O. P. 162.

Arguments for Ashfaqullah.
1. Identification.
(a) History of his photograph.

113. The main argument advanced on behalf of Ashfaqullah relates to his identification. It is asked why so many witnesses identified him; while so few (comparatively) identified Bakshi and it is contended that his photograph must have been shown to them or he must have been described to them beforehand. The complaint is also made on his behalf that he was not given a fair chance, that he had no one to represent or assist him at the proceedings and that the men paraded with him were unsuitable for the purpose.

The answer given by the counsel for the Crown to the question why so many witnesses identified him is that he is of somewhat striking and unusual appearance, being powerfully built and good looking, and that if, as the prosecution witnesses suggest, he played a leading part in each dacoity, it is natural that the attention of the witnesses should have been specially directed towards

him. This answer appears to be satisfactory as far as it goes, that is to say unless and until the defence can show that other, less innocent, reasons existed for his identification.

As much has been said about the possibility of the photograph
O. P. 163. which was found at Delhi being shown to the witnesses I must sketch, as briefly as possible, the history of this photograph from the date of its discovery to the date of the identification proceedings. I note first of all, however, that little or nothing has been said about the photograph of Banarsi and Ashfaqullah (Ex. P 28) which was found with Banarsi a year before, though it is obvious that if the police had wished to assist the identifying witnesses they could have done so quite as easily by showing them this photograph as by showing them the other one if not more easily. The reason why the defence have concentrated on the later photograph appears to be that Ashfaqullah himself, possibly not knowing that the other one had been found a year before, displayed anxiety about it soon after his arrest and complained in his statement to the court about the way in which it had been kept.

In view of the indications given by Ashfaqullah that he intended to make the most of this photograph a large number of witnesses were brought from Delhi to show exactly what happened to it. The photograph (Ex. P. A. 37) was found in Ashfaqullah's box. The box had been sealed up on the 8th September when Ashfaqullah was arrested and was taken the next day by the Deputy Superintendent, Khan Bahadur Hakim Ikram-ul-Haq, who had arrested Ashfaqullah, to the magistrate, Saiyid Ghulam Mustafa Shah (P. W. 118) to prepare a list of its contents. Ashfaqullah says that he asked the magistrate to destroy it but the evidence of the Deputy Superintendent and the magistrate shows that he did not make any such request until the 13th. The police did not at first pay much attention to the photograph as it was not a very good likeness; indeed they appear to have been doubtful whether it was Ashfaqullah's photograph. His
O. P. 164. letter to his sister found in his possession (Ex. P. A. 6) shows that he intended to send the photograph to her at the first opportunity, "although it is very dim. If I get an opportunity I will send you a good photo". When on the 13th Ashfaqullah for the first time displayed anxiety about the photograph the Deputy Superintendent told him that it had been put back into the box, the key of which had been kept by him. He also assured him that no undue advantage would he taken of it. The box was kept in the police malkhana. It is clear from this evidence that the photograph was not sent to Lucknow and shown to the witnesses between the 9th and 13th September. On the 13th September, Mr. Horton arrived at Delhi and wanted to see some of the things found with Ashfaqullah. Khan Bahadur Tasadduq Husain, Deputy Superintendent attached to the office of the Director of

Criminal Intelligence came to the malkhana on this date, examined the list of articles in the box and took away certain of them. Ex. P. A. 40 shows what things were taken by him and what were not. The photograph was not taken. On this date the photograph was placed in a sealed cover by Sub-Inspector Sirajul Haq (P. W. 120). On the 14th. the Deputy Superintendent, Khân Bahadur Ikramul Haq, sent for the cover to see that it had been properly sealed and finding that it was, returned it to the malkhana by sub-inspector Sirajul Haq. He brought the cover to Lucknow on the 30th October in the same condition as it was in on the 14th September. Ex. P. A, 42-49 are various police reports relating to this box and photograph. They support the evidence of the witnesses named above, as does also the evidence of various head constables which it is unnecessary to narrate in detail. It is sufficient to say that the evidence proves conclusively that the photograph was locked up in the box from the 8th to the 13th September and that from the 13th September to the 30th October it remained at Delhi in a sealed cover. The identification proceedings of Ashfaqullah took place at Lucknow on the 28th September.

O. P. 165.

(b) Identification proceedings.

114. As regards the other allegations made by or on behalf of Ashfaqullah the evidence of the committing magistrate, Khan Saheb Saiyid Ainuddin (P. W. 17) is important. This shows that the magistrate arrived at Delhi on the 27th September for the purpose of conveying him to Lucknow. Before leaving the jail he told Ashfaqullah to keep his features concealed as there would be identification proceedings. Ashfaqullah was taken to the station in a closed lorry and he and the magistrate travelled to Lucknow in a reserved second class carriage, the blinds of which were drawn. From Lucknow station to the Central Jail he was taken part of the way in a closed hackney carriage and the remainder of the way in a lorry. At all railway stations his face was covered and he wore a pair of black glasses. Ex. P. A. 51 is the note recorded about this journey by the magistrate.

At Lucknow Saiyid Ainuddin received a letter from the Public Prosecutor C. I. D. informing him that the identifying witnesses were all waiting at the house of another magistrate. Leaving Ashfaqullah at the Central Jail Saiyid Ainuddin went to the house of this magistrate and saw the witnesses. He then went home, returned in the afternoon and had all the witnesses taken to the jail in two motor lorries. Ex. P. A. 50 is the magistrate's record of the identification proceedings. On arriving at the Jail in the morning he had asked the jailor to have some Pathan convicts resembling Ashfaqullah waiting for him. Ashfaqullah asked that some outsiders, that is non-residents of the jail, might be paraded with him but the magistrate was unable to arrange

O. P. 166. this. The reason was that in the main case Mr. Mitra of the Associated Press had arranged for the presence of some outsiders and the accused in that case had made serious allegations against Mr. Mitra and other sympathisers. Consequently nobody would come forward to help Ashfaqullah (or Bakshi) in the same way. The note recorded by the magistrate (Ex. P. A. 50) shows that five other men were paraded with Ashfaqullah. All, including Ashfaqullah, wore convict's dress. The frontier convicts, whom the magistrate considered himself fortunate to obtain for the purpose, resembled Ashfaqullah in features " and had hair on the head and moustaches and beard like him. Even their colour was similar to his and also to a more or less extent their height" . Before the proceedings started Ashfaqullah again complained about his photograph. The following passage from the note is also important in view of the allegations made by Ashfaqullah:—"Ashfaqullah having black nail on his left foot thumb I allowed him to conceal it by placing a red cap over his feet and this was done by all the men mixed up with him. At his own request I allowed him to take off his own clothes and put on convict's dress.................All the five men mixed with him had exactly similar dress. They had small beard like him and were Mohammadan Pathans having small beard and moustache. After the proceedings were over Ashfaqullah showed me a dim wart on his left temple. He never brought this fact to my notice as he had done with the black nail. As it is no witness ever had a look at his or any one else's temple or at their feet. They looked straight into their faces and identified him without any hesitation in a natural manner".

As regards the complaint that the magistrate did not arrange for Ashfaqullah to be legally represented at the proceedings
O. P. 167 the magistrate's evidence shows that he told Ashfaqullah's brother Riyasatullah on the Delhi railway station that he was taking him to Lucknow and that he should also come to look after his interests. He informed the vakils for some of the accused in the main case when identification proceedings would take place, because they had made a written request to that effect. There was no such request in Ashfaqullah's case. Ashfaqullah had been under arrest for three weeks before the proceedings and his relatives could have made arrangements for him to be legally represented if they had wished to. They were able to engage a vakil for him in the magistrate's court, although their means were insufficient to retain him in this court, for which reason Ashfaqullah has been defended in this court at Government expense. But the magistrate was under no obligation of any kind to arrange for his legal representation at the identification proceedings; it is by no means the usual course for an accused to be represented at such proceedings, and I see no reason whatever to think that the case of the accused has been in any way prejudiced by the absence of a legal representative. Nor do I see any reason to think that the police have taken

an unfair advantage in any way, either by showing the witnesses one of his photographs or by describing him to them. The precautions taken by the police to prevent the possibility of the witnesses seeing him beforehand (and also the possibility of this allegation being made) were of a most elaborate nature and there is nothing which suggests bad faith on the part of anyone concerned.

115. The other arguments advanced on behalf of Ashfaqullah can be disposed of more briefly. It has been contended in the first place that the whole trial is vitiated by the fact that the committing magistrate took part in the inquiry, in particular by his conducting the identification proceedings and by accompanying Banarsi Lal to Bichpuri. No authority whatever has been quoted in support of this contention and it is in my opinion without any force. On the other side it is pointed out that under the explanation to section 556 of the Code of Criminal Procedure no magistrate is personally interested in a case within the meaning of the section by reason only that he has viewed the place in which an offence is alleged to have been committed and made an inquiry in connection with the case. As the proceedings before the magistrate are in the nature of an enquiry and are not part of the actual trial it is, I think, clear that there can be no valid objection to the magistrate taking part in the inquiry before the case comes into his court by conducting identification proceedings and verifying a confession. Secondly it is pointed out that none of the documents found with Ashfaqullah directly connect him with the conspiracy; neither the white nor the yellow leaflet was found with him; and a not very successful attempt has been made to put an innocent construction on the letters and papers found in his possession or written by him. I need not explain in detail how his counsel has attempted to explain those passages which *prima facie* are of an incriminating nature; it is sufficient to say that I have found his interpretations far from convincing.

(ii) Other arguments.

O. P. 168.

Other points brought to my notice by the defence counsel are, comparatively speaking, unimportant and can have little effect on one's general views about the case. It is, for instance, pointed out that Banarsi Lal has not been quite consistent in his story about the visit of Jogesh Chander Chatterji to Shahjahanpur, as to how and where he first met him. It is also pointed out that he has not been consistent in his story about the badmashes who took part in the Bichpuri dacoity. In his confession he said that they joined the party at Shahbaznagar while in his statement to the court he suggested that they joined the party at Sherganj. If the passages are closely examined, however, I think it will be seen that they are not necessarily discrepant. He saw the

O. P. 169.

badmashes first of all at Sherganj but they may have got in the train at Shahbaznagar and he may have learnt afterwards that they did so. He was not cross-examined on the point. Then it is argued that Banarsi Lal only mentioned the "chadar" which had been left behind in the brake-van by the Kakori dacoits with a view to having this part of his confession corroborated by the evidence of the guard. The answer to this is that nobody would be likely to trouble about corroboration on such a small point when ample corroboration was forthcoming for the more important details of his confession. Finally it is suggested that it was absurd that Ram Prasad should ask Indu Bhushan to collect information about officials and wealthy people when he must have known much more about them himself. This implies that Ram Prasad asked for the information because he really required it; it seems to me much more likely that he asked Indu Bhushan to obtain the information because Indu Bhushan was importuning him for work and he wished to humour him, and also possibly because he thought it would be good training for him.

काकोरी काण्ड के विशेष सन्दर्भ में अशफाक उल्ला खाँ का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व-एक ऐतिहासिक अध्ययन (1900 -1927)

लखनऊ विश्वविद्यालय की पी.एच.डी. (इतिहास)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

निर्देशक
प्रो. अनिल कुमार मिश्र
मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

अनुसंधात्री
मनीषा तिवारी

मध्यकालीन एवं आधुनिक भारतीय इतिहास विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ
2007-08

अध्याय-दस

अध्याय-दस

उपसंहार

अशफाक उल्ला खाँ का जीवन साम्प्रदायिक एकता और देश को स्वतंत्र करने की मानसिकता में बीता। यही कारण था कि वे एक आदर्श युवा की भाँति युवाओं में प्रेरणा के स्तम्भ बने रहे। अशफाक के बलिदान के बाद तमाम प्रतिक्रियाएं हुईं और अशफाक की भरपूर सूचना ली गयी। वे मिसाल बन गये। यह बात और है कि अशफाक की फाँसी से युवा वर्ग निराश जरूर हुआ लेकिन वहीं वह ऊर्जा को भरकर नये भारत की कल्पना में आ गया।

क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा से निराशा व क्षोभ तो हुआ और इसे बनारस से प्रकाशित होने वाले दैनिक समाचार पत्र ने जनता की इस असहाय स्थिति पर खेद भी प्रकट किया। इलाहाबाद से प्रकाशित पत्रिका **'चाँद'** (नवम्बर 1928) अंक फाँसी विशेषांक के रूप में निकला।[1]

अखिल भारतीय कांग्रेस ने अपने अधिवेशन में सरकार की तीव्र आलोचना की कि उसने जनता की भावनाओं की उपेक्षा करके क्रांतिकारियों को फाँसी की सजा दी। क्रांतिकारियों के परिवार के प्रति कांग्रेस ने अपनी सहानुभूति प्रदान की।[2]

अशफाक उल्ला खाँ अपने खानदान पर लगे दाग धो देना चाहते थे और उन्होंने अपने कृतित्व से यह दाग धो भी डाला। अशफाक का प्रारम्भिक जीवन सिर्फ खेलकूद में ही नहीं वरन् देश की चिन्ता और आम लोगों को शोषण से निजात दिलाने के वैचारिक मंथन में बीता। वे हमेशा धीर-गम्भीर बने रहते और कभी अपनी सुन्दरता और देह बल का अभिमान न करते।

1.स्वतंत्रता आन्दोलन में जनपद शाहजहाँपुर का योगदान-डॉ०एन.सी.मेहरोत्रा पृष्ठ144

2.दि हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन नेशनल कॉंग्रेस, भाग-एक-पृष्ठ 540,पट्टाभि सीतारमैया

हाँ इतना अवश्य था कि उन्हें अपने बल पर विश्वास था। खुद के विचारों में स्वस्थ्य मानसिकता बना लेना अशफाक की खूबी थी। देश के सशस्त्र क्रांति के प्रयास में अपने जीवन की आहुति देने वाले अशफाक उल्ला खाँ ने जब क्रांतिकारी आन्दोलन में प्रवेश किया तो वे छात्र ही थे। फाँसी के समय उनकी उम्र मात्र 27 वर्ष की थी। अशफाक का क्रांतिकारी जीवन लगभग सात वर्ष का रहा और इतने ही अल्पकाल में वे देश की राजनीति और समाज की धड़कन से परिचित हो गये थे। अशफाक उल्ला खाँ सिर्फ एक सिपाही ही नहीं थे कि लड़े और मृत्यु को प्राप्त हो गये। वे हमारे समय के क्रांतिकारियों में प्रखर चिन्तक के रूप में भी हमारे बीच उपस्थित होते हैं। उनकी कविताएँ एवं उनके वैचारिक लेख और राष्ट्र के नाम संदेश तथा उनके द्वारा लिखे गये पत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि वे किस हद तक वैचारिक धरातल पर दृढ़ थे। यह स्पष्ट है कि क्रांतिकारी गतिविधियों, फरारी जीवन, जेल की जिन्दगी में से ऐसा समय ही नहीं मिला कि वे बाकायदा अपने विचार लिपिबद्ध कर पाते।

इन्ही में से समय निकाल कर जो उन्होंने लिखा है वह बहुत थोड़ा है, जिसे पढ़कर लगता है कि वे चाहते हुए भी अपने सोचे हुए को कागज पर उतार नही सके। वे बहुत कुछ लिखना चाहते थे, वे बच्चों के लिए पुस्तकों की रचना करना चाहते थे, उन्हें भावी पीढ़ी की बहुत चिन्ता थी, लेकिन उनकी इच्छा अधूरी रह गयी। उनके लिखे पत्रों, कविताओं और डायरी में लिखे अंशों से हमें उनके जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं।

देश की स्वतंत्रता और हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए शहीद होने वाले अशफाक ने फाँसी से पहले अपनी डायरी में हिन्दुस्तान का नक्शा भी बनाया था और देखने से लगता है कि वे खूब रोये थे। सुनने-देखने में यह भी आता है कि आँसुओं के निशान अभी तक ज्यों के त्यों हैं।

आज भी देश के नाम उनका संदेश प्रासंगिक है। उनकी कविताएं हमें एक सूत्र में बाँधती हैं।

न कोई इंगलिश, न कोई जर्मन,
न कोई रशियन, न कोई तुर्की।
मिटाने वाले है अपने हिंदी,
जो आज हमको मिटा रहे हैं।

यह कहना सर्वथा गलत है कि क्रांतिकारियों के पास कोई विचार नहीं था। अपने संदेश में अशफाक ने स्पष्ट कहा है कि वे किस तरह की आज़ादी चाहते हैं। अशफाक की कल्पना समाजवादी थी, जहाँ कोई ऊंच है न नीच। अशफाक ने किसान, मजदूरों की तरक्की की बात भी कही। वे कारखानों और गांवों में लोगों के बीच जमकर काम करने में विश्वास रखते थे। अशफाक शोषण के कारणों की बात करते है और उसके खिलाफ जंग लड़ने की बात करते हैं।

देश वासियों के नाम भेजा गया संदेश

''बिरादराने वतन की खिदमत में उनके उस भाई का सलाम पहुँचे जो उनकी इज्जत व नामू से वतन की खातिर फैजाबाद जेल में कुर्बान हो गया। आज जबकि मैं यह पैगाम बिरादराने वतन को भेज रहा हूँ, इसके बाद मुझको तीन दिन और चार रातें और गुजारनी हैं और फिर मैं हूँगा और आगोशे मादी वतन होगा। हम लोगों पर जो जुर्म लगाये गये थे वह इस सूरत में पब्लिक में लाए गये कि हमको बहुत से लोग गेरेतालीमयाफ्ता या हुकूमत के दस्तरख्वान की पसेखुर्दा हड्डियाँ चचोड़ने वाले थे, डाकू, खूनी, कातिल के लकब से पुकारा किए। मैं आज इस फाँसी की कोठरी में बैठा हुआ भी खुश हूँ और अपने उन भाइयों का शुक्रिया अदा करता हूँ। और कहूँगा -

मर मिटा आप पै कौन! आपने यह भी सुना,

आपकी जान से दूर! आप से शिकवा है मुझे।

खैर यह तुम्हारा फैल है कि हमारी कुर्बानियों को कबूल न करो और यह हमारा फर्ज है कि बार-बार ठुकराओ मगर हम तुम्हारा ही दम भरे जायेंगे। बिरादराने वतन, मैं उसी पाक व मुकद्दस वतन ही की कसम खाकर कहूँगा कि हम नंगे नामूसे वतन पर कुर्बान हो गए। क्या यह शर्म की बात नहीं कि हम अपनी आँखों से देखते कि नित नए मुज़ालिम हो रहे है और गरीब हिन्दुस्तानी हर हिस्साये मुल्क और खित्तयेदुनिया में जलील और रुसवा हो रहे हैं और कहीं न ठिकाना है न सहारा। किस्सा मुख्तसर ये कि हमारा वतन भी हमारा नहीं। हम पर टैक्स की भरमार, हमारी माली हालत का रोज बरोज गिरते जाना, 33 करोड़ बहादुर हिन्दुस्तानी हिन्दू और मुसलमान भेड़-बकरियों की मानिंद बनाए गए। हमारे गोरे आका हमें ठोकरे मार दें तो बाज-पुर्स न हो। जनरल डायर जलियावाला बाग को नमूनये हशर बना दे। हमारी माताओं की बेइज्जती करें। हमारे बूढ़ों और बच्चों पर बम के गोले, गन-मशीनों की गोलियाँ बरसाएं और हर नया दिन हमारे लिए नई मुसीबते लेकर आए। फिर भी हम बादये गफलत रहें और ऐशो-इशरत में अय्यायें- जवानी गुजार देते। यह खयाल करके -

जनूने हुब्बे वतन का मजा/शबाब में हैं,

लहू में फिर यह रवानी रहे/रहे न रहे।

जो भी किया, भला किया, आज हम नाकाम रहे, डाकू हैं। कामायाब होते मुहिब्बते वतन के पाक लकब से पुकारे जाते। और जो भी आज हम पर झूठी गवाहियाँ दे गए, हमारे नाम के जयकारे लगाते -

बहे बहरे फना में जल्द/यारब लाश बिस्मिल की,

कि भूखी मछलियाँ हैं/जौहरे शमशीरे कातिल की।

आह! क्या ऐसे दौर की जिन्दगी प्यारी ख्याल की जा सकती है। जबकि हमारे ही गिरोह-सियासी में खलफिशार मचा है। कोई तबलीग का दिलददा है, जो कोई शुद्धि पर मर मिटने को बाइसेनिजात समझ रहा है। मुझे तो रह-रहकर इन दिमागों और अक्लों पर तरस आ रहा है जो कि बेहतरीन दिमाग हैं और माहरीने सियासत हैं। काश कि वह अज़ादिए मिस्र की जद्दोजहद एहरारान मिस्र के कारनामें और बर्तानवी सियासी चाले स्टडी कर लें और हमारे हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत से मुकाबिला व मवाज़ना करें, क्या ठीक वही हाल इस वक्त नहीं है। गवर्नमेंट के खुफिया एजेन्ट प्रोपेगेंडा मजहवी बुनियाद पर फैला रहे हैं। इन लोगों का मकसद मजहब की हिफाजत या तरक्की नहीं है बल्कि चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना है। मेरे पास वक्त नहीं है न मौका है कि सब कच्चा चिट्ठा खोलकर रख देता जो मुझे अय्यामे फरारी में और उसके बाद मालूम हुआ है। यहाँ तक मुझे मालूम है कि मौलवी नियामतुल्ला कादियानी कौन था कि काबुल में संगसार किया था। वह ब्रिटिश एजेन्ट था। जिसके पास हमारे करमफरमा खान बहादुर, तसद्दुम हुसैन साहब डिप्टी सुपरिटेंडेन्ट सी0आई0डी0 गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया पैगाम लेकर गए थे मगर बेदारमगज हुकूमत काबुल ने इलाज जल्द कर दिया और मर्ज को फैलने न दिया। मैं अपने हिन्दुओं और मुसलमान भाइयों को बता देना चाहता हूँ कि सब ढ़ोंग हैं, जो सी0आई0डी0 के खुफिया खजाने के रूपये से रचा गया है। मैं मर रहा हूँ और वतन पर मर रहा हूँ। मेरा फर्ज है कि हर नेको बद बात भाइयों तक पहुंचा दूँ। मानना न मानना उनका काम है। मुल्क के बड़े-बड़े लोग इससे बचे हुए नहीं हैं। बस आवाम को आँखे खोलकर इत्तबा करना चाहिए।

भाइयों! तुम्हारी खानाजंगी तुम्हारी आपस में फूट, तुम दोनों में से किसी के भी सूदमंद साबित न होगी। यह गैर मुमकिन है कि 7 करोड़ मुसलमान शुद्ध हो जाएँ और वैसे ही यह भी महमल-सी बात है कि 22 करोड़ हिन्दू मुसलमान बना लिए जाएं। मगर हाँ यह आसान है और बिल्कुल आसान है कि यह सब मिलकर गुलामी का तौक गले में डाल लें। ऐ वह कौम जिसका कोई कौमी झंडा नहीं-ऐ वह कि तेरा वतन मेरा वतन नहीं-ऐ कि दूसरों की तरफ हाथ फैलाए हुए रहम की दरख्वास्त पर नजर रखनेवाली बेकस कौम तेरी अपनी गलतियों का यही नतीजा है कि आज तू गुलाम है और फिर वही गलतियाँ कर रही है कि आने वाली नस्लों के लिए धब्बा गुलामी का छोड़ जाएगी कि जो भी सर जमीने हिन्द पर कदम रखेगा, गुलामी में रखेगा और गुलाम बनाएगा। ऐ खुदावंदे कुद्दूस क्या कोई ऐसा सबेरा नहीं आयेगा कि जिस सुबह को तेरा आफताब आजाद हिन्दुस्तान पर चमके और फिजाए हिन्द आजादी के नारों से गूँज उठे। कांग्रेस वाले हों कि सौराजिस्ट तलबीगवाले हो कि शुद्धिवाले, कम्युनिस्ट हो कि रिवोल्यूशनरी, अकाली हो कि बंगाली, मेरा पयाम हर फरजंदेवतन को पहुँचे। मैं हर शख्स को उसकी इज्जत व मज़हब का वास्ता देता हूँ। अगर वह मजहब का कायल नहीं तो उसके जमीर को और जिसको भी वह मानता हो, अपील करता हूँ कि हर काकोरी केस के मर जाने वाले नौजवानों पर तरस खाओ। और फिर हिन्दुस्तान को सन् 20 व 21 वाला हिन्दुस्तान बना दो। फिर अहमदाबाद कांग्रेस जैसा इत्तिहाद इत्तिफाक का नजारा सामने हो। बल्कि उससे बढ़कर हो और मुकम्मल आजादी का जल्द-से-जल्द ऐलान करके इन गोरे आकाओं को हटा दो कि ये अब केंचुली उतार चुके हैं और अब वह किसी मंत्र से बस में न होंगे-तबलीग व शुद्धी वालो खुदारा-आखें खोलो, कहाँ थे और कहाँ पहुँच गये, अपनी-अपनी शान खत्म करो, सोचो तो मजहब में जबरदस्ती इखतिलाफे राय पर जंग, एक काम नामुकम्मल छोड़कर दूसरी तरफ रुजू हो गये।

आज कौन ऐसा हिन्दू या मुसलमान है जो मजहबी आजादी इतनी रखता है कि जितना उसका हक है? क्या गुलाम कौम का कोई मजहब नहीं होता? तुम अपने मजहब का सुधार क्या कर सकते हो? तुम खुदा की इबादत पुरसुकून तरीके पर करो। तुम ईश्वर का ध्यान खामोशी से करो और दोनों मिलकर इस सफेद भूत को मंत्र से जंत्र से उतार भगाओ। इसी की यह सारी कार्यवाही है। जब यह भूत उतर जाएगा, हमारी आँखें खुल जायेंगी। आओ हमारी भी सुनो, पहले हिन्दुस्तान को आजाद करो, फिर कुछ और सोचना, खुदा ने जिसके लिए जो रास्ता मुंतखिब कर दिया है, वह उसी पर रहेगा। तुम किसी को भी नही हटा सकते। आपस में मिल-जुलकर रहो और मुत्तहिन्द हो जाओ नहीं तो सारे हिन्दुस्तान की बद बख्ती का वार तुम्हारी गर्दन पर है और गुलामी का बाइस तुम हो।

कम्युनिस्ट ग्रुप के अशफाक की गुजारिश है कि तुम इस गैरमुल्की की तसव्वुर करते हो, देसी चीजों से नफरत, विदेशी पोशाक और तर्जेमआशरत के दिलदादा हो, इससे काम नहीं चलेगा। अपने असली रंग में आ जाओ। देश के लिए जिओ, देश के लिए मरो। मैं तुमसे काफी तौर पर मुत्तफिक हूँ और कहूँगा कि मेरा दिल गरीब किसानों के लिए और दुखिया मजदूरों के लिए हमेशा दुखी रहा है। मैं अपने अय्यामे फरारी में भी अक्सर इनकी हालत देखकर रोया किया हूँ क्योंकि मुझे इनके साथ दिन गुजारने का मौका मिला है। मुझसे पूछो तो मैं कहूँगा कि मेरा बस हो तो मैं दुनिया की हर मुमकिन चीज इनके लिए वक्फ कर दूँ। हमारे शहरों की रौनक इनके दम से है। हमारे कारखाने उनकी वजह से आवाद और काम कर रहे हैं। हमारे पंपों से इनके हाथ का पानी निकालते हैं, गर्ज कि दुनिया का हर एक काम इनकी वजह से हुआ करता है। गरीब किसान बरसात के मूसलाधार पानी और जेठ-बैसाख की तपती दोपहर में भी खेतों पर जमा होते हैं और जंगल में मँडलाते हुए हमारी खुराक का सामान पैदा करते हैं।

यह बिल्कुल सच है कि वह जो पैदा करते है जो वह बनाते हैं उनमें उनका हिस्सा नहीं होता, हमेशा दुखी और मफलूकुल हाल रहते हैं। मैं इत्तिफाक करता हूँ कि इन तमाम बातों के जिम्मेदार हमारे गोरे आका और उनके एजेन्ट हैं। मगर इनका इलाज क्या है कि उनको उस हालत पर ले आएँ कि वह महसूस करने लगें कि वह क्या हैं। इसका वाहिद जरिया यह है कि तुम उन जैसी वज़ा किरा इख्तियार करो और जेंटिलमैनी छोड़कर देहात का चक्कर लगाओ। कारखानों में डेरे डालो और उसकी हालत स्टडी करो और उनमें एहसास पैदा करो। तुम कैथरीन ग्रांड मदर ऑफ रशिया की सवानेह उम्री पढ़ो और वहां के नौजवानों की कुरबानियाँ देखो। तुम कालर टाई और उम्दा सूट पहनकर लीडर जरूर बन सकते हो, मगर किसानों और मजदूरों के लिए फाइदेमन्द साबित नही हो सकते। दीगर पॉलिटिकल जमाअतों से मुत्तहिद होकर काम करो और अपनी माद्दापरस्ती से किनारा करो कि यह फिजूल है जो तुम्हे दूसरी जमाअतों से अलग किये हुए हैं।

मेरे दिल में तुम्हारी इज्जत है और मैं मरते हुए भी तुम्हारे सयासी मकसद से बिल्कुल मुत्तफिक हूँ। मैं हिन्दुस्तान की ऐसी आजादी का ख्वाहिशमंद था जिसमें गरीब खुश और आराम से रहते। खुदा मेरे बाद वह दिन जल्द आए जबकि छत्तरमंजिल लखनऊ में अब्दुल्ला मिस्त्री लोको वर्कशाप और धनिया चमार, किसान भी मिस्टर खलीकउज्जमा और जगत नारायण मुल्ला व राजा साहब महमूदाबाद के सामने कुर्सी पर बैठे हुए नजर पड़े। मेरे कामरेडो मेरे रिवोल्यूशनरी भाइयों -तुमसे मैं क्या कहूँ और तुमको क्या लिखूँ, बस अब तुम्हारे लिए क्या कुछ कम मुसर्रत की बात होगी, जब सुनोगे कि तुम्हारा एक भाई हँसता हुआ फाँसी पर चला गया और मरते-मरते खुश था। मैं खूब जानता हूँ कि जो स्प्रिट तुम्हारा तबका रखता है - चूँकि मुझको भी फख्र है और अब बहुत ज्यादा फख्र है कि एक सच्चा रिवोल्यूशनरी होकर मर रहा हूँ।

मेरा पयाम तुमको पहुँचाना फर्ज था, मैं खुश हूँ-मसरूर हूँ, मैं उस सिपाही की तरह हूँ जो फायरिंग लाइन पर हंसता चला जा रहा हो और खंदको में बैठा हुआ गा रहा हो। तुम्हें दो शेर हसर मोहानी साहब का लिख रहा हूँ -

जान को महवे गम बना दिल को वफा निहाद कर,
बंद ये इश्क है तो यू कता रहे मुराद की।
ऐ कि निजाते हिन्द की दिल से है तुझको आरजू,
हिम्मते सर बुलन्द से यास का इंसदाद कर।

हजार दुख क्यों न आएँ-बहरे जरख्वार दरमियान में मौंजे मारें-आतिशी पहाड़ क्यों न हायल हो जाएँ मगर ये आजादी के शेरों अपने-अपने गरम खून को मातृभूमि पर छिड़कते हुए और जानों को मातृवेदी पर कुर्बान करते हुए आगे बढ़े चले जाओ। क्या तुम खुश न होगे जब तुमको मालूम होगा कि हम हँसते हुए मर गए। मेरा वजन जरूर कम हो गया है और वह मेरे कम खाने की वजह से हो गया है। किसी डर या दहशत की वजह से नहीं हुआ है-और मैं कन्हाई लाल दत्त की तरह वजन न बढ़ा सका मगर खुश हूँ और बहुत खुश हूँ। क्या मेरे लिए इससे बढ़कर कोई इज्जत हो सकती है कि सबसे पहला और अब्बल मुसलमान हूँ जो आजादिए वतन की खातिर फाँसी पा रहा हूँ - मेरे भाइयो! मेरा सलाम लो और इस नामुकम्मल काम को, जो हम से रह गया है तुम पूरा करना। तुम्हारे लिए यू0पी0 में मैदाने-अमल तैयार कर दिया है, तुम्हारा काम जाने। इससे ज्यादा उम्दा मौका तुम्हारे हजार प्रोपेगंडे से न होता। स्कूल और कालेजों के तुलवा हमारी तरफ दौड़ रहे हैं, अब बहुत अर्से तक दिक्कत न होगी -

उठो-उठो सो रहे हो नाहक/पयामे बाँगे जरस तो सुन लो,

बढ़ो कि कोई बुला रहा है, निशाने मंजिल दिखा-दिखाकर।

ज्यादा क्या लिखूँ, सलाम लो-और कमर हिम्मत बाँध लो और मैदाने-सियासी लीडरों मेरा सलाम कबूल करो और तुम हम लोगों को उस नजर से न देखना जिस नजर से दुश्मनाने वतन और खाइनीने कौम देखते थे। न हम डाकू थे न कातिल -

कहाँ गया कोहेनूर हीरा/किधर गई हाय मेरी दौलत,

वह सबका सब लूटकर कि उलटा/हमीं को डाकू बता रहे हैं।

हमीं को दिन-दहाड़े लूटा, फिर हमीं डाकू हैं। हमारे भाइयों और बहनों और बच्चों को जलियानवाला बाग में भून डाला और अब हमीं को कालस बलूट फैसले में लिखा जाता है। अगर हम ऐसे हैं तो वह कैसे हैं और किस खिताब से पुकारे जाने के काबिल हैं, उन्होंने हिन्दुस्तान का सुहाग लूट लिया, जिन्होंने लाखों बहादुरों को अपनी गरज के लिए मेसोपोटामिया और रूस के मैदान में सुलवा दिया, खुँख्वार जानवर, जालिम दरिंदे वह हैं कि हम? हम बेवश थे, कमजोर थे, सब कुछ सुन लिया और ऐ वतनी भाइयों यह सब तुमने सुनवाया। आओ फिर मुत्तहिद हो जाओ, फिर मैदाने अमल में कूद पड़ो और मुकम्मल आजादी का ऐलान कर दो। अच्छा अब मैं रुखसत होता हूँ और हमेशा के लिए खैरबाद कहता हूँ। खुदा तुम्हारे साथ हो और फिजाये हिंद पर आजादी का झंडा जल्द लहराए। मेरे पास न वह ताकत है कि हिमालय की चोटी पर पहुँचकर एक ऐसी आवाज निकालूँ जो हर शख्स को बेदार कर दे और न वह असबाव है कि जिससे फिर तुम्हारे दिल मुश्ताइल कर दूँ कि तुम उसी जोश से आगे बढ़कर खड़े हो जाओ जैसे सन् 20 या 21 में थे। मैं चंद सुतूर के बाद रुख़सत होता हूँ : -

To every man upon this earth,
Death cometh soon or late,
But (then) how can a man die better,
Than facing fearful odds,
For the ashes of his fathers and,
Temples of his God.

बाद को मैं इन भाइयों से रुखसत शुक्रिए के साथ होता हूँ जिन्होंने हमारी मद्द जाहिर तौर पर की या पोशीदा और यकीन दिलाऊँगा कि अशफाक आखिरी दम तक सच्चा रहा और खुशी-खुशी मर गया और ख्यानते-वतनी का उस पर कोई नहीं लगाया जा सकता। वतनी भाइयों से गुजारिश है कि मेरे बाद मेरे भाइयों को वक्त जरूरत न भूलें और उनकी मदद करें और उनका खयाल करें।

वतन पर मर मिटने वाला
अशफाक वारसी **'हसरत'**
अज, फैजाबाद जेल

मेरी तहरीर मेरे वतनी भाइयों तक पहुँच जाए। ख्वाह विद्यार्थी जी अखबार के जरिए से या अग्रेंजी, हिन्दी, उर्दू में छापकर कांग्रेस के अय्याम में तकसीम करा दें, मशकूर हूँगा। मेरा सलाम कबूल करें और मेरे भाइयों को न वह कभी भूलें और न मेरे वतनी भाई फरामोश करें। अलविदा !

अशफाक उल्ला वारसी **'हसरत'**
फैजाबाद
जेल
19 दिसम्बर
1927[1]

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विद्यार्थी पृष्ठ 148-156

अशफाक चले गये और अलविदा से पहले देश के नाम अपना संदेश छोड़ गये। संदेश के माध्यम से हम उनके वैचारिक धरातल को ठीक से समझ सकते हैं, उनके कृतित्व व्यक्तित्व के विषय में तमाम सच्चाइयों का पता भी चलता है।

फाँसी पर जाने के पूर्व अशफाक ने कहा भी था - ''भारत माता के रंगमंच पर अपना पार्ट अब हम अदा कर चुके। हमने गलत-सही जो कुछ किया वह स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना से किया। हमारे इस काम की कोई प्रशंसा करेगा तो कोई निंदा। किन्तु हमारे साहस और वीरता की प्रशंसा हमारे दुश्मनों तक को करनी पड़ी है। क्रांतिकारी बड़े वीर योद्धा और बड़े अच्छे वेदान्ती होते है। वे सदैव अपने देश की भलाई सोचा करते हैं। वे कहते है कि हम देश को भयग्रस्त करते हैं, किन्तु बात ऐसी नही हैं। इतनी लम्बी मियाद तक हमारा मुकदमा चला, मगर हमने किसी एक गवाह तक को भयग्रस्त करने की चेष्टा नहीं की, न किसी मुखबिर को गोली मारी। हम चाहते तो किसी गवाह, किसी खुफिया पुलिस के अधिकारी या किसी अन्य ऐसे आदमी को मार सकते थे, किन्तु यह हमारा उद्देश्य नही था। हम तो कन्हाईलाल दत्त, खुदी राम बोस, गोपी मोहन साहा आदि की स्मृति में फाँसी पर चढ़ जाना चाहते थे।

जजों ने हमे निर्दय, बर्बर, मानव कलंक आदि विशेषणों से याद किया है। किन्तु हम पूछते हैं कि क्या इन जजों ने जलियावाला बाग में गोली चलाते देखा या सुना, क्या उसने निरस्त्र भारतीयों-स्त्री पुरुष, बाल वृद्ध सब पर गोलियाँ नहीं चलायी थी। कितने जजों ने उसे इन विशेषणों से विभूषित किया। फिर क्या यह मजाक हमारे ही साथ उड़ाने को है। भारतीय भाइयों, आप कोई हों, चाहे जिस धर्म या सम्प्रदाय के अनुयायी हों, परन्तु आप देशहित में एक जुट होकर योग दीजिए। आप लोग व्यर्थ में लड़-झगड़ रहे हैं। सब धर्म एक है, रास्ते चाहे भिन्न-भिन्न हो परन्तु लक्ष्य सबका एक ही है।

फिर यह झगड़ा बखेड़ा क्यों? हम मरने वाले काकोरी के अभियुक्तों के लिए आप लोग एक हो जाइए और सब मिलकर नौकर शाही का मुकाबला कीजिए। यह सोचकर कि 7 करोड़ मुसलमान भारतवासियों में मैं सबसे पहला मुसलमान हूँ जो भारत माता की स्वतंत्रता के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ, मैं मन ही मन अभिमान का अनुभव कर रहा हूँ किन्तु मैं यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ किं मैं हत्यारा नहीं था, जैसा कि मुझे साबित किया गया है।

अब मैं विदा होता हूँ। ईश्वर आप सबका भला करे। इस अवसर पर एनुद्दीन, मजिस्ट्रेट श्रीखैरात अली, पब्लिक प्रोसीक्यूटर, सी0आई0डी0 के अधिकारी खासकर खान बहादुर तसद्दुक हुसैन साहब तथा अन्य गवाहों को धन्यवाद देना अनुचित न होगा। क्योंकि इन्ही की कृपा से यह मान मर्यादा प्राप्त हुई। मेरे परिवार में आज तक देश सेवा के लिए कोई त्याग न हुआ था, अब यह कलंक छूट जायेगा। अन्त में अपने साथी अभियुक्तों तथा मुखबिरों और इकबाली मुलजिमों से भी वन्दे करता हूँ। सबको आखिरी सलाम। भारतवर्ष सुखी हो मेरे भाई आनंद लाभ करें।''[1]

निश्चित ही अशफाक को समझना अपने देश की संस्कृति की झलक पाना है। अशफाक उल्ला खाँ ने स्वतंत्रता को मेहनतकश जनता के जीवन की स्वतंत्रता से जोड़ा था। क्योंकि उनके लिए देश केवल धरती, जंगल पहाड़, नदी नाले से नहीं है। जनता के बिना देश या राष्ट्र का कोई मतलब नही होता। उन्हें पता था देश की बहुसंख्यक जनता गाँव में रहती है। अधिकतर लोग गरीबी की चक्की में पिस रहे हैं, कम दिहाड़ी पर कारखानों में काम कर रहे हैं, लाखों सड़क पर हैं। इसलिए देश को आजाद करना है तो इन्हें आगे लाना होगा। किसानों, मजदूरों को संगठित करना होगा।

---

1. अशफाक उल्ला और उनका युग, सुधीर विघार्थी, पृष्ठ -156-157

अशफाक ने कहा है कि -'मेरा दिल गरीब किसानों और दुखियों मजदूरों के लिए हमेशा दुखी रहा है। मैं तो अपने अय्यामें फरारी में भी अक्सर इनकी हालत देखकर रोया किया हूँ क्योंकि मुझे इनके साथ दिन गुजारने का मौका मिला है। निश्चित ही अशफाक उल्ला खाँ उस दौर के क्रांतिकारियों में एक मजबूत चरित्र के रूप में नजर आते हैं। जहाँ एक तरफ संवेदनशील और प्रगतिशील कवि, शायर के रूप में हमे नजर आते है वही वे एक कुशल पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में दृढ़ता से खड़े दिखते हैं और अन्त तक उनके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं आया। प्रमुख क्रांतिकारी नेता अमर शहीद सरदार भगत सिंह ने लिखा है कि -''आप (अशफाक) श्री राम प्रसाद के दायें हाथ थे, मुसलमान होने के बावजूद आपको कट्टर आर्य समाजी धर्म से हर दर्जे तक का प्रेम था। दोनों प्रेमी एक बड़े काम के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर अमर हो गये।''

शहीदे आज़म अशफाक उल्ला खाँ ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। उनका यह उत्सर्ग आने वाली पीढ़ियाँ सदैव स्मरण करेंगी तथा उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से हमेशा प्रेरणा पाती रहेंगी।

अशफाक के शब्द आज भी स्मृति में है और गूँजते हैं -

''कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है,
रख दे कोई जरा - सी खाके वतन कफन में।''

---------------- ,,, ------------------